प्राक्कथन

हमरा लोकनि बच्चाकेँ की पढ़ाओल जाए आ ओकर तरीका की होअए, ताहि दिस जनताक ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 सामाजिक विचार विमर्शक विलक्षण प्रक्रिया शुरू कएकल अछि। हमरा ओहिमे सामिल होएबाक सौभाग्य प्राप्त भेल। विचार आ अपेक्षाक व्यापक आ गहन मन्थनमे हम पैघ संख्यामे अत्यन्त खास व्यक्ति सभक संग राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक संरचना तैयार करबाक कार्य कएलहुँ। हिनकर सभक नाम एहि दस्तावेजमे देल गेल अछि।

एहि दस्तावेजमे काफी विश्लेषण अछि आ बहुतरास विचार सेहो। एहि सभक संग एकर सेहो बेरि बेरि ध्यान देआओल गेल अछि जे मातृभाषा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माध्यम थिक, आ जे बच्चा सभक ओकर अपन ज्ञान-सृजनमे सक्षम बनएबामे सामाजिक, आर्थिक आ जातीय पृष्ठभूमिक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान छैक। मिडिया आ शैक्षिक टेक्नॉलॉजीक महत्त्वकेँ स्वीकार कएल गेल अछि, मुदा शिक्षकक भूमिका केन्द्रीय बनल रहैत अछि। विविधता पर जोर अछि मुदा ओकरा सेहो समस्याक रूपमे नहि देखल गेल अछि। एहि बातकेँ निरन्तर स्वीकार कएल गेल अछि जे सिखबाक सामाजिक प्रक्रिया मूल्यवान अछि आ ओकरा संग समन्वित भएकेँ औपचारिक पाठ्यक्रममे आओर समृद्धि आओत। बहुलताक प्रतिष्ठा कएल गेल अछि आ ज्ञान ई छैक जे एकटा व्यापक संरचनाक भीतर विविध दृष्टिकोणक उपस्थितिसँ सर्जनात्मकतामे आओर समृद्धि आओत।

ई दस्तावेज बेरि-बेरि बच्चा सभ पर पाठ्यक्रमक बोझक प्रश्न दिस फिरैत अछि। एहि विषयमे लगैत अछि जे हम सभ कोनो खाधिमे खसल पड़ल छी। किछु समयक हेतु कार्यमे आबए बला जानकारीक ढ़ेरकेँ हम सभ ज्ञानक बदलामे अपना लेलहुँ अछि। एहि प्रक्रियाकेँ पलटाबए पड़त। खास कएकेँ एहि समयमे जखनकि आओर सभ किछु जे याद कएल जा सकैत अछि, हटि जएबाक हेतु तैयार अछि। हमरा सभकेँ अपन बच्चा सभकेँ ज्ञानक चहटि लागए देबाक चाही जाहिसँ ओकरा सिखबामे मदति भेटए आ जखन ओ खण्ड आ विम्बक संसार आ जीवनक लेन-देनमे दाखिल होअए तऽ ज्ञानक रूपान्तर अपन हिसाबे कए पाबए । ज्ञानक एहन स्वाद बच्चा सभक वर्त्तमानकेँ पूर्णतः सर्जनात्मक आ आनन्दप्रद बनाए सकत। ओ ज्ञानक ओहि अतिशयताक आघातसँ मूर्छित नहि होअए जकर आवश्यकता

मात्र किछु समयक हेतु ओहि बाधा दौरसँ पहिने पड़ैत छैक जकरा हम परीक्षा कहैत छिऐक। अपनहि दिससँ अपना पर थोपल गेल एहि दुर्भाग्यसँ निकलबाक किछु रास्ता एहि दस्तावेजमे सुझाओल गेल अछि। एहि क्षेत्रमे किछु सफलता भेटलासँ एकर पता चलि सकत जे हम सभ सिखबाक क्षमताकेँ बूझब शुरू कए देलिऐक अछि आ हमरा सभकेँ एकरो अनुमान भए गेल अछि जे बच्चाक स्मृतिकोषकेँ ओहि जानकारीसँ द्वन्द्व करब व्यर्थ थिक जकरा वास्तवमे पन्ना पर कारी निशान अथवा कम्प्यूटर डिस्क पर विट्स जकाँ रहए देबाक चाही।

शिक्षा कोनो भौतिक वस्तु नहि थिक जकरा शिक्षक अथवा डाकक माध्यमसँ कतहु पहुँचा धरि देल जा सकए। उर्वर आ उर्जस्वित शिक्षाक जड़ि हरदम बच्चाक भौतिक आ सांस्कृतिक जमीनमे धसल होइत छैक आ ओकरा माए, बाप, शिक्षक, सहपाठी आ समुदायक संग पारस्परिक क्रिया सभसँ सिंचन भेटैत छैक। एहि दायित्वक संदर्भमे शिक्षकक, भूमिका आ प्रतिष्ठाकेँ रेखांकित आ सुदृढ़ करबाक आवश्यकता छैक। शुद्ध ज्ञान सृजनमे पारस्परिकता अन्तर्युक्त छैक। यदि बच्चाकेँ निष्कृय रहबाक हेतु बाध्य नहि कएल जाए तऽ एहि आदान-प्रदानमे शिक्षक सेहो सिखैत छथि। चूँकि पैघक हिसाबे बच्चाक अवलोकन आ अनुभूतिमे बेसी गम्भीरता होइत छैक, ज्ञानक सर्जकक रूपमे ओकर सम्मानक हमरा सभकेँ आओर ज्ञान होएबाक चाही। अपन अनुभवक आधार पर हम ई दाबीक संग कहि सकैत छी जे जे थोड़ बहुत ज्ञान अछि ओकर पैघ हिस्सा बच्चाक संग हमर संवादक परिणाम थिक। ई दस्तावेज एहि पक्षक आवश्यक अनुसंधान करैत अछि।

एहि दस्तावेजमे एतेक भरल- पुरल आ व्यापकता सम्भव नहि छलए यदि ओहि विशिष्ट दीप्तिक स्फुरण नहि होइत जकर सीमामे ओ सभ लोक छलाह जे एहि प्रक्रियासँ जुड़ल छलाह। हम नहि जनैत छी जे ई ककर बुद्धिक स्फुरण थिक- भरिसक कोनो एक व्यक्तिक नहि। भरिसक ई एकटा एहन बिन्दु पर घटित भेल जखन हमर सभक बेचैनी फाटि पड़बाक सीमा धरि पहुँचि गेल छल। एहिमे सम्मिलित बेसीरास लोक सभकेँ लागए लागल छलनि जे आब बहुत भए चुकल। भरिसक ओहिमेसँ किछुक उत्साह संक्रामक छल।

दसो साल पहिने हमसभ जेहन सोचने छलहुँ ताहि तरहक कार्यकेँ नहि भए पएबाक दोष अनका सिरे मढ़बाक लोभ तऽ होइते छैक। हम सभ दोषारोपणक एहि खेलसँ बचबाक कोशिश कएलहुँ अछि भरिसक एहि कारणसँ सेहो जे कोनो ने कोनो रुपमेँ हम सभ एकरा हेतु जवाबदेह छिऐक। हमरा सभमेसँ अधिक लोक जिम्मेदार छथि (किएक तऽ हम सभ ओहि मध्य वर्गक सदस्य छी जे एहि देशक जनतासँ भावनात्मक रूपसँ अपनाकेँ

अलग करैत गेल अछि।) एहि दस्तावेजमे बहुलता, समता आ समानता सन शब्दक पुनरावर्त्तन हमरा असाधारण बुझना गेल अछि। हम नहि मानैत छी जे ई कोनो राजनैतिक शब्दाडम्बरक भाग थिक किऐक तऽ हम सभ अपन सुदीर्घ विचार विमर्शमे राजनीति पर बहुत कम गप्प कएलहुँ अछि। हमरा बुझाइत अछि जे हम सभ एहि विश्वाससँ काज कए रहल छलहुँ जे अभिवंचित रहि गेल अपन देशक तीन चौथाइ हिस्सहिसँ हमर सभक ताकत अछि। सामाजिक रूपसँ अर्जित ओकर क्षमता आ कला तथा हमर सभक शैक्षणिक संस्थानक मेलहिसँ विशिष्ट उत्कृष्टता प्राप्त कएल जा सकैछ।

ई दस्तावेज एहि दिसामे आगू बढ़बाक रास्ता/उपाय/ तरीका सुझबैत अछि। एतए सुझाओल गेल किछु व्यवस्थागत अन्तर सभसँ निश्चिते एहिमे मदति भेटत। हमरा आशा अछि जे हम सभ समान विद्यालयी व्यवस्था, कार्य आ शिक्षाकेँ यथार्थ मे बदलि सकैत छी आ संगहि बच्चाकेँ अपन गृहभाषा आ घरक वातावरणमे औपचारिक शिक्षा लेबाक अवसर दए सकैत छिऐक। हमसभ एहि जिम्मेदारीसँ आतंकित नहि छी। हमरा सभकेँ बुझाइत अछि जे ई सभ कएल जा सकैछ। हम उम्मीद करैत छी जे ई कोशिश हमर सभक बच्चाक शिक्षाक हेतु आजादीक एकटा सोपान शुरू कए सकत! हम सभ अपनाकेँ जकराहेतु उत्सर्ग कए देलिऐक तेहन किछु विसंगतिसँ दूर करबाक प्रयास।

- यश पाल

आभार-ज्ञापन

राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा (एन0 सी0 एफ0) 2005 विविध विद्वान, प्रधानाचार्य, शिक्षक, अभिभावक, गैर सरकारी संस्था, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 केर सदस्यगण आ बहुतो अन्य व्यक्तिक सहयोगसँ अपन वर्तमान स्वरूपमे आबि सकल अछि। एहिमे बहुतो राज्यक शिक्षा सचिव, एस0 सी0 आई0 आर0 टी0 केर निदेशक लोकनि आ आर0 आई0 ई0 मे भाग लेएबला प्रतिभागीगण केर सहयोग महत्त्वपूर्ण अछि। विचारकेँ मूर्त्त रूप देबामे कएक निजी, आ केन्द्रीय विद्यालयक प्रधानाचार्य लोकनिक आ ग्रामीण विद्यालयक शिक्षकगणक विचार महत्त्वपूर्ण भेल। हजारो छात्र, अभिवावक आ आम नागरिक लोकनिक विचार- ई मेल आ अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडियाक माध्यमसँ पहुचैत रहल जाहिसँ विविध विचारधाराकेँ बुझबामे मदति भेटल।

एहि दस्तावेजकेँ एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 केर अपन प्रतिष्ठान आ उच्चस्तरीय समिति जेना- सम्पादकीय समिति, सामान्य समिति आ केन्द्रीय शिक्षा विचार समिति केर रचनात्मक विचार आ सुझावसँ अत्यन्त लाभ भेलैक। राज्य सरकार सभसँ विशेष अनुरोध कएल गेल छल जे ओ सभ एन0 सी0 एफ0 2005 क प्रारूप पर विमर्श करबाक हेतु जुलाई -अगस्त 2005 मे कार्यशालाक आयोजन करथि, आ बहुतो राज्य सरकार आ अजीम प्रेमजी फॉउण्डेसन जे मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि राज्य सरकारसँ मिलिकए सेमिनारक आयोजन कएलक आ रिपोर्ट पठओलक केर हम सभ आभारी छियनि। विमर्श केरल शास्त्र साहित्य परिषद (त्रिचुर), अखिल भारतीय जन विज्ञान तन्त्र (त्रिचुर), भारत ज्ञान विज्ञान समिति (नई दिल्ली), एस0 आई0 ई0 एम0 ए0 टी0 (पटना), कन्सर्ण्ड फॉर वर्किंग चिल्ड्रेन (बंगलोर), ट्रस्ट फॉर एजुकेशनल इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट (राँची) कोशिश चैरिटेबल ट्रस्ट (पटना) आ दिगन्तर (जयपुर) मे सेहो भेल। भारतीय विद्यालयी प्रमाणपत्र परीक्षा परिषद (आई0 एस0 सी0 ई0,नई दिल्ली),केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड(नई दिल्ली) राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विद्यालयी परीक्षा बोर्ड परिषद् (कोबसे, नई दिल्ली) विचारक प्रत्यक्षीकरणमे अत्यन्त मदति कएलक। सम्मेलनक मेजबानी करबाक हेतु भारतीय अकादमिक स्टाफ कॉलेज , हैदराबाद; होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, मुंबई; जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकता; अली

यावर जंग राष्ट्रीय बधिर संस्था, मुंबई; राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र, सिंकदराबाद; एम0 भी0 फॉउण्डेशन, सिकंदराबाद; सेवाग्राम, वर्धा; राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्था, गुवाहाटी; राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, तिरूवनंतपुरम्; अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद; भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर; राष्ट्रीय आकृति संस्थान, अहमदाबाद; एस0 एम0 वाई0 एम0 समिति, लोनावला, पुणे; नार्थ इस्टर्न हिल युनिवर्सिटी, शिलौंग; डी0 एस0 ई0 आर0 टी0, बैंगलोर; आई0 यू0 सी0 ए0 ए0, पुणे; पर्यावरण शिक्षा केन्द्र, अहमदाबाद आ विजय शिक्षक कॉलेज, बैंगलोर केर सदस्यगणक प्रति अभार ज्ञापन करैत छियनि।

एन0 सी0 एफ0 2005 केर संविधानक अष्टम अनुसूचिमे शामिल भाषामे अनुवाद कएल गेल अछि। एहि हेतु डॉ0 डी0 बरकाटाकी (असमिया), श्री देवाशीष सेनगुप्ता (बंगला), डॉ0 अनिल बोडो (बोडो), प्रो0 वीणा गुप्ता (डोगरी), श्री कश्यप मनकोदी (गुजराती), सुश्री प्रगति सक्सेना आ श्री प्रभात रंजन (हिन्दी), श्री एस0 एस0 यदुराजन (कन्नड़), डॉ0 सोमनाथ रैना (कश्मीरी), श्री दामोदर धनेकर (कोंकणी), डॉ0 नीता झा (मैथिली), श्री के0 के0 कृष्ण कुमार (मलयालम), श्री टी0 सुरजीत सिंह थोकचोम (मणिपुरी), डॉ0 दत्त देसाई (मराठी), डॉ0 खगेन शर्मा (नेपाली), डॉ0 मदन मोहन प्रधान (उड़िया), श्री रंजीत सिंह रंगीला (पंजाबी), श्री दत्त भूषण पोल्कन (संस्कृत), श्री सुबोध हंसदा (संथाली), डॉ0 के0 पी0 लेखवानी (सिंधी), श्री ए0 वल्लीनयगम (तमिल), श्री वी बालासुब्रमण्यम (तेलुगू) आ डॉ0 नजीर हुसैन (उर्दू) केर धन्यवाद। हम सभ हार्दिक धन्यवाद दैत छियनि श्री राघवेन्द्र, सुश्री रितु, डॉ0 अपूर्वानन्द, सुश्री ललिता गुप्ता, डॉ माधवी कुमार, डॉ0 मंजुला माथुर आ सुश्री इन्दु कुमारकेँ हिन्दीक विषयवस्तुकेँ सम्पादित करबाक हेतु, आ श्री हर्ष सेठी एवं सुश्री मालिनी सूदकेँ, ध्यानपूर्वक पाण्डुलिपिक जाँच करबाक हेतु आ श्री नसीरुद्दीन खान एवं डॉ0 संध्या साहू केर पाण्डुलिपि पढ़बाक आ उचित सुझाव देबाक हेतु। हम आभार व्यक्त करैत छी सुश्री श्वेता राव केर एहि दस्तावेजक आकृति आ प्रारूप बनएबाक हेतु, श्री रोबिन बनर्जीक मुखपृष्ठ आ पृष्ठ 78 केर चित्रक हेतु आ सी0 आई0 ई0 टी0 केर श्री आर0 सी0 दास केर बाँकी चित्र सभक हेतु। डी0 सी0 ई0 टी0 ए0 केर सहकर्मी लोकनिक एहि दस्ताबेजकेँ एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 केर वेबसाइटक माध्यमसँ प्रसारित करबाक हेतु आ प्रकाशन विभागक एहि एन0 सी0 एफ0 केर एकर वर्तमान स्वरूपमे अनबाक हेतु आभारी

छी। हम सभ श्री आर0 के0 लक्ष्मणजी केर अत्यन्त आभारी छियनि जे ओ अपन बनाओल दू गोट कार्टून (पृ0 11 आ 77) पुनर्मुद्रित करबाक आज्ञा देलनि।

ई सूचि कोनो रूपेँ पूर्ण नहि अछि आ हम सभ ओहि सभ व्यक्तिक आभारी छी जे एहि दस्तावेजक निर्माणमे सहयोग कएलनि।

***

सम्पादकीय सारांश

एन0 सी0 इ0 आर0 टी0 केर कार्य कारिणी केर 14 आ 19 जुलाई 2004 केर बैसारमे राष्ट्रीय पाठ्यक्रमकेँ परिवर्द्धित करबाक निर्णय लेल गेल। ई निर्णय माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा लोक सभामे देल गेल ओहि वक्तव्यक अनुसरणमे लेल गेल जे परिषद् एहन परिवर्द्धन करत। एकर बाद मानव संसाधन विकास मंत्रालयक शिक्षा सचिव परिषदक निदेशककेँ विद्यालयक हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना (एन0 सी0 एफ0 एस0 ई0 2000) केँ बिनु बोझक शिक्षा (1993) बला रिपोर्टक आलोकमे परिवर्द्धित करबाक आवश्यकता देखबैत पत्र लिखलनि । एहि बिन्दुक सन्दर्भमे प्रोफेसर यशपालक अध्यक्षतामे एक राष्ट्रीय स्टियरिंग कमीटी आ 21 गोट राष्ट्रीय फोकस समूहक गठन कएल गेल। एहि समितिमे उच्च शिक्षासँ संबंधित संस्थानक सदस्यगण, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान आ प्रशिक्षण परिषद्क अकादमिक सदस्य, विद्यालय, शिक्षक आ गैर सरकारी संगठनक, सदस्यक नाम सामिल कएल गेल। देशक प्रत्येक हिस्सामे एहिसँ संबंधित विचार विमर्श आयोजित कएल गेल। संगहि मैसूर, अजमेर, भोपाल आ शिलांगमे परिषदक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानमे क्षेत्रीय संगोष्ठीक आयोजन सेहो कएल गेल। राज्यक सचिव, राज्यक शैक्षिक अनुसंधान आ प्रशिक्षण परिषदक परीक्षा बोर्डसँ विचार-विमर्श कएल गेल। ग्रामीण शिक्षकसँ सुझाव लेबाक हेतु एक राष्ट्रीय सम्मेलनक आयोजन कएल गेल। राष्ट्रीय आ क्षेत्रीय समाचार-पत्रमे विज्ञापन देल गेल जाहिसँ लोक नव पाठ्यक्रमक संबंधमे अपन विचार दए सकए आ पैघ स्तर पर लोकसभ अपन विचार पठयबो कएलक।

परिचर्चित राष्ट्रीय पाठ्यक्रम दस्तावेजक आरम्भ रवीन्द्रनाथ ठाकुरक निबन्ध 'सभ्यता आ प्रगतिक' एक उदाहरणसँ होइत अछि जाहिमे कवि हमरा सभकेँ स्मरण दिअबैत छथि जे सर्जनात्मकता आ उदार आनन्द बाल्यपनक एक चाभी थिक आ एकर खतरा अछि जे एक अबूझ युवक संसार एकरा कदाचित विकृत ने कए देथि। आरम्भिक अध्यायमे स्वतन्त्राक बाद कएल गेल पाठ्यक्रममे सुधारक प्रयासक चर्चा कएल गेल अछि। एन0 पी0 ई0 1986 मे ई प्रस्ताव कएल गेल छल जे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना एक राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था विकसित करबाक साधन होयबाक चाही जे भारतीय संविधानमे राष्ट्रीय निर्माणक 'विजन' केँ अपन आधारभूमि मानए। प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992 प्रासंगिकता, लचीलापन आ गुणवत्ताक तत्त्व पर जोर दैत एकर सीमाकेँ किछु आओर विस्तार कएलक।

सामाजिक न्याय आ समानताक मूल्य पर आधारित एक धर्म निरपेक्ष, समतामूलक आ बहुलतावादी समाजक रूप भारतक संवैधानिक 'विजन' सँ प्रेरणा ग्रहण करैत एहि दस्तावेजमे शिक्षाक किछु व्यापक उद्देश्य चिह्नित कएल गेल अछि। एहिमे सामिल अछि विचार आ कर्मक स्वतन्त्रता, दोसरक नीक आ भावनाक प्रति संवेदनशीलता, नव स्थितिक लचीलापन आ रचनात्मक विधिसँ मुकावला करब, लोकतान्त्रिक, प्रक्रियामे भागीदारीक उत्सुकता आ आर्थिक प्रक्रिया एवं सामाजिक बदलावमे योगदान करबाक हेतु कार्य करबाक क्षमता। यदि शिक्षाकेँ, जीवाक लोकतान्त्रिक तरीकाकेँ सुदृढ़ करबाक अछि, तऽ ओकरा विद्यालयमे प्रवेश करए काल पहिल पीढ़िक उपस्थितिक ध्यान राखए पड़त जकर विद्यालयमे रहब ओहि संविधान संशोधनक कारणेँ अनिवार्य भए गेल अछि, जे आरंभिक शिक्षाकेँ प्रत्येक बच्चाक मूल अधिकार बनाए देलक अछि। एहि संविधान संशोधनसँ हमरा लेकनि पर ई जिम्मेदारी आबि गेल अछि जे हम सभ बच्चाकेँ जाति, धर्म, लिंग आ विभिन्न प्रकारक चुनौतीसँ निरपेक्ष स्वास्थ्य, पोषण आ समावेसी विद्यालयी वातावरण उपलब्ध कराबी जे ओकरा सभकेँ शिक्षा ग्रहणमे मदति पहुँचाबए। ई तथ्य जे शिक्षा बच्चाक हेतु तनावक एक कारण बनि गेल अछि एकर प्रमाण अछि हमर सभक शैक्षिक उद्देश्य आ ओकर गुणवत्तामे आइ विकृति आबि गेल अछि। एहि विकृतिकेँ दुरुस्त करबाक हेतु प्रस्तुत एन0 सी0 एफ0 दस्तावेज पाठ्यक्रम निर्माणक पाँच निर्देशक सिद्धान्तक प्रस्ताव रखलक अछि : 1. ज्ञानकेँ विद्यालयक बाहरक जीवनसँ जोड़ब, 2. सुनिश्चित करब जे शिक्षा रटबा पर आधारित पद्धतिक त्याग करए 3. पाठ्यक्रमकेँ एहि तरहेँ समृद्ध करब जे ओ पाठ्यपुस्तकसँ आओर आगाँ जा सकए 4. परीक्षाकेँ आओर लचकदार बनबैत ओकरा कक्षाक गतिविधिसँ जोड़ब आ 5. राष्ट्रक लोकतांत्रिक व्यवस्थाक अंतर्गत ध्यान रखबाक चिंतासँ युक्त व परिचयकेँ पोषित करबाक आवश्यकता छैक।

आरम्भिक कक्षाक मध्य हमर सभक सभ शैक्षणिक प्रयास एहि पर पूर्णरूपेण निभर करैत अछि जे पूर्व प्राथमिक शिक्षाक (ई0 सी0 सी0 ई0) व्यावसायिक दक्षताक संग योजना बनाओल जाए आ ओकर सार्थक विस्तार कएल जाए। वस्तुतः प्रारम्भिक विद्यालय पाठ्यक्रम आ पाठ्यपुस्तक कोनहुँ प्रकारक सुधार पूर्व प्राथमिक शिक्षा (इ0 सी0 सी0 ई0) क बहु परिचित सिद्धान्तक आलोकमे कएल जएबाक चाही। एहिसँ ओ सैद्धान्तिक आधार भेटैत अछि जाहि पर दोसर अध्ययनमे पाठ्यक्रमक विभिन्न क्षेत्रक हेतु सुझाव देल गेल अछि। बच्चा ज्ञानक रचना करैत अछि, एकर निहितार्थ ई अछि जे पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्चा

आओर पाठ्यपुस्तक एहन होअए जाहिसँ बच्चाक स्वाभाव आ परिवेशक संगतिमे कक्षाक अनुभवकेँ संयोजित करबामे शिक्षक अपनाकेँ सक्षम बुझथि। शिक्षणक उद्देश्य बच्चाक शिक्षणक सहज इच्छा आ युक्तिकेँ आओर समृद्ध करब होएबाक चाही ज्ञानकेँ सूचनासँ पृथक कएकेँ देखबाक आवश्यकता अछि आ शिक्षणकेँ ज्ञान घोटएबाक अथवा प्रसारित करबाक माध्यमक रूपमे नहि देखि व्यावसायिक गतिविधिक रूपमे देखबाक आवश्यकता अछि। सक्रिय गतिविधिक माध्यमे बच्चा दुनियासँ अपना हेतु ज्ञान प्राप्त करबाक चेष्टा करैत अछि। तेँ प्रत्येक साधनक प्रयोग एहि तरहेँ कएल जएबाक चाही जे बच्चाकेँ स्वयंकेँ अभिव्यक्त करबामे, वस्तुक व्यवहार करबामे, अपन प्राकृतिक आ सामाजिक परिवेशक खोजबीन करबामे आ स्वस्थ रूपसँ विकसित होएबामे सक्षम भए सकए। यदि बच्चाक कक्षाक अनुभवकेँ एहि तरहेँ संगठित कएल जाए जे ओकरा ज्ञानक रचना करबाक अवकाश भेटि सकए तऽ हमर सभक विद्यालयी व्यवस्थामे व्यापक संरचनात्मक सुधारक आवश्यकता अछि (पाँचम अध्याय) आ एकर प्रयोजन सेहो अछि जे विद्यालय विषय अथवा पाठ्यक्रमक क्षेत्र सभकेँ फेरिसँ परिभाषित कएल जाए (तेसर अध्याय) विद्यालयक प्रकृतिक गुणवत्ताकेँ सुधारबाक हेतु संसाधन जुटओल जाए (चारिम अध्याय)।

विद्यायली पाठ्यक्रमक चारि परचित क्षेत्र (भाषा, गणित, विज्ञान आ समाज विज्ञान) मे सार्थक परिवर्तनक सुझाव देल गेल अछि। एहन एहि उद्देश्य सँ कएल गेल अछि जे शिक्षा आइ आओर भविष्यक आवश्यकताक हेतु प्रासंगिक बनि सकए आ बच्चाकेँ ओहि तनावसँ मुक्त कएल जाए जकरा ओ अद्यावधि भोगि रहल अछि। ई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम दस्तावेज (एन0 सी0 एफ0) एहि गप्पक पैरिवी करैत अछि जे विषय सभक बीचक देवालकेँ एहि तरहेँ नीच कए देल जाए जे बच्चाकेँ ज्ञानक समग्र आस्वाद भेटि सकए आ कोनो वस्तुकेँ बुझबासँ होए बला खुखी प्राप्त भए सकए। एकर संग ईहो सुझाओल गेल अछि जे पाठ्यपुस्तक आ आन समग्रीक बहुलता, जाहिमे स्थानीय ज्ञान आ पारम्परिक कौशल सम्मिलित भए सकैछ आ बच्चाक घर आ समुदायिक परिवेशसँ जीवन्त संबंध बनबएबला उत्तेजक विद्यालयक माहौल सुनिश्चित कएल जाए। भाषाक संदर्भमे सुझाव देल गेल अछि जे त्रिभाषाक फार्मूलाकेँ लागू करबाक नव कोशिश कएल जएबाक चाही जाहिमे आदिवासी भाषा सहित बच्चाक मातृभाषाक शिक्षाक माध्यमक रूपमे स्वीकृत देबा पर जोर अछि। बच्चा केँ बहुभाषिक दक्षता, अंग्रेजीमे दक्षता सहित विकसित करबाक स्रोतक रूपमे भारतीय समाजक बहुभाषिक प्राकृतिक उपयोग करबाक आवश्यकता छैक। ई तखनहि सम्भव अछि जखन

शिक्षाकेँ मातृभाषामे एकटा विवेकपूर्ण भाषा शिक्षण पद्धतिक आधार विकसित कएल जाए। पढब़, लिखब, बाजब आ सुनब ई क्रिया सभ पाठ्यक्रमक सभ क्षेत्रमे बच्चाक प्रगतिमे भूमिकाक निर्वहण करैत अछि आ एकरा सभकेँ पाठ्यक्रमक योजनाक आधार होएबाक चाही। आरम्भिक कक्षाक पूरा समयमे पढ़बा पर जोर देब आवश्यक छैक जाहिसँ सभ बच्चाकेँ विद्यालयी शिक्षाक ठोस आधार भेटि सकए।

गणितक शिक्षा एहन होएबाक चाही जाहिसँ बच्चा सभक ओ संसाधन आओरो समृद्ध होअए जे चिन्तन आ तर्कमे, अमूर्त्तक संकल्पना आ ओकर व्यवहार करबामे, समस्या सभकेँ सूत्रबद्ध करबा आ सोझरएबामे ओकर सहायता करैत छैक। उद्देश्यक ई व्यापक फलक प्रासङ्गिक आ अर्थपूर्ण गणित पढ़ाकए तय कएल जा सकैछ जे बच्चाक अनुभवमे गाँथल होअए। गणितमे सफलताकेँ सभ बच्चाक अधिकारक रूपमे देखबाक आवश्यकता छैक। एहि हेतु एकर सीमाकेँ आओरो विस्तृत करबाक आवश्यकता होएत आ आन विषय सभसँ एकरा जोड़ब अनिवार्य होएत। सभ विद्यालयकेँ कम्प्यूटर हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर आ कनेक्टिविटी उपलब्ध करएबा सन ढाँचागत चुनौतीक सामना करबाक आवश्यकता छैक।

विज्ञानक शिक्षणमे एहि तरहक परिवर्द्धन कएल जएबाक चाही जे सभ बच्चाकेँ ओकर दैनिक अनुभवक परीक्षा करबाक आ ओकर विश्लेषण करबामे सक्षम बना सकए। परिवेशक प्रति सजगता पर सभ विषयमे जोर देल जएबाक आवश्यकता अछि। एहिमे परिसरसँ बाहर कएल जाएवला प्रोजेक्ट सहित दोसर व्यापक स्तरक गतिविधि सामिल होएत। एहि प्रोजेक्ट सभसँ उत्पन्न ज्ञान आ जानकारी सँ भारतक पर्यावरणक विषयमे जन चेतना बढ़बएबला आंकड़ा बनि सकैछ, जे सभसँ महत्त्वपूर्ण शैक्षिक संसाधन होएत यदि सुनियोजित होअए तऽ एहि प्रोजेक्ट सभसँ ज्ञानक निर्माण भए सकैत अछि। बाल विज्ञान काग्रेसक तर्ज पर एक सामाजिक आन्दोलनक कल्पना कएल जा सकैत अछि। एहिसँ पूरा आन्दोलनक कल्पना कएल जा सकैछ अछि। एहिसँ पूरा देशक स्तर पर आविष्कारक दिशाकेँ प्रोत्साहित कएल जा सकत आ सम्पूर्ण दक्षिण एसिया धरि विस्तृत कएल जा सकए।

समाज विज्ञानक प्रसंगमे प्रस्तुत पाठ्यक्रमक दस्तावेजेमे ज्ञानक भिन्न-भिन्न क्षेत्रक विशिष्ट पहचानकेँ स्वीकार कएल गेल अछि मुदा एहि पर जोर अछि जे महत्त्वपूर्ण विषयक संदर्भमे समग्र दृष्टि सएह अपनाओल जाए जेना जल। कमजोर वर्गक लोक समूहक दृष्टिएँ समाज विज्ञानक अध्ययनक प्रस्ताव करबाक दृष्टिसँ एक पूर्ण परिवर्त्तनक अनुसंशा कएल गेल अछि। समाज विज्ञानक सम्पूर्ण क्षेत्रमे जेण्डरक संदर्भमे न्याय आ आदिवासी तथा दलित

मामलाकेँ लए कए जागरुकता आ अल्पसंख्यक संवेदनशीलताक प्रति सजगता आवश्यक होएबाक चाही। समाज शास्त्रक बदलामे राजनीति विज्ञान आनल जएबाक चाही आ बच्चाक अतीतक अवधारणा आ ओकर नागरिक पहचानकेँ आकार देबामे इतिहासक प्रभावक महत्त्वकेँ मान्यता देल जएबाक चाही।

ई पाठ्यक्रम दस्तावेज चरि क्षेत्र दिस ध्यान देअएबैत अछि, जे एहि प्रकारक अछि : कार्य, कला आ पारम्परिक दस्तकारी, स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा आ शांति। कार्यक सन्दर्भमे किछु मौलिक दृष्टि सुझाओल गेल अछि जे शिक्षाकेँ आरम्भिक स्तरसँ ऊपर धरिक कार्यसँ जोड़ैत अछि। एकरा पाछू कारण ई अछि जे कार्य ज्ञानकेँ सक्रिय अनुभवमे बदलि दैत अछि आ सार्थक, व्यक्तिगत तथा सामाजिक मूल्य उत्पन्न करैत अछि यथा आत्मनिर्भरता, रचनात्मक आ सहकारिताक मूल्य। ई ज्ञान आ रचनात्मकताक नव रूपक व्याख्या करबाक सेहो प्रेरणा दैत अछि। विद्यालयक ऊपरी स्तर पर कार्यक हेतु विद्यालयक बाहरक संसाधनकेँ औपचारिक मान्यता देबाक युक्तिक अनुशंसा अछि जाहिसँ ओहि बच्चाकेँ लाभ पहुँच सकए जे आजीविकासँ सोझे जुड़ल रहि शिक्षाक चयन करैत अछि। विद्यालयसँ बाहरक एहि प्रकारक एजेन्सीकेँ औपचारिक मान्यताक आवश्यकता अछि जाहिसँ ओ बच्चाकेँ कार्यक जगह दए सकए जतए बच्चा औजार आ दोसर साधनसँ कार्य करए। दस्तकारीक मानचित्रीकरणक अनुशंसा कएल गेल अछि जाहिसँ ओहि क्षेत्रक पहचान कएल जा सकए जतए बच्चाकेँ स्थानीय कारीगरक मदतिसँ दस्तकारीमे प्रशिक्षण उपलब्ध कराओल जाए।

एहि स्तर पर विषयक रूपमे कलाकेँ जगह देबाक अनुशंसा कएल गेल अछि जाहिमे गायन, नृत्य, दृश्य कला आ नाटक सामिल अछि। प्रशिक्षणक जगह परस्पर क्रियात्मक पद्धति पर जोर होएबाक चाही कारण जे कला शिक्षणक उद्देश्य सौन्दर्यात्मक आ व्यक्तिक चेतनाकेँ प्रोत्साहित करब थिक आ विविध रूपमे स्वयंकेँ व्यक्त करबाक क्षमताकेँ बढ़ाबा देब थिक आ भारतक पारंपरिक कारीगरीकेँ ओकर आर्थिक आ सौन्दर्यात्मक मूल्यक आधार पर विद्यालयी शिक्षाक हेतु प्रासंगिक बुझबाक थिक।

विद्यालयक बच्चाक कामयाबी ओकर पोषण आ सुनियोजित शारीरिक गतिविधक कार्यक्रम पर निर्भर अछि। माध्याह्न भोजन कार्यक्रमकेँ सुदृढ़ करबाले आवश्यक संसाधनक व्यवस्था, विद्यालयी समय देल जाएब आवश्यक अछि। एहि हेतु विशेष प्रयासक आवश्यकता होएत। स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षाक कार्यक्रम विद्यालयपूर्व अवस्थासँ लए आगू धरि छात्रहि जकाँ छात्राक दिसि सेहो ध्यान देल जएबाक चाही।

सम्पूर्ण विश्वमे बढ़ैत असहिष्णुता आ मतभेदकेँ सोझरएबाक तरीकाक रूपमे हिंसा दिसि बढ़ैत झुकावकेँ देखैत एहि बातक अनुशंसा कएल गेल अछि जे शांतिकेँ राष्ट्रीय निर्माणक पूर्व शर्त आ एक सामाजिक संस्कारक रूपमे समग्र मूल्य संरचनाक रूपमे स्वीकार कएल जाए जकर आइ अत्यधिक प्रसंगिकता अछि। एक लोकतान्त्रिक आ न्यायपूर्ण संस्कृतिमे बच्चाक सामाजीकरणक हेतु शांति शिक्षाक सम्भावनाकेँ विभिन्न गतिविधिक द्वारा सभ स्तर पर आ सभ विषयमे विवेकपूर्ण चुनावक माध्यमे साकार एकल जा सकैछ। शांति शिक्षाकेँ शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रममे सामिल करबाक अनुशंसा कएल गेल अछि।

विद्यालयक प्रवृतिकेँ पाठ्यक्रमक एक अंगहि जकाँ देखल गेल अछि कारण जे ई बच्चाकेँ शिक्षाक उद्देश्य आ सिखबाक ओहि युक्तिक हेतु तैयार करैत अछि जे विद्यालयमे सफलताक हेतु आवश्यक अछि।। एक संसाधान रूपमे विद्यालयक समयकेँ लचकदार ढ़ंग सँ नियोजित कएल जएबाक आवश्यकता अछि। स्थानीय स्तर पर नियोजित चलकदार विद्यालयी कैलेण्डर आ समय सारणीक अनुशंसा कएल गेल अछि। जे प्रोजेक्ट आ प्राकृतिक तथा पारम्परिक आ धरोहर स्थलक हेतु भ्रमण सन भिन्न-भिन्न ढंगक गतिविधिक हेतु भिन्न-भिन्न समय निर्धारित करबाक अवकाश दए सकए। एहि बातक हेतु कोशिश करए पड़त जे बच्चाक हेतु सिखबाक आओर साम्रगी तैयार कएल जा सकए, खास कए स्थानीय भाषामे किताब आ संदर्भ साम्रगी, विद्यालय आ शिक्षकक हेतु संदर्भ पुस्तकालय आ परस्पर क्रियात्मक होएबाक एक तरफा टेक्नोलॉजीक जगह परस्पर क्रियात्मक टेक्नोलॉजी। ई दस्तावेजक जगह माध्यमिक स्तर पर विकल्पक बहुलता आ मुक्तताक महत्त्व पर जोर दैत अछि आ बच्चाकेँ बन्द खाँचमे राखि देबाक हमर सभक दिमागमे बैसल प्रवृतिमे बच्चाक हेतु खास कए ग्रामीण क्षेत्रक बच्चाले अवसर सीमित भए जाइत अछि।

संरचनात्मक सुधारक विषयमे ई दस्तावेज पंचायती राज व्यवस्थाकेँ सुदृढ़ करबा पर बल दैत अछि। गुणवत्ता आ जवाबदेही बढयबाक माध्यमक रूपमे सामुदायिक भागीदारीकेँ प्रोत्साहित करबाले एक अधिक सुनियोजित आ नेतृत्व आवश्यक अछि जाहिसँ गुणवत्ताक स्तर उठाओल जा सकए। वातावरणसँ संबंधित अनेक विद्यालय आधारित प्रोजेक्ट, पंचायती राज संस्था सभक हेतु मार्ग दर्शक भए सकैछ जे ओ कोना अपन स्थानीय पर्यावरण रूपी संसाधनक प्रबंधन एवं संवर्द्धन करए। विद्यालयी स्तर पर अकादमिक योजना आ नेतृत्व एवं ब्लाँक आ संकुल स्तर पर भूमिकाक युक्ति युक्त विभाजन आवश्यक अछि। चट्टोपाध्याय कमीशन (1984) द्वारा सुझाओल गेल व्यावसायिक मानकमे ढ़ीलापन अनबाक हालक

प्रवृत्तिकेँ रोकबाले शिक्षक प्रशिक्षणमे मूलगामी परिवर्त्तनक आवश्यकता अछि। सेवापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमकेँ आओर लम्बा अवधिक तथा अधिक समग्रताक संग होएब आवश्यक अछि, जाहिसँ बच्चाकेँ ध्यानपूर्वक अवलोकन करबाले पर्याप्त अवसर आ विद्यालयमे इंटर्नशिपक द्वारा शैक्षणिक सिद्धान्तकेँ व्यवहारसँ जोड़बाक पूर्ण अवसर भेटि सकए।

पाठ्यक्रमक सुधारक हेतु सभसँ आवश्यक संरचनागत डेग होएत परीक्षामे सुधारक जाहिसँ विशेषरूपेँ दसमी आ बाहरहमी कक्षामे आ ईहो जे सामान्यतः बच्चा आ ओकर माय-बाप पर बढ़ैत मनोवैज्ञानिक दबावक गढ़ैत समस्याक कोनो समाधान निकालल जा सकए। एहि हेतु विशेष प्रयासक आश्यकता छैक, यथा प्रश्नपत्रक पूरा स्वरूप परिवर्तन, जाहिमे तर्कशक्ति आ रचनात्मक क्षमताक आकलनकेँ कक्षाक गतिविधिसँ जोड़बाक आवश्यकता अछि। आइ प्रचलित पास आ फेलक सामान्यीकृत श्रेणीक कमीकेँ दूर करबाक हेतु आवश्यकता होएत जे एहन युक्ति ताकल जाए जे बच्चाकेँ भिन्न-भिन्न स्तरक उपलब्धिक विकल्प लेबाकेँ प्रेरित कए सकए। बोर्ड पूर्व परीक्षा पर अतिरिक्त जोरकेँ सेहो हतोत्साहित करबाक आवश्यकता अछि।

अंततः ई दस्तावेज विद्यालयी व्यवस्था आ दोसर सिविल समूहक बीच सहभागिताक अनुशंसा करैत अछि जाहिमे गैर सरकारी संगठन आ शिक्षक संगठन सामिल होएत। पहिनहिसँ विद्यमान नवाचारक अनुभवकेँ मुख्यधाराक स्वरूप देबाक आवश्यकता अछि। आइ आवश्यकता एहि बातक अछि जे आरम्भिक शिक्षाक सर्वव्यापीकरणमे निहित चुनौतीक प्रति सजगताकेँ राज्य आ बच्चाकेँ लए कार्य करैत सभ एजेन्सीक बीच एक व्यापक सहभागिताक विषय बनि जाए।

***

राष्ट्रीय संचालन समितिक सदस्यगण

1. प्रो. यश पाल(अध्यक्ष)
   पूर्व अध्यक्ष,
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
   11बी,सुपर डीलक्स फ्लैट्स,
   सेक्टर 15ए,नोएडा,उत्तर प्रदेश।
2. आचार्य राममूर्त्ति
   अध्यक्ष,
   श्रम भारती,खादीग्राम
   पो. खादीग्राम
   जिला- जमुई-811313,बिहार।
3. डॉ शैलेश ए. शिराली
   प्रधानाचार्य,
   अम्बर वैली रेजिडेंशियल स्कूल,
   के.एम.रोड,मुग्थिहल्ली,
   चिकमगलूर-577101,कर्नाटक।
4. श्री रोहित धनकर
   निदेशक,
   दिगन्तर टोड़ी, रामजनीपुरा,
   खोनागोरियाँ रोड, पो. जगतपुरा,
   जयपुर-302025, राजस्थान।
5. श्री पोरोमेश आचार्य
   (पूर्व सदस्य,शिक्षा आयोग,पश्चिम बंगाल)
   एल./एफ. 9, कुष्ठिया रोड,
   गवर्नमेंट हाउसिंग एस्टेट,
   अवन्तिका आवासम्,
   कोलकाता-700039, पश्चिम बंगाल।
6. डॉ मीना स्वामिनाथन
   मानद निदेशक,
   सेंटर फॉर जेंडर एण्ड डेवलपमेंट,
   एम.एस.स्वामिनाथन रिसर्च फॉउण्डेशन
   थर्ड क्रॉस रोड,
   तारामणि इन्स्टिच्युशनल एरिया,
   चेन्नई-600113, तमिलनाडु।
7. डॉ पद्मा एम. सारंगपाणि
   एसोसिएट फेलो,
   राष्ट्रीय विकसित शिक्षा केन्द्र,
   भारतीय विज्ञान संस्थान कैम्पस
   बैंगलोर-560012, कर्नाटक।
8. प्रो. आर. रामानुजम
   गणितीय विज्ञान संस्थान,
   फोर्थ क्रॉस, सी.आइ.टी. कैम्पस,
   थारामणि, चेन्नई-600113,
   तमिलनाडु ।
9. प्रो. अनिल सदगोपाल
   (शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
   ई-8/29ए, सहकार नगर,
   भोपाल-462039, मध्य प्रदेश।
10. प्रो. जी. रविन्द्रा
    प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    (एन.सी.इ.आर.टी.)
    मानसगंगोत्री, मैसूर-570006
    कर्नाटक।

11. प्रो. डॉ.(सुश्री) दमयन्ती जे.मोदी
(पूर्व अध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
भावनगर विश्वविद्यालय)2209,ए/2
आनन्दधारा, वदोदरिया पार्कक समीप,
हिल ड्राइव,भावनगर-364002,गुजरात।

12. सुश्री सुनीला मसीह
शिक्षिका,
मित्रा जी.एच.एस.विद्यालय,सोहागपुर पो.,
जिला होशंगाबाद-461771,
मध्य प्रदेश।

13. सुश्री हर्ष कुमारी
प्रधानाध्यापिका,सी.आइ.इ,
प्रायोगिक मूल विद्यालय,
शिक्षा विभाग,दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली-110007

14. श्री त्रिलोचन दास गर्ग
प्रधानाध्यापक,केन्द्रीय विद्यालय
फरीदकोट छावनी,पंजाब

15. प्रो. अरविन्द कुमार
केन्द्र निदेशक,
होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र,
वी.एन.पुराव मार्ग,
मनखुर्द मुंबई-400088,महाराष्ट्र

16. प्रो. गोपाल गुरु
राजनीति अध्ययन केन्द्र,
सामाजिक विज्ञान विद्यालय,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-110067

17. डॉ रामचन्द्र गुहा
22ए.,ब्रुन्टन रोड,
बैंगलोर-560025,कर्नाटक।

18. डॉ बी.ए. दबला
प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
समाजशास्त्र एवं सामाजिक कार्य विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय,
श्रीनगर-190006,जम्मू कश्मीर।

19. श्री अशोक वाजपेयी
पुर्व कुलपति,
महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
सी.-60,अनुपम अपार्टमेन्ट्स,
बी.-13,वसुन्धरा एन्क्लेव,
दिल्ली-110096।

20. प्रो. वालसन थम्पू
सेंट स्टीफेंस अस्पताल,
जी.-3,प्रशासनिक संकाय,
तीस हजारी,दिल्ली-110054

21. प्रो. शान्ता सिन्हा
निदेशक,एम. वैंकटरंगय्या फॉउण्डेशन,
201,नारायण अपार्टमेन्ट्स,
पश्चिम मर्रेदपल्ली,
सिकन्दराबाद-500026,आंध्र प्रदेश।

22. डॉ (श्रीमति)विजया मुलाय
संस्थापक प्रधानाचार्य,
(सी.इ.टी.,एन.सी.इ.आर.टी.),अध्यक्ष
इण्डिया डॉकूमेंट्री प्रोड्यूसर्स एसोशिएसन, बी.-42,
फ्रेण्ड्स कॉलोनी(पश्चिम),नई दिल्ली-110065

23. प्रो. मृणाल मिरि
कुलपति,
नार्थ इस्टर्न हिल युनिवर्सिटी
पो.–नेहू प्रांगन,माउकिनरोह उमशिङ
शिलांग–793022,मेघालय।

24. प्रो. (श्रीमति) तलत अजीज
आइ.ए.एस.इ.,शिक्षा संकाय,
जामिया मिलिया इस्लामिया
जामिया नगर,नई दिल्ली–110025

25. प्रो. सविता सिन्हा
अध्यक्षा,डी.इ.एस.एस.एच.,
एन.सी.इ.आर.टी.,
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली–110016

26. प्रो. के.के. वशिष्ठ
अध्यक्ष,डी.इ.इ.
एन.सी.इ.आर.टी.,
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली–110016

27. डॉ सन्ध्या प्रांजपे
डी.इ.इ.,एन.सी.इ.आर.टी.,
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली–110016

28. प्रो सी.एस.नागराजू
अध्यक्ष,डी.इ.आर.पी.पी.
एन.सी.इ.आर.टी.,
श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली–110016

29. डॉ ज्योत्स्ना तिवारी
डी.इ.एस.एस.एच.,
एन.सी.इ.आर.टी.,
नई दिल्ली–110016

30. प्रो. एम. चन्द्रा
अध्यक्ष,डी.इ.एस.एम.
एन.सी.इ.आर.टी.,
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली–110016

31.डॉ अनीता जुल्का
उपाचार्य,
डी.इ.जी.एस.एन.,
एन.सी.इ.आर.टी
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली–110016

32. प्रो कृष्ण कुमार
निदेशक,
एन.सी.इ.आर.टी
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली–110016

33. श्रीमती अनीता कौल
सचिव,
एन.सी.इ.आर.टी
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली–110016

34. श्री अशोक गांगुली
अध्यक्ष
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,
शिक्षा केन्द्र-2,कॉम्प्यूनिटी सेंटर
प्रीत बिहार, दिल्ली-110092

35. प्रो. एम0 ए0 खादेर
(सदस्य सचिव)
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम समूह
श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016

36.एन.सी.इ.आर.टी. केर
पाठ्यक्रम समूहक सदस्य गण
डॉ0 रंजना अरोड़ा
डॉ अमरेन्द्र बेहेरा
श्री आर0 मेगानाथन

000

विषय सूची

प्राक्कथन..... 1
आभार ज्ञापन..... 4
सम्पादकीय सारांश..... 7
राष्ट्रीय संचालन समितिक सदस्य गण.....14

अध्याय-1

स्वरूप..... 24
1.1 प्रस्तावना..... 24
1.2 सिंहावलोकन..... 27
1.3 राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा..... 29
1.4 निर्दिष्ट सिद्धान्त..... 30
1.5 स्तर विस्तार..... 36
1.6 शिक्षाक सामाजिक परिप्रेक्ष्य..... 37
1.7 शिक्षाक उद्देश्य..... 39

अध्याय-2

सिखनाइ आ ज्ञान..... 42
2.1 सक्रिय विद्यार्थीक प्राथमिकता..... 43
2.2 संदर्भमे विद्यार्थी..... 44
2.3 विकास एवं पढ़ाइ..... 45
2.4 पाठ्यक्रम एवं अभ्यासक हेतु निहितार्थ..... 50
2.4.1 ज्ञानक निर्माण हेतु अध्यापन..... 51
2.4.2 पारस्परिक संवादक महत्व..... 53
2.4.3 शैक्षिक अनुभव सभक रूपरेखा..... 57
2.4.4 योजनाक उपागम..... 59
2.4.5 आलोचनात्मक शिक्षण शास्त्र..... 62
2.5 ज्ञान एवं बोध..... 67

2.5.1 मौलिक क्षमता.....69
2.5.2 व्यावहारिक ज्ञान.....71
2.5.3 बोधक रूप.....72
2.6 ज्ञानक पुनर्रचना.....75
2.7 बच्चाक ज्ञान आ स्थानीय ज्ञान.....77
2.8 विद्यालयी ज्ञान आ समुदाय.....82
2.9 किछु विकासमूलक अवधारणा.....83

अध्याय-3

पाठ्यक्रम क्षेत्र, विद्यालयक विभिन्न अवस्था आ मूल्यांकन..... 86
3.1 भाषा.....87
3.1.1 भाषिक शिक्षा.....88
3.1.2 गृह/प्रथम भाषा अथवा मामृभाषाक शिक्षा.....90
3.1.3 द्वितीय भाषाक प्राप्ति.....92
3.1.4 पढ़ाइ लिखाइ सिखब.....94
3.2 गणित.....98
3.2.1 विद्यालयी गणितक दर्शन.....99
3.2.2 पाठ्यक्रम.....103
3.2.3 कम्प्यूटर विज्ञान.....104
3.3 विज्ञान.....105
3.3.1 विभिन्न अवस्थामे पाठ्यक्रम.....107
3.3.2 दृष्टिकोण.....109
3.4 सामाजिक विज्ञान.....112
3.4.1 प्रस्तावित ज्ञान शास्त्रीय रूपरेखा.....114
3.4.2 पाठ्यक्रमक नियोजन.....115
3.4.3 शिक्षण शास्त्र आ संसाधनक उपागम.....118
3.5 कला शिक्षा.....118
3.6 स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा..... 123
3.6.1 रणनीति..... 124

3.7 कार्य आ शिक्षा.....126
3.8 शान्तिक हेतु शिक्षा..... 130
3.8.1 रणनीति..... 131
3.9 वातावरण आ शिक्षा..... 135
3.10 अध्ययन आ मूल्यांकनक योजना..... 137
3.10.1 आरम्भिक बाल शिक्षा..... 138
3.10.2 प्राथमिक विद्यालय..... 141
3.10.3 माध्यमिक विद्यालय..... 143
3.10.4 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय..... 145
3.10.5 फुजल विद्यालय आ सेतु विद्यालय..... 147
3.11 आकलन आ मूल्यांकन..... 148
3.11.1 आकलनक उद्देश्य..... 148
3.11.2 सिखनिहारक आकलन..... 151
3.11.3 सिक्षाक क्रममे आकलन..... 151
3.11.4 पाठ्यक्रमक ओ क्षेत्र जे अंकक हेतु नहि जाँचल जा सकैत अछि।.. 151
3.11.5 आकलनक प्रकृति आ विधि..... 152
3.11.6 स्व आकलन एवं प्रतिक्रिया..... 155
3.11.7 ओ क्षेत्र जकर विषयमे पुनर्चिन्तनक आवश्यकता अछि..... 156
3.11.8 विभिन्न अवस्थामे मूल्यांकन..... 156

अध्याय-4

विद्यालय एवं कक्षाक वातावरण.....158
4.1 भौतिक वातावरण.....159
4.2 सक्षम वातावरणक विकास.....164
4.3 प्रत्येक छात्रक सहभाहिता.....167
4.3.1 छात्रक अधिकार.....170
4.3.2 सम्मिलित करबाक हेतु रणनीति.....171

4.4 अनुशासन आ सहभागिता प्रवंधन.....173
4.5 अभिभावक एवं समुदायक लेल स्थान.....176
4.6 पाठ्यक्रम स्थल एवं सिखबाक संसाधन.....178
4.6.1 पाठ एवं पुस्तक.....178
4.6.2 पुस्तकालय..... 180
4.6.3 शिक्षा तकनीक..... 182
4.6.4 उपकरण एवं प्रयोगशाला..... 184
4.6.5 अन्य स्थान एवं जगह..... 185
4.6.6 बहुलता आ वैकल्पिक सामग्रीक आवश्यकता..... .186
4.6.7 संसाधनक जोगार आ व्यवस्था..... 187
4.7 समय..... 188
4.8 शिक्षकक स्वायत्तता एवं व्यावसायिक स्वतंत्रता..... 193
4.8.1 चिंतन आ योजना निर्माणक हेतु समय..... 194

अध्याय-5

व्यवस्थागत सुधार..... 198

5.1 गुणवत्ताक चिंता..... 199
5.1.1 अकादमिक योजना आ गुणवत्ताक निरीक्षण..... 202
5.1.2 विद्यालयमे आ विद्यालयक निरीक्षणक हेतु अकादमिक नेतृत्व..... 203
5.1.3 पंचायत आ शिक्षा..... 204
5.2 पाठ्यक्रम पुनर्नवीकरणक हेतु शिक्षक शिक्षा..... 207
5.2.1 शिक्षक शिक्षाक संबंधमे वर्तमान चिंता..... 208
5.2.2 शिक्षक शिक्षाक दर्शन..... 208
5.2.3 शिक्षक शिक्षा कार्यक्रममे प्रमुख परिवर्तन..... 210
5.2.4 शिक्षक शिक्षा आ प्रशिक्षण..... 214
5.2.5 सेवारत शिक्षक शिक्षाक प्रयास आ नीति..... 215
5.3 परीक्षा सुधार..... 217
5.3.1 प्रश्न पत्र निर्धारण, परीक्षा आ रिपोर्ट..... 219
5.3.2 मूल्यांकनमे लचीलापन..... .220

5.3.3 अन्य स्तर पर बोर्डक परीक्षा..... 221
5.3.4 प्रवेश परीक्षा..... 221
5.4 कार्य आधारित शिक्षा.....222
5.4.1 व्यावसायिक शिक्षा ओ प्रशिक्षण.....222
5.5 विचार आ व्यवहारमे नवाचार.....226
5.5.1 पाठ्यपुस्तकक बहुलता..... 226
5.5.2 नवाचारकेँ बढ़ावा..... .228
5.5.3 तकनीकक उपयोग..... 229
5.6 नव साझीदारी..... 229
5.6.1 गैर सरकारी संगठन, नागरिक समाज समूह आ शिक्षक संगठनक भूमिका.... 229

उपसंहार..... 234
परिशिष्ट –1
प्रत्येक अध्यायक सारांश..... 237
परिशिष्ट–2
भारत सरकारक मानव संसाधन विकास मंत्रालयक अन्तर्गत माध्यमिक आ
उच्च शिक्षा विभागक शिक्षा सचिवक पत्र..... 244

0000

“जखन हम बच्चा छलहुँ तऽ छोट-छोट वस्तु सभसँ अपन खेलओना बनएबाक आ अपन कल्पनामे नव-नव खेलक आविष्कार करबाक हमरा पूरा छूट छल। हमर खुशीमे हमर संगी सभक पूरा हिस्सा होइत छलैक,बल्कि हमर खेलक पूरा आनन्द ओकरा सभक संग खेलएबा पर निर्भर करैत छलए। एक दिन हमर सभक बालपनक एहि स्वर्गमे पैघ सभक बाजार प्रधान संसार सँ एकटा प्रलोभन प्रवेश कएलक। एकटा अंग्रेजी दोकानसँ कीनल गेल खेलओना हमर सभक एकटा संगीकेँ देल गेलैक; ओ अद्‌भुत खेलओना छलैक- पैघ आ सजीव सन। हमर संगीकेँ ओहि खेलओना पर अहंकार भए गेलैक आ तकर बाद ओकर मन हमर सभक खेलमे ओतेक नहि लगैत छलैक, ओ ओहि मूल्यवान वस्तुकेँ बहुत ध्यानसँ हमर सभक पहुँचसँ दूर रखैत छल। अपन एहि खास वस्तु पर प्रफुल्लित ओ अपन संगी सभसँ अपनाकेँ श्रेष्ठ बुझैत छलए किएक तऽ ओकर सभक खेलओना सस्त छलैक। हम निश्चित रूपसँ कहि सकैत छी जे यदि ओ इतिहासक आधुनिक भाषाक प्रयोग कए सकितए तऽ ओ यैह कहितए जे हास्यास्पद रूपसँ ओहि खेलओनाक स्वामी होएबाक सीमा तक ओ हमरा सभसँ बेसी सभ्य छल। अपन उत्तेजनामे ओ एकटा वस्तु बिसरि गेल- ओ तथ्य जे ओहि समय ओकरा बहुत सामान्य बुझना गेलैक-जे एहि प्रलोभनमे एकटा एहन वस्तु नुका गेलैक जे ओकर खेलओनासँ बेसी श्रेष्ठ छलैक- एकटा श्रेष्ठ आ पूर्ण बच्चा। ओहि खेलओनासँ मात्र ओकर धन व्यक्त होइत छलैक, बच्चाक रचनात्मक उर्जा नहि आ ने ओकर खेलमे बच्चाक आनन्द छलैक आ संगी सभकेँ फुजल निमंत्रण।”

– रवीन्द्र नाथ टैगोर ‘सभ्यतामे संकट’(क्राइसिस इन सिविलाइजेशन)सँ

अध्याय-1 : स्वरूप

1.1 प्रस्तावना
1.2 सिंहावलोकन
1.3 राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा
1.4 निर्दिष्ट सिद्धान्त
1.5 स्तर विस्तार
1.6 शिक्षाक सामाजिक परिप्रेक्ष्य
1.7 शिक्षाक उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना :

भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र थिक जकर इतिहास महत्त्वपूर्ण आ समृद्ध अछि। एहिमे विभिन्न संस्कृतिक असाधारण रूपक समागम अछि जे सभक हित तथा प्रजातान्त्रिक महत्त्वक हेतु दृढ़ अछि। 1986 ये ईस्वीसँ, जखन लोकसभा द्वारा शिक्षाक राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षामे नवीनता आ एकरूपता अनबाक हेतु पाठ्यक्रमके नव रूप देबाक प्रयास कयल गेल। देशक बच्चाकेँ शिक्षित करबाक महत्त्वकेँ बुझैत जे ओकरा संग अन्याय नहि होइक, ई आवश्यक

अछि जे समय-समय पर हमरालोकनि एहन अवसर बनाबी जतय सामूहिक रूपसँ हम सभ अपने स्वयंसँ पूछी, 'हमरालोकनि अपन व्यस्ततामे रहैत ओकरा हेतु की कर्त्तव्य करैत छी ? की हमरालोकनिक हेतु यैह समय थिक जे शिक्षाक नाम पर जे किछु बच्चाकेँ दैत छिऐक तकर पुनर्नवीकरण करी?'

यदि हमरालोकनि स्वतन्त्रता प्राप्तिक बादक शिक्षा पद्धति पर दृष्टि निक्षेप करब तऽ काफी संतोष होयत। आइक दिनमे हमर देशमे लगभग 55 लाख शिक्षककेँ देशक विभिन्न भागक लगभग 10 लाखसँ बेसी विद्यालयमे लगभग 2025 लाख बच्चाकेँ शिक्षित करबाक हेतु नियोजित कयल गेल अछि। जखन कि 82 प्रतिशत निवासीकेँ एक किलोमीटरक आम्यन्तरे प्राथमिक विद्यालय भेटि जाइत छैक, 75 प्रतिशत निवासीक हेतु 3 किलोमीटरक भीतरे उच्चतर प्राथमिक विद्यालय अछि। विद्यालय परित्यजन पीरक्षामे सम्मिलित होमएबला बच्चामेसँ कम-सँ-कम 50 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय प्रणालीसँ उत्तीर्ण होइत अछि। एहि परम्पराक अछैतहु भारतक 37 प्रतिशत जनता पढ़बा-लिखबाक कलासँ विहीन अछि, लगभग 53 प्रतिशत बच्चा प्रारम्भिके स्तर पर पढ़नाइ छोड़ि दैत अछि आ 75 प्रतिशत सँ अधिक ग्रामीण विद्यालय बहुस्तरीय अछि। पुनः हमरा लोकनिक शैक्षणिक अभ्यासक अनेक स्वरूप गम्भीर चिन्ताक विषय बनल अछि, (अ) विद्यालयक व्यवस्था दृढ़तापूर्वक वर्णित अछि जकरा बदलबामे कठिनता होइछ, (आ)'सिखनाइ' एकटा एकान्त क्रिया-कलाप बनि गेल अछि जे बच्चाक ज्ञानकेँ कोनो व्यवहारिक वा प्रमुख माध्यमे जीवनसँ जोड़बाक हेतु उत्साहित नहि करैत अछि, (इ) विद्यालय जाहि तरहक पद्धति प्रस्तुत करैत अछि से रचनात्मक विचारधारा एवं ज्ञानकेँ हतोत्साहित करैछ, (ई) शिक्षाक नाम पर जे किछु विद्यालयमे प्रदान कयल जाइत छैक से नव ज्ञान उपार्जन करबाक नाम पर मानव क्षमताक प्रमुख विस्तारक ऊपरेसँ बहि जाइत अछि, (उ) बच्चाक 'भविष्य' केँ विशेष महत्त्व दैत ओकर 'वर्तमान'क उपेक्षा कयल जाइत अछि जे बच्चा, समाज तथा राष्ट्रक हेतु हानिकारक थिक।

शिक्षाक मूल उद्देश्य बच्चाकेँ एतबाक सक्षम बनायब जे ओ जीवनक उद्देश्य बुझि सकए आ अपन योग्यताक विकास कए सकए, अपन जीवनक एकटा उद्देश्य निश्चित करैत ओकरा प्राप्त करबाक प्रयास करए एवं दोसरो व्यक्तिकेँ एहिना करबाक अधिकार छैक, एहि गप्पकेँ बूझए-आइयो महत्त्वपूर्ण एवं मान्य अछि। यदि महरालोकनिकेँ किछु करबाक अछि- तऽ ओ थिक मनुष्यक परस्पर निर्भरता पर जोड़ देब, आ ई कहब जेनाकि टैगोर कहने छथि जे जखन हम सब अपनकेँ दोसरक माध्यमसँ अनुभव करी तऽ सबसँ बेसी खुशी

होइत अछि। ठीक तहिना, हमरा लोकनिकेँ समानताक सिद्धान्तक प्रति वचन-बद्धताकेँ बच्चा सभक सांस्कृतिक, सामाजिक आ आर्थिक परिप्रेक्ष्यमे, जाहिसँ बच्चा सभ विद्यालयक द्वारि धरि पहुँचैत अछि, बेरि-बेरि मोनमे स्थिर करबाक आवश्यकता अछि। प्रतियोगी अर्थ-व्यवस्थामे व्यक्तिगत आकांक्षा शिक्षाकेँ ठोस उपलब्धि अर्जित करबाक साधनक रूपमे सीमित कए देलक अछि। ई ज्ञान, जे व्यक्तिकेँ मात्र प्रतियोगी संबंधमे धकेल दैत छैक, अकारण बच्चा पर दबाव बनबैत अछि, आ तेँ अवमूल्यन भए रहल अछि। एक दोसरासँ ज्ञान प्राप्त करबाक सेहो कोनो नीक परिणाम नहि अछि। शिक्षाकेँ एहन मूल्यकेँ प्रतिपादित करबाक सामर्थ्य होयबाक चाही जे विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमिवला समाजमे शान्ति, मानवता आ सहिष्णुता स्थापित करबामे सक्षम हो।

ई दस्तावेज एकटा एहन रूपरेखा प्रस्तुत करैत अछि जकर अन्तर्गत शिक्षक आ विद्यालय ओहि तरहक अनुभवक चयन कए सकैत छथि आ ओकर योजना बनाए सकैत छथि जे हुनका बुझि पड़नि जे बच्चाक हेतु लाभप्रद छैक। शैक्षिक उद्देश्यकेँ बुझबाक हेतु पाठ्यक्रमक संरचना एहन होयबाक चाही जाहिमे आवश्यक अनुभव जुड़ल होअए। एहि हेतु किछु मौलिक प्रश्न एहि प्रकारक अछिः

(अ) विद्यालय द्वारा कोन-कोन प्रकारक शैक्षिक उद्देश्यक पूर्तिक प्रयास होयबाक चाहिऐक?

(आ) कोन-कोन प्रकारक शैक्षिक अनुभव प्रदान कराओल जाय जे एहि उद्देश्यक प्राप्तिमे सहायक सिद्ध होअए?

(इ) कोन-कोन तरहेँ एहि शैक्षिक अनुभवकेँ सार्थकतासँ नियोजित कयल जा सकैछ?

(ई) हमरालोकनि ई कोना निश्चय कए सकैत छी जे ई शैक्षिक उद्देश्य वस्तुतः पूर्ण भए रहल अछि?

बच्चा पर पाठ्यक्रम बोझक समस्याकेँ ध्यानमे रखैत राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा 2000 क संशोधनक शुरुआत कयल गेल छल। 1990 क दशकमे मानव संसाधन विकास मान्त्रलाय द्वारा बनाओल गेल समिति एहि समस्याक विश्लेषण कयलक, एकर जड़िकेँ तकलक जे एहि विधानक झुकाव ज्ञानकेँ सूचनाक रूपमे व्यवहार करब दिस छैक। एहि टिप्पणी बिनु बोझक शिक्षा (लर्निंग विदाउट बर्डेन) मे समित एहि बात पर ध्यान आकृष्ट कयलक अछि जे विद्यालयक शिक्षा तावत तक आन्ददायक अनुभ नहि दए सकैछ यावत धरि हमरालोकनि ई धारणा नहि बदलब जे बच्चा ज्ञान प्राप्त कयनिहार थिक आ परीक्षामे पास करबाक हेतु

परम्परागत पोथी आवश्यक उपादान। बच्चाक अपन सर्जनात्मक तथा अनुभवक आधार पर सिखबाक ओकर क्षमता पर विश्वास नहि केनाइये ओकरा सभ किछु सिखा देबाक प्रवृत्तिक प्रेरणाक स्रोत थिक। दिनानुदिन पाठ्य ग्रंथक आकार बढ़ल जाइत अछि आ ताहि पर नव-नव विषयकेँ जोड़बाक दबाव बनल अछि जाहिसँ ओकरो ज्ञानकेँ समेटल जा सकय, बच्चाकेँ कमजोर बनबैत अछि। मोटगर पाठ्यग्रंथ आ निर्धारित पाठ्यक्रम बच्चाकेँ ओकरे तरीकासँ शिक्षा देबामे तन्त्रक विफलताक संकेत दैत अछि। एहि तरहक मोटगर पोथी लिखनिहार प्रचलित धारणासँ ग्रसित रहैत छथि जे ज्ञानक विस्तार भए गेल अछि। अतः आन देशक संग चलबाक हेतु विशद ज्ञान छोट-छोट बच्चाकेँ बलजोरी घौंटी दए पिया देबाक चाही। *'लर्निंग विदाउट वर्डेन'* पाठ्यक्रम आ पाठ्यग्रंथक आकार-प्रकारमे भारी परिवर्तनक संगहि सामाजिक विचाारधारामे परिवर्तनक अनुशंसा कयलक अछि जे बच्चा पर समयसँ पूर्वहि आक्रामक रूपसँ प्रतिस्पर्द्धामे जुटि जयबाले दबाव नहि देल जाय। शिक्षाकेँ बच्चाक सर्जनात्मक स्वभावक उपयोग करएबला साधन बनयबाक हेतु ओ टिप्पणी विद्यालयक पाठ्यक्रमक निर्धारणमे मूलभूत परिवर्तनक अनुशंसा कयलक संगहि परीक्षा पद्धतिक बदलावक सेहो, जाहिमे बच्चा पर सूचनाकेँ रटि कए प्रस्तुत करबाक दबाव देल जाइत छैक। यान्त्रिक विधिसँ परीक्षित होयबा लेल पढ़नाइ बालपनक आनन्दकेँ नष्ट करैत छैक आ दैनिक अनुभवसँ विद्यालयी ज्ञानकेँ दूर करैत अछि। एहि गम्भीर बनावटी समस्याक समाधानक हेतु ई दस्तावेज 'लर्निंग विदाउट वर्डेन' बला ज्ञानकेँ परिष्कृत करैत अछि।

अनुशंसासँ अतिरिक्तो ई दस्तावेज, शिक्षक, प्रशासक तथा आनो आन संगठन जे पाठ्यक्रम, पाठ्यग्रंथ तथा परीक्षाक संचालन करबामे सक्रिय अछि, विवेकपूर्ण निर्णय लेबाक हेतु शक्ति प्रदान करैत अछि। ई हुनका लोकनिकेँ ईहो अधिकार दैत छनि जे कोनो घटना विशेषकेँ नव रूपमे विकसित कए लागू करथि। सम सामयिक सामाजिक यथार्थताकेँ ध्यानमे रखैत पाठ्यक्रमक नवीनता जे चुनौती बनल अछि, ई दस्तावेज कोनो खास समस्या दिस ध्यान आकृष्ट करैत अछि जे काल्पनिक उत्तरक माङ करैत अछि। हमरा लोकनि आशा करैत छी जे सुधारक वर्तमान प्रक्रियाकेँ ई मजबूत बनाओत, यथा निर्णय लेबाक अधिकार शिक्षककेँ तथा चयनित स्थानीय निकायकेँ देल गेल छैक जखनकि ई नव क्षेत्र पर सेहो ध्यान देबए चाहैत अछि, यथा- पाठ्यग्रंथक लोकप्रियता तथा परीक्षा व्यवस्थामे अविलम्ब सुधार।

1.2 सिंहावलोकन :

महात्मागाँधी शिक्षाकेँ राष्ट्रीय जागरणक साधनक रूपमे देखैत छलाह जाहिमे समाजमे व्याप्त अन्याय, हिंसा आ असमानताकेँ दूर करबाक शक्ति हो। नाइ तलिम वैयक्तिक प्रतिष्ठा आ आत्मविश्वास पर बल देलनि जतय समाजक भीतर आ बाहर व्याप्त अहिंसा सामाजिक संबंधक आधार बनए। गाँधीजी तात्कालिक वातावरणक उपयोगक अनुशंसा कयलनि संगहि मातृभाषा आ कार्यक सेहो, जे सामाजिक बनैत बच्चाकेँ समाज सुधारक बनयबाक स्रोत थिक। ओ एक एहन भारतक स्वप्न देखैत छलाह जतय प्रत्येक व्यक्ति अपन प्रतिभा आ गम्भीरताकेँ विश्वक बदलैत ढाँचाक दिशामे आनक संग कार्य करैत, जे दू देशक बीचक संघर्ष समाजक आन्तरिक संघर्ष तथा मानवता आ प्राकृतिक संघर्षक द्वारा चित्रित होअए।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चात् शैक्षिक संस्थान जे स्वतन्त्रता संग्रामसँ जुड़ल छल, पुनः राष्ट्रीय आयोग द्वारा निरीक्षण कयल गेल। ओ आयोग थिक - माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) एवं शिक्षा आयोग (1964-66) । दूनू आयोग महात्मा गाँधीक शैक्षिक दर्शनकेँ परिष्कृत कयलक जाहिमे बदलैत राजनीतिक सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे राष्ट्रीय विकास पर प्रकाश देल गेल छल। भारतीय संविधान 976 धरि राज्य सरकार विद्यालय स्तरीय शिक्षाक सभ विन्दु पर निर्णय लेबाक हेतु सक्षम छल, अपन सीमाक अन्तर्गत पाठ्यक्रम निर्माण सहित। केन्द्र मात्र नीति-निर्धारण संबंधी निर्देश राज्य सरकारकेँ दए सकैत छलैक। एकटा एहन स्थिति अयलैक जखन राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 1968 आरम्भिक प्रयास शुरू कयलक तथा 1975 मे एन. सी. ई. आर. टी. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान आओर प्रशिक्षण परिषद्) पाठ्यक्रमक प्रारूप बनौलक। 1976 मे शिक्षाकेँ समवर्ती सूचीमे अनबाक हेतु संविधानमे संशोधन भेल आ सर्व प्रथम 1986 मे सम्पूर्ण देशमे एक रूपक राष्ट्रीय नीति लागू भेल। रा.शि.नी. (1986) सम्पूर्ण देशक विद्यालयक पाठ्यक्रक हेतु एकटा कॉमन कोर कम्पोनेन्ट (सर्वमान तत्व)क अनुशंसा कयलक। ई नीति एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 केँ सेहो राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखाकेँ विकसित करबाक उत्तरदायित्व देलकैक संगहि संरचनाकेँ छोट-छोट अन्तराल पर संशोधन करबाक दायित्व सेहो।

एहि क्रममे एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 अपन पाठ्यक्रम संबंधी कार्य, जे 1975 ई0 सँ अध्ययन एवं परामर्शक परिणाम छल, एकटा पाठ्यक्रमक रूपरेखा तैयार कयलक जे 1984 ई0 क क्रिया-कलापक अंग थिक। एहि अभ्यासक उद्देश्य छल। विद्यालयी शिक्षाकेँ गुणात्मक रूपेँ विश्वस्तरीय बनायब जे एहन राष्ट्रीय एकताक साधन सेहो बनय जे कोनो रूपेँ देशक बहुलतावादी प्रकृत्तिकेँ अपकार नहि करए। बहुआयामी अनुभव पर आधारित परिषदक कार्य

विद्यालयी शिक्षा 1988 क हेतु तैयार कयल गेल राष्ट्रीय पठ्यक्रमक रूपरेखाकेँ शीर्ष पर पहुँचा देलक। जखनकि पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकक माध्यमे एहि रूपरेखाकेँ लागू भेने द्रुत गतिएँ विकासमे परिवर्तन आयल जकर परिणामस्वरूप पाठ्यक्रमक बोझ बढ़ल आ विद्यालयी शिक्षा बच्चा आ युवककेँ बनय बला वर्षहिमे मस्तिष्क आ शरीर पर दबाव देलक। एहि पहलूकेँ प्रो. यशपालक अध्यक्षता बला आयोग एकमतसँ खारिज कए देलक जाहिमे *'लर्निंग विदाउट वर्डेन'* (विनु बोझक शिक्षा) 1993 पर विचार भेल।

1.3 राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 क द्वारा अनुशंसा कयलो पर, जे विभिन्न स्तर पर प्रतिभा आ महत्त्वकेँ चीन्हल जाय, विद्यालयी शिक्षा सूचनाक भारसँ दबल पाठ्यग्रंथसँ उच्चस्तरीय परीक्षा लैत ओकरा दूर-दूर धरि भगाए देलक। 2000 ई0 मे पाठ्यक्रमक रूपरेखाक संशोधनक बावजूद पाठ्यक्रमक बोझ वला विवादास्पद मुद्दा आ परीक्षाक जटिलताक समस्या पर कोनो निर्णय नहि भए सकल । वर्तमान संशोधन विकासक सकारात्मक आ नकारात्मक दूनू पहलू पर विचार करैत प्रयास कयलक अछि जे शताब्दीक परिवर्तनक सग विद्यालयी शिक्षाकेँ भविष्यक आवश्यकताक अनुसार बनाबी। एहि प्रयासमे अनेक अंतर संबंधक विस्तारकेँ ध्यानमे राखल गेल अछि, यथा- शिक्षाक उद्देश्य, बच्चाक सामाजिक वातावरण, विस्तृत अर्थमे ज्ञानक प्रवृत्ति मानव विकासक प्रवृत्ति तथा मानव शिक्षाक विधि इत्यादि।

'राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा' क सामान्यतः गलत व्याख्या कयल जाइत अछि, एकरा एकरूपता अनबाक यन्त्र कहल गेल अछि। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन0 पी0 इ0) 1986 एवं *'प्रोग्रैम ऑफ एक्सन'* 1992 पूर्णतः एक दोसरासँ भिन्न अछि। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पाठ्यक्रमक एकटा राष्ट्रीय रूपरेखा पस्तुत कयलक जे शिक्षाक राष्ट्रीय व्यवस्थाक रूपमे भारतक भौगोलिक विविधता आ सांस्कृतिक वातावरणकेँ आधार मानलक संगहि शैक्षिक अवयवक सग सामान्य महत्त्वकेँ प्रतिपादित कयलक। एन0 पी0 ई0, पी0 ओ0 ए0 बाल केन्द्रित विचार सामने रखलक जाहिसँ 14 वर्ष धरिक सभ बच्चाकेँ विद्यालयमे नामाङ्कन तथा ओकरा रोकबाक प्रवृत्तिकेँ बढ़ावा भेटैक आ संगहि विद्यायली शिक्षाक स्तरमे सुधार हो (पी0 ओ0 ए0 पृष्ठ-77) पी0 ओ0 ए0 पुनः एन0 पी0 ई0 केर एहि मन्तव्यक विशद रूप प्रदान कयलक संगहि विशदता, लचीलापन आ स्तरकेँ राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखाक

विशेषताक रूपमे चिह्नित कयलक। अतः उपर्युक्त दूनू दस्तावेज राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखाकेँ शिक्षा तन्त्रक आधुनिकीकरण करबाक माध्यमक रूपमे चिह्नित कयलक।

राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा पर आधारित होयत जाहिमे समान मूलतत्व तथा परिवर्तनशील अंश सभक समागम होयत। मूलतत्त्व (कॉमन कोर) मे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनक इतिहास संवैधानिक कर्त्तव्य आ राष्ट्रीय पहचानक भान करबय वला आन आवश्यक तत्त्व समाहित रहत। एहि तत्त्व सभकेँ विषय-वस्तुसँ निकालि कए एहन रूप देल जायत जाहिसँ ई भारतक समान सांस्कृतिक विरासत, समतावाद, लोकतन्त्र आ धर्मनिरपेक्षता, लैंगिक समानता, पर्यावरणक रक्षा, सामाजिक बंधनसँ मुक्ति, लघु परिवारक नियमक पालन आ वैज्ञानिक दृष्टिकोणकेँ बुझबामे मदति करए। सभटा शैक्षिक कार्यक्रम धर्मनिरपेक्ष महत्त्वक संग दृढ़तासँ चलाओल जायत। भारत सतत शाँतिक हेतु कार्य करैत रहल, दू वा अधिक राष्ट्रक संबंधकेँ बुझैत रहल तथा सम्पूर्ण विश्वकेँ एक परिवार बुझैत रहल अछि। एहि प्राचीन परम्पराक कारणेँ, शिक्षाक एहि दुनियाँक दृश्यकेँ मजबूत बनयबाक छैक तथा युवा पीढ़ीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्वक हेतु प्रेरित सेहो करबाक छैक। एहि पहलूक उपेक्षा नहि कए सकैत छी। समानताकेँ उठयबाले ई आवश्यक होयत जे सभकेँ समान अवसर प्रदान कयल जाय, मात्र पहुँचमे नहि बल्कि सफलतामे सेहो। विना कोनो वंश-परम्परा पर विचार कयने सभकेँ समान पाठ्यक्रम द्वारा तैयार कयल जयबाक चाही। एकर उद्देश्य अछि जे सामाजिक परिवेश आ जन्मक कारण जे पूर्वाग्रह, संकुचित भावना वा दंभ लोकक मोनमे रहैत छैक तकरा पूर्णतः हटाओल जा सकय।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986

1.4 निर्दिष्ट सिद्धान्त :

हमरालोकनिकेँ आवश्यकता अछि व्यवस्था गत मुद्दा पर ध्यान देबाक आ ओकरा नियोजित करबाक जे बहुतो नीक विचारधाराकेँ लागू करबामे समर्थ बनबैत अछि आ जकर चर्चा पूर्वहु भए चुकल अछि एहिमेसँ महत्त्वपूर्ण अछि –

- ज्ञानकेँ विद्यालयसँ बाहरक जीवनसँ जोड़ब।
- ई निश्चय करी जे रटन्त विद्यासँ ध्यान हटि जाए।
- पठ्यक्रमकेँ एहि तहरक बनयबाक चाही जे ओ पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित नहि भए बच्चाकेँ सर्वांगीन विकासक मार्ग प्रशस्त करए।
- परीक्षाकेँ वर्ग-प्रकोष्ठक जीवनसँ जोड़ब आ सरल बनायब। आ
- भारतक लोकतांत्रिक नीतिक अंदर एकटा परिचयात्मक घ्यान रखबाक चिंताक पोषण।

वर्तमान संदर्भमे हमरालोकनिक पाठ्यक्रमकेँ नव विकास आ ओहिसँ जुड़ल आशंका सभकेँ प्रतिपादित करबाक आवश्यकता छैक। एहिमे सर्व प्रथम अछि, सभ बच्चाकेँ विद्यालयमे पहुँचयबाक आ ओतय स्थिर रखबाक महत्त्व, एकटा एहन कार्यक्रमक द्वारा जे सभ बच्चाक महत्त्व बूझय आ सभकेँ प्रतिष्ठा आ सिखबाक आत्मविश्वासक अनुभव करबाक अवसर देअए। पाठ्यक्रमक स्वरूप सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा (*यूनिवर्सल एलिमेन्ट्री एजुकेशन*) क प्रति वचनबद्धताकेँ प्रदर्शित करए, मात्र क्षेत्रीय विविधतेटाकेँ प्रतिबिम्बित नहि करए अपितु ईहो सुनिश्चित करए जे विविध सामाजिक आ आर्थिक परिवेशसँ आबयवला बच्चा सभ, जाहिमे शारीरिक, मानसकि आ बौद्धिक विविधता छैक, सेहो शिक्षा ग्रहण कए विद्यालयमे सफलता प्राप्त कए सकए। एहि सन्दर्भमे शिक्षामे लैंगिक असमानता, जातिवाद, भाषा, संस्कृति, धर्म वा अयोग्यतासँ होमएवला हानि पर सोझे ध्यान देबाक आवश्यकता अछि, मात्र योजना आ नीतिसँ नहि, अपितु बच्चाक अक्षरारम्भहिसँ ओकरा पढ़ौनी सिखयबाक तरीकाका चयन सेहो आवश्यक।

सर्वभौम प्राथमिक शिक्षा (यू0 ई0 ई0) हमरालोकनिकेँ पाठ्यक्रमकेँ विशद बनयबाक सम्भावनाक आवश्यकताक प्रति सचेत करैत अछि जाहिसँ एहिमे विभिन्न परम्पराक ज्ञान, कार्यक्षमता आ कला-कौशलक गौरवशाली परम्परा समाहित भए सकए। एहिमे सँ किछु परम्परा अधिक वैश्वीकरणक कारणेँ होमएवला शिक्षाक बाजारीकरण आ बाजारी शक्ति सभसँ गम्भीर खतराक अनुभव कए रहल अछि। आत्मसम्मानक विकास एवं नीतिक संग बच्चाक रचनात्मकताक उपयोगकेँ प्राथमिकता देबाक आवश्यकता अछि। द्रुत गतियेँ बदलैत विश्व आ प्रतियोगी वैश्विक परिप्रेक्ष्यमे ई आवश्यक अछि जे हम सभ बच्चाक नैसर्गिक बौद्धिक क्षमता आ कल्पनाशीलताक सम्मान करी।

विक्रेन्द्रीकरण आ पंचायतीराज संस्था, (पी0 आर0 आई0) सभक योगदान पर बल देब आसन्न भूतकालमे शिक्षाक क्षेत्रमे कयल गेल महत्त्वपूर्ण प्रयास थिक। पंचायती राज संस्था सभ शिक्षा व्यवस्था पर नौकरशाहीक प्रभाव कम करबाक, शिक्षककेँ बेसी उत्तरदायी बनएबाक तथा विद्यालयकेँ बेसी स्वायत्त आ बच्चाक हितक प्रति बेसी उत्तरदायी बनयबाक अवसर प्रदान करैत अछि।

एहि प्रयास सभकेँ स्थानीय भौतिक वातावरण, जीवन आ पर्यावण सँ संबंधित जटिल समस्या सभकेँ सेहो सोझरएबाक चाही। अपन वातावरणमे बढ़ैत बच्चा प्राकृतिक रूपें कतोक कला सीखि लैत अछि। ओ अपन चारूकातक जीवन आ संसारकेँ सेहो देखैत अछि। जखन ओ वर्गमे अबैत अछि तऽ ओकर प्रश्न आ समस्या पाठ्यक्रमकेँ समृद्ध कए सकैछ आ वातावरणकेँ रचनात्मक बनाए सकैछ। एहि तहरक प्रयास विस्तृत रूपसँ स्वीकृत पाठ्यक्रमिक सिद्धान्त- 'अमूर्त सँ मूर्त दिशि', 'ठोस सँ निचोर दिशि' आ 'स्थानीयसँ वैश्विक दिशि' जएबाक केर प्रसार करत। एहि हेतु प्रतिरोधात्मक शिक्षणशास्त्र केर पालन विद्यालयी शिक्षाक सभ आयाम -शिक्षक शिक्षा समेत मे आवश्यक अछि। उदाहरणार्थ फलदायी कार्य शैक्षिक माध्यम भए सकैछ - (अ) वर्ग ज्ञानकेँ बच्चाक दैनिक अनुभवसँ जोरबाक (ब) पिछड़ल समाजक बच्चा सभकेँ जकरा कार्य आधारित ज्ञान आ कला होइत छैक केर उच्च वर्गक अपन मित्र सभक बीच सम्मान आ लाभ उपलब्ध करएबाक आ (स) मानवीय अनुभव, ज्ञान आ सिद्धांतकेँ परिप्रेक्ष्यीय अनुभवसँ जोड़ि कए ओकर महत्त्वकेँ बढ़एबाक।

समान पहुँच अथवा समान सहभागिताक रूपमे बालिकाक समानताक अधिकार एखनहु पूर्ण नहि अछि। आब एकटा एहन प्रयासक आवश्यकता छैक जे परिणामक सहभागिता, जतय विविधता, भिन्नता आ हानि केर ध्यानमे राखल जाए, पर आधारित होअए।

सभ सिखनिहारकेँ अपन अधिकारक ज्ञान आ समाज एव राज्यक प्रति कर्त्तव्यक ज्ञान कराएव बड़ाबरीक शिक्षाक उद्देश्य थिक। हमरा सभकेँ ई बुझल आवश्यक आछि जे जाबत तक मानवक आधारभूत आवश्यकताक पूर्ति नहि होएत, ताबत तक ओ अपन अधिकार आ विकल्पक प्रयोग नहि कए सकैछ। अतः पिछड़ल सिखनिहार आ बालिका सभक द्वारा अपन अधिकारक प्रयोग तथा सामूहिक जीवनक निर्माणमे भूमिकाक निर्वहन करएबाक हेतु आवश्यक अछि जे शिक्षा ओकरा सभकेँ भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्थाक हानि सँ निकलबाक हेतु मजबूत करए संगहि स्वायत्त ओ समान नागरिक बनबाक क्षमता उत्पन्न करए।

पाठ्यक्रमक एक आओर प्रमुख चिन्ता बच्चा सभकेँ वातावरणक प्रति संवेदनशील बनायब तथा एकर रक्षाक आवश्यकता बुझाएब अछि। नव-नव तकनीकी विकल्पक आ जीवनक तरीककाक प्रादुर्भाव जे पछिला शताब्दीमे द्रष्टव्य भेल, पर्यावरणक अवमूल्यन आ एकर लाभ-हानिक बीचमे भारी असमानता बनौलक। आब ई पहिनेसँ कतोक बेसी आवश्यक भए गेल अछि जे पर्यावरणक पोषण आ रक्षा कयल जाए। शिक्षा जरूरी स्वरूप प्रदान कए सकैछ जे कोना मानव जीवन पर्यावरणक त्रासदीक संग चलि सकैत अछि जाहिसँ जीवन वृद्धि आ विकास संभव रहि सकए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 पर्यावरण संबंधी चिन्ताक प्रति जागरुकता जगयबाक हेतु एकरा शिक्षा पद्धतिक सभ स्तर आ सामाजक सभ वर्गक लेल आवश्यक करबा पर बल देलक।

अपना स्वयं सँ आ अपन प्राकृतिक आ सामाजिक वातावरणसँ समन्वय बनाकए रहब मानवक प्राथमिक आवश्यकता अछि। व्यक्तिक व्यक्तित्वक सम्पूर्ण विकास मात्र शान्त प्रकृतियेमे संम्भव अछि। बाधित प्राकृतिक आ मानसिक-सामाजिक वातावरण मानव संबंधमे तनाव बनबैत अछि जाहिसँ असहिष्णुता आ संघर्ष बढ़ैत अछि। हम सभ अकल्पनीय स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय आ वैश्वीय हिंसाक समयमे जीबि रहल छी। शिक्षा कखनहुकेँ उदासीन आ आन्तरिक दायित्वक निर्वाह करैत अछि जे युवा लोकनिक मस्तिष्कमे अक्षमताक संस्कृतिवला सिद्धान्तकेँ भरि दैत अछि जे मानव भावनाक मौलिक महत्त्वकेँ तथा विभिन्न सभ्यतता द्वारा पता लगाओल परम सत्यकेँ स्वीकार नहि करैत अछि। शांतिक संस्कृतिक स्थापना करब शिक्षाक एकटा प्रतिस्पर्द्धा रहित उपलब्धि थिक। शिक्षाकेँ सार्थक बनयबाले व्यक्तिकेँ जीवनक उद्देश्यक रूपमे शान्तिक चयन करबाक अधिकार देबए पड़ैतक, व्यवस्थापक बनयबाले समर्थ करए पड़तैक, संघर्षक उदासीन दर्शक भेने कार्य नहि चलतैक। शांति विद्यालयी पाठ्यक्रमक परिप्रेक्ष्यमे गम्भीरता रखैत अछि जे राष्ट्रक महत्त्वकेँ बढ़बएमे कारक थिक।

राष्ट्र रूपमे हमरालोकनि एकटा मजबूत लोकतन्त्रकेँ सुरक्षित रखने छी। लोकतन्त्रक दर्शन जे माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) मे समाहित अछि, महत्त्वपूर्ण स्मरण दियबैत अछिः

‘‘लोकतान्त्रमे नागरिकता अनेक बुद्धिजीवीकेँ सम्मिलित करैत अछि, सामाजिक आ चारित्रिक गुण... एकटा प्रजातान्त्रिक नागरिककेँ ज्ञान आ बौद्धिक गम्भीरता रखबाक चाहिऐक जे झूठसँ सत्यकेँ पृथक् कए सकए, तथ्यकेँ अफवाहसँ निकालि सकए तथा आवारा

आ दुराग्रहीक खतरनाक आवाजकेँ निरस्त कए सकए... पुरानकेँ नहि त्यागबाक चाही कारण जे ओ पुरान छैक, नवकेँ नहि स्वीकार करबाक चाही कारण जे ओ नव छैक, किन्तु अधीरतापूर्वक, दूनूक परीक्षण करबाक चाही आ धैर्यपूर्वक ओकरा त्यागि दी जे शक्ति, न्याय आ उन्नतिकेँ बाधित करैत अछि। हमरालोकनि प्रजातन्त्रकेँ मात्र शासने व्ववस्थाक रूपमे नहि मानैत छी बल्कि एकरा जीवनक अंग बुझैत छिऐक, एकर महत्त्व संविधानमे सुरक्षित अछि जकर मुख्य संकेत हमरा लोकनिकेँ भेटैत अछि।

भारतीय संविधान सभ नागरिककेँ स्तर आ समानताक वचन दैत अछि। लगातार पैघ संख्यामे शिक्षासँ निकलैत बच्चा आ तहिना प्राइवेट आ पब्लिक स्कूलमे बढ़ैत बच्चा समानताक दिशामे प्रयासकेँ चुनौती दैत अछि। शिक्षाकेँ समाजिक सुधार एवं बदलावक यन्त्रक रूपमे कार्य करबाक अवसर चाहिऐक।

- सभ नागरिककेँ न्याय- सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक- प्रजातन्त्रकेँ मजबूत बनबैत अछि।
- विचार एवं क्रियाक स्वतन्त्रता हमरालोकनिक संविधानक मौलिक महत्त्वक वस्तुत थिक। प्रजातन्त्रकेँ एकटा एहन नागरिकक आश्यकता छैक अथवा बनबए चाहैत अछि जे अपन स्वायत्तताक महत्त्वकेँ बुझैत अछि आ दोसरोकेँ अधिकारक उपयोगक हेतु प्रेरित करैत अछि।
- नागरिककेँ समानताक सिद्धान्त, न्याय तथा स्वतन्त्रताकेँ बढ़ावा देबाक आवश्यकता छैक जाहिसँ सभक बीच भ्रातृत्वक भावनाकेँ प्रश्रय भेटि सकय।
- भारत एकटा धर्मनिरपेक्ष प्रजान्त्रितक राष्ट्र थिक जकर अर्थ होइछ सभ धर्मक आदर करब मुदा संगहि भारतकेँ कोनो खास धर्मकेँ प्रश्रय देबाक अधिकार नहि छैक। आइ आवश्यकता अछि जे बच्चाकेँ एहि प्रकारक संस्कार देल जाए जे ओ सभ मनुष्यकेँ आदर दैक, बिनु धार्मिक विश्वासक चिन्ता कयने।

भारत एकटा एहन विविध एवं सांस्कृतिक समाज थिक जतय नाना प्रकारक क्षेत्रीय आ स्थानीय संस्कृतिक समागम अछि। लोकक धार्मिक विश्वास, सामाजिक संबंधक अनुसार कहबाक ढंग आ सोच, एक दोसरासँ पूर्णतः भिन्न अछि। सभ समुदायकेँ समान धिकार छैक संग रहबाक आ आगू बढ़बाक आ एहि समाजमे शिक्षा व्यवस्थाकेँ आवश्कता छैक सांस्कृतिक विविधतामे एकरूपता अनबाक। हमरा लोकनिक सांस्कृतिक परम्परा आ

राष्ट्रीय पहचानकेँ मजबूत बनयबाले पाठ्यक्रम एहन होयबाक चाही जे युवा वर्गकेँ नव संदर्भमे नव दृष्टि आ प्राथमिकताक आधार पर बदलैत सामाजिक संदर्भमे पुनर्मूल्यांकन आ पुनर्व्याख्या करबाक हेतु प्रेरित कए सकए। मानवीय विकासकेँ बुझबाक समयमे ई गप्प स्पष्ट भए जएबाक चाही जे हमर सभक देशमे विविधताक अस्तित्वक कारण एकटा एहन भावनाक रहब छल जे एकरा बढ़बामे मदति कएलक। एहि भूमिक सांस्कृतिक विविधताक कारण हमर सभक विशेष खूबी मानल जएबाक चाही। एकरा मात्र सहनशीलताक परिणाम नहि मानल जएबाक चाही।

एहि संबंधमे हमरालोकनिक संविधान नागरिककेँ अपन सिद्धान्त, अधिकार आ वचनबद्धताक प्रति सतर्क करैत अछि।

प्रजातन्त्र मनुष्यक रूपमे प्रत्येक व्यक्तिक प्रतिष्ठा आ मूल्यमे विश्वास पर आधारित अछि.... अतः प्रजातान्त्रिक शिक्षाक विषय थिक... व्यक्तिक व्यक्तित्वक पूर्ण आ सर्वांगीन विकास... अर्थात् एहन शिक्षा जे छात्रकेँ एक समुदायमे जीवनक बहुआयाम कलामे निपुण बनाबय। स्पष्ट अछि, एकसरे क्यो व्यक्ति ने रहि सकैत अछि ने विकास कए सकैत अछि... कोनो प्रकारक शिक्षा ई नहि कहि सकैत अछि जे मनुष्यक संग बिना स्तरकेँ सुधारैत क्यो प्रतिष्ठापूर्वक, शांतिपूर्वक, आ निपुणतासँ रहि सकैछ।

(माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53, पृष्ठ –20)

1.5 स्तर विस्तार :

यद्यपि तन्त्रक प्रयास छैक जे सभ बच्चा तक पहुँची तथापि स्तरक मुद्दा एकटा नव चुनौतीक शृंखला प्रस्तुत करैत अछि। ई विश्वास जे स्तर सुविधासँ बढ़ैत अछि, केर पुष्टि भारतमे प्रचलित भागीदारी लोकतन्त्रक राजनीतिक परिदृश्य नहि करैत अछि। शिक्षाक क्षेत्रमे एकर प्रचलनक हेतु जरूरी अछि जे भिन्न–भिन्न क्षेत्र आ समाजक बच्चा सभकेँ लगभग समान स्तरक शिक्षा भेटय। स्वर्गीय जे0 पी0 नायक बराबरी, स्तर आ मात्राकेँ भारतीय शिक्षा पद्धतिक भ्रामक त्रिकोणक रूपमे वर्णन करैत छलाह। एहि कथित त्रिकोणक व्यवहार

करबाक हेतु स्तरक उपलब्धतासँ अधिक गम्भीर सैद्धान्तिक ज्ञान अछि। यूनेस्को केर सद्यः प्रकाशित विश्वस्तरीय टिप्पणी प्रचलित स्तर संबंधी विवादक लेल उपयुक्त संदर्भक रूपमे व्याख्या करैत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ बच्चाक प्रदर्शनकेँ प्रचलित स्तरक सूचकक रूपमे मानबाक आवश्यकता अछि। एकटा एहन शिक्षा व्यवस्था जे तेजीसँ बढ़ैत निजी क्षेत्र आ पैघ सरकारी क्षेत्रक बीचमे बाँटल अछि, जाहिमे संसाधनक अभाव आ असामान्य बँटबारा छैक, स्तरक मुद्दा गम्भीर, सोचनीय आ करणीय प्रश्न उठबैत अछि। ई विश्वास जे निजी क्षेत्रमे स्तर उच्च अछि, स्तर जँचबाक एकमात्र मापदण्ड परीक्षाक परिणामकेँ मानल जाइत अछि। एहि तरहक धारणा निजी विद्यालय सभक आचार-विचार संबंधी कमी सभक उपेक्षा करैत अछि। ई तथ्य जे ओ सभ सामान्यतः बच्चाक मातृभाषाक उपेक्षा करैत अछि, ओकरा सभक द्वारा सार्थक ज्ञान अर्जित करबाक हेतु बच्चा सभकेँ उपलब्ध कराओल गेल अवसरक प्रति हमरा सभकेँ चिन्तित होयबाक आवश्यकता अछि। एतबे नहि, ओकरा सभ द्वारा गरीबक बच्चाक अनदेखी, एकटा वर्ग जाहिमे भिन्न-भिन्न सामाजिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक परिवेशसँ आबएवला बच्चा अछि, सिखबाक अवसरकेँ नष्ट करैत अछि।

भौतिक सम्पदाकेँ अपने आपमे स्तरक सूचक नहि मानल जा सकैछ तथापि राज्य आ स्थानीय निकाय सभ द्वारा संचालित विद्यालय सभमे आधार भूत सुविधा समेत भौतिक सुविधा सभक घोर अभाव निश्चित रूपसँ स्तरमे गम्भीर कमी अनैत अछि। योग्य आ समर्पित शिक्षक सभक उपलब्धता जे शिक्षाकेँ रोजगारक अवसरक रूपमे चयन करैत छथि, सभ क्षेत्रक विद्यालय सभक स्तरक एकटा मुख्य घटक थिक। एन0 पी0 ई0 तथा एहिसँ पहिने चट्टोपाध्याय आयोग (1984) द्वारा देल गेल शिक्षकक नियुक्ति, प्रशिक्षण आ सेवा शर्तक स्तरमे कमीक सुझाव चिन्ता बढ़ौलक। कोनो शिक्षा पद्धति अपन शिक्षकक स्तरसँ ऊपर नहि उठि सकैत अछि आ शिक्षकक स्तर हुनक चयनक लेल अपनाओल गेल प्रक्रिया, प्रशिक्षणक तरीका आ पारदर्शिता निश्चित करबाक हेतु अपनाओल गेल रणनीति पर निर्भर करैत अछि।

बच्चामे ज्ञान आ प्रतिभाक विकास करबाक अनुभव करबाक उद्देश्यसँ स्तर विस्तारक सेहो जाँच होयबाक चाही। ज्ञानक प्रकृतिक कल्पना आ बच्चाक अपन स्वभाव विद्यालयक स्तरक निर्धारण करैत अछि आ हुनका लोकनिक प्रवृत्ति आ तरीकाक द्योतक थिक जे अध्यापक छथि अथवा पाठ्यक्रम एवं पाठ्यग्रंथ तैयार करैत छथि। पाठ्य पुस्तक एवं अन्य सामग्रीमे जे ज्ञान देल जाइत अछि तकरा ओहि चुनौतीक रूपमे देखब आवश्यक अछि जे

आइ राष्ट्र आ मानवताक समक्ष सुरसा जकाँ मुह बौने अछि। एहि गम्भीर समस्यासँ कोनो विद्यालयक पाठ्यक्रम अलग-थलग नहि रहि सकैत अछि तैं हेतु प्रत्येक विषय क्षेत्रमे प्रस्तावित जानकारीक चुनावक सामाजिक, आर्थिक परिस्थितिक तथा उद्देश्यक संदर्भमे गंभीर परीक्षण होयबाक चाही। शिक्षाक समक्ष सभसँ पैघ राष्ट्रीय चनौती अछि, सभकेँ शामिल करएबला हमरालोकनिक प्रजातन्त्र आ संविधानमे प्रतिस्थापित मूल्यकेँ सुदृढ़ करबाक। एहि चुनौतीकेँ सफलतापूर्वक सामना करबाक अर्थ थिक गुणवत्ता एवं सामाजिक न्यायकेँ पाठ्यक्रमक मुख्य विन्दु बनायब। नागरिकताक प्रशिक्षण औपचारिक शिक्षाक महत्त्वपूर्ण अंग रहल अछि। आइ एकरा सार्वभौमिक मानवीय अधिकार एवं आलोचनात्मक शिक्षा शास्त्रसँ संबंधित प्रस्तावक संबंधमे निर्भीकतासँ पुनर्विचार करबाक आवश्यकता छैक। शांति एवं सद्भावपूर्ण सह अस्तित्वसँ संबंधित मूल्यक दिशामे अभिमुख होयबाक चाही। शिक्षामे गुणवत्ताक अन्तर्गत जीवनक सभ क्षेत्रमे उद्विग्नताक यैह कारण थिक। पर्यावरणक संरक्षण तथा सामाजिक परिवर्तनक प्रति अनुकूलता मात्र मूल्यक अंग नहि अपितु श्रेष्ठताक मूलभूत तत्त्वक सदृशहि देखल जयबाक चाही।

1.6 शिक्षाक सामाजिक परिप्रेक्ष्य :

शिक्षा व्यवस्था ओहि समाजसँ निरपेक्ष भए कार्य नहि कए कसैत अछि जकर ओ स्वयं एक अंग थिक। जाति एवं आर्थिक स्तर तथा स्त्री-पुरुष संबंधक पदानुक्रम, सांस्कृतिक विविधता एवं असमान विकास जे भारतीय समाजक विशेषता अछि, शिक्षाक प्राप्ति तथा विद्यालयमे बच्चाक सहभागिताकेँ सेहो प्रभावित करैत अछि। विद्यालयमे नामांकित होमए बला तथा विद्यालयी पढ़ाई पूरा करएबला बच्चाक अनुपातमे विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक समुदायक बीचमे जे प्रगाढ़ वैषम्य दृष्टिगोचार होइछ, ओहिसँ ई झलकैत अछि। एहि तरहेँ ग्रामीण तथा शहरी गरीब वर्गमे ग्रमीण तथा अजा0 अजजा0 समुदायक बालिका आ धार्मिक तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदायक पिछड़ल वर्ग शिक्षाक क्षेत्रमे सबसँ बेसी अरक्षित होइत अछि। शहरमे तथा बहुतो गाममे विद्यालयक व्यवस्था अपने-आपमे बहुस्तरीय अछि आ बच्चा सभकेँ आश्चर्यजनक रूपसँ अलग शैक्षिक अनुभव दैत अछि। असमान लैंगिक व्यवहार, मात्र वर्चस्वेटाक बढ़ाबा नहि दैत अछि बल्कि, बालक आ बालिका दुहूमे अपन पूर्ण मानसिक विकासक प्रति चिंताक भाव प्रदान करैत अछि। तैं ई सभक हित मे अछि जे मानव जातिकेँ वर्तमान लैंगिक विषमतासँ मुक्त कराओल जाए।

एतय विभिन्न श्रेणीक विद्यालय अछि - महग निजी (पब्लिक) विद्यालय जतय संभ्रान्त शहरी अपन बच्चाकेँ पठबैत छथि तथा 'निःशुल्क' जेना तेना स्थानीय संस्था द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय धरि जतय मुख्यतः शैक्षिक रूपसँ वंचित समुदायक बच्चा सभ अबैत अछि। किछुए दिन पूर्व एक असाधारण विशेषता प्रकट भेल अछि - ग्रामीण क्षेत्रमे बहुश्रेणीय विद्यालय, जे वस्तीक एक किलोमीटरक परिधिमे विद्यालय उपलब्ध करबाक आवश्यकताक कारणेँ अध्यापक-शिष्य अनुपातक मशीनी प्रयोक पर अधारित अछि, आ जकरा आवश्यक पाठ्यक्रमगत अवधारणा अथवा शिक्षा ज्ञान अथवा शिक्षा सामग्री पर स्पष्टताक सहारा सेहो नहि भेटैछ। एहि तरहक परिवर्तन अनिच्छेसँ शिक्षामे सुविधा अथवा बहिष्कारक सूचक थिक आ अवसरक समानता अथवा सामाजिक न्यायक संवैधानिक मूल्यकेँ क्षति पहुँचबैत अछि। यदि 'निःशुल्क' शिक्षाक अर्थ शिक्षासँ सभ तरहक प्रतिबन्धकेँ हटायब बूझल जाए.तऽ हमरालोकनिकेँ यू0ई0ई0क उपलब्धिकेँ सुसाध्य बनबैक आ प्रोत्साहित करबाक हेतु सरकारक सामाजिक नीतिक अन्य क्षेत्रक महत्त्वकेँ बूझय पड़त।

भूमण्डलीकरण तथा समाजक प्रत्येक क्षेत्रमे बाजारक संबंधक पसारक शिक्षाक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण अर्थ अछि। एक दिस तऽ हमरालोकनि शिक्षाक बढ़ैत व्यवसायीकरणकेँ देखि रहल छी। आ दोसर दिस शिक्षाक हेतु अपर्याप्त कोष तथा 'वैकल्पिक' विद्यालयकेँ सरकारी बढ़ाबा, एहि दिशामे संकेत दैत अछि जे शिक्षाक उत्तरदायित्व आब सरकारसँ हटिकेँ, समुदाय एवं परिवार पर आबि रहल अछि। हमरालोकनिकेँ विद्यालयक वस्तु बनब आ बाजार संबंधी धारणाक विद्यालय आ विद्यालयक गुणवत्ता पर लागू होयबाक विषयमे सतर्क रहए पड़त। प्रतिस्पर्द्धाक बढ़ैत वातावरण जाहिसँ विद्यालय ग्रसित भेल जा रहल अछि आ माया-बापक महत्त्वाकांक्षा बच्चाक प्रति जाहिमे छोट-छोट बच्चा सभ सेहो अछि, चिन्ता आ तनावक पैघ दबाव दैत अछि जे हुनक निजी विकासमे तऽ बाधक अछिए संगहि ओहिमे सिखबाक आनन्द उत्पन्न करबामे सेहो बाधक अछि।

संविधानक 74 म एवं 75 म संशोधन स्थानीय समुदायकेँ अपन बच्चाक हेतु शिक्षामे निर्णय लेबाक प्रक्रियामे भाग लेबाक हेतु एक वैधानिक संस्थागत स्थान उपलब्ध करबैत अछि जे एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन थिक। सम्प्रति, शिक्षाक हेतु माय-बापक उच्चाकांक्षा क्षेत्रीय गरीब एवं असमान सामाजिक संबंध एवं पर्याप्त सम स्तरीय विद्यालयी शिक्षाक कमीक कारणेँ उपेक्षित भए जाइत अछि। शहरी गरीबक लगातार बढ़ैत जनसंख्याक प्रति चिन्ता योजनामे

एखनहुँ धरि नहि दृष्टिगोचार होइछ। शिक्षाक क्षेत्रमे निर्धन वर्गक उपेक्षा एवं महत्त्वाकांक्षाकेँ पाठ्यक्रमक रूपरेखाक परिसरसँ पृथक् नहि कयल जा सकैछ

एहि तरहेँ शिक्षाक सामाजिक परिप्रेक्ष्य अनेक चुनौती प्रस्तुत करैत अछि जकरा पाठ्यक्रमक रूपरेखा द्वारा परिकल्पना एवं व्यवहार दूनू रूपमे संबोधित कयल जयबाक चाही। निर्दिष्ट सिद्धान्त पर कयल गेल विचार एहि चुनौती दिस ध्यान आकृष्ट कयलक अछि आ एकर सामना करबाक हेतु किछु रास्ता सेहो देखौलक अछि। एहि दस्तावेजक विभिन्न खण्डमे किछु नव विचार पर चिन्तन कयल गेल अछि जाहिमे प्रमुख थिक - ज्ञानक आवधारणाकेँ विस्तृत करब जाहिसँ नव ज्ञान एवं अनुभव क्षेत्र शामिल कयल जा सकए, सहभागिता, आत्मविश्वास एवं विचेनात्मक जागरुकताकेँ प्रोत्साहित करएबला शिक्षा संबंधी अभ्यास, शैक्षिक कार्यक चयनक समावेश तथाा पाठ्यक्रमक हेतु लेल जायबला निर्णयमे सामाजिक योगदान हेतु स्थान ।

1.7 शिक्षाक उद्देश्य :

शिक्षाक उद्देश्य विशिष्ट आदर्श एवं स्वीकृत सिद्धान्त शैक्षिक प्रक्रियाक बृहद् निर्देशनक समायोजन अछि। संगहि शिक्षाक उद्देश्य समाजक वर्तमान महत्त्वाकांक्षा एवं आवश्यकताक संगहि शाश्वत मूल्य, एक समाजक तात्कालिक संबंध सहित बृहद् मानवीय आदर्शकेँ सेहो प्रतिबिम्बित करैछ। कोनहु समय एवं स्थान पर ओ बृहद एवं शाश्वत मावनीय आकांक्षा एवं मूल्यक गप्प करैत समकालीन एवं प्रासंगिक कहल जा सकैछ।

शैक्षिक उद्देश्य विद्यालय एवं अन्य शैक्षिक संस्थान द्वारा चलाओल जा रहल विभिन्न गतिविधिकेँ एक रचनात्मक साँचामे ढ़ारि ओकरा 'शैक्षिक' होयबाक एक विशिष्ट चरित्र प्रदान करैत अछि। एक शैक्षिक उद्देश्य अध्यापकक सहायता करैछ जे ओ अपन वर्गक गतिविधिकेँ बिनु यान्त्रिक बनौने ओकरा आगाँ बढ़ाबए आर्तेँ वर्तमान संदर्भमे बिनु परिवर्तन कयनहि निर्देश दैत अछि। अतः एक उद्देश्य पूर्वज्ञात लक्ष्य होइत अछि, ई मात्र विचार नहि, अपितु ओहि उद्देश्य तक पहुँचबाक हेतु उठाओल गेल डेगकेँ सेहो प्रभावित करैत अछि। एक उद्देश्यकेँ दूरदृष्टि सेहो भेटबाक चही। ई तीन प्रकारसँ कयल जा सकैत अछि, प्रथम -निश्चित परिस्थितिक सूक्ष्य अध्ययन कएकेँ ई देखब जे उद्देश्य तक पहुँचबाक हेतु कोन साधन उपलब्ध अछि आ ओहि मार्गमे कोन-कोन व्यवधान अछि। एहिमे बच्चाक अत्यन्त सूक्ष्म अध्ययन करबाक आ ई देखबाक आवश्यकता अछि जे विभिन्न अवस्थामे ओ की-की

सिखि सकैत अछि। दोसर दूरदृष्टि ओहि क्रम दिशि इशारा करैत अछि जे प्रभावशाली होयत। तेसर- ई विकल्पक चयनक सम्भावनाकेँ सेहो प्रदर्शित करैत अछि। अतः एक उद्देश्यक संग हमरालोकनि अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिमानीसँ कार्य करैत छी। विद्यालय, वर्ग तथा संबंधित शैक्षिक स्थल ओहेन जगह होइत अछि जतय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक क्रिया-कलाप होइत अछि। ई ओहन जगह होयबाक चाही जतय विद्यार्थीकेँ एहन अनुभव भेटय जे वाँछित शैक्षिक उद्देश्यकेँ प्राप्त करबामे सहायक होअए। विद्यार्थी, शैक्षिक उद्देश्य, ज्ञानक प्रकृति तथा सामाजिक स्थलक रूपमे विद्यालयक प्रकृति, वर्गमे चलैत गतिविधिकेँ निर्देशित करबाक सिद्धान्त तक पहुँचबामे सहायक भए सकैत अछि।

जाहि निर्दिष्ट सिद्धान्तक पूर्वमे चर्चा भेल अछि ओ सामाजिक मूल्यक परिप्रेक्ष्य प्रदान करैत अछि, ओकर अंदर हमरालोकनि अपन शैक्षिक उद्देश्यकेँ निश्चय कय सकैत छी। प्रथम अछि समानता, न्याय, स्वतन्त्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा एवं अधिकार तथा अन्यक प्रति आदर जकाँ प्रजातान्त्रिक मूल्यक प्रति प्रतिबद्धता। शिक्षाक उद्देश्य विवेक पर आधारित एही मूल्यक प्रति प्रतिबद्धताक निर्माण करब होयबाक चाही। अतः पाठ्यक्रममे विद्यालयक हेतु ओतबा समावेश रहए जे ओ सम्भाषणसँ विमर्शक हेतु स्थान बनबैत बच्चामे एहि तरहक प्रतिबद्धताक निर्माण कए सकए।

विचार तथा क्रियाक स्वतन्त्रता, आत्मनिर्भरता, सामूहिकता एवं सावधानीपूर्वक विचारल मूल्य निर्धारित निर्णय लेबाक क्षमताक दिशामे संकेत दैत अछि।

ज्ञान आ विश्वक सोचक संग दोसरक भावना एवं कल्याणक प्रति संवेदनशीलते केँ मूल्यक प्रति तार्किक प्रतिबद्धताक आधार होयबाक चाही।

विश्वक हेतु सिखब, जे सिखल अछि तकरा छोड़बाक आ दोबारा सिखबाक तत्परता, नव परिस्थितिक प्रति लचकदार आ रचनात्मक विधिसँ प्रतिक्रिया व्यक्त करबाक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया पर जोर देबाक आवश्यकता अछि।

जीवनमे चुनाव एवं प्रजातान्त्रिक प्रक्रियामे हिस्सेदारी समाजमे विभिन्न प्रकारसँ योगदान देबाक सामर्थ्य पर निर्भर करैत अछि। यैह कारण थिक जे शिक्षाकेँ, कार्य करबाक, आर्थिक प्रक्रिया एवं सामाजिक बदलाबमे हिस्सा लेबाक सामर्थ्यकेँ विकसित करबाक चाहिऐक, एहि हेतु शिक्षासँ कार्यक अपरिहार्य संबंध अछि। हमरालोकनिकेँ ई निश्चय करए पड़त जे कार्य संबंधी अनुभव, हुनर एवं मनोवृत्ति तथा सामाजिक आर्थिक प्रक्रियाक ज्ञान पर्याप्त आ विस्तृत आधरयुक्त होअए आ ई अनुभव दोसराक संग सहयोगक भावनाक संग कार्य

करबाक मनोदशाकेँ पोषित करबामे सहायक होअए। मात्र कार्ये एक सामजिक मनः स्थितिक रचना कए सकैत अछि।

सौन्दर्य एवं कलाक विभिन्न रूपकेँ बूझब आ ओकर आनन्द लेब, मानव जीवनक अभिन्न अंग थिक। कला, साहित्य आ शिक्षा द्वारा बच्चाक रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सैन्दर्य विवेचनकेँ बढ़यबाक आ प्रोत्साहित करबाक साधन आ अवसरकेँ उपलब्ध कएबाक चाहिऐक। आइ जखनकि बजारक लोक द्वारा मत एवं अभिरुचिकेँ प्रभावित करबाक बेसी उपाय छैक, सौन्दर्यक ज्ञान एव रचनात्मकताक हेतु शिक्षा महत्त्व आओर बढ़ि गेल अछि।

छात्रकेँ सौन्दर्यक विभिन्न रूपकेँ बुझबामे आ विवेचन करबामे समर्थ बनयबाक प्रयास होयबाक चाही। सम्प्रति, हमरालोकनिकेँ ई सुनिश्चित कए लेबाक चही जे हम सभ मनोरंजन एवं सौन्दर्यक ओहि रूढ़िबद्ध रूपकेँ प्रोत्साहित नहि करी जे स्त्रीगण एवं विकलाङ्ग व्यक्तिकेँ अपमानित करैत होअए।

***

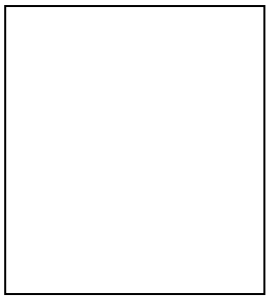

अह!, हमर बालक विद्यालय गेल।
सौभाग्यसँ हमरा हवाई अड्डासँ ई भेटि गेल!
(सौजन्य : आर. के. लक्ष्मण, टइम्स आफ इण्डिया मे)

अध्याय-2
सिखनाइ आ ज्ञान

2.1 सक्रिय विद्यार्थीक प्राथमिकता
2.2 सन्दर्भमे विद्यार्थी
2.3 विकास एवं पढ़ाई
2.4 पाठ्यक्रम एवं अभ्यासक हेतु निहितार्थ
2.5 ज्ञान एवं बोध
2.6 ज्ञानक पुनर्रचना
2.7 बच्चाक ज्ञान आ स्तरीय ज्ञान
2.8 विद्यालयी ज्ञान आ समुदाय
2.9 किछु विकासमूलक अवधारणा

ई अध्याय बच्चाकेँ स्वाभाविक सिखयबलाक रूपमे चिन्हल जयबाक आवश्यकता एवं ओकर अपन क्रिया-कलापक परिणामस्वरूप उत्पन्न होमएबला ज्ञानकेँ स्थापित करैत अछि। विद्यालयसँ बाहर अपन दैनिक जीवनमे हमरालोकिन बच्चाक जिज्ञासा, उत्सकुकता आ लगातार प्रश्नक आनन्द लैत छी। *'सिखनाइ'* बच्चाक प्राथमिकता छैक आ यैह लगातार संघर्ष करैत नव-नव वस्तु सामने अनैत अछि, प्रश्नक उत्तर तकैत अछि तथा नव अर्थ निकालैत अछि। बालपन ओ अवस्था थिक जाहिमे विकास पहिने शारीरिक तथा पुनः मानसिक स्तर पर पूर्ण रूपसँ होइत अछि तथा एहि विकासमे, वृद्धि एवं परिवर्तनकेँ बुझबामे मदति भेटैछ। संगहि ओ संसारक रचना प्रक्रियासँ परिचित होइत अछि, व्यक्तिमे पारस्परिक ज्ञान स्थापित होइत छैक। समाजमे प्रत्येक पीढ़ीक विरासतमे संस्कृति एवं ज्ञानक एकटा

भंडार मिलल रहैत छैक जकरा अपन गतिविधि एवं ज्ञानसँ जोड़ैत ओ एकरा नव ढ़ंगें रचबामे सार्थकताक अनुभव करैत अछि।

2.1 सक्रिय विद्याार्थीक प्राथमिकता :

समाजक अनौपचारिक शिक्षा विद्यार्थीकेँ अपन ज्ञानकेँ बढ़यबाक स्वाभाविक क्षमताक विकास करैत छैक आ ओकर ज्ञानकेँ बढ़बैत छैक। ई ओकर क्षमता निर्माणक अतिरिक्त ओकरामे अपन वातावरणक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि, भौतिक आ सामाजिक दूनू क्षेत्रमे। आ एहि हेतु विशेषज्ञ/बुझनिहार व्यक्तिक व्यवहारसँ परिचित होयब, नव अवसरकेँ अपनायब, गलती करब आ पुनः ओकरा सुधारब बहुत आवश्यक अछि। यैह बात भाषा, सिखबामे, कोनो कारीगरी अथवा कोनो विषय सिखबामे सेहो सटीक उतरैत अछि। संस्थाक रूपमे विद्यालय नव विद्यार्थीकेँ अपन विषयमे, दोसरक विषयमे तथा समाजक विषयमे बुझबा सिखबाक अवसर प्रदान करैत अछि जाहिसँ ओ अपन खानदान, परिवार अथवा समुदायमे जन्म लेबासँ ओकरा जे परिस्थिति भेटलैक अछि ताहिसँ निरपेक्ष आ पृथक् भए कार्य कए सकए। विद्यालय औपचारिक शिक्षाक जाहि प्रक्रियाकेँ संभव बनबैत अछि ओ विद्यार्थीक जीवनमे ज्ञान आ संसारसँ संबंधित नव सम्भावनाकेँ उद्घाटित कए सकैत अछि।

पाठ्यक्रमक वर्तमान संदर्भ बच्चाकेँ अर्थपूर्ण अनुभव प्रदान करएबला तथा समाहित करयबला शिक्षा देबाक अर्थमे अछि। पाठ्य पुस्तककेँ संस्कृतिसँ दूर होयबाक प्रयासक हेतु ई जरूरी अछि जे हमरालोकनि विद्यार्थी एवं शिक्षा प्रक्रियाक विषयमे जे सोचैत छी ताहिमे मौलिक परिवर्तन करी। अतः बाल-केन्द्रित शिक्षाक तात्पर्य एवं अधार तत्त्वकेँ सूक्ष्मतासँ देखबाक आवश्यकता अछि।

बाल-केन्द्रित शिक्षण-शास्त्रक अर्थ अछि बच्चाक अनुभव, ओकर स्वर तथा ओकर सक्रिय सहभागिताक प्राथमिकता देबे। एहि प्रकारक शिक्षा पद्धतिमे बच्चाक मनोवैज्ञानिक विकास तथा अभिरुचिकेँ ध्यानमे रखैत शिक्षाकेँ नियोजित करबाक आवश्यकता अछि। अतः शिक्षा कार्यक्रम एहन होअए जे ओ विशेषता आ आवश्यकताक विशाल विविधताक भीतर भौतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक अभिरुचिकेँ सम्बोधित करए। हमरा लोकनिक विद्यालयक शैक्षिक अभ्यास सिखयबाक कार्य आ विद्यार्थीक हेतु बनाओल गेल पाठ्यपुस्तक, बच्चाक समाजीकरण एवं शिक्षामे ग्रहणशील गुण पर केन्द्रित होइत अछि। एतदतिरिक्त, हमरालोनिकेँ ओकर सक्रिय एवं रचनात्मक सामर्थ्यकेँ पोषित आ सम्वर्धित करबाक चाही- दुनियाँसँ वास्तविक ढंगे संबंधक स्थापना, अर्थ बनायब, रचना करब आ दोसर मनुष्यसँ संवाद

स्थापित करबाक ओकर मूल अभिरुचिकेँ परिपोषित करबाक चाही। शिक्षा अर्थात् सिखनाइ स्वतः एक सक्रिय एवं सामाजिक गतिविधि थिक। प्रायः 'नीक विद्यार्थी' क जाहि धारणाकेँ प्रोत्साहित कयल जाइत अछि ओहिमे गुरुक आज्ञा-पालन, नैतिक चरित्र तथा गुरुक आज्ञाकेँ *'ब्रह्म वाक्य'* जकाँ बूझब सम्मिलित अछि।

2.2 संदर्भमे विद्यार्थी

बच्चाक स्वर आ अनुभवकेँ वर्गमे अभिव्यक्ति नहि भेटैत छैक। मात्र शिक्षकेटाक स्वर सुनाइत छैक। बच्चा प्रायः गुरुक प्रकश्नक उत्तर देबाक हेतु अथवा हुनक शब्दकेँ दोहरयबाक हेतु मुह फोलैत अछि, ओ संयोगसँ कहियो अपने किछु कएकेँ देखैत अछि आने ओकरा किछु करबाक अवसर भेटैत छैक। मात्र पुस्तकेक ज्ञानकेँ दोहरएबाक क्षमताकेँ बढ़बय केर अतिरिक्त पाठ्यक्रम द्वारा बच्चाकेँ एहि तरहेँ सक्षम बनाओल जायबाक चाही जे ओ अपन स्वर ताकि सकए, अपन औत्सुक्यकेँ विकसित करए। स्वयं कएकेँ सीखए, प्रश्न करए, वस्तुक जाँच- पड़ताल करए आ अपन अनुभवकेँ विद्यालयक ज्ञानक संग जोड़ि सकए। एहि उद्देश्यसँ पाठ्यक्रमक पुनः उन्मुखीकरण हमरालोकनिक सबसँ पैघ प्राथमिकतामे सँ एक होयबाक चाही। अध्यापकक प्रशिक्षाक सूचना, विद्यालयक वार्षिक योजना, पाठ्यक्रमक रूपरेखा, शैक्षिक सामग्री एवं शैक्षिक योजना, मूल्यांकन एवं परीक्षा व्यवस्था एकर अन्तर्गत अबैत अछि ।

बच्चा ओही वातावरणमे सिखि सकैत अछि जतय ओकरा बुझि पड़ैक जे ओ महत्त्वपूर्ण बुझल जाइत अछि। हमर सभक विद्यालय आइयो सभ बच्चा तक ई संदेश नहि पहुँचा पबैत अछि। सिखबाक आनन्द एवं संतोषक संग संबंध रहबाक बदलामे डर, अनुशाासन एवं तनावसँ संबंध रहए तऽ सिखबामे बाधा उत्पन्न होइछ। आइ ई आवश्यक अछि जे हमरालोकनिक सभ बच्चा एहन अनुभव करए जे ओहिमेसँ प्रत्येक, ओकर घर, ओकर समुदाय, ओकर भाषा एवं संस्कृति सभ महत्त्वपूर्ण अछि, ओकर विविध क्षमताकेँ स्वीकार कयल जाइत छैक जे ओकरा सभकेँ शिक्षाक ज्ञान तथा ढंग प्राप्त करबाक अधिकार छैक, वयस्क, समाज ई बुझैत अछि जे ओ सर्वश्रेष्ठ कए सकैत अछि। जेना-जेना हमरा सभक विद्यालय पसरि रहल अछि आ अधिक सँ अधिक समाजक सभ वर्गक बच्चा ओहिमे शामिल कए रहल छी, हम सभ एहि आवश्यकताक महत्त्वक प्रति अपेक्षाकृत अधिक सावधान भए रहल छी। दुपहरियाक भोजन, संरचनागत सहायता तथा सहभागिताकेँ प्रोत्साहित

करएबला शिक्षाक प्रति शैक्षिक संबंध एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन थिक जे आइ हम सभ देखि रहल छी। हमरालोकनिकेँ सभ तरहक शरीरिक दण्डक विरुद्ध सेहो कड़गर आवाज उठबय पड़त। विद्यालयक सीमाकेँ समाजक हेतु अपेक्षाकृत अधिक उदार बनय पड़तैक। संगहि पाठ्यक्रमक बोझ आ परीक्षा संबंधी तनावक सभ विस्तार पर आश्यक ध्यान देबाक आवश्यकता अछि कारण जे प्राथमिकसँ लए माध्यमिक विद्यालय आ एतेक धरि जे ओकर बादो शारीरिक एवं भावनात्मक सुरक्षा सभ तरहक शिक्षाक आधारशिला थिक।

शारीरिक असुविधाक सामान्य स्त्रोत

विद्यालय पहुँचबाक हेतु छोट बच्चाक दूर धरि पयरे चलब आ भारी विद्यालयी वस्ता।

पढ़बा लिखबाक हेतु सहायक पोथीक संगहि मौलिक भौतिक संसाधनक अभाव।

अधलाह बेंच-डेस्क जे बच्चाक पीठकेँ पर्याप्त सहायक नहि होइछ आ हाथ-पैर मोड़ि कए बैसए पड़ैत छैक।

एहन समय-सारिणी जे बच्चाक पढ़ाइक बीचमे पर्याप्त अवकाश नहि दैत अछि जे बच्चा मनोरंजन कए सकए आ किछु पैघ बच्चाकेँ तऽ खेलयबाक समये नहि भेटैछ तथा छात्राकेँ पढ़ाइ छोड़बाले प्रोत्साहित करैत अछि।

विशेष रूपेँ छात्राक हेतु शौचालय तथा सफाइ प्रबन्धक अभाव, शारीरिक दण्ड-मारब-पीटब अथवा कष्टकर मुद्रामे ठाढ़ करब अथवा बैसबाक सजाय देब।

2.3 विकास एवं पढ़ाई :

बाल्यावस्थासँ किशोरावस्था धरिक समय तेजीसँ विकसित आ परिवर्तित होइत अछि। पढ़ाई आ विकासक प्रति पाठ्यक्रमक एहन रूप होयबाक चाही जे शारीरिक एवं मानसिक विकासक मध्य अन्तः संबंधकेँ देखि सकए तथा ओकर बीचक विभाजनसँ ऊपर उठि सकय जकरा तथाकथित रूपसँ ज्ञानात्मक अथवा गैर ज्ञानात्मक अथवा अन्वेषणात्मक क्षेत्र कहल जाइत अछि। ईहो आवश्यक अछि जे व्यक्तिगत विकास एवं व्यवहारक बीच अन्तः संबंधकेँ देखल जाए।

2.3.1

सभ बच्चाक स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास सभ प्रकारक विकासक पहिल शर्त थिक। एहि हेतु आवश्यक अछि जे बच्चाक मूल आवश्यकता पौष्टिक आहार, व्यायाम तथा दोसर मानसिक- सामाजिक आवश्यकताक पूर्ति होअए।

स्वतन्त्र रूपसँ खेलायब, अनौपचारिक आ औपचारिक खेल, योग तथा खेलसँ संबंध क्रिया-कलाप, बच्चाक शारीरिक आ मानसिक विकास हेतु आवश्यक अछि। एहि क्रियाकपलासँ उत्पन्न योग्यताक अन्तर्गत ऊर्जा, प्रत्युत्पन्नमति, शारीरिक नियन्त्रण एवं आत्मचेतना तथा टीम खेलसँ विकसित समन्वयक भावना अबैत अछि। खेलक मैदान, उपकरण आ नियमक सरल अनुकूलन एहि सभ क्रिया-कलाप तथा खेलकेँ एहन बना सकैत अछि जे विद्यालयक सभ बच्चा एहिमे सम्मिलित भए सकए। बच्चा खेल, एथलेटिक्स, जिम्नास्टिक, योग एवं प्रदर्शन कला यथा नृत्य इत्यादिमे दक्षताक उच्च स्तरकेँ सेहो प्राप्त कए सकैत अछि। किन्तु जखन आनन्दसँ बढ़िकए उपलब्धि महत्त्वपूर्ण भए जाए तऽ एहन प्रशिक्षण एहन अनुशासन तथा अभ्यासक अपेक्षा करैत अछि जे एहि अवस्थामे तनाव उत्पन्न करैत अछि। यद्यपि सभ बच्चाकेँ स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षामे सम्मिलित होएबाक चाही तथापि जे खेलमे अपन भविष्य बनबए चहैत अछि तकरा हेतु उपयुक्त सुविधा उपलब्ध होएबाक चाही।

शारीरिक विकास, विशेष रूपेँ छोट बच्चामे मानसिक आ ज्ञानात्मक विकासमे सहयोग दैत अछि। सोचबाक, तर्क करबाक, स्वयं तथा संसारकेँ बुझबाक तथा भाषाक प्रयोग करबाक सामर्थ्यक एकसरे कार्य करब तथा संग-संग मिलि कए कार्य करबासँ घनिष्ठ संबंध अछि।

2.3.2

ज्ञानक अर्थ थिक कार्य तथा भाषाक माध्यमे स्वयं आ संसारकेँ बुझनाइ। सार्थक पढ़ाईक अर्थ सूचनाकेँ एकट्ठा करब आ ओकरा घोँकि जायब नहि थिक अपितु एकर अर्थ थिक ठोस वस्तु एवं मानसिक द्योतककेँ प्रस्तुत करब आ ओहिमे बदलाब अनबाक पुनरुत्पादक प्रक्रिया। एहि तरहेँ भाषा (बाजल जायबाला अथवा सांकेतिक) एवं विचारक प्रगाढ़ संबंध अछि। ई प्रक्रिया बाल्यकालहिसँ आरम्भ होइत छैक तथा स्वतन्त्र एवं मध्यस्थ क्रिया-कलापक माध्यमे विकसित होइत छैक। आरम्भमे बच्चाकेँ ज्ञानक प्रति प्रवृत्ति 'एतय आ आब'क विषयमे बुझबाक होइत छैक, ओ ठोस अनुभव पर तर्क आ कार्य करैत अछि।

जेना-जना ओकर भाषागत क्षमता आ दोसरक संग कार्य करबाक सामर्थ्यक विकास होइत छैक, ओकर कार्यमे अपेक्षाकृत अधिक जटिल विवेचनात्मक संभावना बनैत अछि जाहिमे अमूर्तीकरण योजना एवं ओहन उद्देश्य समाहित होइत अछि जे तत्काल दृष्टिगोचर नहि होअए । आ एहि तरहेँ संभावित संसारक विवेचना कार्य करबाक क्षमताक विकास होइत अछि। एहि तरहक अवधारणात्मक विकास संबंधकेँ संवृद्ध आ प्रगाढ़ बनयबाक तथा नव अर्थ सभकेँ प्राप्त करबाक आ बुझबाक निरन्तर प्रक्रिया थिक। संगहि ओहि सिद्धान्त सभक विकास सेहो होइत अछि जे प्राकृतिक आ सामाजिक संसारक विषयमे बच्चा सभक लग होइत छैक जाहिमे दोसरक संबंधमे ओहो शामिल होइत अछि आ ओकरा सभकेँ ई बतबैत अछि जे वस्तु सभ जेहन अछि से किएक अछि, कारण तथा कारकक बीचमे की संबंध अछि तथा कार्य आ निर्णय लेबाक की आधार अछि।

निजी तथा सरकारी बहुत तरहक विद्यालय अछि जाहिमे नाना प्रकारक सामाजिक आर्थिक समूह सभक बच्चा सभ अबैत अछि। कोठरी आयोगक अनुसार 'जाहि प्रकारक स्थिति भारतमे अछि ताहिमे ई शिक्षा व्यवस्थाक उत्तरदायित्व अछि जे ओ विभिन्न सामाजिक वर्ग आ समुदाय सभकेँ संग आनय आ एहि प्रकारेँ एकटा समतावादी आ सुसंगठित समाजक प्रादुर्भावकेँ प्रोत्साहित करए। मुदा वर्तमान स्थितिमे शिक्षा-व्यवस्था स्वयं सामाजिक भेद-भावकेँ बढ़ाबा देबाक प्रवृत्ति रखैत अछि आ वर्णभेदक गम्भीरताकेँ सतत बनौने अछि। ओहूसँ अधलाह गप्प तऽ अछि जे भेद-भाव बढ़ितहि जा रहल अछि आ एहिसँ विशिष्ट वर्ग आ सामान्य जनक बीचक दूरी निरन्तर बढ़ैत जा रहल अछि। (1966:18) की हम अपन बच्चा सभकेँ ई बुझा रहल छिऐक जे हमरा सभक हेतु भिन्न-भिन्न बच्चाक पृथक्-पृथक् महत्त्व अछि? यदि एकर उत्तर अनश्चियपूर्ण 'हँ' अछि तऽ हमरा सभकेँ कोठारी आयोगक ओहि सपनाकेँ यथार्थमे बदलबाक हेतु सभटा आवश्यक उपाय करबाक होयत जाहिमे एकटा समान विद्यालयी व्यवस्थाक परिकल्पना कयल गेल छलैक। समान विद्यालयी पद्धति केर एकटा एहन राष्ट्रीय शिक्षा पद्धतिक रूपमे परिभाषित कएल जा सकैछ जे संवैधानिक मूल्यक अनुसार होअए आ जकरा सभ छात्रके जाति, वर्ग, लिंग, अथवा स्थान केर बिनुभेद कएने स्तरीय शिक्षा देबाक क्षमता होअए। एहि पद्धतिक अनुसार सभ विद्यालय (सरकारी, स्थानीय निकायक अथवा निजी) केर मूल सुविधा उपलब्ध करएबाक आ अपन आसपास सभ छात्रके निःशल्क शिक्षा देबाक दायित्व होएत।)

एहि प्रकारक प्रवृत्ति, भावना आ आदर्शक परिचयात्मक विकासक अभिन्न अंग अछि आ भाषाक विकास, मानसिक चित्रणक अवधारणा तथा तार्किकतासँ एकर घनिष्ठ संबंध छैक। जेना-जेना बच्चा सभक अधिज्ञानात्मक सामर्थ्यक विकास होइत छैक ओ सभ अपन आस्थाक प्रति बेसी जगरुक भेल जाइत अछि आ एहि प्रकारेँ अपन अध्ययनकेँ स्वयं नियन्त्रित आ नियमित करबामे सक्षम भए जाइत अछि।

- सभ बच्चा स्वभावतः सिखबाक हेतु प्रेरित रहैत अछि आ सिखबाक क्षमता रखैत अछि।
- अर्थ निकाबल, अमूर्त्त विचार सभकेँ विकसित करब, विवेचना आ काज करबाक क्षमता, सिखबाक प्रक्रिया केर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंश अछि।
- बच्चा सभ भिन्न-भिन्न तरीकासँ सिखैत अछि- अनुभवक माध्यमसँ, कार्यकेँ स्वयं करबा आ बनयबासँ, नव प्रयोग कयलासँ, पढ़बासँ, विमर्श करबासँ, पुछबासँ, सुनबासँ ओहि पर सोचबासँ आ स्वयंकेँ वाणी, क्रिया-कलाप अथवा लेखनक द्वारा अभिव्यक्ति करबाक माध्यमसँ- व्यक्तिगत आ सामूहिक दूनू स्तर पर। अपन विकासक मार्गमे ओकरा सभकेँ एहि सभ तरहक कार्यक अवसर भेटबाक चाही। शरीरिक असमर्थताक मारल बच्चा सभकेँ विशेष अवधारणात्मक विकासक लेल बहुसंवेदीय अनुभव सभक मदतिक आवश्यकता होइत छैक।
- बच्चा मानसिक रूपसँ तैयार होअए ताहिसँ पहिनहिँ ओकरा पढ़ायब, बादक अवस्थामे ओकरामे सिखबाक प्रवृत्तिकेँ प्रभावित करैत छैक। ओकरा बहुतो तथ्य 'याद' तऽ नहि रहि सकैत छैक मुदा संभव अछि जे ओ ओकरा नहि बुझि पाबए, आने ओकरा अपन लग- पासक संसारसँ जोड़ि पाबए।
- विद्यालय क भीतर आ बाहर, दूनू जगह पर सिखबाक प्रक्रिया चलैत छैक। एहि दूनू जगहमे यदि संबंध रहए तऽ सिखबाक प्रक्रियामे वृद्धि होइत छैक। कला आ कार्य सर्वांगीण पढ़ाइक अवसर प्रदान करैत अछि जे सौन्दर्यबोधी तत्त्वसँ परिपुष्ट होइत अछि। एहन अनुभव भाषायी रूपसँ ज्ञात वस्तुक हेतु महत्त्वपूर्ण अछि, विशेष रूपेँ नैतिक मुद्दामे, जाहिसँ प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा सिखल जा सकए आ जकरा जीवनमे समाहित कयल जा सकए।

- पढ़ाइक एकटा उचित गति होयबाक चाही जाहिसँ छात्र अवधारणा सभकेँ बुझि सकए आ आत्मसात् कए सकए, खाली रटबेटा नहि करए जे परीक्षाक बाद ओकरा बिसरि जाए। शारीरिक असमर्थतासँ ग्रस्त बच्चा सभकेँ प्रायः दोहरयबाक हेतु अपेक्षाकृत बेसी समयक आवश्यकता होइत छैक। संगहि पढ़ाइमे विविधता आ चुनौती होयबाक चाही जाहिसँ ओ बच्चा सभकेँ बेसी रुचिकर लागए आ ओकरा सभकेँ व्यस्त राखि सकए। अकच्छ लगनाइ एहि बातक सूचक थिक जे ओ काज बच्चा सभक हेतु आब यान्त्रिक रूपमे दोहराओल जा रहल अछि। आब ओकर ज्ञानात्मक मूल्य समाप्त भए चुकल अछि।
- पढ़ाइ प्रत्यक्षतः तथा ककरो माध्यमसँ दुहू प्रकारसँ भए सकैत अछि। प्रत्यक्ष सिखबामे सामाजिक सन्दर्भ एवं संवाद, विशेषतः बेसी सक्षम लोक सभसँ संवादसँ छात्र सभकेँ अपनासँ उच्च ज्ञान-क्षमताक बीचमे रहबाक अवसर भेटैत छैक।

2.3.3

अपन व्यक्तित्वक विकास हेतु किशोरावस्था बहुत महत्त्वपूर्ण समय थिक। आत्म परिचयक भावना,एहि अवस्थामे होमएबला शारीरिक परिवर्तनक कारणसँ उत्पन्न होइत अछि,संगहि ईहो सीखल जाइत अछि जे वयस्क बनबाक हेतु सामाजिक आ मानसिक आवश्यकता की सभ छैक। स्वतन्त्रता, आत्मीयता आ पारस्परिक निर्भरता सन मुद्दाक सावधानीपूर्वक ध्यान रखबाक आवश्यकता छैक संगहि ओकरासभकेँ उपयुक्त सहयोग देल जाय जाहिसँ ओ ओहि मुद्दासभक सामना कए सकए। बाँकी संसार तथा छात्रक ओतय तथा पहुँच आ स्वतन्त्र गति व्यक्तित्व निर्माणकेँ प्रभावित करैत अछि। बालिका सभक संबंधमे ई तथ्य विशेष रूपसँ महत्त्वपूर्ण अदि किएक तँ प्रायः सामाजिक परम्परा ओकरा सभकेँ घरक भीतर रहबाक हेतु बाध्य कए दैत अछि। यैह परम्परा बालक सभक हेतु ठीक एकर विपरत रूढ़िकेँ प्रोत्साहित करैत अछि जे बालक सभकेँ बाहरी तथा शारीरिक कार्य-कलापसँ जोड़ैत अछि। एहि तरहक रूढ़ि सभ किशोरावस्थामे बेसी प्रबल भए जाइत अछि जे शरीरक बढ़बाक समय होइत छैक । एहि शारिरिक परिवर्तन सभक किशोरक मानसिक आ सामाजिक जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ैत छैक। बेसीरास किशोर एहि परिवर्तनक समना बिनु पूर्ण ज्ञान भेनहि करैत अछि जाहिसँ ओ सभ खतरनाक स्थिति जेना एस0 टी0 डी0, लैंगिक अपराध, एच0 आई0 वी0 एड्स आ दवाईक दुरुपयोग केर चपेटमे आबि सकैछ। ई समय होइत अछि जखन पूर्वस्थित आ समाजक अभिन्न अंग बनल विचार आ मानदण्ड सभ पर

प्रश्न उठाओल जाइत अछि, जखनकि एकरहि संग अनकर आ अपन मित्र सभक विचार बहुत महत्त्वपूर्ण भए जाइत अछि। ई बुझब आवश्यक अछि जे सकरात्मक व्यवहार, जीवनक खतरनाक स्थितिक सामना, मित्रमंडलीक दबाव आ लैंगिक परिस्थितिसँ सामना करबाक हेतु किशोर कें सामाजिक आ भावनात्मक सहयोगक आवश्यकता होइत छैक। एहि अवलम्बक अनुपस्थितिसँ शारीरिक परिवर्तनक विषयमे भ्रम भए सकैछ आ ओकर शैक्षणिक आ शिक्षणेत्तर कार्यकलाप प्रभावित भए सकैत अछि।

2.3.4

कक्षामे सभ छात्रकें सम्मिलित करएबला वातारणक निर्माण अवश्यक अछि, खास कए ओहन छात्रकें जकर पाछू छुटबाक संभावना छैक, उदाहरणार्थ विकलांक छात्र। कोनो छात्र अथवा छात्र समूहकें सिखबाक हेतु अक्षम घोषित कएलासँ ओकरा सभमे असहायता, निकृष्टता आ हीनताक भावना उत्पन्न होइत छैक। ई छात्रक विविध परिवेशसँ होएबाक कारणे आ अनुपयुक्त शैक्षणिक विधिक कारणे होमएबला समस्याकें आओर बढ़बैत अछि। अक्षमताक शिकार बच्चाकें सेहो आन छात्र सभक जकाँ, समूहक सदस्यताक अधिकार छैक। छात्र सभक मतिभिन्नताकें संसाधनक रूपमे देखल जएबाक चाही, समस्याक रूपमे नहि। शिक्षामे सम्मिलित करब, समाजमे सम्मिलित करबाक अंग थिक।

तें ई विद्यालयक दायित्व थिक जे ओ एकटा एहन पाठ्यक्रम उपलब्ध कराबए जे सभ छात्र तक पहुँच सकए। ई दस्तावेज शुरुआत भए सकैत अछि एकटा एहन पाठ्यक्रमक निर्माणक जे कोनो छात्र अथवा समूहक विशेष आवश्यकताक पूर्ति करए। पाठ्यक्रममे आवश्यक चुनौतीक सेहो समावेश होअए जाहिसँ छात्रकें अपन ज्ञानकें जचबाक आ अपन क्षमताकें पूर्ण रूपसँ विकसित करबाक अवसर भेटए। सिखएबा आ सिखबाक प्रक्रियाक येाजना एहि तरहें बनाओल जाए जाहिसँ ओ छात्रक विविध आवश्यकताक पूर्ति कए सकए। शिक्षक गण एहन, सकारात्मक संभावनाक खोज कए सकैत छथि जाहिसँ सभ छात्र, अक्षम कहल जाएबला समेत, कें शिक्षा प्रदान कएल जा सकए। एहि लक्ष्यक पूर्ति सहयोगी शिक्षकक आ विद्यालयसँ बाहरक संस्था सभक सहयोगसँ भए सकैछ।

2.4 पाठ्यक्रम एवं अभ्यासक हेतु निहितार्थ :

निर्माणात्मक परिप्रेक्ष्यमे, सिखब, ज्ञान निर्माणक प्रक्रिया थिक। सिखनिहार ज्ञानक निर्माण, नव अवधारणाकें पुरान अवधारणासँ मिलाकए–उपलब्ध सामग्री/ कार्यकलापक

आधार पर करैत छथि। उदाहरणार्थ विषय वस्तु अथवा चित्र/ दृश्य केर उपयोग सँ परिवहन व्यवस्था पर बहस करबासँ छात्र यातायातक नव अवधारणा उत्पन्न कए सकैत अछि। प्राथमिक अवधारणा (मानसिक निर्माण) सड़क परिवहन सेवा पर आधारित भए सकैछ आ ग्रामीण परिवेशक छात्र बैलगाड़ी पर केन्द्रित अवधारणा बनाए सकैत अछि। सिखनिहार सभ बाहरी सत्यताक (यातायात व्यवस्था) क मानसिक अनुमान (चित्रण) देल गेल कार्यकलाप (अनुभव) केर माध्यमसँ कए सकैछ। विचारक निर्माण आ पुनर्निर्माण, सिखनिहारक विकासक द्योतक अछि। उदाहरणार्थ सड़क परिवहनक संबंधमे बनाओल गेल अवधारणा केर उचित कार्य -कलापक माध्यमसँ आनो परिवहन यथा-जल ओ वायु केर हेतु पुनर्निर्मित कएल जाए सकैछ। उचित कार्य- कलापक माध्यमसँ सिखनिहारक व्यस्तता, यातायात व्यवस्था आ मानव जीवन/अर्थ-व्यवस्थाक बीच संबंधक मानसिक चित्रण करबामे ओकर मदति करत। मुदा कोनो जटिल प्रक्रियाक हेतु अवधारणाक निर्माणक लेल सामूहिक चिंतनक आवश्यकता होइत छैक, जे एकर सामाजिक पक्ष अछि। एहि परिप्रेक्ष्यमे सामूहिक रूपसँ, सिखबासँ अर्थक आदान-प्रदान, दृष्टिकोणक परिचर्चा आ बाहरी सत्यता केर विषयमे आंतरिक विचारकेँ बदलबाक अवसर भेटैत छैक निर्माणक प्रक्रिया देखबैत अछि जे सभ सिखनिहार व्यक्तिगत आ सामाजिक रूपसँ अर्थक निर्माण करैत अछि, जे ओ सिखैत अछि। अर्थक निर्माण, सिखबाक प्रक्रिया थिक। निर्माणात्मक परिप्रेक्ष्य सभक प्रोत्साहन देबाक रणनीति तैयार करैत अछि।

2.4.1 **ज्ञान निर्माणक हेतु अध्यापन** :

बच्चा सभक ज्ञानार्जनमे अध्यापक सभक भूमिका सेहो बढ़ि सकैत अछि यदि ओ लोकनि ज्ञान निर्माणक एहि प्रक्रियामे सक्रिय रूपसँ शामिल भए जाथि जाहिमे बच्चा सभ व्यस्त अछि। सिखबाक प्रक्रियामे व्यस्त एकटा बालक अपन ज्ञानक स्वयं निर्माण करैत अछि। बच्चा सभकेँ ओ प्रश्न पुछबाक अनुमति देनाइ जाहिसँ ओ विद्यालयमे सिखाओल जायबला वस्तु सभक संबंध बाहरी संसारसँ स्थापित कए सकए, ओकरा सभकेँ एक तरहसँ उत्तर रटबाक आ देबाक बदलामे अपन शब्दमे जबाव देबाक आ अपन अनुभव बतयबाक हेतु प्रोत्साहित केनाइ - ई सभ बच्चा सभक ग्राह्य-क्षमताकेँ विकसित करबामे बहुत छोट किन्तु महत्त्वपूर्ण प्रयास थिक। 'बुद्धिमत्तापूर्ण अनुमान' केर बातकेँ एक गोट सर्थक शिक्षण शास्त्रीय साधनक रूपमे प्रोत्साहित कयल जयबाक चाही। प्रायः अपन दैनिक जीवनसँ अथवा संसार

तन्त्रसँ साक्षात्कारक कारणेँ बच्चा सभमे विचारक उद्भव होइत अछि मुदा ओकरा ओहि प्रकारेँ प्रस्तुत नहि कए पबैत अछि जाहिसँ शिक्षक ओकरा प्रोत्साहित कए सकए। हम सभ जे जनैत छी आ हम सभ जे लगभग जनैत छी ओकर बीचक एही 'क्षेत्र'मे नव ज्ञानक निर्माण होइत अछि। एहि प्रकारक ज्ञान बेसी काल कलाक रूप घारण कए लैत अछि जे विद्यालयसँ बाहर, घरमे अथवा समाजमे पोषित होइत अछि। एहि सभ प्रकारक ज्ञान आ कला सभक आदर होयबाक चाही। एकटा संवेदनशील आ निपुण शिक्षक ई बुझि सकैत छथि आ बच्चा सभकेँ नीक जकाँ चयन कयल गेल अभ्यास आ प्रश्न सभमे व्यस्त कए पबैत छथि जाहिसँ ओ अपन विकासक क्षमताक अनुभव कए सकय।

जिज्ञासा, अन्वेषण, प्रश्न करब, वाद-विवाद, व्यवहारिक प्रयोग आ चिन्तन जाहिसँ सिद्धान्तक निर्माण भए सकए आ विचार/ स्थितिक निर्माण भए सकए- ई सभ बच्चाक सक्रिय व्यस्तताक कार्य होयबाक चाही। विद्यालय सभक द्वारा एहन अवसर प्रदान कयल जयबाक चाही जाहिसँ बच्चा सभ प्रश्न पूछए, चर्चा करए, चिन्तन करए आ तखन अवधारणा सभकेँ आत्मसात् करए अथवा पुनः नव विचार सभक रचना करए। एहि प्रक्रियाक माध्यमे विभिन्न अवधारणा सभ, कला सभ आ स्थिति सभ तक पहुँचबाक लेल बच्चा सभक सक्रिय भूमिकामे चुनौतीक तत्त्व महत्त्वपूर्ण अछि। एकटा विशेष आयु वर्गक लेल जे चुनौतीपूर्ण अछि ओ दोसर आयुवर्गक लेल आसान आ अरुचिकर भए सकैत अछि आ कोनेा आओर आयुवर्गक हेतु पूर्णतः अलग आ अकछयबाबला।

अतः प्रायः 'वस्तुपरक' होयबाक नाम पर अध्यापक नरमी आ रचनात्मकताक बलि दए दैत छथि। प्रायः निजी आ सरकारी दूनू प्रकारक विद्यालय सभक अध्यापक एहि बात पर जोर दैत छथि जे सभ बच्चाकेँ प्रश्न सभक एकरङाह उत्तर देबाक चाही आन उत्तर सभकेँ स्वीकार नहि करबाक हेतु ई तर्क देल जाइत अछि जे ' ओ एहन उत्तर नहि दए सकैत अछि जो पाठ्य पुस्तकमे नहि अछि' अथवा 'हम सभ प्राध्यापक प्रकोष्ठमे एकर चर्चा कयलहुँ आ निश्चय कयल जे हम सभ मात्र एही उत्तरकेँ ठीक बूझब' अथवा 'तखन तऽ बहुत तरहक उत्तर आबि जायत' की हमरा सभकेँ सभ तरहक उत्तर सभकेँ ठीक बुझबाक चाही? एहन तर्क सभ पढ़बाक अर्थक हँसी उड़बैत अछि आ बच्चा सभकेँ आ माय-बापकेँ आओरो निश्चन्त कए दैत अछि जे विद्यालय अतार्किक रूपसँ अडिग अछि। हमरा सभकेँ वास्तबमे एहि बात पर सोचबाक चाही जे हम सभ सतत बच्चा सभकेँ प्रश्नक उत्तरे देबाक

हेतु किएक कहैत छिऐक? देल गेल उत्तर सभक हेतु प्रश्न सभक एकगोट सूची बनायब सेहो एकटा महत्त्वपूर्ण जाँच भए सकैत अछि।

प्रश्न तैयार करब

यदि उत्तर पाँच अछि तऽ प्रश्न की सभ भए सकैत अछि? एतय किछु उत्तर सभ देल गेल अछि –

- *चरि आ एक मिलि कए की बनबैत अछि?*
- *यदि तैंतीसमे सँ सत्ताइस जोड़ एक कैं निकालि लेल जाए तऽ शेष की बचत?*
- *अहाँकैं कतेक वर्फी चाही?*
- *हम अपन नानीक घर पर रवि दिन पहुँचलहुँ आ बृहस्पति दिन ओतयसँ निकललहुँ। हम ओतय कतेक दिन रहलहुँ?*
- *क,ख,ग, आयल तकर बाद ओहिमे घ,ङ;च,छ, शामिल भए गेल, फेरि क आ च चलि गेल, फेरि च वापस आबि गेल आ ख चलि गेल। अन्ततः कतेक शेष बचल?*
  यदि उत्तर अछि 'ओ लाल छल' तऽ प्रश्न की भए सकैत अछि?
- *ओहि फूलक रंग की छल?*
- *तो चिट्ठी बक्सामे किएक खसौलही?*
- *ओ अचानक ट्रैफिक लाइट पर किएक रुकि गेल?*

2.4.2 पारस्परिक संवादक महत्त्व :

सिखबाक प्रक्रियाक अभिन्न अंग अछि चारू कातक वातावरण, प्रकृति, वस्तु सभ आ लोक सभसँ कार्य आ भाषा दुहूक माध्यमे संवाद स्थापित करब एम्हर-ओम्हर घुमनाई, तकनाइ, एकसरे काज केनाइ अथवा अपन मित्र सभ अथवा ज्येष्ठ सभक संग काज केनाइ, भाषाक पढ़नाइ, अभिव्यक्त केनाइ, पुछबा आ सुनबाक हेतु प्रयोग केनाइ किछु एहन महत्त्वपूर्ण क्रिया सभ अछि जाहिसँ हम सिखैत छी। एहि हेतु जाहि संदर्भमे ई शिक्षा होइत अछि तकर प्रत्यक्षतः ज्ञानात्मक महत्त्व अछि।

विद्यालयी शिक्षाक बहुतो भाग एखनहुँ व्यक्ति आधारित अछि (यद्यपि वैयक्तिक नहि)। अध्यापककेँ 'ज्ञान' प्रदान कयनिहाकर रूपमे देखल जाइत अछि जकरा सम्भवतः बच्चा ज्ञान बुझैत अछि आ अध्यापक ओहि अनुभवक आयोजकक रूपमे देखल जाइत छथि जे बच्चाक पढ़ाइमे सहायक होइत छथि। मुदा अध्यापक, दोस्तक संग-संग अपनासँ छोट आ पैघ बच्चा/लोकक संग वार्तालाप सेहो सिखबाक अनेक सम्भावनाकेँ प्रकट करैत अछि दोसराक संगतिमे सिखनाइ परस्पर संवादे करबाक प्रक्रिया थिक। एहि तरहक पढ़ाई आओरो मनलग्गू आ परिपुष्ट होइत अछि जखन विद्यालय विभिन्न आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमिक बच्चा सभकेँ प्रवेश दैत छैक।

प्राथमिक विद्यालयी शिक्षामे सामूहिक कार्यक क्षेत्रमे एकटा नव शुरुआत कयल गेल अछि। माध्यमिक आ उच्च माध्यमिक विद्यालयमे समूहमे कयल जायबला प्रोजेक्ट आ गतिविधिकेँ सेहो पढ़ाइक एकटा अंग बनबाक चाही। एहि सामूहिक पढ़ाइक मूल्यांकनक तरीका सेहो अछि। विद्यालय सभ विभिन्न आयुक बच्चा सभक समूह बनाकय ओकरा सभक संग-संग कार्य करबाक प्रोजेक्ट सेहो दए सकैत अछि। एहि मिश्रित समूह सभमे बच्चा सभ एक दोसरासँ समूहमे काज केनाइ आ सामाजिक मूल्यक विषयमे काफी सिखि सकैत अछि। अपेक्षाकृत बेसी सक्षम लोक सभक संगतिमे व्यक्तिकेँ पैघ काज सभमे भाग लेबाक अवसर भेटैत छैक जतय ओ अपन क्षमतासँ आगू बढ़ि कए सेहो काज कऽ सकैत आ ओहो काज करबाक प्रयास कए सकैत अछि जे ओ ठीकसँ नहि जनैत अछि। समूहमे काज सिखब, जिम्मेदारी लेब आ जे काज देल गेल अछि तकरा पूरा करबामे योगदान देब- ई सभ ज्ञान प्राप्त करबेक नहि अपितु कला, ढंग आदि सिखबाक आ काज करबाक सेहो महत्त्वपूर्ण अंग थिक। बहुश्रेणीय कक्षाक स्थितिमे भिन्न-भिन्न दर्जाक समूह सभक चयन केनाइ जाहिमे एकटा क्रिया-कलापकेँ भिन्न-भिन्न आयुवर्गक बच्चा सभ कए सकए, शैक्षिक रूपसेँ एकटा नीक पाठ्यक्रम योजना भए सकैत अछि।

निर्माणात्मक सिखबाक परिस्थिति

प्रक्रिया	*विज्ञान*	*भाषा*
	परिस्थिति *सिखनिहार सभ स्तनपायी पर एकटा लेख पढ़ैत छथि आ विभिन्न क्षेत्रक स्तनपायी पर आधारित चलचित्र देखैत छथि। एहिमे स्थान आ जलमे घूमैत समूह, चरैत, शिकार करैत, जन्म दैत, खतरा आ अन्य समयमे संग-संग दौड़ैत ओकर दृश्य अछि।*	*परिस्थिति* *सिखनिहार सभ 'काबुलीवाला' केर कथा पढ़ैत छथि, हुनका सभ कें किछु पृष्ठभूमि सामग्री आ दृश्य युक्त कथा आ ओकर संक्षेप व्याख्या देखाओल जाइत अछि। किछु सिखनिहार देखाओल गेल किछु दृश्यक नकल करैत छथि।*
निरीक्षण	*सिखनिहार सभ स्तनपायीक मुख्य घटना, स्वभाव अथवा कार्यकलापकें लिखैत छथि।*	*सिखनिहार सभ शान्तिपूर्वक दृश्य के देखैत छथि।*
परिप्रेक्ष्यीकरण	*ओ अपन विश्लेषणकें पाठसँ तुलना करैत छथि।*	*ओ पाठक कथाक तुलना देखाओल गेल पृष्ठभूमिसँ करैत छथि।*
प्रशिक्षणकाल अनुभूति	*शिक्षकगण स्तनपायीक उद्धरणसँ देखबैत छथि जे ओ सभ एहन सूचनाक विश्लेषण आ व्याख्या कोना करताह ।*	*दृश्यक माध्यमसँ शिक्षक खिस्सा पढ़बासँ दृश्यकें जोड़ब सिखबैत छथि।*
सहयोग	*देल गेल कार्यकें पूरा करबाक हेतु छात्र समूहक गठन करैत छथि आ शिक्षक हुनक सहयोग करैत छथि।*	*व्याख्या उत्पन्न करबाक हेतु छात्र समूहमे कार्य करैत छथि आ शिक्षक हुनक सहयोग करैत छथि।*
व्याख्याक निर्माण	*सिखनिहार सभ विश्लेषण करैत छथि आ अपन अनुमानक*	*ओ विश्लेषण करैत छथि आ खिस्साक संबंधमे अपन*

	जांच करबाक हेतु स्तनपायी सँ संबधित साक्ष्य उत्पन्न करैत छथि ।	*धारणा बनबैत छथि।*
अनेक व्याख्या	*अपन विचार अथवा व्याख्याक समर्थनक हेतु ओ अपन विश्लेषण आ पाठक सहारा लैत अछि, समूहमे आ समूहक माध्यमे। पाठ्यांशक संग सबूत आ अपन विचारकेँ रखबासँ ओ उत्तर तकबाक अथवा आँकड़ाक व्याख्या करबाक अनेक विधि ताकि लैत अछि।*	*अपन समूहमे आ विभिन्न समूहक बीच व्याख्याक चर्चा कएकला सँ सिखनिहारकेँ ई ज्ञान होइत छैक जे लोककेँ 'काबलीवाला' केर विषयमे विभिन्न धारणा भए सकैत अछि।*
अनेक विचार	*एहि प्रक्रियाकेँ घोकलासँ आ स्तनपायीक व्यवहारक विभिन्न अवसरक परिप्रेक्ष्यीय पृष्ठभूमिकेँ एक दोसरासँ जोड़लासँ सिखनिहार देखैत छथि जे हुनक कार्यकलापमे सम्मिलित मूल सिद्धान्त स्पष्ट भए रहल अछि।*	*पाठ, पृष्ठभूमिक दृष्टान्त आ अपन चित्रणक मामध्यमसँ सिखनिहार देखैत छथि जे कोना एकहि पात्र आ धारणा, अनेक रूपमे चित्रित भए सकैत अछि।*

शिक्षकक भूमिका : *एहि प्ररिप्रेक्ष्यमे शिक्षक एकटा सहायक छथि जे सिखनिहाकेद्द सिखबालक प्रक्रियाम, चित्रण, विश्लेषण आ व्याख्या करबाक हेतु प्ररित करैत छथि।*

2.4.3 शैक्षिक अनुभव सभक रूपरेखा :

शैक्षिक कार्यक गुणवत्ता ओकरामे सिखयबाक क्षमता आ छात्रक लेल ओकर महत्ताकेँ प्रभावित करैत अछि। ओ अभ्यास जे बहुत आसन होइत अछि अथवा बहुत कठिन तखन बेरि-बेरि एकहिटा गप्प यान्त्रिक रूपसँ दोहरयबैत अछि जे पाठ्य पुस्तककेँ रटबा पर आधारित होइत अछि जे बच्चा सभकेँ आत्माभिव्यक्ति आ प्रश्न पुछबाक अनुमति नहि दैत अछि। शिक्षक सभक जाँच कार्ये पर निर्भर करैत अछि। ओ बच्चा सभकेँ एकटा आज्ञाकारी निष्क्रिय मूर्त्ति बना दैत अछि आ छात्र सभकेँ अपन विचार आ विवेकक महत्त्वकेँ नहि सिखबैत अछि, बल्कि ई सिखबैत अछि जे ज्ञान अनकर द्वारा बनाओल गेल अछि आ ओकरा ज्ञानकेँ मात्र ग्रहण करबाक चाही आ जे बच्चा सभ स्वाभाविक रूपसँ शिक्षाक हेतु प्रोत्साहित नहि होइत अछि ओकरा प्रोत्साहित करबाक भार अध्यापक सभक भए जाइत अछि। शिक्षार्थी सभ नियन्त्रित भेनाइ स्वीकार कए लैत अछि आ धीरे-धीरे एहि बातले सेहो इच्छुक भए जाइत अछि जे ओकरा पर नियन्त्रण राखल जाय। अंततः ई ज्ञानात्मक आत्मचिन्तन आ ओहि लचीलापनक विकासक हेतु हानिकारक अछि जखनकि ई विद्यार्थी सभकेँ सशक्त बनयबाक सदंर्भमे महत्त्वपूर्ण अछि। एहि शैक्षिक वातावरणमे जखन तक ओ सातम कक्षामे पहुँचैत अछि ओ आत्मविश्वास, अपना स्वयंकेँ अभिव्यक्त करबाक क्षमता आ विद्यालयी अनुभवक अर्थ निकालबाक क्षमतासँ विहीन भए चुकल रहैत अछि। ओ सभ बेरि-बेरि परीक्षामे उत्तीर्ण होयबाक लेल ओही यान्त्रिक रटन्त विद्याक सहयोग लैत अछि।

जखनकि एहन चुनौतीपूर्ण अभ्यास जे स्वतन्त्र विचार प्रक्रियाक समाधान होयबाक विविध तरीका सभकेँ प्रोत्साहित करैत अछि, छात्र सभमे स्वतन्त्रता, रचनात्मकता आ आत्मानुशासनकेँ प्रोत्साहित करैत अछि। प्रश्न पूछब, जबाब देबाक तत्परता आ हरदम ठीक जबाब बुझबाक संस्कृतिकेँ बढ़बा देबाक बदलामे हमरा सभकेँ छात्र सभकेँ गहन आ सार्थक पढ़ाई पर बेसी समय व्यतीत करबाक अवसर देबाक चाही।

अनुभव सभक नियोजन

कोनो प्रक्रियाकेँ यथार्थमे घटित होइत देखबाक प्रक्रिया, यथा- डेयरी फार्ममे गाछ रोपबाक अथवा दूध जमा करबाक विभिन्न अवस्था सभ, अथवा कोनो डेयरी उत्पादक बनबाक आ पैक होयाक प्रक्रिया देखब।

कोनो एहन अभ्यासमे भाग लेब जाहिमे मस्तिष्क आ शरीर दुहूक व्यायाम सम्मिलित हो, यथा-कोनो कथावस्तु पर एकटा नाटक तैयार करब आ ओकर मञ्चन करब।

एकटा एहन अनुभव पर विचार विमर्शक मानसिक प्रक्रिया जाहिसँ बच्चाक साक्षात्कार होइत छैक (उदाहरणतः परिवार आ समाजमे व्याप्त लिंग भेद अथवा संख्या सभक मानसिक खेल)

कोनो वस्तु बनायब, यथा- चरखी सभक प्रयोग कएकेँ कोनो भार उठबएबला यन्त्र निर्माण। एहि अनुभवक बाद, अध्यापक, एहि पर चर्चा, भाषण, लेखन, चित्रकला अथवा प्रदर्शनी करबा सकैत छथि। ओ बच्चा सभक ओहि प्रश्न सभकेँ निहि्नत कए सकैत छथि जकर सभक जबाब बच्चा चाहैत अछि। शिक्षक लोकनि पाठ्य पुस्तक सभक ज्ञानक संग अन्य संदर्भ सभकेँ जोड़ि कए अनुभवकेँ पुष्ट आ गहन बनाए सकैत छथि। एहि प्रकरक अनुभव आ अनुभवक बादक क्रिया-कलाप सभ विद्यालयी शिक्षाक कोनो स्तर पर मूल्यवान आ कार्यक भए सकैत अछि। समयक संग-संग एहि अनुभव सभक प्रकृति, प्रकार आ जटिलता सभकेँ बदलबाक आवश्यकता होयत। भाषा एहन अनुभव सभकेँ प्रबन्ध संयोजित करबाक आधार होइत अछि तैं अनुभवक स्तर आ भाषाक विकासमे संबंध आवश्यक भए जाइत अछि।

पढ़ाइक ओ कार्य जे ई सुनिश्चित करबाक हेतु बनाओल गेल अछि जे बच्चाकेँ प्रोत्साहित कएल जाए जे ज्ञान पाठ्य पुस्तकमे नहि अपितु अन्यत्र, यथा- ओकर अपन अनुभव, घर आ समाजक अनुभव तथा विद्यालय एवं विद्यालयसँ बाहरक पुस्तकालयमे ताकल जयबाक चाही, ओकरा, प्रामाणिक सिद्ध कएकेँ पुनः ओकर निर्माण होयबाक चाही आओर ई जे एहि प्रक्रियामे पाठ्य पुस्तक आने अध्यापके अन्तिम सत्य छथि। मात्र इतिहासेक शिक्षककेँ नहि बाल्कि सभ विषयक शिक्षककेँ पुरातात्त्विक महत्त्वक स्थलक प्रति बच्चामे एक आदरभावकेँ जगयबाक चही आ ओकरा क्षति पहुँचओने बिना ओकर महत्त्व बुझबाक आ ओकर अन्वेषण करबाक इच्छा सेहो जगयबाक चाही।

एम्हर किछु वर्ष सँ कक्षा एक आ दूक हेतु कक्षाक वातावरण एवं पाठ्यक्रमक रूपरेखामे सुधार अनबाक प्रयास भेल अछि। अपेक्षाकृत पैध बच्चाक हेतु एहन शैक्षिक अनुभवकेँ तैयार करबाक प्रश्नसँ मुखरित होयबाक अछि जे बच्चाक अवधारणाकेँ बुझबामे आ अपन ज्ञानकेँ रचबामे मदति कए सकए। आब हम सभ 'तथ्य केन्द्रित ज्ञान' क प्रकाशमे एक प्रकारक बदलाब देखि रहल छी मुदा आवश्यक अछि जे अध्यापकक तैयारी, वर्गमे अभ्यासक योजना, पाठ्य पुस्तकक तैयारी आ मूल्यांकनक व्यवस्थाक माध्यमसँ एहि बदलावकेँ निश्चित रूपसँ प्रोत्साहित कयल जाय। आवश्यकता अछि जे योजनामे लचीलापन पाठ्य पुस्तक सभक विषयकेँ पढ़ाइक अनुसार करबाक महत्त्व केँ सम्मिलित कएल जाए जाहिसँ एन0 पी0 ई0 - 86 केर संकुचित आ सिकस्त प्रकोष्ठ सभसँ बाहर निकलबाक उद्देश्य दिस बढ़ल जा सकए। एहि हेतु शिक्षक सभमे क्षमता आ आत्मविश्वास बनायब आवश्यक अछि जाहिसँ ओ लोकनि स्वतन्त्र रूपसँ बच्चा सभक सिखबाक प्रक्रियाक आवश्यकता अनुसार अपन अध्यापनक योजना बनाए सकथि। वर्तमान शैक्षिक सुधार एखनहु एकहि ठाम केन्द्रित अछि। प्रभावशाली विकेन्द्रीकरण संकुल आ ब्लौक संसाधन केन्द्रक बेसी भागीदारी, स्थानीय संसाधन व्यक्ति आ अध्यापक सभक हेतु संसाधन आ संदर्भ सामग्रीक उपलब्धतासँ सम्भक भए सकैत अछि।

2.4.4 योजनाक उपागम :

हमर सभक शैक्षिक व्यवहार आइयो सीमित 'पाठ योजना' पर आधारित अछि। जकर लक्ष्य होइत छैक तुलनीय 'आचरण' एहि दृष्टिकोणसँ बच्चा एकटा एहन जीव थिक

जकरा हम सभ प्रशिक्षित कए सकैत छी अथवा एकटा कम्प्यूटर जकाँ अछि, जकरा हम 'प्रोगाम' कए सकैत छी। ताहि कारणेँ 'परिणाम' पर अत्यधिक ध्यान देल जाइत छैक। ज्ञानकेँ जानकारीक टुकड़ाक रूपमे प्रस्तुत करब जकरा सोझे किताबसँ रटि लेल जाय आ अन्ततः बच्चा सभकेँ जँचनाइ जे ओकरा याद करबाक छैक की नहि-एहि प्रक्रिया पर सेहो बेसी जोर देल जाइत छैक। एकर बदलामे, जरूरी अछि जे हम सभ समयमे बच्चाक ज्ञानकेँ निर्माण करैत देखी। मात्र गणित, विज्ञान, भाषा आ समाज विज्ञान सनक ज्ञानात्मक विषय सभक सदंर्भमे ई गप्प सत्य नहि अछि बल्कि मूल्य, अभिरुचि आ ढंगक विषयमे सेहो ई गप्प सत्य प्रतीत होइत अछि।

एकटा विद्यार्थीक परिप्रेक्ष्यमे ई गप्प बहुत 'स्पष्ट' लागि सकैत अछि मुदा बहुतो अध्यापक, परीक्षक आ पाठ्यपुस्तक लेखक आइयो एहि पर पूर्ण विश्वास नहि कए पबैत छथि जे एकरा वास्तविकतामे बदलल जा सकैछ। गतिविधि (एक्टिविटी) आइ काल्हि बेसीरास प्राथमिक विद्यालयक शिक्षक सभक रजिस्टरक अंग बनि चुकल अछि, मुदा बहुतो उदाहरण सभ/स्थिति सभमे आइयो सभ पाठ परिणामहिसँ प्रोत्साहित होइत अछि। योग्यता आ क्षमताक गप्प सभ बेसी होमए लागल अछि मुदा ई योग्यता सभ एखनहु तक 'परिणाम' जकाँ 'पाठे' पर आधारित अछि। जखनकि जरूरी अछि जे शिक्षक गण सभ तीन-चारि 'सत्र' क योजना बनाबथि। ज्ञान आ योग्यताक विकास सेहो तखनहि सम्भव अछि जखन विभिन्न स्थिति सभमे आ विभिन्न तरीका सभसँ ओकर प्रयोग करबाक अवसर बेरि-बेरि भेटय। सूचना, ज्ञान आ निपुणताक विकासक मूल्यांकन इकाइक अंतमे आ फेर ओकर बादक कोनो निश्चित तारीख पर सेहो भए सकैत अछि, मुदा निपुणता सभक मूल्यांकन चक्र लम्बा होयबाक चाही।

एकटा विद्यार्थीक परिप्रेक्ष्यमे ई गप्प बहुत 'स्पष्ट' लागि सकैत अछि मुदा बहुतो अध्यापक, परीक्षक आ पाठ्य पुस्तक लेखक आइयो एहि पर पूर्ण विश्वास नहि कए पबैत छथि जे एकरा वास्तविकतामे बदलल जा सकैछ।

- 'गतिविधि' (एक्टिविटी) आइ काल्हि बेसी रास प्राथमिक विद्यालयक शिक्षक सभक रजिस्टरक अंग बनि चुकल अछि, मुदा बहुतो उदाहरण सभ/स्थिति सभमे आइयो सभ पाठ परिणामहिसँ प्रोत्साहित होइत अछि। योग्यता आ क्षमताक गप्प सभ बेसी होमए लागल अदि मुदा ई योग्यता सभ एखनहु तक 'परिणाम' जकाँ 'पाठे' पर आधारित अछि। जखनकि जरूरी अछि जे शिक्षक गण सभ तीनि-चारि 'सत्र'क

योजना बनाबथि। ज्ञान आ योग्यताक विकास सेहो तखनहि सम्भव अछि जखन विभिन्न सिथति सभमे आ विभिन्न तरीका सभसँ ओकर प्रयोग करबाक अवसर बेरि-बेरि भेटय। सूचना ज्ञान आ निपुणताक विकासक मूल्यांकन इकाईक अंतमे आ फेर ओकर बादक कोनो निश्चित तारीख पर सेहो भए सकैत अछि, मुदा निपुणता सभक मूल्यांकन चक्र लम्बा होयबाक चाही।

- क्रिया-कलाप शिक्षक लोकनिकेँ अवसर दैत अछि जे ओ सभ बच्चा पर ध्यान दए सकथि आ अभ्यासमे बच्चाक आवश्यकता आ रुचिक अनुसार अन्तर आनि सकथि। कक्षाक कार्यमे शिक्षक लोकनि, बच्चा सभ आ अपेक्षाकृत पैघ बच्चा सभकेँ सेहो शामिल करबाक विषयमे सोचि सकैत छथि-एहि तरहक विविधता कक्षामे चलि रहल कार्य सभकेँ बहुत मनलग्गू बना देत। एहिसँ अध्यापक ओहि बच्चा सभक दिस विशेष ध्यान दए सकताह जकरा विशिष्ट आवश्यकता छैक आ कक्षामे एहन नहि लागत जे ओ बच्चा सभ अपवाद थिक। शिक्षक लोकनि आइयो प्रत्येक बच्चाक पढ़ाइमे पर्याप्त रूपसँ शामिल नहि भए पबैत छथि, बच्चा सभक परिचय समूहक रूपमे होइत अछि आ वैह बच्चा सभ ध्यान पर अबैत अछि जे या तऽ तेजगर रहैत अछि अथवा बाधा करए बला। एहि स्थितिसँ सभ बच्चा सभकेँ लाभ होयत।
- जतय विशिष्ट आवश्यकताबला आ कठिनतासँ सिखयबला बच्चा सभ छैक ओतय शिक्षकक पाठयोजनाकेँ एहि दिस ध्यान देबाक चही जे शिक्षक कक्षामे होमए बला क्रिया-कलाप सभकेँ ओकरा सभक हेतु कोना बदलैत छथि। सिखबामे असफलताकेँ आइ-काल्हि यान्त्रिक रूपमे 'उपाय' केर माध्यमसँ सम्बोधित कयल जाइत अछि जकर सामान्य अर्थ छैक ओहि पाठ सभकेँ एहि बच्चा सभक हेतु मात्र दोहरा देनाइ। अनेक शिक्षक एहि बच्चा सभक समस्या सभक 'उपचार' सेहो ताकि रहल छथि। एहन बच्चा सभक लेल सिखबाक प्रक्रियाकेँ व्यक्तिगत रूप देबामे हुनका लोकनिकेँ आइयो कठिनता भए रहल छनि।
- शिक्षक लोकनिकेँ ई बुझनाइ जरूरी अछि जे पाठक योजना कोन प्रकारेँ बनाओल जाय जे बच्चा सभ पढ़ाओल जायबला वस्तु सभके मात्र दोहरेबेटा नहि करय अपितु ओ जे सीखि रहल अछि तकर प्रयोग करबाक हेतु उत्सुक होअए। एकटा नव समसया ई अछि जे 'क्रिया-कलाप' आ खेलमे पढ़नाइ' प्रणालीक नाम पर बहुतरास

पढ़ाइकेँ आसान कए देल गेल अछि आ बच्चा सभकेँ ओ सभ चीज करबाक लेल देल जाइत छैक जे ओकर क्षमतासँ बहुत कम स्तरक छैक। एकटा चिन्ता ईहो अछि जे 'क्रिया-कलाप' सभ पर ध्यान केन्द्रित करबासँ बहुत समय लागत आ अध्यापक सभकेँ अपेक्षाकृत अधिक समय देमए पड़त। निश्चित रूपसँ एहि अभ्यास सभके करबाक लेल आवश्यक अछि जे एकर सभक तैयारीमे बेसी समय बिताओल जाय। निश्चिते आरम्भमे शिक्षक सभकेँ अभ्यास क्रिया-कलाप संस्कृतिकेँ स्थापित करबाक हेतु अतिरिक्त प्रयास करए पड़त, ओहि नियम सभकेँ निश्चित करबामे सेहो जे स्थान आ सामग्रीक प्रयोगकेँ संचालित करत।

- बहुश्रेणीय, बहुक्षमता अथवा सोझ रूपेँ संगठित वर्गमे निर्देश देबाक नीक प्रबंधक हेतु व्यक्तिगत, छोट समूह अथवा पूरा समूहक हेतु योजना बनाएब आ उपयुक्त सामग्री जुटाएब महत्त्वपूर्ण अछि। अभ्यासकेँ घोकबाक योजना जे एकश्रेणी पाठ्यपुस्तक पर आधारित अछि केर स्थान पर सिखनिहारकेँ अपन स्तरक अनुरूप अभ्यासमे व्यस्त रखबाक योजना बनएबाक चाही।
- कक्षामे अध्यापक द्वारा कराओल गेल अभ्यास, ओहिमे प्रयुक्त सामग्री आ ओकर मूल्यांकनक तरीकामे परस्पर सामंजस्य होयबाक चाही।

2.4.5 आलोचनात्मक शिक्षण शास्त्र :

शिक्षक आ छात्रक परस्पर संवाद कक्षामे महत्त्वपूर्ण होइत अछि किएक तऽ ओहिमे ई परिभाषित करबाक क्षमता होइत छैक जे ककर ज्ञान विद्यालय-संबंधी ज्ञानक हिस्सा बनि जायत आ ककर स्वर एकरा आकार देत। छात्र मात्र एहन युवा लोक नहि होइत अछि जकरा हेतु पैघ सबकेँ किछु उपाय तकबाक रहैत छनि ओ अपन परिस्थिति आ आवश्यकता सभक सूक्ष्म पर्यवेक्षक होइत अछि आ ओकरा अपन समस्या सभक समाधानक प्रक्रिया आ विमर्शमे भाग लेबाक चाही। अतः बच्चा सभकेँ एहि बातक प्रति सचेत होयबाक चाही जे ओकर अनुभव आ ज्ञान महत्त्वपूर्ण छैक आ ओकरा अपन मानसिक क्षमताकेँ विकसित करबाक लेल प्रोत्साहित करबाक चाही जाहिसँ ओ स्वतंत्र रूपसँ तर्क आ विचार कए सकय आ विरोध करबाक हिम्मत राखय। बच्चा जे विद्यालयक बाहर सिखैत अछि- ओकर क्षमता, सिखबाक सामर्थ्य आ ज्ञानक आधार- आ ओ जे विद्यालयमे अनैत अछि जे

सिखबाक प्रक्रियाकेँ आगू विस्तार देबामे बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। ई ओहि बच्चा सभक हेतु आओर महत्त्वपूर्ण अछि जे सुविधा विहीन पृष्ठभूमिसँ अबैत अछि विशेषतः बालिका सभक हेतु किएक तऽ जाहि संसारमे ओ रहैत अछि तकर वास्तविकता सभ विद्यलायी ज्ञानमे ततेक नहि देखाइत अछि।

आलोचनात्मक शिक्षण शास्त्र विषय सभ पर ओकर राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक आ नैतिक पक्ष सभक संदर्भमे आलोचनात्मक चिन्तनक अवसर प्रदान करैत अछि। एकरा लेल आवश्यकता अछि सामाजिक विषय सभ पर अलग-अलग विचार सभक स्वीकृति आ संवादक लोकतान्त्रिक रूपक प्रति प्रतिबद्धता। ई ओहि अनेक संदर्भक दृष्टिकोणसँ महत्त्वपूर्ण अछि जाहिमे हमर सभक विद्यालय चलैत अछि एकटा आलोचनतात्मक रूपरेखा बच्चा सभकेँ सामाजिक विषय सभकेँ अलग परिप्रेक्ष्यमे देखबामे सहायता करैत अछि आ ईहो जे कोन तरहेँ ई विषय सभ ओकर जीवनसँ जुड़ल छैक। उदाहरणार्थ लोक-तन्त्रकेँ जीवन शैलीक रूपमे बुझबाक लेल एकटा तरीका अपनाओल जा सकैत अछि जाहिमे बच्चा ई सोचय जे ओ अनका कोन तरहेँ देखैत अछि (जेना मित्र,पड़ोसी, विपरीत लिंग, ज्येष्ठ इत्यादि) ओ कोना चयन करैत अछि(जेना - क्रिया-कलाप सभ, खेल, मित्र, कैरियर इत्यादि) आ ओ कोना निर्णय लेबाक सामर्थ्यकेँ परिपोषित करैत अछि। एहि प्रकार मानवीय अधिकार सभ, जाति, धर्म आ लिगसँ जुड़ल विषय सभ पर सेहो गप्प भए सकैत अछि जाहिसँ ओ देखि सकए जे कोन तरहेँ ई विषय सभ ओकर दैनिक अनुभवसँ जुड़ल छैक आ ईहो जे कोन तरहेँ विभिन्न प्रकारक असमानता सभ मिलिकेँ बढ़ैत जाइत अछि। आलोचनात्मक शिक्षण शास्त्र, फुजल विमर्श आ विविध दृष्टिकोण सभकेँ प्रोत्साहित करबाक माध्यमसँ सामूहिक निर्णय लेबाक प्रक्रियाकेँ आसान बनबैत अछि।

सहभागितापूर्ण सिखब आ अध्यापन, पढ़नाइ,भावना सभ आ अनुभवकेँ कक्षामे एकटा निश्चित आ महत्त्वपूर्ण जगह होयबाक चाही। यद्यपि सहभागिता एकटा सशक्त

रणनीति अछि मुदा यदि एकरा मात्र एकटा कर्मकाण्ड बना देल जाय अथवा शिक्षक सभक द्वारा अपन लक्ष्य प्राप्त करबाक माध्यम बना देल जाए तऽ एकर शैक्षिक धार समाप्त भए जाइत अछि। अध्यापक आ छात्र दुहूक अनुभवे सभसँ असली सहभागिता शुरू होइत अछि।

जखन बच्चा आ शिक्षक अपन व्यक्तिगत अथवा सामूहिक अनुभव बँटैत छथि, ओहि पर चर्चा करैत छथि आ ओहिमे जाँचल जयबाक भय नहि होइत अछि तऽ एहिसँ ओकरा लोकनिकेँ ओहि लोक सभक विषयमे सेहो बुझबाक अवसर भेटैत छैक जे ओकर सामाजिक यथार्थक हिस्सा नहि होइत अछि। एहिसँ ओ विविधता सभसँ डरयबाक बदलामे एकरा बुझि पबैत अछि यदि बच्चा सभक सामाजिक अनुभवकेँ कक्षामे अनबाक अछि तऽ ई अपरिहार्य अछि जे संघर्षक मुद्दा सभकेँ संबोधित कएल जाए। विवाद बच्चा सभक जीवनक एकटा एहन हिस्सा थिक जाहिसँ बचल नहि जा सकैत अछि। ओ लगातार एहन स्थिति सभक सामना करैत अछि जाहिमे नैतिक मूल्यांकन आ कार्यक आवश्यकता होइत छैक चाहे ओ अनुभव स्वयं, परिवार आ समाजसँ संबद्ध द्वन्द्वक हो अथवा समकालीन विश्वक हिंसक संघर्षक प्रति ओकर 'एक्सपोजर' क। ताहि हेतु 'संघर्ष' केर शिक्षा शास्त्रीय रणनीति बनाकए प्रयोग करबासँ हम बच्चा सभकेँ एहि योग्य बनाए सकैत छिऐक जे ओ द्वन्द्वसँ निपटि आ ओकरामे एकर प्रकृति आ जीवनमे एकर भूमिकाक प्रति चेतना उत्पन्न होअए।

छात्र सभकेँ ओहि तत्त्व सभक विषयमे टिप्पणी करबाक, सोचबाक आ ओकर तुलना करबाक लेल प्रोत्साहित करबासँ जे ओकर अपन वातावरणमे उपस्थित छैक, हम सभ ओकरामे प्राप्त जानकारी पर प्रश्न करबाक सामथ्य बना सकैत छिऐक। ई तत्त्व चाहे पूर्वाग्रहसँ ग्रसित पाठ्य पुस्तकमे हो अथवा ओकर वातावरणमे अथव साहित्यिक स्रोत मे – विश्लेषणक सशक्त माध्यमक रूपमे प्रयोग कए सकैत अछि। विभिन्न माध्यम सभमे ज्ञानक भण्डार उपस्थित छैक, ई सभ माध्यम या तऽ ओ टी0 भी0 हो, विज्ञापन, गीत, चित्रकला इत्यादि सभकेँ शामिल केनाइ छात्र सभक बीच गतिशील सम्वाद स्थापित करबाक हेतु आवश्यक अछि।

> एकटा एहन शिक्षा व्यवस्था जे लिंग, वर्ग, जाति आ भूमण्डलीय असमानताक प्रति संवदेनशील अछि, मात्र विभिन्न व्यक्तिगत अथवा सामूहिक अनुभव सभक पुष्टिए नहि करैत अछि बल्कि सत्ताक बृहत् संरचनामे ओकरा निर्धारित करैत अछि आ एहन प्रश्न उठबैत अछि जे ककरा लेल बजबाक अनुमति अछि? ककर जानकारी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि? एकरा हेतु विभिन्न छात्र

सभक लेल भिन्न-भिन्न नीति विकसित करबाक आवश्यकता होयत। उदाहरणार्थ, किछु बच्चाकेँ कक्षामे बजबाक हेतु प्रोत्साहित करब ओकरा लेल महत्त्वपूर्ण भए सकैत अछि जखनकि किछु बच्चाक हेतु अनकर गप्पकेँ सुनि कए सिखनाइ।

अध्यापकक भूमिका अछि बच्चा सभक अभिव्यक्तिक लेल एकटा सुरक्षित जगह आ अवसर देब तथा निश्चित सम्वाद स्थापित करब। हुनका सभकेँ *'नैतिक अधिकार'* केर बाहर निकलए पड़ल आ विना निर्णय के नहि सहानुभूतिक संग सुनए आ सिखए पड़त। बच्चा सभकेँ एक दोसराकेँ सुनबामे सक्षम बनबाए पड़ैत। छात्रक ज्ञानकेँ समेकित कए रचनात्मक रूपसँ ओकर सीमा बढ़बैत, हुनका सभकेँ एहि बातक प्रति सचेत रहए पड़त जे मतभेद अथवा अन्तर कोन प्रकारेँ व्यक्त होइत अछि। परस्पर विश्वासक वातावरण कक्षाक बच्चा सभक लेल एकटा सुरक्षित स्थान बनाए देत जतय ओ अपन अनुभव बाँटि सकए, जतए विवाद सभकेँ स्वीकार कए ओहि पर रचनात्मक प्रश्न उठाओल जा सकए आ जतए विवादक निदान, चाहे ओ कतबो अस्थायी हो, परस्पर सहमतिसँ निकालल जा सकए। कक्षा एकटा एहन स्थान हो जतए ओ परस्पर लोकतान्त्रिक रूपसँ व्यवहार कए सकए आ विवादक समाधान करबामे सहायक हो। विशेषतः बालिका सभक आ सुविधा विहीन वर्गसँ आयल बच्चा सभक हेतु कक्षा आ विद्यालय एहन स्थान होयबाक चाही जतय ओ निर्णय लेबाक प्रक्रिया पर चर्चा कए सकए आ अपन निर्णयक आधार पर प्रश्न उठाए सकए तथा नीक जकाँ सोचि कए चुनाव कए सकए आ निर्णय लए सकए।

रूढ़िवादी धारणा सभ किएक रहबाक चाही ?

समाजक सभसँ निम्नस्तरमे रहएबला वर्गसँ आयल बच्चा सभक संदर्भमे रूढ़िवत धारणा सभक निरन्तरता गम्भीर चिन्ताक विषय थिक। एहि समूह सभमे दलित, आदिवासी जनजाति सेहो सामिल अछि, जकरा पहिने कहियो विद्यालय आ शिक्षा धरि पहुँच नहि भेटलैक। किछु छात्र सभकेँ 'ऐतिहासिक' ग्रुपसँ अशिक्षणीय, कम शिक्षा योग्य, सिखबामे मन्द आ एतए तक जे पढ़बासँ भयभीत रूपमे देखल गेल अछि। एहि तरहेँ बालिका सभक विषयमे सेहो ई धारणा रहल अछि जे खेल, गणित अथवा विज्ञानमे ओकर रुचि नहि होइत छैक। शारीरिक असमर्थताबला बच्चा सभक लेल दोसर तरहक रूढ़िगत धारण सभ छैक जाहिसँ ई विचार प्रोत्साहित होइत अछि जे ओकरा सभकेँ आन बच्चा सभक संग नहि पढ़ाओल जा सकैत अछि। ई बुद्धि एहि विचारसँ निकलैत अछि जे हीनता आ असमानता, लिंग, जाति, शारीरिक आ मानसिक असमर्थतेमे निहित अछि। सफलताक किछु खिस्सा तऽ अछि मुदा बेसीरास संख्या ओहि लोक सभक अछि जे असफल भए जाइत अछि आ अधकच्चू रहबाक एहि बोधकेँ आत्मसात कए लैत अछि। संविधानक समानताक मूल्यकेँ हम सभ तखनहि प्राप्त कए सकैत छी जखन हम अपन शिक्षक सभकेँ तैयार करी जे सभ बच्चासँ समानताक व्यवहार करथि। हमरा सभकेँ अपन शिक्षक सभकेँ प्रशिक्षित करए पड़त जे ओ सभ बच्चासँ समानताक व्यवहार करथि। हमरा सभकेँ अपन शिक्षक सभकेँ प्रशिक्षित करए पड़त जे ओ बच्चा सभमे सामाजिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक विविधताक ज्ञानके विकसित करथि जे स्वयं ओकरे संग विद्यालय तक अबैत अछि।

हमर सभक अनेक विद्यालय सभमे पहिल पीढ़ीक छात्र सभक पैघ संख्या अछि। शिक्षा व्यवस्थाक पूर्ण अभिमुखीकरण होयबाक चाही जखनकि बच्चाक घर ओकर औपचारिक शिक्षाकेँ सहारा देबामे समर्थ नहि हो। उदाहरणार्थ पहिल पीढ़ीक छात्र, लेखन अ पाठनकेँ विकसित करबाक हेतु, पढ़बामे अभिरूचि बनयबाक हेतु भाषासँ परिचय प्राप्त करबाक हेतु आ विद्यालयक संस्कृतिसँ परिचित होयबाक हेतु पूर्णतः विद्यालय पर निर्भर होयत। ई निर्भरता आओर बढ़ि जाइत अछि जखन मातृभाषा विद्यालयमे प्रयुक्त भाषासँ भिन्न हो। एहन स्थिति सभमे 'गृहकार्य' लगभग नहि होयबाक चाही। बहुतरास एहन बच्चा सभक घरक परिस्थितिक कारणेँ काफी असुरक्षित होइत अछि जाहिसँ भए सकैत अछि जे ओ समय पर नहि आबए, अनियमित रूपसँ आबए आ कक्षामे बेसी ध्यान नहि दए पाबए। एहन बच्चा सभकेँ एहि विवशता सभसँ मुक्त करबाक हेतु अन्तरवर्गीय सहायता जुटाओनाइ आ एहन पाठ्यक्रम बनओनाइ जे एहि परिस्थिति सभक प्रति संवदेनशील हो, बहुत महत्त्वपूर्ण अछि।

2.5 ज्ञान एवं बोध :

प्रश्न ई अछि जे युवा लोकनिकेँ की पढ़ाओल जयबाक चाही? एहि गम्भीर सवालसँ चलित होइत अछि जे शिक्षामे कोन उद्देश्यकेँ आगू बढ़यबाक चाही। व्यक्तिक क्षमता आ मूल्यक सन्दर्भमे एकटा दृष्टि जे सभमे होयबाक चाही आ समाजक सदर्भमे सामाजिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक दृष्टि। लक्ष्य कोनो एकटा नहि होइत अछि बल्कि लक्ष्य सभक एकटा समुच्चय होइत अछि। ताहि हेतुएँ चयनित विषय-वस्तु सभकेँ लक्ष्य समुच्चयक संग न्यायपूर्ण, व्यापक आ संतुलित होयबाक चाही। ई खण्ड ज्ञानक प्रकृति आ प्रारूप सभ पर विमर्श करैत अछि। संगहि सूचित पाठ्यक्रमक विकल्प सभ आ विषय-वस्तुक उपागम सभकेँ एकटा भावमूलक परिप्रेक्ष्यमे देखैत ओहि पर विमर्श सेहो करैत अछि।

ज्ञानक कल्पना संघटित अनुभवक रूपमे कएलजा सकैत अछि जे भाषा, विचार शृंखला (अथवा विचार संरचना) केर माध्यमसँ अर्थबोध उत्पन्न करैत अछि, जकर माध्यम सँ हमरालोकनिकेँ ओहि संसारकेँ बुझबामे सफलता भेटैत अछि जाहिमे हम सभ रहैत छी। एकर परिकल्पना गतिविधि सभक नमूना, विचारक संग शारीरिक कौशल, सांसारिक कार्य सभमे सहभागिता आ वस्तु सभक रचना करबाक रूपमे सहो कएल जा सकैत अछि। मनुष्य समयक संग-संग ज्ञान सारणी सभ विकसित कयलक अछि जाहिमे सोचबाक ढ़ंग अनुभव आ कार्य निष्पादन तथा अतिरिक्त ज्ञान निर्माणक रंग पटल शामिल अछि। सभ बच्चाकेँ एहि सम्पत्तिक काफी पैघ भागक पुनः सृजन स्वयं करए पड़ैत छैक जे आगूक सोच आ दुनियाँमे ठीक ढंगसँ कार्य करबाक लेल आवश्यक होइत छैक। कार्ये जकाँ ज्ञान निर्माण आ मानवीय व्यापारक प्रक्रियामे सहभागिताक ज्ञान सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। बृहद् अर्थमे ज्ञानक परिकल्पना हमरा सभकेँ मात्र 'उत्पाद' केर ज्ञान परीक्षणक महत्त्वकेँ नहि बतबैत अछि बल्कि जाहि प्रकार ओकर सृजन भेल, कोन प्रकारेँ ओकरा व्यवस्थित कएल गेल, एतय तक ओकरा के पहुँचबैत अछि आ एकर उपयोग कोना कएल जाइत अछि एहि सभक दिस सेहो हमर ध्यान आकृष्ट करैत अछि। ओ ई बतबैत अछि जे पाठ्य क्रममे ज्ञानक प्रक्रिया पर बेसी ध्यान होयबाक चाही, कोन प्रकारेँ सिखयबला ज्ञान पुनः सृजनमे लगैत अछि, पर जोर होयबाक चाही। संगहि एहि विषय पर सेहो जे की ज्ञान प्राप्त भेल।

दोसर दिस ज्ञानकेँ यदि तैयार समानक श्रेणीमे राखल जाय तऽ एकर परिकल्पना एहन सूचनाक रूपमे होयबाक चाही जे बच्चा सभक दिमागमे स्थानान्तरित भए सकए। शिक्षाक चिन्ता मानवीय ज्ञानक एहि खाजानाकेँ बचाकए रखबाक आ ओकरा प्रसारित

करबाक होयबाक चाही। ज्ञानक एहि दृष्टिकोणक अनुसार सिखयबलाक परिकल्पना निष्क्रिय भावसँ ग्रहण करयबलाक रूपमे प्रतिबन्धित कएल गेल अछि। जखनकि ज्ञानक दोसर दृष्टिकोणमे संसारक संग देखब, अनुभव करब, प्रतिबिम्बित करब, कार्य करब आ मिलि कए करब केर अर्थमे द्वन्द्वात्मक संबंध होइत अछि।

बजैत चित्र :

वर्गकेँ एकटा घरक चित्र देखबिऔक जाहिमे परिवारक विभिन्न सदस्य विभिन्न कार्य करैत होथि। अंतर ई होएबाक चाही जे पिता भोजन बनबैत होथि, माय बल्ब लगबैत होथि, पुत्री विद्यालयसँ साइकिल पर घर अबैत होअए, बेटा गाय दुहैत हो, दोसर पुत्री आमक गाछ पर चढ़ैत हो आ दोसर पुत्र झाड़ू लगबैत होअए। पितामह बटन लगबैत होथि आ पितामही खाता-बही देखैत। छात्र सभकेँ चित्र पर गप्प करबाले कहियौक।

ओ कोन-कोन काजकेँ चीन्हि सकैछ?

की ओ सभ बुझैत अछि जे कोनो एहन काज अछि जे एहि लोक सभकेँ नहि करबाक चाहिऐक?

किएक?

ओकरा सभकेँ कार्यक सम्मान, समानता आ लैंगिकता पर विवाद करबाले प्रेरित करिऔक।

सभ व्यक्तिकेँ स्वायत्त आ पूर्ण होएबाक महत्त्वक चर्चा करू। एहि कार्यकेँ आन विषय जेना उच्च आ निम्न कार्य, जातीय रुढ़िवादिता आ कार्यक मूल्य आधारित महत्त्व पर बजैत चित्रक माध्यमसँ पर सहो कएल जा सकैछ।

पाठ्यक्रमक एकटा योजना होइत छैक ओहि क्षमता सभक विकासक जकर माध्यमसँ चयनित शैक्षणिक लक्ष्य सभकेँ प्राप्त कएल जा सकए। मानवीय क्षमताक परिसर काफी विस्तृत होइत अछि आ शिक्षाक माध्यमसँ हम सभ ओहि सभक विकास नहि कए सकैत छी तँ चिन्ता ओहि सामर्थ्य सभक

लए कए होइत अछि जे हमर सभक चयनित लक्ष्य सभक सन्दर्भमे आवश्यक आ महत्त्वपूर्ण होअए जे अगिला विकासक संभावनासँ पूर्ण होअए आ जकर हमरा सभकेँ किछु शिक्षण शास्त्रीय ज्ञान होअए।

2.5.1 मौलिक क्षमता :

मौलिक क्षमता ओ थिक जे विकास, बोधक मूल्य आ कौशल संबंधी बृहद् आधार तैयार करैत अछि।

(क) भाषा आ अभिव्यक्तिक अन्य माध्यम, अर्थ निर्माण आ दोसरक संग संयोग करबाक आधार तैयार करैत अछि। ओ बोध आ ज्ञानक विकासक संभावना तैयार करैत अछि। संगहि ओ सांकेतिक, वर्गीकरण, स्मरण आ अंकित करबाक आधार सेहो बनबैत अछि। बच्चा हेतु भाषाक विकास, बोध परिचय आ दोसरक संग संबंध होयबाक क्षमताक विकासक समानार्थी होयब थिक। मात्र लिपिएबला मौखिक भाषेटा नहि, अपितु लिपि विहीन भाषा, सांकेतिक भाषा सभ, ब्रेल सनक लिपि आ प्रदर्शनकारी कला सभ अर्थ आ अभिव्यक्तिक आधार तैयार करैत अछि।

(ख) समाज, प्रकृति आ अपनाक सग, भावनात्मक प्रगाढ़ता, संवदेनशीलता आ मूल्यक संग निरन्तर संबंध बनायब, जीवनकेँ अर्थ प्रदान करैत अछि, ओ ओकरा भावनात्मक उद्देश्य निर्धारित करैत अछि। ई नैतिकताक आधार सेहो थिक।

(ग) कार्य आ क्रिया संबंधी क्षमता – एहिमे शामिल अछि शारीरिक गतिक चिन्तन आ संकल्पसँ तालमेल, कौशलक विकास आ कोनो उद्देश्यकेँ प्राप्त करबाले किम्वा किछु सृजन करबाक दिशा- निर्देशन। संगहि एहिमे यंत्र आ तकनकीकक देखभाल, कार्यसंपादन आ अनुभव आ संवादपरकताक सेहो समावेश होइत अछि।

काष्ठ कला सनक शिल्पकलाक हेतु अभिकल्पना आ बनाओल जायबला वस्तु सभक स्वरूपक ज्ञान, समाजमे ओकर उपयोगिताक ज्ञान (सामाजिक सांस्कृति सौन्दर्यपरक आ आर्थिक महत्त्व) उपलब्ध सामग्रीक ज्ञान ओ स्तर आ लागत खर्चक दृष्टिसँ उपयुक्ततताक ज्ञानक संग-सग एकर ज्ञान सेहो आवश्यक होइत अछि जे समान कतय भेटत। आदिसँ अन्त धरि कुशलतापूर्वक समान तेयार कए लेबाक क्षमता, अपन कौशलक संग-संग उपयुक्त व्यक्तिक कौशलक प्रयोग करबामे सक्षम होयब, आवश्यक रूपसँ औजारक ज्ञान, स्तरक परख आ विशिष्ट कौशलक आवश्यकता होइत अछि।

कबड्डी सनक खेलक हेतु शारीरिक क्षमता आ सहनशीलता, खेलक नियमक ज्ञान कौशल आ शारीरिक निपुणता, अपन सामर्थ्यक ज्ञान, टीममे योजना बना कए समन्वयक क्षमता, देसार टीमकेँ सामर्थ्यक अन्दाज आ जीतक व्यूहरचना आवश्यक होइत अछि।

मौखिक आ शिल्प परम्परा

मौखिक श्रुति परम्परा आ शिल्प परम्परा सभ विशिष्ट बौद्धिक सम्पदाक श्रेणीमे अबैत अछि। विभिन्न आ महीन परम्परा सभक पोषण हमर सभक समाजक असंख्य लोक सभक द्वारा कएल गेल अछि जाहिमे स्त्रीगण लोकिन समाजक उपेक्षित लोक सभक छोट-छोट समूह आ आदिवासी जनजाति शामिल अछि। बच्चा सभक पाठ्यक्रममे एकरा शामिल करबासँ हम सभक ओकर सम्मुख ज्ञान आ विचारक सार रूपक एकटा जङला फोलि सकैत छी, एहन कौशल एहन क्षमता दए सकैत छिऐक जाहिसँ ओ अपन जीवन आ समाजक समृद्धिमे योगदान कए सकैत अछि। विद्यालय साक्षर सभकेँ सुविधा प्रदान करैत अछि मुदा ओ मौखिकक उपेक्षा नहि कए सकैत अछि। सभ तरहक स्थानीय साक्षरताकेँ पोषित करब महत्त्वपूर्ण अछि।

2.5.2 व्यवहारिक ज्ञान :

मानवीय कार्य व्यापारक विस्तृत क्षेत्र, विशिष्टता सभ आ ओकर विविध गतिविधि सभ, सामाजिक जीवन आ संस्कृतिकेँ जीवित रखैत अछि। बिननाइ, काष्ठकला, माटिक वर्तन बनओनाइ सन शिल्पकला, गृहस्थी आ दोकानदारी सनक पेशाक संग-संग विवधि प्रकारक रूपंकर आ दृश्यकला सभ आ खेलकूद ज्ञानक मूल्यवान रूप थिक। ई ज्ञान व्यवहारिक आ प्राकृतिक अछि जे बिनु कहनहि सिखाओल जाइत अछि अथवा ओकरा सभकेँ बेसी काल थोड़ बहुत बुझा देल जाइत छैक। कएकटा ओ योग्यता सभ शामिल होइत अछि जे विकसित भए सकैत अछि। एहिमे शामिल अछि उपयोगी आ सौन्दर्यक उत्पादक अभिकल्पना, वस्तुसँ उत्पाद बना सभक हेतु कलाक ज्ञान, अपन क्षमता सभक ज्ञान, समूहमे कार्य करबाक क्षमता, अध्यवसाय परकता आ अनुशासन। ई दूनू मानबामे सत्य अछि जखन कोनो वस्तु तैयार कयल जा रहल होअए अथवा दर्शकक सामने कोनो उत्पादकेँ प्रस्तुत करबाक होअए।

एहि गतिविधि सभकेँ कौशल कहबासँ मात्र एहिमे शामिल कौशलक बोध होइत अछि, मुदा अपन समाज आ प्रकृतिक पर्याप्त अनुभव, एहि सभक अलग -अलग संदर्भमे महत्त्वपूर्ण होइत अछि। मान्य अकादमि अनुशासन जकाँ एहि शिल्प आ व्यापार सभक सेहो अपन परम्परा ओ ओकरा चलौनिहार रहलैक अछि। प्रत्येक शिल्पक पर्याप्त ज्ञान, व्यवसाय आ कला रूपमे शामिल अछि- शारीरिक कौशल, वस्तु आ रूपक ज्ञान। सौन्दर्यपरक सांस्कृतिक आ समाजिक संदर्भशीलता- सभ किछु एकाग्र रूपसँ विकसित कयल जाइत अछि आ अनुभव आ प्रतिबिम्बनक माध्यमसँ अगिला पीढ़ीक कर्त्ता लोकनिकेँ दए देल जाइत अछि। ताहि हेतु एहिमेसँ प्रत्येक व्यवहारिक ज्ञानक एकटा अनुशासन छैक एहि प्रकारेँ व्यवहारिक ज्ञान रूप सभक भारतीय परम्परा काफी विशाल, विविध आ पर्याप्त अछि। उत्पाद कौशलक रूपमे ओ सभ हमरा लोकनिक अर्थ- व्यवस्थाक मूल्यवान अंग अछि।

एहि ज्ञान परक अनुशासन सभक ज्ञान मीमांसात्मक संरचनाकेँ बुझबाक लेल काफी अध्ययन आ शोधक आवश्यकता अछि। ई बुझनाइ जे ओ कोन प्रकारेँ अपन ज्ञानकेँ सिखैत-अपनबैत छथि आ कोन प्रकारेँ अपन ज्ञानकेँ व्यवस्थित करैत

छथि, समाजशास्त्रीय प्रश्न थिक किएक तँ व्यवसाय सभक संबंध जाति, समूह आ लिंगसँ होइत अछि। पाठ्यक्रममे ओकर महत्त्वकेँ बुझनाइ आवश्यक अछि, केवल कार्यक रूपमे नहि बल्कि समान रूपसँ विविध ज्ञानक रूपमे आ अन्य प्रकारक शिक्षाक माध्यमक रूपमे सेहो। मानवीय ज्ञानक एहि महत्त्वपूर्ण अंगकेँ विद्यालयी पाठ्यक्रममे पर्याप्त स्थान देबाक आवश्यकता अछि।

2.5.3 बोधक रूप :

विविध प्रकारक धारणा आ अर्थपरकताक आधार पर ज्ञानक वर्गीकरण कयल जा सकैछ जाहिमे वैधता आ औचित्यक प्रक्रिया सभक समावेश होइत अछि। सभ श्रेणीय अपन अलग आलोचनात्मक चिन्तन, ज्ञानक अपन औचित्यपरकता आ अपन प्रकारक रचनात्मकता होइत अछि।

गणितक अपन विशिष्ट सिद्धान्त होइत अछि, यथा मूलाङ्क, आयात, इंटीजर आदि। ओकरो वैधता निर्धारणक अपन प्रक्रिया होइत छैक, क्रमबद्ध रूपसँ ओहि आवश्यकताक निर्धारणक प्रक्रिया आनुभविक नहि होइत अछि, ओकर संसारक अवलोकनसँ कोनो संबंध नहि होइत छैक आ नहि प्रयोगसँ अथवा प्रदर्शनसँ। आन्तरिक रूपसँ परिभाषा सभक आधार पर ओकर जाँच कयल जाइत छैक।

प्रकृति विज्ञानक सेहो गणिते जकाँ अपन प्रत्यय होइत छैक। बेसी काल ओ सिद्धान्तक माध्यमसँ एक दोसरसँ संबद्ध होइत अछि आ प्राकृतिक विश्वक व्याख्या करबाक प्रयास होइत अछि। धारणा सभमे अणु, चुम्बकत्व, कोशिका आ स्नायु कोशिका (न्यूरान) अबैत अछि। वैज्ञानिक जाँचमे सैद्धान्तिक आधार पर कयल गेल घोषणा सभकेँ परीक्षणक आधार पर पैघ कहल जाइत अछि जाहिमे बेसी काल यन्त्र सभक आ नियन्त्रणक समावेश होइत अछि। सिद्धान्त निर्माण आ मानक तय करबाक समयमे गतिक आवश्यकता होइत अछि मुदा मात्र निरीक्षण – परीक्षणक स्तर पर। प्रयास होइत अछि जे एकटा एहन भाषा तैयार कएल जाए जे कोनो रूपमे यथार्थक संग 'संवाद' हो।

सामाजिक विज्ञान आ मानविकी केर सेहो अपन धारणा होइत छैक, उदाहरणक लेल समुदाय, आधुनिकता, संस्कृति, परिचय आ राजनीति। सामाजिक

विज्ञानक उद्देश्य मानव आ समाजमे मानव समूहक एकटा आवश्यक आ सरलीकृत ज्ञान उत्पन्न करब अछि। समाज विज्ञानक क्षेत्र समाजमे वर्णन, व्याख्या आ अनुमानसँ अछि। समाज विज्ञानक स्थापना समुदायिक जीवनमे मानव व्यवहारसँ संबंधित होइत अछि आ ओकर वैधताक संबंध समाज अवलोकनसँ रहैत छैक। एहि अर्थमे ज्ञान निर्माणक प्रक्रियामे प्रकृति विज्ञान आ समाज विज्ञान लगभग एकेरंग सन होइत अछि, मुदा दू गोट अन्तर होइत छैक जकर पाठ्यक्रम योजनामे बहुत प्रासङ्गिकता होइत अछि। प्रथम, समाज विज्ञान मानव व्यवहारक अध्ययन करैत अछि जकर आधार तर्क होइत अछि जखनकि प्रकृति विज्ञान 'कार्य-कारणवाद'क आधार पर कार्य करैत अछि। दोसर समाज विज्ञानक स्थापना बहुधा नैतिकता आ वाँछनीयताक प्रश्न उठबैत अछि जखनकि प्राकृतिक घटना बुझबाक होइत छैक, नैतिक प्रश्न ओ तखने उठबैत अछि जखन ओ मानवीय कार्य- व्यापारक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि।

इतिहास समाज विज्ञानक एकटा विशिष्ट रूप थिक आ वास्तवमे ओकरा गणित आ विज्ञान जकाँ वस्तुपरकताक आधार पर नहि देखल जा सकैछ। ई किछु बचल रहि गेल साक्ष्यक आधर पर मानवी व्यापार आ क्रिया-कलाप सभक खाका तैयार करबाक प्रयासक करैत अछि। चूँकि वर्णन मानवीय कार्य व्यापारक कयल जाइत अछि तेँ विशेष रूपसँ तैयार सैद्धान्तिक ज्ञानक बदलामे मानवीय प्रयोजनक प्रत्यय वृत्तान्तकेँ अर्थगर्भित बनबैत अछि। तथ्य स्थापनाक प्रक्रिया वृत्तान्त निर्माणक प्रक्रियासँ नहि भिन्न होमएबला संबंधसँ सम्बद्ध होइत अछि।

कला आ सौन्दर्य शास्त्रमे कतोक शब्द समान छैक, यथा, लय, सामंजस्य, अभिव्यक्ति आ संतुलन, यद्यपि ओ एकरा सभकेँ नव संदर्भ अथवा नव अर्थ दए दैत अछि। कला उत्पाद यथार्थ अथवा सत्यक विपरीत नहि ठहराओल जा सकैत अछि। यद्यपि आत्मपरक व्याख्याक काफी सम्भावना कलामे होइत छैक तैयो ई सम्भव अछि जे एहन कलात्मक संभवना सभक शिक्षा देल जा सकए जाहिसँ नीक अधलाहक बुद्धि भए सकए।

नीति शास्त्रक संबंध समस्त मानवीय मूल्य, नियम, सिद्धान्त, मानव आ आदर्शक संग होइत अछि जे ओकरा अभिव्यक्ति प्रदान करैत अछि। क्रिया आ रुचि तक संबंधमे नीतिशास्त्रकेँ बोधक समस्त रूपमे श्रेष्ठ मानल जयबाक चाही।

नैतिक ज्ञानमे न्यायपरकताक ज्ञान शामिल होइत अछि- किएक कोनो वस्तु अथवा कर्य सही अथवा गलत भए जाइत अछि, भलहि कोनो व्यक्तिकेँ केहनो सत्ता हो। एकर अतिरिक्त ओ तर्क कोनो व्यक्तिक हेतु समान होयत, तर्क, समानता आ वैयक्तिक स्वायत्तता काफी मिलल-जुलल धारणा थिक।

दर्शनमे एक दिसतँ विश्लेषणात्मक स्पष्टताक संग चिन्तनशीलता, जीवनक संग उपरोक्त वर्णित विद्या सभक मूल्यांकन आ सामञ्जस्यक अध्ययन होइत अछि तऽ दोसर दिस सर्वोच्य सत्य आ आत्यन्तिकतासँ ओकर संबंध होइत छैक।

मूल सामर्थ्य व्यवहारक ज्ञान आ बोधक रूपमे ओ प्रधान रूप रहल अछि जकर माध्यमसँ इतिहासक समयमे मानवीय अनुभवक विस्तार होइत रहल अछि। सहज मानवीय कार्य-व्यापारक रास्ता एतहिसँ निकलैत अछि- उदार पेशा, तकनीक, उद्योग आ वाणिज्यक सेहो। ई सभ मानव संस्कृतिक केन्द्र विन्दु थिक। कल्पना आ आलोचनात्मक चिन्तनक सीधा संबंध बोध आ तर्क शक्तिक विकाससँ होइत अछि आ संगहि भावनाक सेहो।

ज्ञानक सभ क्षेत्रक अपन विशिष्ट शब्दावली होइत छैक, कहबाक आ करबाक अपन ढंग होइत छैक जाहिमे धारणा, सिद्धान्त, वर्णन आ पद्धति सभ शामिल होइत छैक। ज्ञानक सभ क्षेत्र संसारकेँ बुझबा-सुझबाक एक दृष्टि प्रदान करैत छैक। ई क्षेत्र पूर्ववर्ती लोकक योगदानसँ विकसित भेल अछि। ओकर रंग-ढंग सेहो बदलैत रहल। एकरा सिखबाक क्रममे ज्ञानक कएक तरहक रूप कार्य करैत अछि- सुस्पष्ट तर्कण आ अभिव्यक्तिक औपचारिक रूप ताकल जाइत अछि 'प्रयोग'क विभिन्न माध्यमे, दोसरक सहयोगसँ सिखबाक ई प्रक्रिया चलैत अछि। रचनात्मकता आ उत्कृष्टता ज्ञानक एहि प्रकारसँ प्रगाढ़ रूपसँ जुड़ल रहैत अछि।

मानव संस्कृति आ ज्ञानक ई समुच्चय तथा बुझबाक आ करबाक ढंग मानवीय सहायताक मूल्यवान धरोहर थिक। प्रत्येक बच्चाकेँ एहि ज्ञानक पूर्ण अधिकार छैक जाहिसँ ओ अपन सामान्य बुद्धिकेँ शिक्षित, विकसित आ एहि प्रकारेँ समृद्ध कए सकए जे ओ एहि माध्यमसँ अपन चारू कातक आ परिवेशकेँ बुझि सकए।

बोधक स्तर

धारणा : भाषाकेँ बुझबाक क्षमता आ जे कहल गेल अछि तकर भाषिक अभिप्राय ।

सन्दर्भ : ओकर ज्ञान जकर विषयमे चर्चा होअए, ओकर प्रत्यय केर ज्ञान।

ज्ञानात्मक : एकर ज्ञान जे साक्ष्य की थिक? कोनो कथनक सत्यता कोना निश्चत होइत अछि, कोन प्रकारक प्रमाण लए सत्यापन होअए।

संबंधित आ महत्त्वपूर्ण विभिन्न तथ्य आ प्रत्ययक अन्तर संबंधक माध्यमे ज्ञान आ 'ओकरा बुझैत' केँ सॉचामे राखब, विभिन्न वस्तुक बीचक संबंधक ज्ञान आ ओकर एक दोसरक संदर्भमे महत्त्व।

2.6 ज्ञानक पुनर्रचना :

क्षमता, व्यवहार आ ढंगक ज्ञान ओ वस्तु थिक जकरा हम सभ विद्यालय पाठ्यक्रमक माध्यमे विकसित करए चाहैत छी। एहिमेसँ किछु विषय गणित, इतिहास, प्रकृति विज्ञान आ परिदृश्य कला सहजहि विषयक रूपमे विकसित भए जाइत अछि। किछु यथा नैतिक ज्ञानकेँ विषय आ क्रिया कलापक संग जोड़बाक आवश्यकता होइत छैक। भाषाक मूल सामर्थ्यकेँ दुनू दृष्टिकोनक आवश्यकता छैक, जखनकि सौन्दर्यात्मक ज्ञान सहजहि दूनू दृष्टिकोणकेँ उपलब्ध भए जाइत छैक। एहि सम्पूर्ण ज्ञान क्षेत्रक हेतु प्रोजेक्ट कार्य, अन्तर अनुशासनात्मक पाठ निरीक्षण, पुस्तकालय- प्रयोगशालाक आवश्यकता होइत छैक।

ज्ञानक एहि दृष्टिकोणक अनुसार हमरालोकनिकेँ स्वयं सिद्ध सत्यतासँ हटिकए ओकरा ओहि प्रक्रियामे बुझबाक आवश्यकता अछि जकरा माध्यमे ओ जानल जाइत अछि, तथ्यक जड़िमे जाकए ओहि संबंधकेँ बुझबाक आवश्यकता अछि जे ओकरा अर्थ आ महत्त्व दैत छैक।

भारतमे परम्परागत रूपसँ पाठ्यक्रम निर्धारणमे विषय आधारित दृष्टिकोण अपनाओल जाइत अछि जे मात्र अनुशासन पर आधारित होइत अछि। एहन प्रयास ज्ञानकेँ पाठ्य पुस्तक, परीक्षोपयोगी सामग्री आ विषय विशेषक योग्यताकेँ अंक निर्धारणक माध्यमे बनल बनाओल वस्तुमे बदलि दैत अछि। एहन प्रयासक कारणेँ हमरालोकनिक शिक्षा व्यवस्थामे कएक गोट समस्या आबि गेल अछि। प्रथम, जे क्षेत्र पाठ्य पुस्तकक अन्तर्गत नहि

अबैत अछि अथवा जकर मूल्यांकन अंकक आधार पर नहि भए सकैत अछि ओ कात भए जाइत अछि। पाठ्यक्रमक पूर्ण रूपसँ हिस्सा हेबाक दबलामे शिक्षाक अनुसंगी माध्यम बनि जाइत अछि। एकरा जेना तेना निपटा देल जाइत छैक आ संयोगसँ शिक्षक विद्यालयमे एहि विषयक पूर्ण तैयारी करैत छथि। ज्ञानक अन्य क्षेत्र शिल्प, खेलकूद, जे कौशल आ रचनात्मक समूहमे कार्य करबाक क्षमता आदिक दृष्टिसँ परिपूर्ण होइत अछि, सेहो दूर छुटि जाइत अछि।

कार्य करबा संबंधी ज्ञानक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र आ ओहिसँ जुड़ल व्यवहारिक कौशल सेहो पूर्ण उपेक्षित रहि जाइत अछि आ एखनहु एहन पाठ्यक्रम नहि अछि जे एहि क्षेत्रमे ज्ञान, कौशल आ रुचिक विकास कए सकए।

आन विषय सभक अपनामे कोनो तालमेल नहि होइत छैक तेँ ज्ञान सेहो छिड़िअयले रहैत अछि। दुनियाँ नहि विषयकेँ देखबाक बच्चाक अपन दृष्टिकोणक आरम्भ विन्दु बनि जाइत अछि आ विद्यालयी ज्ञान तथा बाहरी ज्ञानक बीच सीमा रेखा खिचा जाइत अछि।

तेसर, जे पहिने ज्ञात होइत अछि तकरा ज्ञान निर्माणक अपन क्षमतासँ बढ़ावा देल जाइत अछि। सूचनाकेँ ज्ञान पर बढ़ाओल जाइत अछि, भारी भरकम पाठ्य पुस्तक तैयर कयल जाइत अछि आ बोध एवं समस्याकेँ सोझरयबाक बदलामे बनाओल प्रश्नोत्तर पर जोर देल जाइत अछि। सूचनाकेँ ज्ञान पर प्राथमिकता देबाक एहि प्रवृत्तिक कारण पाठ्यक्रममे एहन तथ्य सभक बोझ बढ़ैत जाइत छैक जकरा याद करए पड़ए।

चारिम, समस्याक संबंध नव विषयक बोझ लदबासँ अछि। समाजक समकालीन चुनौतीकेँ बुझबाक हेतु नव विषयक आवश्यकता पड़ैत छैक। मुदा ई प्रवृत्ति विद्यायलमे नव पाठ्यक्रमक निर्माण संबंधित पाठ्य पुस्तक एवं ओकर परीक्षा पद्धतिक रूपमे देखाइत अछि। एहन नव विषय, उदारणार्थ, ‘जनसंख्या अध्ययन’ मूल्याधारित शिक्षा’ पर्यावरण अध्ययन केँ स्वतन्त्र विषयक रूपमे मानबाक कोनो खास आधार नहि अछि। एहि विषयक नीक शिक्षाक हेतु यदि ओकरा पहिलुका पाठ्यक्रमसँ जोड़ि देल जाय तऽ प्रायः उचित होयत। ई कहब निरर्थक थिक जे नव विषयसँ पाठ्यक्रमक बोझ बढ़ैत छैक आ बिना मतलबसँ ज्ञान खानामे बँटि जाइत अछि।

ज्ञानक चुनाव

ज्ञानक सीमाक पर्याप्त विस्तार भेल अछि, तेँ ई आवश्यकता अछि। जे पाठ्यक्रममे की सभ चयन कए मिलाओल जाय। प्रासंगिकता-ई काफी व्यवहारकि चयनक दिस लए जा सकैत अछि, जाहिमे ई भ्रम रहैत छैक जे बादक वयस्क जीवनमे की सभ उपयोगी अछि। ई बच्चाक ज्ञान निर्माणमे एकदम सहायक नहि होइत अछि। तेँ हेतु कोनो तरहेँ ओ ज्ञान ओकर भविष्य निर्माणक काज नहि अबैत छैक।

अभिरुचि-एक उपयोगी तरीका अछि, मुदा ई एहि सरलीकरण पर आधारित नहि होयबाक चाही जे बच्चाकेँ कोन काजमे मोन लगैत छैक, मसलन, कार्टून आ खेलकूद। प्रयास ई होयबाक चही जे बचाक रुचि स्वतः जाग्रत होअए।

अर्थवत्ता-सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपाय। यदि बच्चा ओहि ज्ञानकेँ उपयोगी बुझैत अछि तऽ पाठ्यक्रममे ओकरा शामिल करबाकेँ उचित कहल जा सकैत अछि।

अतः पाँचम समस्याक संबंध ज्ञानक चयनक सिद्धान्त सँ अछि, जे ढंगसँ निश्चित नहि कयल गेल अछि। विकासक उपयुक्ततताक सामान्यतया ओहिमे ध्यान नहि रहैत छैक, पृथक्-पृथक् संवर्गमे आपसी संबंध कममे होइत छैक आ पुरान सिद्धान्त दिस घुरबाक अवसर कम होइत छैक। एहन सिद्धान्त ओतय काज नहि करैत छैक जे अपन विषयक सीमाक अतिक्रमण कए सकए, जेना माध्यमिक कक्षाक गणित आ भौतिकीक अपनामे कोनो संबंध नहि होइत छैक।

2.7 बच्चाक ज्ञान आ स्थानीय ज्ञान :

बच्चाक समुदाय आ ओकर अपन परिवेश ओ आरम्भिक संदर्भ होइत अछि जतय ओ ज्ञान प्राप्त करैत अछि, आ जाहिमे ओकर ज्ञानक महत्त्व होइत छैक। अपन परिवेशक संग परस्परतामे बच्चा ज्ञान अर्जित करैत अछि आ ओकर अर्थ बुझैत अछि। यद्यपि ई पूर्वकालहिसँ चलि रहल अछि, मुदा पाठ्य पुस्तकक निर्माण आ शिक्षणमे ऐतिहासिक रूपसँ एकर उपेक्षा कयल जाइत रहल अछि। तेँ हम सभ लगातार संदर्भित शिक्षा पर जोर दए रहल छी-

शिक्षणकेँ बच्चाक परिवेशमे अवस्थित कएकेँ विद्यालय आ ओकर अपन वातावरणक बीचक सीमाकेँ कम कएकेँ। ई मात्र एही हेतुएँ नहि जे अपन परिवेशमे बच्चाक अपन अनुभव ज्ञानक क्षेत्रमे प्रवेशक नीक माध्यम होइत अछि अपितु एहू हेतुएँ जे शिक्षाक संबंध विश्वसँ होयबाक चाही। ई मात्र साधनेटा नहि थिक अपितु साधन आ साध्य दूनू छी। एकरा हेतु हमरा सभकेँ ज्ञानकेँ व्यावहारिक बनयबाक आवश्यकता नहि होइत अछि आने तात्कालित रूपसँ प्रासङ्गिक बनयबाक बल्कि विश्वक संग एकर द्वन्द्वात्मकताकेँ बुझबाक आवश्यकता होइत अछि।

जखन धरि सिखएबला पाठ्य पुस्तकक पाठ्यकेँ अपन जीवनक संदर्भ सभसँ नहि जोड़ि पबैत अछि, ज्ञान तखन धरि मात्र सूचनेटा बनल रहैत अछि। यदि हम एकर परीक्षण करए चाहैत छी जे कोन प्रकारेँ शिक्षण सामुदायिक भविष्यसँ जुड़ैत अछि तऽ एकरा बढ़ाबा देब आवश्यक अछि जे कोन वस्तुकेँ बुझनाइ की होइत छैक, आ जे हम सभ सिखलहुँ अछि तकर उपयोग कोन प्रकारेँ करी। शिक्षा प्राप्त कयनिहारकेँ अपन शिक्षणमे भागीदारक रूपमे सेहो चिन्हबाह चाही।

दिनानुदिन बच्चा सभ विद्यालयमे अपन-लग पासक संसारक प्रचुर अनुभव सभकेँ प्राप्त करैत अछि- ओ जाहि गाछ पर चढ़ैत अछि, जे फल खाइत अछि, जाहि चिड़ैकेँ पकड़बाक कोशिश करैत अछि तकर माध्यमसँ। सभटा बच्चा दिन राति प्राकृतिक चक्रसँ सम्बधित होइत अछि, मौसमसँ जुड़ल होइत अछि, जलसँ जुड़ल होइत अछि, वनस्पति सभसँ जुड़ल होइत अछि आ अपन लग पासक जानवर सभसँ जुड़ल होइत अछि। बच्चा जखन प्रथम वर्गमे प्रवेश करैत अछि ताहि समयमे ओकरा भाषा, अंक आदिक पूर्ण ज्ञान रहैत छैक। संयोगे कखनहुँ हम बच्चाकेँ कक्षामे लग पासक संसारसँ अन्तर्क्रिया करबाक हेतु कहैत छिऐक, अपितु हम पाठ्य पुस्तक सभमे छपल शब्द आ चित्र सभक मदति लैत छी जे ओकर लग पासक संसारक कमजोर अनुकृति मात्र होइत छैक। सबसँ बढ़ि कए आइ कम्प्यूटर आधारित शिक्षाक नाम पर जीवित संसार रेखाचित्रमे बदलि रहैत अछि आ ई आशा कयल जाइत छैक जे से बच्चा कम्प्यूटर पर देखए। कल्पना करू जे जीवित अथवा अजीवित पाठ शुरू

करबासँ पहिने यदि शिक्षककेँ अपन छात्र सभकेँ विद्यालयक लगक क्षेत्रमे जाए पड़नि आ ओतएसँ फिरि कए सभ छात्रकेँ ओहि दस जीवित वस्तु सभक आ दसटा निजी वस्तुक नाम लिखबाले कहल जाए तऽ परिणाम चौंकए बला होयत। तमिलनाडुक महाबलीपुरमक बच्चा सभ अपन सूचीमे खुरचन, पाथरक दुकड़ा, आ माछ तथा छत्तीसगढ़क दण्डकारण्यक लगमे रहए बला बच्चा सभ खोंता, मधुमाछीक छत्ताक अध्ययनकेँ सेहो शामिल कए सकैत अछि। बच्चा सभ पाठ्य पुस्तकमे रेखाचित्र सभकेँ देखि कए वस्तु सभसँ ओकरा जोड़ि सकैत अछि। जल प्रदूषणक पाठक समयमे बच्चा सभ अपन लग पासक जलस्त्रोत सभक निरीक्षण कए प्रदूषणक प्रकारसँ ओकरा जोड़ि सकैत अछि। एहि प्रयाससँ, गन्दा पानिक स्वास्थ्य पर प्रभाव सन मुद्दा सेहो उठि सकत। जखन ओकरा प्रदूषित जलक चित्र बनाकेँ ओहि पर टिप्पणी करबाले कहल जाइत छैक। चन्द्रमा आ ओकर चक्रक विषयमे बुझबैत कतेक शिक्षक छात्र सभकेँ रातिमे विद्यालय आबि कए आकाश देखबाले प्रेरित करैत छथि? अथवा कमसँ कम यैह जे रातिमे ओ चन्द्रमाकेँ देखि लियै आ अगिला दिन ओहि चक्रक विषयमे चर्चा करए। बच्चा सभसँ स्थानीय गाछ वृक्षक नाम पुछबाक बदलामे पाठ्य पुस्तकमे एहन नाम सभ होइत छैक जे सभ ठाम होइत छैक आ कतहु नहि होइत छैक। पाठ्य पुस्तक सभमे बच्चा सभकेँ ओकर आसपासक जीवन-संसारक विषयमे बतयबाक बदलामे एहन अमूर्त्त धारणा सभक विषयमे बताओल जाइत छैक जे कतहु नहि होइत छैक। यदि कक्षा आठक छात्रकेँ प्रकाश संश्लेषण पढ़एबाक समयमे लगपासक गाछ वृक्षसँ ओकरा जोड़ल जाय तऽ ओ ओकरा नीक जकाँ बुझि सकैत अछि। यदि लगपासक जीवन संसार विद्यालयी अभ्यासक हिस्सा बनि जाय तऽ बच्चा सभ पर्यावरणक मुद्दा सभक प्रति संवदेनशील भए सकैत अछि।

ज्ञानक निर्माणमे सहभागिता

वातावरणक आंतरिक विविधताकेँ देखैत एकर सभ दृश्य अद्वितीय प्रतीत होइत अछि। तेँ एकर ज्ञान मात्र प्रयोग आ बनएबाक शास्त्रीय वैज्ञानिक प्रयाससँ संभव नहि अछि। एहि तरहक जटिल तंत्रकेँ बुझबाक हेतु स्थान आ समयानुसार पर्यवेक्षक, सावधान दस्तावेजीकरण आ व्यवस्था आ एहिमे निहित प्रक्रियाक स्पष्टीकरण जे तन्त्र सभ जे एक दोसरासँ भिन्न होअए पर आधारित होअए। भारतक वातावरणक बहुतो पक्ष जेना भूमिगत जलस्तर, पर एखनु नीक स्तरक दस्तावेज एहि अछि आ छात्र प्रोजेक्टक आधार पर एहि तरहक दस्तावेजक निर्माण संभव अछि। एहि प्रोजेक्ट केर परिणामकेँ सामान्य पहुँच बला वेबसाइट पर देल जा सकैछ जाहिसँ भारतक वातावरणक विषयमे एकटा समग्री तैयार भए सकए। विशेषज्ञ आ इच्छुक नागरिक लोकनिकेँ एहि प्रोजेक्टक स्तर जाँचबाले आ अपनामे विश्लेषण करबाले आमंत्रित करबासँ एकटा अपन सुधरैत तंत्रक स्थापना भए सकैछ जाहिसँ भारतीय वातावरणक संबंधमे हमरा सभक ज्ञान बढ़ि सकए आ उचित उपाय करबाक हेतु हम सभ तत्पर भए सकी। एहि सूचनाक वार्षिक संकलन जखन अनेक वर्ष तक लगातार कएल आ आन क्षेत्रसँ मिआओल जाइत आ तखन केन्द्रीय रूपसँ जमा कएल जाएत तऽ पर्यावरण अंतरण संबंधी हमर सभक ज्ञान आ अंतरण सँ संबंधित चेतना जे की भए रहल अछि आ किएक केर बढ़ाओत। एहि तरहक ज्ञानवर्धक कार्यकलापकेँ शिक्षा प्रक्रियामे शामिल कएलासँ शैक्षिक अनुभव स्तर बढ़त ।

एहि प्रकार स्थानीय वातावरण स्वाभाविक शिक्षण स्रोत थिक जकर पाठ–निर्माणमे पर्याप्त ध्यान राखल जयबाक चाही। एकर मतलब इहो थिक जे किछु मुद्दा बॉकीसँ बेसी महत्त्वपूर्ण होइत अछि। एकर मतबल ई नहि थिक जे कक्षा सभमे मात्र स्थानीये मुद्दा सभक चर्चा होयबाक चाही। सामाजिक विज्ञान आ भाषाक हेतु विषय वस्तुक चुनाव करैत समय संवैधानिक भावना आ मूल्यकेँ ध्यानमे राखल जएबाक चाही। वर्गक आदान प्रदानमे स्थानीय परिप्रेक्ष्यकेँ सम्मिलित कएलासँ शिक्षकक कल्पनाशीलता आ नैतिकता केर हेतु गंभीर प्रयास बुझल जाएत।

जखन केरलमे रहयबला एकटा बच्चाकेँ राजस्थानक रेगिस्तानी परिवेशसँ परिचय कराओल जाय तऽ ओ मात्र बालू आ ऊंटक चर्चहि तक सीमित नहि हो बल्कि ओकर विशिष्टता सभ आ ओकर प्रकृतिक पूरा परिचय देल जयबाक चाही। ओकरा सभकेँ आश्चर्य

होयबाक चाही जे एतेक गर्म स्थान पर लोक सभ कम कपड़ा पहिरबाक बदलामे बेसी कपड़ा पहिरैत अछि। ओकरा सभमे ओतय केर जीवनक आ आसपासक जीवनक तुलनात्मक अध्ययन क्षमता होयबाक चाही जाहिसँ ओ एहन प्रश्न पूछि सकए जे दूनूमे समानता आ असमानता की सभ अछि।

स्थानीय परिवेश मात्र भौतिक-प्राकृतिकेटा नहि होइत अछि, अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक सेहो होइत अछि। प्रत्येक बच्चाक घरमे अपन स्वर होइत छैक आ विद्यालयक हेतु सेहो ई आवश्यक अछि जे वर्गहुमे ओ बनल रहए। समुदायक भाषा स्रोत सेहो पर्याप्त होइत छैक, लोकगाथा, लोकगीत, चुटकुला, कला इत्यादि जे विद्यालयमे भाषा आ ज्ञानकेँ समृद्ध बना सकैत अछि। एहिसँ मौखिक इतिहास सेहो समृद्ध होयत। मुदा चुप्पी साधि कए हम सभ बच्चाकेँ दवबैत छिऐक। शिक्षाक प्रति समस्त जागरूक लोकक समक्ष ई स्पष्ट करबाक चाही जे जावत धरि वर्गमे बच्चाक भाषाक सुनबाइ नहि होयत तावत धरि ने हम ज्ञान निर्माणमे सफल होयब आ ने विद्यालय छोड़यबलाक संख्या पर अंकुश लगाए सकए।

स्थानीय ज्ञान परम्परा

भारत मे अनेक समुदाय आ व्यक्ति भारतक वातावरणक विषयमे ज्ञानक भंडार छथि जे हुनका वंशानुगत रूपेँ भटैत गेलनि- व्यक्तिगत अनुभव द्वारा। एहि प्रकारक ज्ञान संबद्ध भए सकैत अछि-

गाछक नामकरण आ वर्गीकरण सँ, जलक प्राप्तीकरण आ संचयन सँ अथवा खेतीसँ। कखनहुँ काल ई तरीका विद्यालयी पद्धतिसँ भिन्न भए सकैछ। आ कखनहु काल एकरा महत्त्वपूर्ण नहि बुझल जाइछ।

एहि परिस्थितिमे ई संभव भए सकैत अछि जे विद्यालयमे शिक्षक बच्चाकेँ स्थानीय परम्पराक आधार पर प्रोजेक्ट तैयार करबाले कहि सकैत छथि, एकर विद्यालयी परम्परासँ तुलनात्मक अध्ययन सेहो कयल जा सकैत अछि। किछु मामलामे जेनाकि गाछ-वृक्षक वर्गीकरणमे एहन भए सकैत अछि जे दूटा परम्परा समानान्तर हो जे भिन्न मानक पर आधारित रहैत महत्त्वपूर्ण होअए। अन्य मामलामे, उदाहरणार्थ बीमारीक उपचारक संदर्भमे ई स्थानीय परम्पराक विपरीत सेहो भए सकैत अछि, ओकरा चुनौती सेहो दए सकैत अछि। मुदा सभ स्थानीय ज्ञानकेँ संवैधानिक मूल्य आ सिद्धान्तक कसौटी पर जाँचल जएबाक चाही

2.8 विद्यालयी ज्ञान आ समुदाय :

सामाजिक –संस्कृतिक विश्वक अनुभवकेँ सेहो पाठ्यक्रमक हिस्सा बनाओल जयबाक आवश्यकता अछि। बच्चाकेँ पाठ्यपुस्तकमे वर्णित व्यक्ति आ जीवनक अभिव्यक्ति तथा प्रतिनिधितत्वक मार्गक खोज बरबाक चाहिऐक। एहि वर्णनमे एकर ध्यान राखल जयबाक चाहिऐक जे कोनो समुदायक अति सरलीकरण नहि होअए, ने ओकरा पर कोनो ठप्पा लगाओल जाय, आने ओकर विषयमे कोनो निर्णय सुनाओल जाए। विद्यार्थीक हेतु ई संभवतः नीक होएत जे समाज अध्ययनक पाठक अन्तर्गत स्थानीय समाजक अध्ययन सेहो करए। ओकर बीचमे सीधा सम्वाद सेहो कराओल जा कसैत अछि। उदाहरणार्थ नागरिक प्रशासनक अध्ययन क्रममे ग्राम प्रंचायतक प्रतिनिधिकेँ बजाओल जा सकैत अछि जे ओ बताबथि जे विकेन्द्रीकरण स्थानीय नागरिकक मुद्दाकेँ सोझरएबामे कोन प्रकारक मदति कयलक। स्थानीय मौखिक इतिहासकेँ सेहो प्रादेशिक आ राष्ट्रीय इतिहाससँ जोड़ल जा सकैत अछि, सामाजिक संदर्भ, पाठ निर्माता आ शिक्षकसँ आओर अधिक आलोचनात्मकताक अपेखा रखैत अछि। लिंग,जाति, वर्ग आ धर्मक समुदाय आधारित परिचय दमनशील भए सकैत अछि आ सामाजिक भेदभावकेँ बढ़बए बला सेहो। विद्यालयी अध्ययन ओ दृष्टि दए सकैत अछि जाहिसँ बच्चा अपन समाज –यथार्थक आलोचनात्मक सोच विकसित कए सकैत अछि। एहिमे ओहन जगह सेहो होयबाक चाही जे बच्चा अपन नीक–बेजाय अनुभवक चर्चा घरमे कए सकए, अपन शंकाकेँ सेहो उपस्थिति कए सकए।

विभिन्न समुदाय, कोनो अनुभव अथवा ज्ञानकेँ पाठ्यक्रमक बनायब अथवा नहि बनायबकेँ लएकेँ प्रश्न उठा सकैत अछि। अतः विद्यालयकेँ ओहि समुदायक आशंकाकेँ सुनबाक हेतु तैयार रहबाक चाही जाहिसँ ओ ओकरा निर्णयक शैक्षणिक मूल्यक विषयमे बता सकए। एहि हेतु आवश्यक अछि जे शिक्षककेँ सेहो एकर जानकारी होअए जे किएक पाठमे कोनो वस्तुकेँ शामिल कएल गेल अछि, आ कोनो वस्तुकेँ नहि। संगहि, हुनका अभिभावकक विश्वास सेहो जुटयबाक चाहियनि जे ओ लोकनि बच्चाकेँ कक्षामे घरक भाषाक प्रयोग करए देथि, ओकरा सेक्सक शिक्षा देथि, प्राथमिक विद्यालयमे या तऽ ओ लोकनि बच्चा सभकेँ खेलयबाले प्रेरित करथि अथवा ओकरा नाचए–गाबए देथि, ओ लोकनि वास्तवमे बच्चाक नीकेक लेल करैत छथि। ई तर्क उचित नहि थिक जे निर्णय राज्य स्तर पर लेल जाइत अछि। यदि हमरा लोकनिकेँ धर्म निरपेक्ष शिक्षामे सभ वर्गक बच्चा सभकेँ शामिल करबाक अछि, तऽ पाठ्यक्रम संबंधी विकल्पकेँ अन्य समानधर्मक लोकक बीच चर्चा करबाक होयत।

2.9 किछु विकासमूलक अवधारणा :

बच्चामे रुचि, शारीरिक क्षमता, भाषिक क्षमता, अमूर्त्तन आ सामान्यी- करणक क्षमताक विकास विद्यालयपूर्व शिक्षासँ लए कए माध्यमिक स्तर धरिक शिक्षामे होइत अछि। ई मात्र सर्वांगीन विकासेटाक दौड़ नहि होइत अछि अपितु एहि मध्य रुचि आ क्षमतामे सेहो मौलिक परिवर्तन देखल जा सकैत अछि। तेँ हेतु दृष्टिकोण निर्धारण आ पाठ्यक्रमक चयन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

ज्ञानक निर्माण आ पुनर्निर्माण अनुभाविक आधार, भाषिक क्षमता आ मुनष्य तथा प्राकृतिक संग अन्तर्क्रिया पर निर्भर करैत अछि। बच्चा जखन प्रथमहि विद्यालयमे अबैत अछि तऽ ओकर विश्वबोध विकसित भए गेल रहैत छैक। जे किछु ओ ओतय सिखैत अछि तकर ओकर ज्ञानसँ संबंध रहैत छैक आ ओकर ज्ञान सहज सेहो होइत छैक। विद्यालय ओकरा अधिक सहज ढंगसँ प्राप्त करबाक अवसर दैत छैक। प्राथमिक स्तर धरिक शिक्षामे पाठ्यचर्चामे गणित ओ भाषाकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान देबाक चाही। विषयक विभाजन महत्त्वपूर्ण नहि अछि, ऊपर वर्णित ज्ञानक क्षेत्रकेँ परिवेशक शैक्षणिक अनुभवक रूपमे शामिल कएल जा सकैत अछि। एहिमे प्राकृतिक आ सामाजिक परिवेशक संग गहन अंतर्क्रिया, बोध, अपन हाथसँ काज केनाइ आ अपन सौन्दर्यानुभूतिक विकासक अवसरकेँ जगह देबाक चाही। शिक्षककेँ एकर पूर्ण ज्ञान होयबाक चाही जे कोन तरहेँ पाठ्यक्रमक अनुभवक आधर पर बच्चा सभमे ज्ञानक अर्जन होअए। प्राकृतिक आ सामाजिक परिवेशक अध्ययनक पश्चात विद्यालयक मध्यवर्ती कक्षामे विज्ञानमे विभाजित कएल जा सकैत अछि। उच्च प्राथमिक आ उच्चतर प्राथमिक कक्षामे ऊपर वर्णित ज्ञानक क्षेत्रक सुपरिभाषित विषय-पाठ शामिल कएल जा सकैत अछि। एहि क्रममे विभिन्न विषयक एहन अन्तराल बनाओल जा सकैत अछि जाहिमे बच्चाकेँ गणित, भाषा, समाज तथा प्रकृतिक भिन्न- भिन्न रूपक ज्ञान विकसित भए सकए। संगहि, आलोचनात्मक आ विश्लेषणात्मक क्षमताक सेहो ओकरामे विकास भ्ए सकए। एहि स्तर पर सामाजिक मुद्दाकेँ लएकेँ संवाद आ सीमाहीन ज्ञानसँ तार्किक चिन्तनकेँ बढ़ाबा भेटि सकए।

जखन बच्चा माध्यमिक शिक्षाक स्तर धरि पहुँचैत अछि, ओकर ज्ञानक आधार, अनुभव, भाषिक क्षमता एतेक विकसित भए जाइत अछि जे ओ विभिन्न प्रकारक ज्ञानकेँ पूर्णरूपेण बुझि सकए। प्रत्यय, ज्ञानक संरचना, पर्यवेक्षक आ वैधताक प्रक्रियाक ज्ञान

ओकरामे विकसित भ्ए गेल रहैत छैक। तैं ऊपर वर्णित विषय आ माध्यमिक कक्षामे आइ पढ़ाओल जाएबला विषयकेँ आन्तरिक रूपसँ जोड़ि कए पढ़ाओल जा सकैत अछि।

ज्ञानक सभ रूपक पर्याप्त प्रतिनिधित्व आ समतुल्यता, विशिष्टता आ ओकर व्यापक आन्तरिक संबंध महत्त्वपूर्ण भए जाइत अछि जखनकि विषयक सीमा रेखा सुस्पष्टतासँ परिभाषित होअए।

पाठ्यक्रममे ज्ञान उपागम संबंधी किछु सिद्धान्त

1. सामाजिक यथार्थ आ परिवेशक प्रति विषयक आधार- आलोचनात्मक दृष्टिकोणक विकास।
2. स्थानीयक संग जुड़ाव, संदर्भमे राखि कए शिक्षाकेँ एहि तरहेँ प्रासंगिक एवं अर्थपूर्ण बनाओल जाए जे बच्चा अपन बाहरी ज्ञानक आधार पर ओकरा बुझि सकए, निरीक्षण, परस्पर अन्तःक्रिया, वर्गीकरण , श्रेणीकरण, प्रश्न पूछब, विवेक आ तर्कक अपन अनुभवसँ संबंध बतबैत सिखि सकए।
3. विभिन्न अनुशासनमे अन्तरसंबंधकेँ एहि तरहेँ विकसित कएल जाए जे ज्ञानक पारस्परिक संबंध सामने आबि सकए।
4. यथार्थक सामयिक स्वभाव तथा खोजक खुलापन आ महत्त्वकेँ बुझब।
5. स्थानीय ज्ञानकेँ जहाँ धरि सम्भव हो विद्यालयी अध्ययनसँ जोड़ल जाए।
6. सभ प्रश्नकेँ बढ़ाबा देब आ नव प्रश्नक हेतु स्थान देब।
7. वर्गमे समानता, भेदभाव आदिक प्रति संवेदनशीलता (मसलन, बालिकाकेँ रूढ़ि आधारित प्रोजेक्ट नहि देब, आन्हरकेँ गणित पढ़ैबसँ नहि रोकब आदि) क प्रति संवेदनशीलता।
8. कल्पनाशीलताक विकास आ कल्पनाशीलताकेँ जीवित बनाकेँ राखब।

विद्यालयी अनुभवक संघटन :

(अ) सामान्य क्रिया-कलाप -

- एसेम्बली
- उत्सव आ विशेष क्रिया-कलापक आयोजन
- खेलयबाक खाली समय
- संवाद, वाद-विवाद, विचार-विमर्श

- प्रबंधन आ सांगठनिक कार्यमे हिस्सेदारी।

(आ) विषय क्षेत्र यथा भाषा निर्देशक माध्यम-अंग्रेजी, तेसर भाषा

- गणित
- विज्ञान
- समाज विज्ञान आ इतिहास
- कला
- शिल्प आ कार्य।

***

अध्याय-3

पाठ्यक्रमक क्षेत्र, विद्यालयक विभिन्न अवस्था आ मूल्यांकन

3.1 भाषा
3.2 गणित
3.3 प्राकृतिक विज्ञान
3.4 सामाजिक विज्ञान
3.5 कला शिक्षा
3.6 स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षा
3.7 कार्य आ शिक्षा
3.8 शान्तिक हेतु शिक्षा
3.9 वातावरण ओ शिक्षा
3.10 शिक्षाक योजना
3.11 आकलन आ मूल्यांकन

सामाजिक अपेक्षा आ विभिन्न व्यापक अनुशासनक अध्ययनमे आयल परिवर्तनक वावजूद पाठ्यक्रम योजनाक हेतु प्रासंगिक प्रमुख क्षेत्र बहुत लम्बा अवधि धरि स्थिर रहल। ई आवश्यक अछि जे प्रत्येक पाठ्यक्रम क्षेत्र पर गहन पुनर्विचार कएल जाए जाहि सँ निखरैत सामाजिक आवश्यकताक संदर्भ मे प्रवेशक विशेष विंदुकेँ चिन्हल जा सकए। एहि संबंधमे कला,स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षाक भूमिका एवं स्थिति पर विशेष ध्यान देबाक होयत, जकरा लगाभग एक सदी पूर्व 'पाठ्यक्रमेत्तर' क्षेत्रक परिधिमे बान्हि देल गेल। बढ़ैत बच्चाक रचनात्मकताक प्रमुख भाग अछि सौन्दर्यक ज्ञान आ संवेदना आ तेँ हमरा लोकनिकेँ कलाकेँ एकदम पाठ्यक्रमक क्षेत्र मे आनए पड़त, ओकरा पढ़ाइक सभ विषय मे समाहित कएकेँ आ विभिन्न अवस्थामे कलाकेँ अपन विशिष्ट परिचय दैत। कार्य, शान्ति, स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षाक सेहो एहने स्थिति अछि। आर्थिक, सामाजिक आ वैयक्तिक विकासक

हेतु ई तीन आधारभूत रूपसँ महत्वपूर्ण अछि। विद्यालयके ँ एकरा सुनिश्चित करबामे महत्वपूर्ण भूमिका छैक जे बच्चाक सामाजीकरण, आत्मनिर्भरता, शान्ति आधारित मूल्य एवं स्वास्थ्यक संस्कृतिमे छैक।

3.1 भाषा :

एहि दस्तावेजमे भाषाक अर्थ अछि द्वि/ बहुभाषावाद। आ जखन हम गृहभाषा सभक अथवा मातृभाषा सभक गप्प करैत छी त' ओकर अर्थ होइत अछि घरक भाषा, समूहक भाषा आ गली मोहल्लाक भाषा। तात्पर्य जे ओ भाषा जे एकटा बालक प्राकृतिक रूप सँ अपन घर आ आसपासक वातावरणसँ अर्जित करैत अछि । बच्चाक जन्म एकटा आन्तरिक संवाद भाषाक संग होइत अछि। हम सभ अपन दैनिक अनुभवसँ बुझैत छी जे बेसीरास बालक विद्यालय जएबासँ पूर्वहि एकटा काफी क्लिष्ट आ नियमसँ संचालित तंत्रकेँ आत्मसात कए लैत अछि जकर नाम थिक भाषा आ ओ पूर्ण भाषिक क्षमता अर्जित कए लैत अछि। बेसीरास बालक विद्यालय स्तर धरि पहुँचैत- पहुँचैत दू तीनटा भाषा पर बजबाक अधिकार प्राप्त कए लैत अछि, ओ भाषाक उपयोग शुद्ध पूर्वकहि टा नहि अपितु उचित पूर्वक सेहो कए लैत अछि। दोसरो तरहक क्षमतावान बालक सभ जे बाजल जाएबला भाषा सभक उपयोग नहि करैत अछि, अपन भाव स्पष्ट करबाक हेतु अत्यन्त क्लिष्ट वैकल्पिक सांकेतिक तंत्रक विकास कए लैत अछि।

भाषा स्मृतिक एक एहन कोष आ प्रतीक सेहो प्रदान करैत अछि जे मनुष्य अपन संगीक वार्तालापसँ प्राप्त करैत अछि आ अपन जीवन कालमे रचितो अछि। ओ सभ एहन माध्यम सेहो थिक जाहिसँ अधिकतर ज्ञानक रचना कएल जाइत अछि आ तैं ओकर सभक विचार आ व्यक्तिगत परिचयसँ लगक संबंध छैक। वस्तुतः ओ सभ व्यक्तिगत परिचयसँ एतेक जुड़ल अछि जे मातृभाषासँ बच्चाकेँ पृथक राखब अथवा मातृभाषा केँ ओकर मस्तिष्कसँ हटा देब ओकर अपन सोचबाक क्षमतामे हस्तक्षेप करब होयत। प्रभावशाली सोचबाक शक्ति आ भाषाक प्रयोगसँ बच्चा विचार, लोक, वस्तु आ अपन चारूकातक संसारसँ सम्वंध स्थापित कए पबैत अछि।

बहुभाषिकताक, जे एक बच्चाक परिचयक हिस्सा आ भारतीय भाषायी सदृश्यक एक विशेष गुण थिक, रचनात्मक भाषा- अध्याापक द्वारा एक साधनक रूपमे प्रयोग कएल जएबाक चाही। ई सहज उपलब्ध संसाधनक श्रेष्ठ उपयोगेटा नहि थिक अपितु ई सुनिश्चित करबाक सेहो एकटा तरीका थिक जे प्रत्येक बच्चा अपनाकेँ सुरक्षित आ स्वीकृत अनुभव करए आ कोनो बच्चा भाषागत पृष्ठभूमिक कारणेँ पाछू नहि छुटए।

यदि हम सभ विद्यालयमे भाषिक शिक्षाक हेतु कोनो ठोस कार्यक्रमक शुरुआत करए चाहैत छी तँ बच्चा सभक आन्तरिक भाषिक क्षमताकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक आ संगहि ईहो जे भाषा सामाजिक-सांस्कृतिक रूपेँ निर्मित होअए आ हमर सभक दैनिक संवादमे बदलए। शिक्षामे भाषा सभ एहि साध्सनक प्रयोग करैतअछि आ साक्षरताक माध्यमे (ब्रेल सन लिपि सेहो) अकादमिक ज्ञान देबाक फलस्वरूप एकरे समृद्ध बनाओत। ते बच्चा सभ भाषा सम्बंधी असमर्थताक शिकार अछि ओकर परिचय मानक सांकेतिक भाषासँ करएबाक चाहिऐक जे ओकर निरंतर विकासमे सहायक भए सकए। छात्रक भाषा क्षमताकेँ बूझब ओकरा स्वयंमे तथा अपन सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे आस्थाकेँ प्रोत्साहित करत।

3.1.1 भाषिक शिक्षा

भारतमे अनेक भाषाक उपस्थिति अत्यंत जटिल चुनौती ठाढ़ करैत अछि, मुदा ओहिमे कतोक संभावना सेहो उत्पन्न होइत अछि। भारतक अद्वितीयता मात्र एही हेतुए नहि अछि जे एतए नाना प्रकारक भाषा बाजल जाइत अछि अपितु एहू गप्पमे अछि जे एहि भाषामे कतेक अधिक संख्याामे आ कतेक अधिक भाषिक परिवारक भागीदारी अछि। संसारमे एहन कोनो देश नहि अछि जतए पॉच विभिन्न भाषिक परिवारक भाषाक अस्तित्व होअए । यद्यपि ओ संरचनात्मक रूपसँ एतेक दूर अछि जे ओकर पृथक-पृथक भाषिक परिवारक रूपमे वर्गीकरण कएल गेल अछि- इण्डो- आर्यन, द्रविड़ियन, ऑस्ट्रो- एशियाटिक, तिब्बती- वर्मन आ अंडमानी किन्तु ओहिमे सतत परस्पर विनियम होइत रहैत अछि। कतोक भाषिक आ सामाजिक भाषिक तत्व अछि जे समस्त भाषामे एक संग विद्यमान अछि आ एहिसँ ई सिद्ध होइत अछि जे विभिन्न भाषा एवं संस्कृति भारतमे अनेक शताब्दीसँ विद्यमान अछि आा एक दोसराकेँ समृद्व करैत अछि। भारतीय भाषा सभ यथा- लैटिन,अरबी, फारसी,

तमिल आ संस्कृत अपन विभक्ति प्रधान आ व्याकरणात्मक संरचना आ सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यक कारणेँ अत्यधिक समृद्ध अछि आ हमरा लोकनिक जीवनकेँ आलोकित कए सकैत अछि कारण जे सभ भाषा ओहिसँ शब्द ग्रहण करैत अछि।

कतोक अध्ययनसँ ई सिद्ध भेल अछि जे दू भाषामे गति भेने ज्ञानात्मक विकास, सामाजिक सहिष्णुता, बहुद्देशीय चिंतन आ शैक्षिक उपलब्धिक स्तर बढ़ैत अछि। सामाजिक अथवा राष्ट्रीय स्तर पर बहुभाषिकता एक संसाधन थिक जकर तुलना कोनो दोसर संसाधनसँ कएल जा सकैत अछि।

आब हम सभ निश्चयात्मक ढ़ंगसँ ई सभ बुझैत छिऐक जे द्विभाषिक अथवा बहुभाषिक होएबाक अनेक ज्ञानात्मक लाभ अछि। त्रिभाषा फार्मूला भारतक भाषायी स्थितिक चुनौती आ संभावनासँ टक्कर लेबाक एक प्रयास थिक। ई एकटा एहन रणनीति अछि जे बेसी भाषा सिखबामे वास्तवमे मदति करत। तेँ एकर अक्षरसः एवं ध्यानपूर्वक अनुकरण आवश्यक। एकर प्राथमिक उद्देश्य बहुभाषावाद आ राष्ट्रीय एकताकेँ प्रोत्साहित करब अछि। निम्नांकित दिशा निर्देश हमरा सभकेँ एहि लक्ष्यकेँ प्राप्त करबामे मदति कए सकैत अछिः

- भाषायी शिक्षाक संदर्भमे बहुभाषिक होयब पर्याप्त नहि, अपितु ओकरा वर्गक बहुभाषिकताकेँ एक संसाधन जकाँ व्यवहार करबाक पद्धतिक विस्तार करबाक आवश्यकता छैक ।
- बच्चाक गृहभाषा, जेना उपर्युक्त 3.1 मे कहल गेल अछि, विद्यालयमे शिक्षाक माध्यम होएबाक चाही।
- यदि विद्यालयमे उच्चतर स्तर पर बच्चाक गृहभाषामे शिक्षा देबाक साधन नहि हो त' प्रथमिक स्तर पर त' निश्चये बच्चाक गृह भाषामे शिक्षा होएबाक चाही। ई आवश्यक अछि जे हम सभ बच्चाक गृह भाषाक आदर करी। संविधानक धारा 350 'ए' क अनुसार, 'ई सभ राज्य आ राज्यक सभ स्थानीय प्रशासनक दायित्व होएत जे ओ प्राथमिक स्तर पर भाषायी अल्पसंख्यक बच्चा सभक शिक्षा ओकर मातृभाषामे करएबाक हेतु पर्याप्त साधन उपलब्ध कराबए।

- बच्चा सभ एहि व्यवस्थासँ बहुभाषिक शिक्षा प्राप्त करत। आवश्यकता अछि जे त्रिभाषा फार्मूलाक भावपूर्वक अनुसरण कएल जाइक जाहिसँ ओ बहुभाषिक देशमे बहुभाषिक वार्त्तालाप क्षमताक विकास करए।
- अहिन्दी भाषी राज्य सभमे बच्चा हिन्दी सीखए । हिन्दीभाषी राज्य सभमे बच्चा सभ अपन क्षेत्रमे नहि बाजल जाएबला भाषा सीखए। एहि भाषा सभक अतिरिक्त आधुनिक भारतीय भाषा (एम.आइ.एल.)क रूपमे संस्कृत सेहो सिखल जा सकैत अछि।
- बादक स्तर सभ पर, कोनो शास्त्रीय आ विदेशी भाषा सभक अध्ययन कराओल जा सकैत अछि।

3.1.2 गृह/पहिल भाषा अथवा मातृभाषाक शिक्षा :

ई स्पष्ट अछि जे ओकर अपन आन्तरिक भाषिक क्षमता आ परिवार तथा आसपासक लोकक संपर्कक कारणेँ बच्चा पूर्णतया एक अथवा अनेक भाषामे वार्त्तालापक पूर्ण क्षमताक संग विद्यालय अबैत अछि। ओ सभ विद्यालय मात्र हजारो शब्दहिटाक संग नहि अबैत अछि अपितु भाषाकेँ ध्वनि, शब्द, वाक्य आ व्याख्यानक स्तर तक संचालित करएबला नियम सभ पर पूर्ण अधिकारक संग अबैत अछि। एकटा बच्चा मात्र शुद्धतापूर्वकेटा नहि बल्कि उचितरूपेँ सेहो अपन भाषा बजैत आ बुझैत अछि। ओ देश,काल आ पात्रक अनुसार अपन व्यवहारकेँ संचालित कए सकैत अछि।

ओकरा ध्वनिक परिवर्तनसँ भाषाक क्लिष्ट तंत्रकेँ बुझबाक आन्तरिक क्षमता होइत छैक। वर्गमे निरंतर बढ़ैत उच्च स्तरीय संप्रेषण आ ज्ञानात्मक योग्यताक माध्यमसँ एहि कुशलताकेँ बढ़ाएब भाषा शिक्षाक प्रथम उद्देश्य थिक। तेसर वर्गक बादसँ वाचिकता आ साक्षरता शिक्षा उच्चस्तरीय संप्रेषण कुशलता आ आलोचनात्मक चिंतनक आधार होयत । प्राथमिक अवस्थामे बच्चाक भाषाकेँ यथावत स्वीकार कएल जएबाक चाही।

साहित्य बच्चा सभकेँ अपन रचनात्मकताक हेतु सेहो प्रेरित कए सकैत छैक। खिस्सा,कविता अथवा गीत सुनलाक बाद बच्चाकेँ स्वयं किछु लिखबाक हेतु प्रोत्साहित कएल जा सकैत अछि। ओकरा विभिन्न रचनात्मक अभिव्यक्तिकेँ शृजन करबाक हेतु सेहो प्रेरणा देबाक चाही।

कक्षा चारिसँ यदि नीक आ मनलग्गू रूपसँ सिखाओल जाए त' बच्चा स्वयमेव उचित वर्त्तनीक नियम आ स्तरीय विविधता सिखि जाएत मुदा बच्चाक गृह भाषाक आदर सदैव ध्यानमे रहबाक चाही। ईहो स्वीकार करबाक चाही जे गलती सिखबाक प्रक्रियाक अनिवार्य अंग थिक आ बच्चा अपनाकेँ तखनहि ठीक करत जखन ओ ओहि हेतु तैयार हो। गलती पर ध्यान केन्द्रित करबाक बदलामे उचित ई होयत जे बच्चा सभकेँ बुझबा योग्य, मनलग्गू आ चुनौतीपूर्ण अनुभव प्रदान कएल जाए।

विद्यालयमे गृह भाषाक अध्ययनक महत्वकेँ विस्तार पूर्वक वर्णन करब वास्तवमे कठिन अछि। यद्यपि बच्चा सभ परस्पर वार्तालापक मूल क्षमताक संग विद्यालय अबैत अछि तथापि विद्यालयमे ओकरा द्वारा भाषाक उच्चस्तरीय दक्षता प्राप्त करब आवश्यक। मूल ज्ञान मित्र मण्डलीक वार्तालाप सन परिप्रेक्षपूर्ण आ बंधन रहित समयक हेतु पर्याप्त अछि किन्तु परिप्रेक्ष्यहीन आ बंधन सहित अवसर जेना कोनो विषय पर निबंध लिखबाक हेतु उच्चतर क्षमताक आवश्यकता छैक। ईहो आब पूर्ण स्थापित तथ्य अछि जे उच्चस्तरीय दक्षता सुगमतासँ एक भाषासँ दोसर भाषा तक संप्रेषित कएल जा सकैत अछि। तेँ ई आवश्यक अछि जे विद्यालयमे भारतीय भाषाक स्थिर अध्ययनक हेतु जे प्रयास हम सभ कए सकैत छी से करी।

भाषाक शिक्षा मात्र भाषाक वर्गहि धरि सीमित नहि रहैत अछि। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान अथवा गणितक वर्ग सेहो वस्तुतः भाषेक वर्ग थिक। विषय सिखबाक अर्थ ओकर विशिष्ट शव्दावलीकेँ सिखब, ओकर अवधारणाकेँ बूझब आ ओकरा विषयमे आलोचनात्मक रूपसँ चर्चा अथवा लेखन करब। किछु विषयक हेतु छात्रकेँ प्रोत्साहित करबाक चाही जे ओ किताब पढ़ए, विभिन्न भाषामे लोक सभसँ गप्प करए अथवा इंटरनेटसँ अंग्रेजीमे सामग्री जुटाबए। पाठ्यक्रममे भाषाक नीति विद्यालयमे बहु भाषावादकेँ निश्चित रूपेँ आगू बढ़ाओत। संगहि भाषाक वर्ग किछु विलक्षण अवसर सेहो दैत अछि। खिस्सा, कविता, गीत आ नाटक बच्चा सभकेँ सांस्कृतिक धरोहरसँ जोड़ैत अछि आ ओकरा अपन अनुभवकेँ बुझबाक तथा

दोसराक अनुभवक प्रति संवेदनशीलता विकसित करबाक अवसर दैत छैक। हम सभ ईहो इंगित कए सकैत छी जे एहि तरहक क्रिया कलापसँ बच्चा सभ अनायासहि बेसी व्याकरण सीखि सकैत अछि, क्लिष्ट आ उबाउ व्याकरणक अध्ययनक बदलामे।

विभिन्न रूपसँ सक्षम विद्यार्थी मूल भाषा कौसलकेँ सामान्य माध्यमिक संवादसँ सीखि सकैत अछि, ओकरा विशेष रूपसँ तैयार कएल गेल सामग्री देबाक चाही जाहिसँ ओ ओकर विकासमे सहायक होअए। ओ छात्र सभ जे शारीरिक रूपसँ स्वस्थ अछि तकरा संकेत भाषा तथा बेल लिपि सिखबाक विकल्प सेहो भेटबाक चाही।

3.1.3 दोसर भाषाक प्राप्ति :

बहुभाषीय भारत मे अंग्रेजी एक गोट वैश्विक भाषा थिक। शिक्षकक अंग्रेजीक क्षमता आ विद्यालयसँ बाहरक अंग्रेजीसँ छात्रक साक्षात्कारक कारणे एतय अंग्रेजी शिक्षाक वातावरणमे विविधता आ श्रेणी पाओल जाइत अछि। अंग्रेजीकेँ सम्मिलित करबाक स्तर आब लोकक आशाक राजनीतिक प्रत्युत्तरक प्रश्न बनि गेल अछि नहि कि अकादमिक अथवा सुविधाक प्रश्न आ एकर प्रवेशक स्तरक विषयमे जनताक भावनाक आदर करए पड़त, एहि सावधानीक संग जे हम सभ ओहि पद्धतिक विस्तारीकरण नहि करी जे एखन धरि असफल रहल अछि।

दोसर भाषाक पाठ्यक्रमक दू गोट लक्ष्य अछि- मूल क्षमताक प्राप्ति जे प्राकृतिक रूपेँ भाषा सिखबासँ अबैत अछि आ भाषाकेँ सोचबाक एकटा औजारक रूपमे विकास आ (उदाहरणार्थ) शिक्षाक माध्यमसँ ज्ञान अर्जन। ई पाठ्यक्रमसँ इतर तरीकाक विचार दैत अछि जाहिसँ अंग्रेजी आ आन विषय सभ तथा अंग्रेजी आ अन्य भारतीय भाषा सभक बीचक दूरी हटए। प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण कार्य सभक हेतु एकटा भाषा भए सकैत अछि जाहिसँ बच्चा विश्वक विषयमे जानए। बादक स्तर सभ पर सभ शिक्षा भाषाक माध्यम सँ होइत अछि। उच्च स्तरीय भाषिक दक्षता सभ भाषाक हेतु समान भए जाइत अछि;(उदाहरणार्थ) पढ़ब एक गोट स्थानान्तरित होमएबला दक्षता थिक। एकरा एक भाषामे सुधारबासँ दोसरमे अपनहि सुधरि जाइत अछि, जखनकि अपन भाषामे पढ़बामे अक्षमता दोसरो भाषाक पठनकेँ कुप्रभावित करैत अछि।

संविधान द्वारा प्रत्येक बच्चाकेँ सुनिश्चित कएल गेल आठ वर्षक शिक्षाक मध्यहिमे लगभग चारि वर्षमे मूल अंग्रेजी भाषाक क्षमता प्राप्त करब संभव होएबाक चाही। विद्यालयमे शुरुआतहिसँ बहु भाषिक पद्धति अपन भाषाक ह्रास आ अत्यंत असुविधा सन कुप्रभावकेँ हटाओत।

अंग्रेजी एकसरे नहि अछि। अंग्रेजी शिक्षाक उद्देश्य बहु भाषिक सभक निर्माण करब अछि जे हमरा सभक सभ भाषा केँ समृद्ध कए सकथि। ई एकटा मानल राष्ट्रीय दृष्टान्त रहल अछि। आवश्यकता छैक अंग्रेजीकेँ अन्य भारतीय भाषा सभक संग विभिन्न राज्य सभमे स्थान भेटबाक ,जतए बच्चाक दोसर भाषा सभ अंग्रेजी शिक्षा आ ज्ञान केँ मजबूती प्रदान करए आ 'अंग्रेजी माध्यम' विद्यालय सभमे जतए दोसर भारतीय भाषा सभक प्रवेशक आवश्यकता छैक जाहि सँ अंग्रेजीक वर्चस्वकेँ कम कएल जा सकएं । अंग्रेजी माध्यम विद्यालय सभक अनुपातिक उपलब्धि देखबैत अछिजे भाषा तखन सिखल जाइत अछि जखन ओ भाषा जकाँ नहि पढ़ाओल जाइत अछि बल्कि वास्तविक परिप्रेक्ष्यमे बच्चा सभक समक्ष प्रस्तुत कएल जाइत अछि। अतः अंग्रेजीकेँ दोसर विषय सभ्रसँ जोड़ि कए देखल जएबाक चाही। पाठ्यक्रममे भाषाक रूपमे प्राथमिक स्तर पर ओकर एकटा अलग महत्व अछि आ वादमे सभ विषयक शिक्षा वस्तुतः भाषिक शिक्षा थिक। ई दृष्टि 'विषयक रूपमे अंग्रेजी' आ 'माध्यमक रूपमे अंग्रेजी' केर बीचक दूरी पाटत। एहि तरहेँ हमरा सभकेँ संयुक्त विद्यालय तन्त्र दिस बढ़बाक चाही जे 'भाषिक शिक्षा' आ 'निर्देशक माध्यमक रूपमे भाषा' केर बीचमे अन्तर नहि करए। बुझएबाक तरीकासँ युक्त वार्तालापक वातावरण भाषिक शिक्षाक हेतु प्रथम आवश्यकता थिक, चाहे ओ प्रथम होअए अथवा द्वितीय। ज्ञान संप्रेषणक माध्यममे सामिल अछि- पाठ्य पुस्तक , सिखनिहारक हेतु निर्धारित पाठ, कक्षा पुस्तकालय तथा अनेक विधाक हेतु प्रोत्साहनः छपाइ(उदाहरणार्थ- नव सिखनिहारक हेतु पैघ पोथी); एकसँ बेसी भाषामे समान पुस्तक ; मीडियाक सहयोग (ज्ञान प्रदायक पत्रिका सब , अखवारक लेख, रेडियो सुनएवला कैसेट); आ 'विश्वस्तरीय' सामग्री सभ। पिछड़ल सिखनिहारक भाषिक वातावरणकेँ समृद्ध करबाक हेतु विद्यालयकेँ सामाजिक शैक्षणिक केन्द्रक रूपमे विकसित करबाक आवश्यकता छैक। अनेक सफल प्रयोग सभ अछि जकर सरलीकरणक हेतु खोज आ प्रोत्साहनक आवश्यकता अछि। प्रयास आ तरीका सभ अपनहि

तक सीमित नहि होएबाक चाही बल्कि विस्तृत समान दर्शनक भीतर एक दोसराक मदति कएनिहार होएबाक चाही(जाहिमे विगोट्सकियन,कोम्सकियन,आ पियागेसियन सिद्धान्त सामिल हो)। उच्चस्तरीय दक्षता (जाहिमे शैक्षिक समीक्षा आ लिंग निर्धारणमे भाषाक महत्ता सामिल अछि) केर विकास कएल जा सकैत अछि यदि एक बेरि मूल दक्षता प्राप्त कएल जए।

शिक्षक शिक्षा सेहो संगहि आ ओतहि तैयारीक हेतु (विधिवत आ सामान्य सहायक तन्त्रक सहायतासँ) होएबाक चाही। दक्षता आ व्यावसायिक जागरुकता सेहो संगहि प्रदान कएल जएबाक चाही आ जतए तक संभव भए सकए शिक्षकक अपन भाषामे । ओ सभ शिक्षक जे अंग्रेजी पढ़बैत छथि केर अंग्रेजीमे मूल दक्षता होएबाक चाही। सभ शिक्षककेँ भाषा सिखबाक तरीकाक ज्ञानक संग स्थिति आ स्तरक अनुसार उचित पूर्वक अंग्रेजी सिखएबाक क्षमता होएबाक चाही। प्रदान करबाक क्षमतासँ पूर्ण पाठ्यक्रमकेँ उपलब्ध करएबाक हेतु सामग्रीक विविधता होएबाक चाही जे अर्थ पर विशेष ध्यान देअए।

भाषाक मूल्यांकनकेँ पाठ्यक्रम विशेषक अनुसारेँ ‘उपलब्धि पर केन्द्रित नहि होएबाक चाही बल्कि भाषिक दक्षताक मापदण्ड करबामे सक्षम होएबाक चाही। मूल्यांकनकेँ एहि तरहक होएबाक चाही जे ओ सिखबा मे मदति करएबला होअए नहि कि बाधक । विभागमे चलैत आकलन सिखनिहारक विकासके अनुमानित कए सकैत अछि। भाषिक दक्षताक हेतु गठित राष्ट्रीय मण्डलीकेँ एहि तरहक अंग्रेजी भाषाक जॉचक हेतु वैकल्पिक प्रश्न पर तैयार करबाक चाही जाहि सँ पाठ्यक्रमिक स्वतंत्रता जॉचक स्तरीय तरीकाक संग चलए आ एहि माध्यमक निराकरण सेहो करए जे अंग्रजी (गणितक संग) बेसीरास छात्रक दसमी कक्षामे असफल रहबाक मूल कारण होइत अछि। एकटा छात्रकेँ अंग्रेजीक विना ‘पास’ होएबाक विकल्प प्रदान कएल जा सकैछ यदि अंग्रेजीक मूल्यांकनक हेतु (आ तैं निर्देश) सामान्य विद्यालयी पाठ्यक्रमसँ बाहर कोनो उपाय कएल जाए।

3.1.4 पढ़ाइ लिखाइ सिखब :

यद्यपि हम सभ भाषाक अलग अलग दक्षताक शिक्षाक हेतु एक संयुक्त प्रयासक मजबूतीसँ समर्थन करैत छी तथापि बहुधा विद्यालयकेँ पढ़बा आ लिखबामे विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता छैक खास कए कैं गृह भाषाक संदर्भमे । दोसर आ तेसर अथवा शास्त्रीय अथवा विदेशी भाषाक संदर्भमे गप्पक आदान प्रदान करबाक क्षमताक संग सळा दक्षता महत्वपूर्ण भए जाइत अछि। ई प्रतीत होइत अछि जे बच्चा सभ सहज वातावरणमे ,

जे ओकरा यथार्थ प्रतीत होअए, मे बेसी नीक जकॉ सिखैत अछि अपेक्षाकृत एकदिसाह आ संयोगी तरीकासॅ जकर कोनो अर्थ नहि छेक। भाषाक विभिन्न दक्षताकेँ प्राप्त करबाक हेतु समृद्ध आ विस्तृत ज्ञान बच्चाकेँ उपयुक्त स्थान पर तत्काले देबाक चाही। बहुधा वार्तालाप करबाक समयमे जेनाकि - ककरोसॅ फोन पर गप्प करबाक समयमे किछु लिखबाक हेतु बहुतो कलाक संगहि उपयोग करबाक आवश्यकता होइत छैक। हम सभ वास्तवमे चाहैत छी जे बच्चा बुझलाक उपरान्त पढ़ए आ लिखए।

दक्षताक सम्पूर्ण विचार अभिव्यक्तिक माध्यम आ परिचयक महत्व गुणक रूपमे भाषा सभ विद्यालयी विषय तथा अनुशासन मे व्याप्त अछि । बाजब आ सुनब, पढ़ब आ लिखब, : ई सभ सामान्य कुशलता थिक आ एहिमु बच्चाक दक्षता विद्यालयमे सफलता पएबाक मूल मन्त्र बनि जाइत अछिं। यैह कारण थिक जे भाषाक शिक्षाकेँ विद्यालयमे सभ व्यक्तिक आवश्यकताक रूपमे देखब महत्वपूर्ण अछि आ एकटा मात्र भाषेक शिक्षकक उत्तरदायित्व नहि बुझबाक चाही। भाषा सम्बंधी कुशलताक मौलिक भूमिका प्राथमिक कक्षाक बाद समाप्त नहि भए जाइत अछि अपितु माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक वर्ग धरि सेहो विषयक क्षेत्रमे नव आवश्यकताक संग -संग बढ़ि जाइत अछि। दैनिक जीवनमे प्रयुक्त विभिन्न क्षमता जेना गम्भीरतापूर्वक सोचबाक क्षमता, एक दोसरा सॅ वार्तालापक क्षमता, गप्प/नकारबाक क्षमता, निर्णय करगाक/ समस्या सोझारयबाक क्षमता आ सहबाक क्षमता तथा अपनाकेँ व्यवस्थित करबाक क्षमताक विकास सेहो दैनिक जीवनक आवश्यकता आ चुनौतीक सामना करबाक हेतु आवश्यक अछि।

पारंपरिक रूपसॅ प्रशिक्षित शिक्षक गण भाषणक प्रशिक्षनकेँ शुद्धतासॅ जोड़ैत छथि नहि कि भाव आ भाग लेबाक कार्यसॅ। तैं कक्षामे गप्प करबाकेँ हमर सभक व्यवस्थामे अधलाह मानल जाइत अछि आ शिक्षकक काफी उर्जा बच्चाकेँ शॉत करबामे अथवा ओकरा शुद्ध शुद्ध उच्चारण करएबामे खर्च भए जाइत अछि।

परम्परागत रूपसॅ प्रशिक्षित अध्यापक वाचिकताक प्रशिक्षणकेँ ओकर व्यंजकता तथा भाषाक हिस्सेदारी कार्यसॅ नहि अपितु ओकर उचित आ शुद्ध होएबासॅ जोड़ैत छथि। अतः वर्गमे गप्प सप्प कैं हमरा लोकनिक व्यवस्थामे नकारात्मक बूझल गेल अछि आ बच्चाकेँ चुप्प रखबामे अथवा शुद्ध उच्चारण पर जोर देबामे अध्यापकक ढ़ेर उर्जा नष्ट होइत अछि। यदि शिक्षक बच्चाक गप्पकेँ हल्लाक रूपमे नहि अपितु एक साधनक रूपमे देखथि त' नियंण आ प्रतिरोधक दृश्यक अभिव्यक्ति तथा संवादक रूपमे बदलि सकत। एहि

विषयमे पर्याप्त जानकारी उपलब्ध अछि जे कोना गप्प सप्पकेँ पढ़ाइक माध्यम बनाओल जा सकैत अछि आ शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम जे शिक्षक छथि आ जे बनएबला छथि – दूनूक एहिसँ परिचय कराओल जएबाक चाही। पाठ्यपुस्तक आ अध्यापकक हेतु संदर्शिकाक रूपरेखा निश्चित करएबला सेहो एहन योजना बनाए सकैत छथि आ शिक्षकक मार्ग दर्शन कए सकैत छथि जे कोन प्रकारेँ पाठ्यपुस्तकक प्रारूप तय कए सकैत छथि जाहिसँ ओ वच्चाक छोट समूहक क्रिया कलापक पूर्ण रूपेण उपयोग कए सकए जाहिसँ तुलना आ विरोध, आश्चर्य आ ध्यान, अनुमान आ चुनौती, निर्णय आ अन्वेषणक क्षमताकेँ पोषित कए सकए।

सुनबाक परिधिमे एहि तरहक सूक्ष्म आ विस्तृत अभ्यास योजना यदि पाठ्यपुस्तक तथा शिक्षकक संदशिकामे समाहित कएल जाए त' ओहि महत्वपूर्ण क्षमता आ मूल्यक क्षेत्रकेँ पुनर्जीवित करबाकेँ बहुत प्रभावित करताह। एकर अन्तर्गत ध्यान देनाइ दोसर विचारकेँ प्रथमिकता देब, जे किछु कहल जा रहल अछि तकर अनुमान लगाएब अबैत अछि। एहि तरहेँ सुनबाक क्रिया सेहो सामिल अछि आ कुशलता तथा मूल्यक ओतबे जटिल जाल बनबैत अछि जेनाकि बजबाक क्रिया। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध साधनमे लोक –कथा तथा खिस्सा सुनब, सामूहिक गीत तथा नाटक सामिल अछि। खिस्सा सुनब मात्र विद्यालयसँ पूर्वक समय हेतु लाभप्रद नहि अछि अपितु पश्चातहु महत्वपूर्ण बनल रहैत अछि।आख्यात्मक विमर्शक रूपमे सुनाओल गेल खिस्सा कल्पनाकेँ त' समृद्ध करितहि अछि संगहि तार्किक ज्ञानक जड़िकेँ सेहो मजबूत बनबैत अछि। ई अपन जीवनसँ पृथक स्थितिमे भाग लेबाक क्षमताकेँ सेहो बढ़बैत अछि। कल्पना आ रहस्य बच्चाक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निबाहि सकैत अछि। भाषा सिखबाक एक भागक रूपमे सुनबाकेँ सेहो संगीतक मदतिसँ परिपुष्ट करबाक आवश्यकता होइत अछि जाहिमे लोक तथा शास्त्रीय एवं लोकप्रिय धुनि सेहो सामिल अछि । लोक कथा तथा संगीतकेँ सेहो भाषाक पाठ्यपुस्तकमे एहन विमर्शक रूपमे सामिल कएल जएबाक चाही जे उत्तम अभ्यास तथा कार्यक सहायतासँ विकसित भए सकए।

पठनकेँ भाषायी शिक्षाक केन्द्रीय क्षेत्रक रूपमे सहर्स सवीकार त' कए लेल जाइत अछि मुदा विद्यालयी पाठ्यक्रमक जानकारी लेब आ ओकरा रटबाक भारसँ एतेक बोझ पड़ैत अछि जे अपना हेतु अवस्थाक आधार पर व्यक्तिगत पठनक अवसर बनाओल जएबाक चाही जाहिसँ पढ़बाक संस्कृति बनि सकए आ शिक्षककेँ एहि संस्कृतिक सदस्यक रूपमे आदर्श स्थापित करबाक चाहियनि। एहि हेतु जरूरी अछि विद्यालयी आ सामूहिक

सभ पढ़ब किएक ने सिखैत अछि?

- शिक्षक सभमे ढ़ॉचागत शिक्षा शास्त्रीय कौशल (एहि बातक ज्ञान जे छात्र सभक स्तर की अछि,तकरा बुझनाइ आ उचित प्रश्न पुछनाइ) आ पढ़ब सिखबाक तरीकाक ज्ञान जे नीचा सॅ उपर तकक प्रक्रिया जेना शब्द खण्डक पहचान आ शब्द-ध्वनिक मेल आ ऊपर सॅ निचला प्रक्रिया जेना पाठसॅ पूर्ण शब्दक पहचान आ अर्थ। ओ सभ बेसीकाल कक्षा प्रबंधन कौशलसॅ वंचित रहैत अछि । ओ लोकनि गलती सभ आ कठिनाह जगह सभ पर ध्यान केन्द्रित करैत छथि ने कि कल्पनाशील सुझाव आ स्पष्टीकरण सभ पर ।
- सिखबासॅ पूर्वक प्रशिक्षणमे शिक्षक सभक पढ़बाक शिक्षा शास्त्रक ठीक ढ़ंगसॅ तैयारी नहि होइत अछि, आने सेवाकाल प्रशिक्षणमे एहि सभ मुद्दा पर ध्यान देल जाइत अछि।
- पाठ्यपुस्तक सभ तदर्थ तरीकासॅ सिखल जाइत अछि जाहिमे पढ़ब सिखबाक कोनो व्यवस्थित पद्धति कैं अपनएबाक कोशिश नहि होइत अछि ।
- सुविधा विहीन पृष्ठभूमिसॅ अबएबला बच्चा सभकैं खास कएकैं जे पहिल पीढ़ीक विद्यार्थी अछि, लगैत छैक जे सम्भवतः शिक्षक ओकरा स्वीकार नहि करथिन आतैं ओ पाठ्यपुस्तक सभसॅ लगावक अनुभव नहि कए पबैत अछि।

पढ़ब प्रारम्भ करबाक हेतु किछु व्यवहारिक सुझावः

- वर्ग कैं आवश्यकता छैक छपल वस्तु सॅ समृद्ध वातावरण बच्चा कैं प्रदान करबाक जाहिमे संकेत ,तालिका, कार्य प्रणालीक सूचना इत्यदि, जे ज्ञान प्रदान करैत अछि केर प्रदर्शन सामिल अछिजाहि सॅ लिखल संकेत कैं बुझबामे ध्वनि अक्षर संकेतक संग मदति भेटए।
- आवश्यकता छैक कल्पनाशील ज्ञान देबाक जे एकटा योग्य पाठक द्वारा उपयुक्त उदाहरण आ दृष्टान्तक संग पढ़ल जाइत अछि।
- बच्चा सभक द्वारा वर्णित अनुभवकैं लिखब आ फेर ओकरहिसॅ लिखित अनुभवकैं पढ़बाक।
- अतिरिक्त सामग्री सभक पठन : खिस्सा ,कविता इत्यादि।
- शुरुआती विद्यालय गेनिहारकैं अपन पाठ स्वयं बनएबाक आ कक्षामे प्रदान करबाक अवसर भेटबाक चाही।

पुस्तकालय सभकैं प्रोत्साहन देब। ई धारणा जे उपन्यास पढ़ब समयकैं नष्ट करब थिक, पढ़बाक आदतकैं हतोत्साहित करबाक मुख्य साधन थिक । सभ श्रेणीक सभ विद्यालयी विषय सभक महत्वपूर्ण पठन सामग्री जुटएबा पर तुरंत ध्यान देबाक आवश्यकता छैक। एहि तरहक काफी सामग्री यद्यपि ओकर गुणात्मक स्तर भिन्न भिन्न छैक, बाजार मे उपलब्ध छैक आ

एकर प्रयोग कक्षामे एकटा विषय केर अध्यापनक कार्य क्षेत्रकेँ विस्तार देबामे कएल जाए सकैत अछि। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम सभकेँ चाही जे ओ अध्यापक सभकेँ एहि तरहक सामग्री सभसँ परिचय कराबए आ हुनका लोकनिकेँ एहन मानदण्ड प्रदान करए जकर अनुसार ओ एकर चयन कए सकथि आ प्रभावशाली रूपसँ एकर प्रयोग कए सकथि।

लेखनक महत्वकेँ त' बुझल जाइत अछि मुदा पाठ्यक्रम एहन होयब जरूरी अछि जे एकर नवाचारी तरीका सभ पर ध्यान दए सकए । शिक्षक लोकनिक जोर एहि बात पर होइत छनि जे सभ ठीक ढ़गसँ लिखए। ओ लेखनक माध्यमसँ अपन विचार आ भावनाक अभिव्यक्ति करैत अछि कि नहि , एहि बात केँ महत्वपूर्ण नहि मानल जाइत अछि- ,यथा अपरिपक्वावस्थहिमे उच्चरण अनुशासन लागू करबासँ बच्चाक सहज रूपसँ अपन बोलीमे बजबाक प्रेरणा दबि जाइत छैक तहिना यान्त्रिक रूपसँ ठीक तरीकासँ लिखबाक मांग अपन विचारक अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषित करबाक हेतु लेखनक प्रयोग केँ दबा दैत अछि। शिक्षक लोकनिकेँ एहि बातक लेल प्रशिक्षित करब आवश्यक अछि जे ओ लिखबाक क्रियाकेँ कलात्मक अभिव्यक्तिक कोटिमे राखथि आ एकरा कार्यालयी कौशल बूझब बन्द करथि। प्राथमिक वर्षमे लेखन क्षमताकेँ बाजब,सुनब आ बुझबाक शक्तिक संग जोड़ि कए समग्रतामे विकसित कएल जएबाक चाही। प्राथमिक आ उच्चतर शिक्षाक स्तर पर नोट लिखबाक ढंग विकसित करबाकेँ प्रशिक्षण जकाँ बुझल जएबाक चाही। एहि सँ ब्लैक बोर्ड , पाठ्यक्रम आ नोट्ससँ यान्त्रिक नकल पर काफी दूर तक रोक लागत। पत्र आ निबंध लेखनकेँ पूर्वक प्रारूपसँ मुक्त करबाक सेहो प्रयास आवश्यक अछि जाहिसँ कल्पनाशीलता आ मौलिकता शिक्षा मे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निमहि सकए।

3.2 गणित :

गणितक शिक्षाक मुख्य उद्देश्य बच्चाकेँ मात्र गणितेटाक ज्ञान देब नहि अपितु बच्चाक गणितीय क्षमताक सेहो विकास करब थिक । विद्यालयी गणितक सीमित उद्देश्य अछि। लाभप्रद क्षमताक विकास करब, विशेषतः संख्या-संख्या संक्रिया ,माप,दशमलव तथा प्रतिशत। एकर उच्च लक्ष्य थिक बच्चाक साधनकेँ विकसित करब जाहिसँ ओ गणितीय ढ़ंगसँ सोचि सकए तथा तर्क कए सकए,मान्यतासँ तार्किक परिणाम निकालि सकए आ अमूर्तकेँ सम्हारि सकए। ओकर अन्तर्गत समस्याकेँ सूत्रबद्ध करब तथा ओकर समाधान तकबाक क्षमताक विकास करब अबैत अछि।

एहि हेतु एहन पाठ्यक्रम होअए जे महत्वाकांक्षी हो,सुसंगत हो आ महत्वपूर्ण गणितक सिद्धान्त पढ़ाबए। एकरा महत्वाकांक्षी अर्थमे होएबाक चाही जाहिसँ ई ऊपरलिखित उच्च लक्ष्यक प्राप्तिक प्रयास करए मात्र सीमित लक्ष्येटाक प्राप्तिक नहि। एकरा सुसंगत होएबाक चाही जाहिसँ अंशमे उपलब्ध विभिन्न प्रणाली सभ तथा शिक्षा (अंक गणित, बीज गणित,रेखा गणित) एक एहन क्षमता मे परिवर्तित भए सकए जे उच्च विद्यालयमे पढ़ए बला विज्ञान आ सामाजिक अध्ययनक क्षेत्रक समस्या कैं सेहो संवोधित कए सकए। ई एहि अर्थ मे महत्वपूर्ण होएबाक चाही जे छात्र एहन सवाल कैं बनएबाक आवश्यकता बूझए आ शिक्षक तथा छात्र द्वारा एहन सवाल कैं बनएबामे अपन समय आ उर्जाक सहर्ष सदुपयोग करथि। गणितक पाठ्यक्रमक मुख्य दूटा विंदु अछि–गणित शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थीक दिमागकैं आकर्षित करबाक हेतु की कए सकैत अछि आ ई छात्रक संसाधनकैं कोना सुदृढ़ कए सकैत अछि।

गणित माध्यमिक विद्यालय धरि एक अनिवार्य विषय थिक, अतः स्तरीय गणित शिक्षाक अधिकार प्रत्येक बच्चा कैं छैक । ई शिक्षा सुखकर तथा सहज प्राप्त होएबाक चाही । विद्यालयी शिक्षाक भूमण्डलीकरणक संदर्भमे सर्व प्रथम प्रश्न उठैछ जे आठ वर्षक विद्यालयी शिक्षाक क्रममे बच्चाकैं केहन गणित पढ़ाओल जएबाक चाही जे ओकरा मात्र उच्च माध्यमिक शिक्षेटाक हेतु तैयार नहि करए अपितु जीवन भरि काज आबएं प्राथमिक विद्यालयमे सिखाओल जाएबला गणित अधिक लाभप्रद छैक। सम्प्रति पूर्व वर्णित उच्चतर लक्ष्यक प्राप्तिक हेतु पाठ्यक्रमक पुनः अभिमुखीकरणसँ बच्चा सभ एहि समयक नीक उपयोग कए सकत जे ओ विद्यालयमे व्यतीत करैत अछि। ओकर समस्याक समाधान तथा विश्लेषणक कुशलता बढ़त आ जीवनमे ओ विभिन्न तरहक समस्याक नीक जकाँ सामना कए सकत। संगहि गणितक बृहद रूप (जतए एक अध्याय पर अधिकार दोसरक हेतु आवश्यक अछि) पर, बृहद पाठ्यक्रम अपनाकए जाहिमे मौलिक विषयवस्तुक अधिकता होअए, कम जोर देल जा सकैछ। एहिसँ विभिन्न सिखनिहारक आवश्यकता बेसी नीक ढ़ंगसँ पूरा कएल जा सकैछ।

3.2.1 विद्यालयी गणितक दर्शन :

- O बच्चा गणितसँ डरएबाक बदलामे ओकर आनन्द उठाबए।
- O बच्चा महत्वपूर्ण गणित सीखए; गणितमे सूत्र तथा यान्त्रिक प्रक्रियासँ अतिरिक्तो बहुत किछु छैक ।
- O बच्चा गणितकैं एहन विषय बूझए जाहि पर ओ गप्प कए सकैत अछि, संवाद कए सकैत अछि, अपनामे विवाद कए सकैत अछि आ संग संग कार्य कए सकैत अछि।

- O बच्चा सार्थक प्रश्न आ ओकर समाधान करए।
- O बच्चा अमूर्त्तक प्रयोग सम्बंधकेँ बुझबामे, संरचनाकेँ देखबामे, वस्तुक विवेचन करबामे, कथनक सत्यता अथवा असत्यता के लए कए तर्क करबामे करए।
- O बच्चा गणितक मूल संरचना यथा : अंक गणित, बीज गणित,रेखागणित आ त्रिकोणमिति बुझए। विद्यालयी गणितक ई मूल तत्व सभ अमूर्त्तक प्रणाली संघटन आ सामान्यीकरणक हेतु पद्धति उपलब्ध करबैत अछि।

विद्यालयी गणित शिक्षाक किछु समस्या

1. बहुतो बच्चा गणितसँ डेराइत अछि। अतः ओ पहिनहि हारि मानि लैत अछि आ ध्यानसँ गणित पढ़ब छोड़ि दैत अछि।
2. पाठ्क्रम मात्र एहि भाग नहि लेमएबला बहुसंख्य केर हेतु हतोत्साहित करएबला नहि अछि बल्कि क्षमतावान न्यूनसंख्य केर हेतु सेहो किएक त' ई कोनो चुनौती प्रदान नहि करैत अछि।
3. समस्या, अभ्यास तथा मूल्यांकन पद्धति यान्त्रिक आ दोहरावग्रस्त अछि। एहिमे संगणना पर अत्यधिक जोर देल गेल अछि। एहिमे अवकाशिक(साहित्यक) चिंतन सन गणितीय क्षेत्रकेँ पर्याप्त स्थान नहि देल गेल अछि।
4. अध्यापकमे आत्मविश्वास, तैयारी आ सहायक सामग्रीक कमी अछि।

समस्याक समाधानक अनेक समान्य युक्ति विद्यालयक विभिन्न अवस्थामे सिखाओल जा सकैछ : अमूर्त्तता, परिमाण, सादृश्यता, थिति विश्लेषण तथा ओकर पुष्टिकरण- ई अनेक समस्याक समाधानक संदर्भमे उपयोगी अछि। जखन बच्चा ई विभिन्न प्रकारक युक्ति(समयक संग) सभ सीखि लैत अछि त' ओकर संसाधन समृद्ध भए जाइत छैक आ ओ ईहो सिखैत अछि जे कोन युक्ति सर्वश्रेष्ठ छैक। बच्चकेँ गणितक मूल भूत नियमक सेहो परिचयक आवश्यकता छैक एहि विश्वासक बदलामे जे गणित एकटा सटीक विज्ञान थिक। परिणाम आ समाधानक अनुमान सेहो एक अत्यंत महत्वपूर्ण दक्षता थिक। जखन एकटा गृहस्थ एक विशेष फसलक अनुमान लगबैत अछि त' ओ अनुमान लगएबाक,

सन्निकटनक, तथा अनुकूलतम अवस्थाक सुनिश्चयक कुशलतम प्रयोग करैत अछि। विद्यालयी गणित एहि तरहक गप्प सिखएबा आ ओकर परिष्कारमे महत्वपूर्ण भूमिका रखैत अछि।

प्रत्यक्षीकरण आ निरूपण जकॉ दक्षता विकसित करबामे गणित सहायक भए सकैत अछि,परिमाण, आकार आ रूपक प्रयोग कए कैं स्थितिक प्रतिरूपण करब गणितक किछु सर्वश्रेष्ठ उपयोग भए सकैत अछि। गणितीय अवधारणा ओहि तरीकासॅ निरूपित कएल जा सकैत अछि आ ओ निरूपण सभ विभिन्न संदर्भ मे विविध उद्देश्यक हेतु प्रयोग कएल जाए सकैत अछि- ई सभ गणितक सामर्थ थिक। उदाहरणार्थ एकटा कार्य बीज गणितीय ढ़ंगसॅ निरूपित कएल जाए सकैत अछि आ एकटा ग्राफक रूपमे सेहो। आब यदि पी/क्यू कैं एक पूर्ण इकाइक एक अंशक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि त' ओ दू अंक पी आ क्यू केर भागफल कैं सेहो इंगित कए सकैत अछि। भिन्न खण्डक विषयमे सीखब सेहो ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतेक कि भिन्न अंशक गणित के सीखब।

गणित तथा अन्य विषयक अध्ययनक बीच सम्बंध बनएबाक सेहो आवश्यकता अछि। जखन बच्चा सभ ग्राफ बनाएब सीखैत अछि त' ओकरा भूगोल सहित विभिन्न विज्ञानक कार्यात्मक संबंधक विषयमे सोचबाक हेतु सेहो प्रोत्साहित करबाक चाहिऐक। हमरा लोकनिकैं बच्चाकैं ई वस्तु बुझएबाक चाहिऐक जे गणित विज्ञानक अध्ययनक एकटा महत्वपूर्ण उपकरण थिक।

प्रत्यक्षीकरण प्रमाण

किऐक 3x5=5 x3?

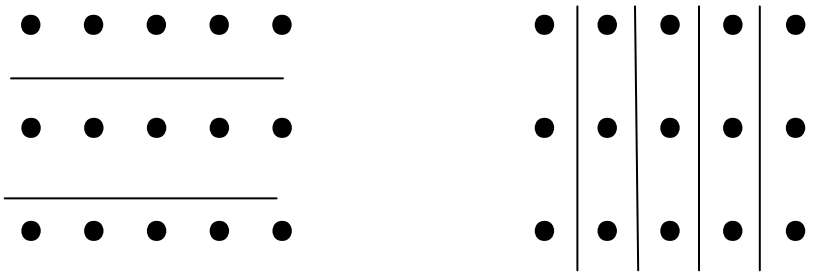

पॉचक तीनटा समूह

तीनक पॉचटा समूह

एहि गप्प पर अधिक जोर देल जएबाक आवश्यकता नहि जे गणित मे व्यवस्थित तार्किकताक महत्व अछि आ गणितज्ञकेँ सौष्ठव आ सौन्दर्य बोध सन अत्यंत प्रिय धारणासँ सेहो ई लगक संबंध रखैत अछि। प्रमाण महत्वपूर्ण अछि मुदा निगमनात्मक (निगमन आधारित) प्रमाणक संग बच्चाकेँ ईहो बुझबाक चाहिऐक जे चित्र आ संरचना कखन प्रमाण प्रदान करैत छैक। प्रमाण एकटा एहन प्रक्रिया थिक जे विरोधी पक्षकेँ आस्वस्त करबाक हेतु आवश्यक अछि; विद्यालयी गणित द्वारा तर्क - वितर्कक व्यवस्थित प्रणालीकेँ प्रोत्साहित कएल जएबाक चाही। तर्क विकसित करब ,ओकर मूल्यांकन करब, अनुमेयक निर्माण आ ओकर पड़ताल करबाक क्षमताक विशाल लक्ष्य होएबाक चाही तथा एकर तर्क करबाक तरीका सेहो विद्यमान अछि।

गणितीय संप्रेषण सटीक आ संचययुक्त भाषाक प्रयोगसँ युक्त गणितीय संप्रेषण आ संरचनामे कठिन अछि जे गणितीय व्यवहारक महत्वपूर्ण विशेषता अछि। गणितमे परिभाषिक शब्दावलीक प्रयोग सुनिश्चित, सचेत आ शैलीबद्ध होइत अछि। गणितज्ञ एहि पर विचार करैत छथि जे कोन कोन अंकन पद्धति उपयुक्त अछि किएक तँ ओ नीक अंकनक विचारक सहायकक रूपमे मानल जाइत अछि। जेना -जेना बच्चा पैघ होइत अछि, ओकरा एहि परिपाटीक महत्वकेँ बुझाओल आ प्रयोग करब सिखाओल जएबाक चाही। उदाहरणार्थ समीकरण बना कए रखबाकेँ सेहो ओतबे स्थान भेटबाक चाही जतबा ओकर हल करबाकेँ देल जाए।

एहि तरहेँ कतोक कुशलताक आ प्रक्रियाक चर्चा करैत हमरालोकनि प्रक्रिया आ बहुलताक गप्प करैत छी। ई सभ विद्यालयी गणितकेँ मात्र पढ़ाओल गेल 'अल्गोरिदम'मे प्रयोग करबाक व्यावहारिक तानाशाही सँ मुक्त करबाक हेतु आवश्यक अछि।

समस्याक प्रतिपादन :

- ❖ यदि अहाँ जनैत छी जे 235+367=602 त' 234+369 कतेक होएत? अहाँ उत्तर कोना तकलहुँ ?
- ❖ 5384 मे सँ कोनो एकटा अंक बदलि दिऔक । की संख्या बढ़ैत अछि अथवा घटैत अछि ? कतेक ?

3.2.2 पाठ्यक्रम :

पूर्व प्राथमिक स्तर पर सभ शिक्षा खेलक माध्यमे होइत अछि, उपदेशात्मक संप्रेषणक माध्यमे नहि। पहाड़ा रटबाक बदलामे बच्चा सभकेँ छोट -छोट सेट सभक माध्यमे शब्दक नाम तथा गनब आ गनब तथा परिमानक बीचक संबंधकेँ सिखबा आ बुझबाक चाहिऐक। एक समयमे एक आयाममे सरल तुलना आ वर्गीकरण करब तथा आकार आ सममितिकेँ चिन्हब एक एहन कुशलता थि जे एहि स्तर पर सिखाओल जएबाक चाही। एहि स्तर पर, ओकर आगॉ सेहो बच्चा सभकेँ पूर्व निर्धारित तरीका सॅ नहि अपितु अपन विचार आ भावना व्यक्त करबाक हेतु भाषाक व्यवहार करब सिखाएब आवश्यक अछि।

प्राथमिक स्तर पर बच्चामे गणितक हेतु सकारात्मक झुकाव आ रुचि विकसित करब सेहो ओतबे आवश्यक अछि जतबे ज्ञानात्मक कुशलता आ अवधारणाकेँ सिखब। गणितीय खेल, बुझौअलि आ खिस्सा सकारात्मक झुकाव उत्पन्न करबामे तथा गणित आ दैनिक जीवनक संबंधकेँ जोड़बामे मददगार भए सकैत अछि। ई ध्यान राखब आवश्यक जे गणित मात्र अंक गणित नहि थिक। संख्या तथा ओकर उपयोगक अतिरिक्त आकार, शैक्षिक ज्ञान,तरीका,माप आ अंकक ज्ञानकेँ सेहो महत्व देबाक चाही। पाठ्यक्रममे स्पष्टतः सिखएबलाक प्रगतिक क्रमिकताकेँ सामिल कएल जएबाक चाही जे अवधारणाकेँ बूझि कए मूर्त्तसॅ अमूर्त्त दिस लए जा सकैत अछि। गणनात्मक कुशलताक अतिरिक्त तरीकाकेँ बूझबा, अभिव्यक्त करबा आ बुझएबा पर अथवा आकलन आ सदृश्यताक समस्याक समाधान मे व्यवहार करब आ सम्बंध बूझब तथा संवाद आ तर्कक दृष्टिएँ अधिक कुशलताक विकास करबा पर जोर देल जाए।

उच्चतर प्राथमिक स्तर पर छात्रकेँ गणितक शक्तिक पहिल अनुभव होइत छैक जखन ओ ओहि शक्तिशाली अमूर्त अवधारणाक व्यवहार करैत अछि जे पछिला पढ़ाइ आ अनुभवकेँ जोड़ैत छैक। एहिसॅ ओकरा प्राथमिक स्तर पर सिखलगेल मौलिक अवधारणा आ कुशलता दिस पुनः ध्यान देबाक अवसर दैत छैक जे सार्वजनिक गणितीय साक्षरता पएबाक हेतु आवश्यक अछि। छात्र बीज गणितीय संकेत आ स्थान तथा व्यवस्थित अध्ययनमे आ मापक ओकर ज्ञानकेँ मजबूत करबामे एकर व्यवहारसॅ परिचित होइत अछि। संख्याक व्यवहार , जाहि पर आओर व्याख्याक माध्यमे कुल जमा संरचनाक व्यवहारक क्षमता बढ़ैत अछि, एक अनिवार्य जीवन-कुशलता थिक। एहि स्तर पर शिक्षा छात्रक स्थान संबंधी तर्क शक्ति प्रदृश्य कल्पना कौशलकेँ सेहो समृद्ध बनएबाक अवसर प्रदान करैत अछि।

माध्यमिक स्तर पर छात्र गणितक संरचनाकेँ एक अनुशासन जकॉ देखब प्रारम्भ करैत अछि ओ गणितीय संवादक मुख्य विशिष्टतासॅ परिचित होइत अछि। सावधानी पूर्वक परिभाषित नाम आ अवधारणा ओकरा बुझएबाक हेतु संकेतक व्यवहार ठीक –ठीक अभिव्यक्त कएल गेल पूर्व सर्ग आ ओकरा सिद्ध करबाले प्रमाण- ई विंदु खास कए रेखागणितक क्षेत्रमे स्पष्ट होइत अछि। छात्र बीज गणितमे अपन कुशलता बढ़बैत अछि जे मात्र गणितेटाक प्रयोगक हेतु महत्वपूर्ण नहि अछि अपितु गणितक भीतर प्रमाण आ औचित्य पएबाक हेतु सेहो एहि स्तर पर छात्र सिखलहा कतेक अवधारणा आ कुशलता कैं सोझरएबाक योग्यतामे प्रयोग करैत छथि। गणितीय मॉडलिंग, संख्याक विश्लेषण आ आकलन जे एही अवस्थामे पढ़ाओल जाइत अछि उच्चस्तरीय गणितीय साक्षरतामे बदलि सकैत अछि। संबंध आ तर्जक एकल आ सामूहिक खेल, दृश्य रचना आ सामान्यीकरण, समुच्चय बनाएब आ सिद्ध करब- एहि स्तर पर महत्वपूर्ण आ उचित क्रिया उपकरण सभ, यथा ठोस अनुकृति जे गणितीय प्रयोगशाला आ कम्प्यूटरक द्वारा प्राप्त कएल जाइत अछि,केर द्वारा प्रोत्साहित कएल जा सकैत अछि।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर गणितक पाठ्यक्रम छात्रकेँ गणितक उपयोगक विस्तृत फलक आ ओकर उपयोगक मौलिक औजार उपलब्ध करबैत अछिं। एतए गहराइ आ विस्तारक अवसर पर विरोधी मांगक बीच सावधानीसॅ चुनाव करब आवश्यक अछिं । एक अनुशासन जकॉ गणितक द्रुत गतिएँ विस्तार आ ओकर उपयोगक पसरैत फलक अधिक व्यापकताक मांग करैत अछि। एहन विस्तार हेतु विषयकेँ ओकर गणितीय महत्वसॅ ऑकल जएबाक चाही। जे विषय दोसर अनुशासनक विशेष स्वाभाविक भाग थिक ओकरा गणितक पाठ्यक्रमसॅ बाहर राखल जाए। विषयक निरूपणक एक विषेश उद्देश्य होएबाक चाही जे अछि, गणितीय अन्तर्दृष्टि आ अवधारणाकेँ विकसित करब जाहिसॅ विद्यार्थीक जिज्ञासा बढए।

3.2.3 कम्प्यूटर विज्ञान :

कम्प्यूटर आ कम्प्यूटिंग टेक्नॉलॉजीक आधुनिक समाजकेँ गढ़बामे जवर्दस्त प्रभाव अछि, ताहिसॅ एहि तरहक शिक्षित लोकक आवश्यकता भए गेलैक अछि जे समाज आ मनुष्य जातिक उन्नति हेतु एहन प्रौद्योगिकीक प्रभावशाली उपयोग कए सकए। तैं

एहि बातकेँ बुझल जा रहल अछि जे ज्ञानक क्षेत्रकेँ विद्यालयी पाठ्यक्रममे स्थान भेटबाक चाही।

सूचना प्रौद्योगिकी (आइ. टी.) पाठ्यक्रम, जाहिमे सूचना आ कम्प्यूटर युगक औजारक उपयोग सामिल अछि आ कम्प्यूटर साइन्स पाठ्यक्रम जाहिमे ई औजार रचल आ गढ़ल जाइत अछि, एहि दूनूक बीच फर्क करब आवश्यक अछि। एहि दूनूक विद्यालयी शिक्षामे स्थान अछि।

यद्यपि कतोक देश कम्प्यूटर विज्ञान अथवा आइ. टी. पाठ्यक्रम अपन विद्यालयमे लागू कएलक अछि, मुदा हमरालोकनिकेँ ओहि चुनौतीकेँ ध्यान राखए पड़त जे भारतीय विद्यालयक छात्रक समक्ष छैक। पहिल चुनौती कम्प्यूटर विज्ञानक हेतु तकनीकी संसाधनक कमी केर अछि। कम्प्यूटिंग संसाधनक अभावमे कम्प्यूटर साइन्स पढ़एबाक गप्प करबे निरर्थक थिक। प्रत्येक विद्यार्थीक हेतु कम्प्यूटर आ ओकर कनेक्टिीविटी उपलग्ध कराएब एक पैघ तकनीकी आ आर्थिक चुनौती थिक। मुदा कम्प्यूटर प्राद्यौगिकीक बढ़ैत प्रभावकेँ देखैत हमरालोकनिकेँ एहि संरचनात्मक चुनौतीकेँ गम्भीरता सँ लेबाक होएत आ हार्डवेयर सोफ्टवेयर, सॉफ्टवेयर आ कनेक्टिविटीक तकनीकी विषयमे व्यावहारिक आ कल्पनाशील विकल्प ताकए पड़त जे भारतीय शहरी आ ग्रामीण विद्यालयक हेतु उपयोगी होअए।

हमरालोकनिकेँ कम्प्यूटर विज्ञान आ सूचना प्राद्यौगिकीमे एक व्यापक आ सुव्यवथित पाठ्यक्रमकेँ विकसित करबाक मुद्दाकेँ सेहो हल करए पड़त जे शिक्षासँ जुड़ल लोक, प्रशासन आ आम जनताक बीच संवादक आधार बनि सकए। किछु मौलिक तत्व सी. एस. तथा आइ. टी. पाठ्यक्रममे एक अछि आ ओ भारतीय विद्यालयमे सेहो लागू भए सकैत अछि। एहिमे सामिल अछि दोहरबए बला प्रक्रिया सभ आ अल्गोरिद्म। गणनासँ सामान्य समस्याक समाधान करएबला राजनीति, कम्प्यूटरक उपयोगक सम्भावना, आजुक विश्वमे कम्प्यूटरक स्थान आ ओहिसँ उठएबला सामाजिक मुद्दा सभ।

3.3 विज्ञान :

प्रक्रितिक अद्भुत एवं विस्मयकारी बिन्दुपर मानवक प्रक्रिया प्राचीन कालहिसँ रहल अछि-भौतिक आ जैविक वातावरणकेँ सावधानीपूर्वक देखब , कोनो सार्थक आकृति आ सम्बन्धकेँ ताकब , प्रकृतिसँ सम्बन्ध स्थापित करबाक हेतु नब यन्त्रक प्रयोग करब आ विश्वकेँ बुझबाक हेतु अवधारणात्मक अनुकृतिकेँ बनाएब । यैह मानव व्यवहार आधुनिक विज्ञानक मार्ग प्रशस्त कएलक अछि।

स्थूल रूपेँ कहल जाए त' वैज्ञानिक तरीका अनेक अंतरसंबंधित डेग केँ समाहित करैत अछि : अवलोकन, नियमितता आ तरीकाक खोज, कल्पना निर्माण, गुणात्मक तथा गणितीय अनुकृतिक परिकल्पना, परिणामक अनुमान, अवलोकन तथा नियन्त्रित प्रयोग द्वारा सिद्धान्तक सत्यापन तथा जॉच आ एहि तरहेँ सिद्धान्त पर पहुँचब तथा प्रकृति संसारकेँ नियमसँ नियंन्त्रित करब। विज्ञानक नियम कखनहुँ निश्चित शाश्वत सत्यक रूपमे नहि देखल जाइत अछि। एतेक धरि जे अत्यंत स्थापित विश्व सत्यकेँ सेहो औपबंधित, नव अवलोकन, प्रयोग आ विश्लेषणक परिप्रेक्ष्यमे रूपान्तरित होमएबला कहल जाइत अछि।

विज्ञान एकटा गतिशील आ निरंतर बढ़ैत ज्ञानक भंडार थिक जे सतत अनुभवक नव क्षेत्रकेँ सामिल करेत अछि। एकटा विकासशील आ आगू बढ़ैत समाजमे विज्ञान लोक सभकेँ गरीबी, अज्ञानता आ अंधविश्वास सन चक्रसँ मुक्त होएबामे मदति कए सकैछ। विज्ञान आ प्रौद्योगिकीक विकास, कार्य करबाक परंपरागत क्षेत्र सभकेँ बदलबामे आ नव क्षेत्रक उदयमे मदति कएलक अदि। लोक सभ एखन तेजीसँ बदलैत विश्वक सामना कए रहल अछि, जतए लचीलापन, प्रयोग आ रचनात्मकता सभसँ महत्वपूर्ण कला अछि। एहि सभ महत्वपूर्ण घटक केँ विज्ञान शिक्षाक प्रारूप तैयार करबाक समयमे ध्यान देबाक आवश्यकता छैक।

नीक विज्ञान शिक्षा बच्चा, जीवन तथा अपना प्रति ईमानदार होइत अछि। ई सरल निष्कर्ष विज्ञान पाठ्यक्रमक निम्नलिखित वैध मानक दिस ईशारा करैत अछि–

1. ज्ञानात्मक वैधताक हेतु आवश्यक अछि जे पाठ्यक्रमक विषय वस्तु, प्रक्रिया, भाषा तथा शैक्षिक अभ्यास आयुक अनुसार होअए जे बच्चाक मानसिक पहुँचक भीतर रहए।

2. विषय वस्तुक ज्ञानात्मक वैधताक हेतु आवश्यक अछि जे ई वच्चा धरि महत्वपूर्ण आ ठीक ठीक महत्वपूर्ण जानकारी पहुँचाबए। बच्चाकेँ ज्ञानात्मक स्तर धरि पहुँचबा लए ओहन आसान नहि बनाओल जाए जे मूल जानकारी गलत भए जाए अथवा निरर्थक।

3. प्रक्रियाक वैधताक अंतर्गत आवश्यक अछि जे पाठ्यक्रम छात्रकेँ ओहि प्रणाली तथा प्रक्रियाकेँ अर्जित करबामे व्यस्त राखए जे ओकरा वैज्ञानिक जानकारीक वैधीकरण तथा सृजन करबा दिस अग्रसर करए तथा विज्ञानमे बच्चाक स्वाभाविक उत्सुकता तथा सृजनशीलता पुष्ट भए सकए।

4. ऐतिहासिक वैधतामे आवश्यकता अछि जे विज्ञानक पाठ्यक्रम एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक संग जानकारी देअए जाहि सँ छात्र बूझि सकए जे समयक संग-संग विज्ञानक अवधारणा कोना विकसित भेल। ई छात्रकेँ ई बुझबामे सेहो मदति करैत छैक जे विज्ञानक विकास केँ सामाजिक कारक कोना प्रभावित करैत अछि।

5. पर्यावरण संबंधी वैधताक हेतु आवश्यक अछि जे विज्ञान केँ छात्रक स्थानीय तथा वैश्विक दूनू वृहद पर्यावरणक संदर्भमे राखल जाए जाहिसँ ओ विज्ञान तकनीक तथा समाजसँ सम्वादक क्रममे मुद्दाकेँ बुझि सकए आ कार्य क्षेत्र मे प्रवेशक हेतु आवश्यक ज्ञान आ कुशलता दए सकए।

6. नैतिक वैधताक हेतु आवश्यक अछि जे पाठ्यक्रम ईमानदारी, वस्तुपरकता, सहयोग, भय तथा पूर्वाग्रहसँ स्वतंत्रता जकाँ मूल्यकेँ प्रोत्साहित करए तथा विद्यार्थीमे पर्यावरण संरक्षणक प्रति चेतनाकेँ विकसित करए।

3.3.1 विभिन्न अवस्थामे पाठ्यक्रम :

उपरलिखित मानदण्डक हिसाबसँ पाठ्यक्रमक विभिन्न अवस्थामे उद्देश्य, विषयवस्तु, शैक्षिक प्रणाली तथा मूल्यांकन निम्नलिखित ढंगसँ होएबाक चाही :

प्राथमिक अवस्थामे बच्चाक क्षमता अपन चारूकातक संसारक नव-नव वस्तुक खोजमे आनन्द उठएबाक तथा ओकरा संग सामंजस्य बैसएबामे होएबाक चाही। एहन स्थितिमे उद्देश्य होएबाक चाही बच्चामे चारू भागक संसारक प्रति उत्सुकता जगायब (प्राकृतिक पर्यावरण, वस्तु आ लोकक प्रति) । बच्चा सूक्ष्म अवलोकन, वर्गीकरण तथा हस्तक्षेप इत्यादिसँ मूल ज्ञानात्मक कुशलता प्राप्त कए सकए संगहि योजना तथा निर्माण, अनुमान अथवा माप पर जोर देअए जाहिसँ बादक अवस्थामे ओ ओहि तकनीकी आ परिमाणक कुशलता प्राप्त कए सकए आ मूल भाषिक दक्षता प्राप्त कए सकए : बाजब, पढ़ब आ लिखब, विज्ञज्ञनक हेतु नहि अपितु विज्ञानक माध्यमे सेहो। विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञानकेँ 'पर्यावरण अध्ययन'मे समाहित करबाक चाही जाहिमे स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण अंग होअए। प्राथमिक अवस्थामे नियमित रूपसँ कोनो परीक्षा नहि होएबाक चाही आने अंक अथवा श्रेणी भेटबाक चाही आने ककरो फेल करबाक चाही।

उच्च प्राथमिक अवस्थामे बच्चक प्रमुख कार्य होएबाक चाही परिचित अनुभव द्वारा विज्ञानक सिद्धान्त सिखबाक हाथसँ सरल तकनीकी इकाई अथवा प्रतिरूप बनाए (जेना भार उठएबाक हेतु पवन चक्कीक कारगर प्रतिरूप बनाएब) आ पर्यावरण तथा स्वास्थ्यक विषयमे जाहिमे प्रजनन एवं लैंगिक स्वास्थ्य सेहो सामिल अछि, आओर अधिक ज्ञान प्राप्त करब। वैज्ञानिक अवधारणाकेँ मुख्यतः क्रिया कलाप तथा प्रयोगक माध्यमसँ बुझबाक चाही। सामूहिक कार्य कलाप , मित्र तथा अध्यापकक संग विमर्श, संख्याक नियोजन तथा विद्यालय आ लगपासक क्षेत्रमे प्रदर्शनीक द्वारा एकर प्रदर्शन शिक्षण प्रणालीक महत्वपूर्ण अंग होएबाक चाही। निरंतर तथा नियमित जॉच परीक्षा (यूनिट टेस्ट तथा सत्रान्तक परीक्षा) होएबाक चाही तथा 'प्रत्यक्ष' ग्रेड्सक व्यवस्थाक पालन होएबाक चाही, फेल नहि करबाक चाही। प्रत्येक बच्चा जे विद्यालयमे आठ वर्ष धरि व्यतीत करैत अछि तकरा नवम वर्ग मे प्रवेश होएबाक चाही।

माध्यमिक अवस्थामे बच्चाकेँ विज्ञान तथा एकटा संयुक्त अनुशासनक रूपमे सिखबाक चाही, अपन हाथ तथा उपकरणसँ अपेक्षाकृत अधिक विकसित तकनीकी प्रतिरूप बनएबाक चाही आ पर्यावरण तथा स्वास्थ्य , प्रजनन एवं लैंगिक स्वास्थ्य सहित, संबंधी मुद्दाक विश्लेषण करबाक चाही। एहि अवस्थामे सैद्धान्तिक नियम केँ तकबाले अथवा ओकर पुष्टिक हेतु व्यवस्थित प्रयोगकेँ एक उपकरण रूपमे प्रयोग करब तथा स्थानीय रूपसँ महत्वपूर्ण कार्यक जाहिमे क्विज आ प्राद्यौगिकी शक्ति हो,हेतु वैज्ञानिक तथा तकनीकी साक्षरता (एस. टी. एल.)क कार्य प्रणाली सँ कार्य करब पाठ्यक्रमक अहं भाग होएबाक चाही।

उच्चतर माध्यमिक अवस्थामे विज्ञान केँ एक पृथक अनुशासनक रूपमे अनबाक चाहिऐक जाहिमे प्रयोग/तकनीक समस्याक समाधान करबाक समस्या पर बल देल गेल अछि। वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे चालू दूनू धारा - अकादमिक तथा व्यावसायिक, जकर पालन एन. पी. ई. 1980क तहत कएल जा रहल अछि, केर पुनरावलोकनक आवश्यकता भए सकैत अछि।छात्रकेँ अपन अभिरुचिक विकल्पक चयन करबाक छूट होएबाक चाहिऐक यद्यपि प्रत्येक विद्यालयमे सभ विभिन्न विषय होएब संभव नहि भए सकैत अछि। पाठ्यक्रमक बोझकेँ माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिकक बीच पैघ दरारकेँ भरबाक हेतु तर्क संगत होएबाक चाही। एहि स्तर पर संकाय सभक मूल मुद्दाकेँ सेहो ध्यानमे राखल जाए आ एहि

क्षेत्र मे भेल नव गतिविधिकेँ उचित जोरक संग पढ़ाओल जाए। संकायक बेसीरास भागकेँ उपरी रूपसँ पढ़एबाक कोशिशकेँ हतोत्साहित करबाक चाही।

प्रश्न पूछब

''हवा सभ ठाम अछि'' ई प्रत्येक विद्यालयी बच्चा सिखैत अछि। सम्भवतः छात्र ईहो बुझैत अछि जे पृथ्वीक वमिविरणमे कतोक गैस अछि अथवा ई जे चन्द्रमा पर हवा नहि अछि।हम प्रसन्न भए सकैत छी ले ओ थोड़ेक विज्ञान त' जनैत अछि,मुदा एहि वार्तालाप पर ध्यान दिय' जे चारिम वर्गमे शिक्षक आ छात्रक बीच भेलैक।

शिक्षिका : की एहि ग्लासमे हवा छैक?

छात्र(सम्मिलित रूपेँ) : हँ।

ओ शिक्षिका एहि सामान्य कथनसँ संतुष्ट नहि छलि ''हवा सभ ठाम अछि'',विद्यार्थीसँ एहि विचारकेँ एक सामान्य स्थिति पर लागू करबाले कहलनि आ अचानक ओ अनुभव कएलनि जे ओ किछु वैकल्पिक अवधरणा तैयार कएलनि अछि।

शिक्षिका : आब हम ग्लास केँ उल्टा कए रखैत छी। की आबहु एहिमे हवा अछि ?

किछु ''हँ'' किछु ''नहि'' आ किछु निरुत्तर भेल।

छात्र-1 हवा ग्लासक बाहर आबि गेल।

छात्र-2 ग्लासमे हवा छलैके नहि। दोसर वर्गमे एक शिक्षिका जरैत मोमबत्तीक उपर एक खाली ग्लास रखलनि आ किछुए कालमे मोमबत्ती मिझाए गेल।

छात्र सभ एकटा एहन क्रिया कएने छल जे हुनका स्मृतिमे दू वर्ष बादो स्पष्ट छल मुदा किछु त' एकर गलत निष्कर्ष निकालि लेने छल।

किछु बतओलाक बाद शिक्षिका पुनः छात्र सभसँ पुछलनि- की एहि बन्द आलमारीमे हवा छैक? की माटि मे हवा छैक? पानिमे? हमरालोकनिक शरीरक भीतर? हमरा सभक हड्डीक अन्दर? प्रत्येक सवाल नव विचार अनलक आ ओहिसँ भ्रान्ति दूर भेल।

3.3.2 दृष्टिकोण :

यदि भारतमे विज्ञानक शिक्षाक जटिल परिदृश्यकेँ देखल जाए त' तीनटा मुद्दा स्पष्टतः दृष्टिगोचर होइत अछि : पहिल- विज्ञानक शिक्षा जे आइयो समदृष्टिक ओहि

उद्देश्यक प्राप्तिसँ बहुत दूर अछि, जे हमर संविधानमे निहित अछि। दोसर–भारतमे विज्ञानक सर्वश्रेष्ठ शिक्षा सेहो योग्यता त' विकसित करैत अछि मुदा रचनात्मकता आ आविष्कारशीलताकेँ प्रेरित नहि करैत अछि। तेसर– परीक्षाक बोझिल व्यवस्था सेहो भारतमे विज्ञान शिक्षाक बेसीरास मूलभूत समस्याक आधार थिक।

विज्ञान पाठ्यक्रमकेँ सामाजिक परिवर्तन अनबाक उपकरणक रूपमे प्रयोग करबाक चाही जाहिसँ अर्थ,वर्ग,जाति,धर्म तथा क्षेत्र आधारित मतभिन्नता घटि सकए। हमरा लोकनिकेँ पाठ्यपुस्तककेँ समानताक भाव अनबाक माध्यमक रूपमेँ प्रयोग करबाक होयत कारण जे अधिकॉश विद्यालयी छात्र तथा शिक्षकक हेतु सेहो यैह शिक्षाक एकमात्र सुलभ साधन थिक जे आर्थिक रूपसँ सेहो हुनकालोकनिक पहुँचमे अछि। हमरालोकनिकेँ देशमे वैकल्पिक पाठ्यपुस्तक लेखनकेँ प्रोत्साहित करबाक चाही जे राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा द्वारा देखाओल गेल वृहद मार्ग दर्शनक भीतर होअए। एहि पाठ्यपुस्तक सभमे क्रिया , सूक्ष्म अवलोकन प्रयोग आदि केँ सेहो सामिल कएल जएबाक चाही आ विज्ञानक प्रति एक सक्रिय रुखिकेँ बढ़ावा देल जएबाक चाही जे बच्चाकेँ ओकर आसपासक संसारसँ जोरि सकए, मात्र जानकारी आधारित पढ़ाइ नहि होअए। एकर अतिरिक्त कार्य पुस्तिका, पाठ्यक्रमसँ संबंधित किताब सभ आ बच्चाक इनसाइक्लोपीडिया ओहि सूचना तथा विचार तक बच्चाक पहुँचकेँ विस्तृत कए देत जकरा एकटा बोझ जकाँ पाठ्यपुस्तकक हिस्सा बनएबाक आवश्यकता नहि होअए। क्षेत्रीय भाषा सभमे नीक चित्र सभक संग एहन सामग्रीक बहुत कमी अछि।

ग्रामीण क्षेत्रमे विज्ञानके नुक्कड़क विकास, वैज्ञानिक किट तथा प्रयोगशाला उपलब्ध कराएब सेहो विज्ञानक पढ़ाइक हेतु एकरंग सुविधा देबाक एक महत्वपूर्ण बाट थिक। सूचना आ संप्रेषण तकनीक(आई.सी.टी.) सामाजिक दरारकेँ भरबाक हेतु प्रमुख औजार थिक। आई.सी.टी. केर एहि प्रकारेँ प्रयोग होएबाक चाही जे ई सूचना संप्रेषण तथा संसाधनकेँ दूर दराजक क्षेत्र धरि पहुँचके अवसर सेहो सभठाम एकरंग उपलब्ध कराबए। यदि आई. सी.टी. केर प्रयोग अध्यापक तथा बच्चा सभकेँ विश्वविद्यालय तथा शोध–संस्थानसँ सम्पर्क साधनमे कएल जाए तऽ एतए कार्य कएनिहार वैज्ञानिक तथा हुनक कार्यसँ रहस्यक पर्दा उठएबामे मदति भेटत।

भारतमे वर्तमान विज्ञान शिक्षाक स्थितिमे कोनो तरहक गुणात्मक परिवर्तनक हेतु एक निदर्शनात्मक परिवर्तनक आवश्यकता अछि। रटबकेँ हतोत्साहित करबाक चाहिऐक। भाषा, डिजाइन आ परिमाणात्मक दक्षताक द्वारा तकबाक प्रवृतिकेँ सुदृढ़ करबाक चाही।

छात्र कोन जीव- विज्ञान जनैत छथि?

‘‘ ई छात्र विज्ञान नहि बुझैत अछि, ई वंचित पृष्ठभूमिसँ अछि।’’

बेसीकाल ग्रामीण आ आदिवासी पृष्ठभूमिसँ आएल बच्चा सभक विषयमे हम एहि प्रकारक विचार सुनैत छी। तैयो देखल जाए जे ई बच्चा सभ अपन दैनिक अनुभवसँ की की जनैत अछि।

जनाबाइ सहयाद्री पर्वत शृंखलामे स्थित एकटा छोट सन गाममे रहैत अछि। ओ अपन माए बापकेँ धान आ राहरिक खेतीमे मदति करैत अछि। कखनहु काल ओ अपन भाइक संग बकरी चरबए लेल सेहो जाइत अछि। ओ अपन छोट बहीनक पालन पोषणमे सेहो मदति कएलक अछि। आइ काल्हि ओ सभ दिन आठ किलोमीटर पएरे चलि कए लगक माध्यमिक विद्यालयमे जाइत अछि।

ओकरा अपन प्राकृतिक वातावरणसँ घनिष्ठ संबंध छैक। ओ कएक तरहक गाछ सभक भोजन, दबाइ,इंधन आ रङबाक पदार्थक रूपमे प्रयोग कएलक अछि। ओ तरह तरहक गाछक विभिन्न अंगक अवलोकन कएलक अछि जे घरमे धार्मिक अनुष्ठान आ पावनि मनएबाक कालमे प्रयोग कएल जाइत अछि। ओ गाछक सूक्ष्मतम अंतरकेँ जनैत अछि आ आकार, पत्ती, फूल,सुगंध आ बनावटक आधार पर मौसमी बदलावकेँ बूझि लैत अछि। ओ अपन लग पासक लगभग सभ गाछकेँ चीन्हि सकैत अछि जे ओकर जीव विज्ञानक अध्यापकक जानकारी सँ काफी बेसी छैक- वैह अध्यापक जे ई मानैत छथि जे जनाबाइ एकटा कमजोर विद्यार्थी अछि। की हम जनाबाइक मदति कए सकैत छिऐक जाहिसँ ओ अपन बुद्धिकेँ जीव विज्ञानक औपचारिक ज्ञानमे बदलि सकए ? की हम ओकरा भरोस दिया सकैत छिऐक जे विद्यालयक जीव विज्ञान कोनो अमूर्त विश्वक विषयमे जानकारी नहि थिक जे कठिन भाषा आ मोटगर पोथी सभमे निहित अछि बल्कि ई ओही खेतक विषयमे छैक जाहिमे ओ काज करैत अछि, ओही जानवरक विषयमे छैक जकरा ओ जनैत अछि आ जकर देख रेख करैत अछि आ ओही जंगलक विषयमे छैक जाहिसँ ओ प्रत्येक दिन जाइत अछि ? मात्र तखनहि ओ वास्तवमे विज्ञानकेँ बुझि पाओत।

विद्यालय सभक द्वारा सह -पाठ्यक्रमिक आ पाठ्यक्रमेत्तर तत्व सभ पर आविष्कारशीलता आ रचनात्मकताक माध्यमसँ बेसी जोर देल जएबाक चाही, भलहि ई तत्व सभ बाहरी परीक्षा व्यवस्थाक अंग नहि हो। वर्तमानमे कराओल जाइत बाल विज्ञान कॉग्रेस जकाँ एहि तरहक क्रिया कलाप सभक तेजीसँ विस्तार होएबाक चाही। पैघ स्तरक विज्ञान प्राद्यौगिकी मेला राष्ट्रीय स्तर पर होएबाक चाही, (कसबा/जिला/राज्यक स्तर पर छोट मेलाक संग) जाहिसँ ओ बच्चा आ शिक्षक गणकेँ एहि आन्दोलनमे सामिल होएबाक हेतु प्रोत्साहित करए। एहन आन्दोलन भारतक सभ कोन सँ होइत दक्षिण एशिया धरि पसारबाक चाही जाहिसँ युवा आ शिक्षक लोकनिक बीच रचनात्मकता आ वैज्ञानिक प्रवृतिक लहरिक संचार भए सकए।

परीक्षा प्रणालीमे सुधार, आथिक सहायता, उच्चस्तरीय मानव संसाधन आ शिक्षक, शिक्षाविद तथा वैज्ञानिक सभकेँ एक प्लेटफार्म पर अनबासँ छात्रक मूल्यांकनक नव तराका बहराएत जे परीक्षासँ संबंधित तनावक स्तरकेँ घटाओत, प्रवेश परीक्षाक बहुलताकेँ नियंत्रित करत आ औपचारिक योग्यताकेँ जँचबाक बदलामे बहु आयामी सक्षमता सभक जाँच करबाक तरीका सभ पर शोध करत।

सम्प्रति एहि सुधारक हेतु मूल रूपसँ शिक्षकक सशक्तिकरणक सुधारक आवश्यकता छैक। कोनो सुधार भलहि ओ कतबो सुनियोजित आ उत्साहयुक्त किऐक ने हो, तखन धरि सफल नहि भए सकैत अछि यावत धरि अध्यापक ओकरा व्यवहारमे अनबाक हेतु सामर्थ्यक अनुभव नहि करथि। अध्यापकक सक्रिय भागीदारीसँ उपर लिखाओल गेल सुधार सभक विद्यालयमे प्रत्येक स्तरक विज्ञान शिक्षण पर क्रमशः प्रभाव परि सकैत अछि।

3.4 सामाजिक विज्ञान :

सामाजिक विज्ञानक अन्तर्गत समाजक विविध रूप अबैत अछि, अतः एकर अन्तर्वस्तु बहुत विविध छैक जाहिमे इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र आ मानव शास्त्र अबैत अछि। शान्तिपूर्ण आ न्यायपूर्ण समाजक निर्माणक हेतु सामाजिक विज्ञानक अवधारणा आ ज्ञान अत्याज्य अछि। विषय वस्तुक उद्देश्य होएबाक चाही परिचित सामाजिक वास्तविकताक खोज आ ओहि पर प्रश्नक माध्यम सँ छात्रक जानकारीकेँ बढ़ाएब । नव आयाम आ चिन्ता सभकेँ सम्मिलित करबाक सम्भावना खास कए छात्रक अपन जीवनक अनुभवक आधार पर सोचल जाए सकैत अछि। तेँ सामग्रीक चुनाव

आ एकटा अर्थपूर्ण पाठ्यक्रमक रूपमे ओकर संघटन जाहिसँ ओ छात्रकेँ चेतनाकेँ बढ़ाबए, वास्तवमे कठिन अछि।

किऐक तँ सामाजिक विज्ञानकेँ निरर्थक विषय मानल जाइत अछि आ प्राकृतिक विज्ञानसँ कम महत्व देल जाइत अछि तेँ एहि पर जोर देब आवश्यक अछि, जे ओ छात्रकेँ सामाजिक, सांस्कृतिक आ विश्लेषणात्मक क्षमता जे आइ काल्हिक बढ़ैत परस्पर -निर्भर विश्वमे आवश्यक अछि, प्रदान करए जाहिसँ ओ राजनीतिक आ आर्थिक वास्तविकताक सामना कए सकए।

ई मानल जाइत अछि जे सामाजिक विज्ञान मात्र सूचनाकेँ प्रेषित करैत अछि आ पाठ आधारित होइत अछि । तेँ विषय वस्तुकेँ आवश्यकता छैक परीक्षाक हेतु जानकारी जमा करबाक बदलामे बुद्धिपूर्वक बुझबा पर जोर देबाक । बिनु बोझक शिक्षा (1993) केर अनुशंसाक स्मरण करैत, सूझ विकसित करबा आ सामाजिक राजनीतिक अन्वेषण करबा पर जोर देल जएबाक आवश्यकता छैक, बिनु बुझने रटबाक बदलामे ।

एकटा धारणा ईहो अछि जे सामाजिक विज्ञानक विशेषज्ञ छात्र सभक हेतु जीविकोपार्जनक बेसी अवसर नहि अछि। एकर ठीक विपरीत तेजीसँ बढ़ैत सेवा क्षेत्र आ अन्वेषण आ रचनात्मकताक क्षेत्रमे सामाजिक विज्ञान नौकरीक हेतु प्रासंगिक भए रहल अछि।

हमर सभक सन विभिन्नता सँ भरल समाजमे ई आवश्यक अछि जे सभ क्षेत्र आ सामाजिक वर्ग केँ पाठ्यपुस्तकसँ जोरल जाए। प्रासंगिक स्थानीय विषय वस्तुकेँ शिक्षण-ग्रहण प्रक्रियाक अंग होएबाक चाही जे स्थानीय संसाधनक सहयोग सँ कएल जाएबला क्रिया कलाप माध्यमसँ हो।

ईहो बूझब आवश्यक अछि जे प्राकृतिक आ भौतिक विज्ञान जकाँ सामाजिक विज्ञानमे सेहो वैज्ञानिक प्रश्न पूछल जाए सकैत अछि आ कोनो तरहेँ सामाजिक विज्ञान द्वारा प्रयुक्त तरीका भिन्न अछि (मुदा कोनो तरहेँ प्राकृतिक आ भौतिक विज्ञान सँ निम्न नहि।)

सामाजिक विज्ञानक नियमतः दायित्व अछि स्वतंत्रता, विश्वास, पारस्परिक आदर आ विविधताक हेतु सम्मान सनक मानव मूल्यकेँ बढ़एबाक। सामाजिक विज्ञान शिक्षाक उद्देश्य छात्रमे नैतिक आ मानसिक उर्जाक संचार आ ओहि सामाजिक शक्ति सँ जे एहि मूल्य पर खतरा उत्पन्न करैत अछि, सँ सावधान करब होएबाक चाही।

ओ अनुशासन सभ जे सामाजिक विज्ञानक निर्माण करैत अछि, यथा-इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान आ अर्थ शास्त्र केर अलग - अलग तरीका छैक जे ओकर बीचक

सीमाकेँ रखबाकेँ उचित बतबैत अछि। संगहि सभ अनुशासन पर लागू होमएबला तरीका जे सम्भव अछि, इंगित कएल जएबाक चाही। किछु विषय वस्तु जे अन्तर अनुशासनिक सोचकेँ प्रोत्साहन दैत अछि केर क्षमता प्रदान करएबला पाठ्यक्रमक हेतु सामिल कएल जएबाक चाही।

3.4.1 प्रस्तावित ज्ञान शास्त्रीय रूपरेखा :

लोकप्रिय अवधारणा आ सामाजिक विज्ञानक शिक्षाक हेतु महत्वपूर्ण विंदु सभ पर ध्यान देबाक उपरान्त सामाजिक अध्ययनक शिक्षाक हेतु बनाओल गेल राष्ट्रीय फोकस ग्रुप प्रस्तावित करैत अछि जे निम्नांकित विंदु केँ पुनरीकृत पाठ्यक्रमक मूल बुझल जाए । (पाठ्यपुस्तककेँ अग्रिम जानकारी प्राप्त करबाक साधन बुझल जाए आ छात्रकेँ पाठ्य पुस्तकसँ आगू पढ़बाक आ ध्यान देबाक हेतु प्रेरित कएल जाए)

जेना कोठारी आयोग द्वारा इंगित कएल गेल, सामाजिक विज्ञानक पाठ्यक्रम एखन तक विकासक मुद्दा पर जोर दैत छलए। ई मुद्दा सभ महत्वपूर्ण अछि मुदा वैधानिक आयाम जेना- बराबरी, न्याय आ समाज तथा क्षेत्रमे सम्मान, केर बुझबाक हेतु पर्याप्त नहि अछि। एहि 'विकास' मे व्यक्ति विशेषक योगदान पर आवश्यकतासँ अधिक जोर देल गेल अछि। भारतीय राष्ट्रीयताक विविध रूपसँ अनुमान लगएबाक हेतु एकटा साहित्यिक अंतरणक विचार देल जाइत अछि। राष्ट्रीय दृष्टि केँ क्षेत्रीयताक संग संतुलित करबाक आवश्यकता छैक। संगहि भारतीय इतिहासकेँ अलगसँ नहि पढ़ाकए विश्व इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे पढ़ाओल जएबाक चाही।

ई विचार देल जाइत अछि जे नागरिक शास्त्रक बदलामे राजनीति विज्ञान शब्दक प्रयोग कएल जाए। नागरिक शास्त्र भारतीय विद्यालयी पाठ्यक्रममे उपनिवेश कालमे 'राज'क प्रति बढ़ैत द्रोहक परिमार्जकक रूपमे आएल । आज्ञाकारिता आ राजभक्ति पर विशेष जोर एकर मूल तत्व छलैक। राजनीति विज्ञान सभ्य समाजकेँ एहन स्थान बुझैत अछि जे संवेदनशील, प्रश्नात्मक, विचारक आ परिवर्तनशील नागरिक उत्पन्न करैत अछि।

लिंग भेदक विषयमे जानकारीकेँ महिला सभक परिप्रेक्ष्यमे कोनो ऐतिहासिक आ समकालीन विमर्शक महत्वपूर्ण भाग होएबाक चाही। एहि हेतु पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहसँ हटबाक आवश्यकता अछि जे एखनुका सामाजिक विज्ञानमे पाओल जाइत अछि।

किशोर वयमे होमएबला विकास सँ सम्बंधित स्वास्थ्य चिंता आ सामाजिक पक्ष जेना माय बाप, मित्र मण्डली, विपरीत लिंग आ वयस्क संसारसँ बदलैत व्यवहार पर उचित ध्यान देब आवश्यक अछि । बच्चाक आ किशोर वय / युवाक स्वास्थ्य आवश्यकता पर रणनीति आ कार्यक्रमक माध्यम सँ ध्यान देब एहि चिंता सभसँ जुड़ल पक्ष थिक।

मानवाधिकारक अवधारणा वैश्विक परिप्रेक्ष्यमे अछि। ई आवश्यक अछि जे बच्चा वैश्विक मूल्यसँ अपन आयुक अनुसार उचित पूर्वक परिचित होअए। दैनिक समस्या सभ, जेना पानि प्राप्त करबाक समस्या, केर चर्चा कएल जा सकैत अछि जाहिसँ युवा छात्र सभ मानव सम्मान आ अधिकारसँ संबंधित मुद्दा सभसँ परिचित भए सकए।

3.4.2 पाठ्यक्रमक नियोजन :

प्राथमिक अवस्थाक हेतु, प्राकृतिक आ सामाजिक वातावरण कें भाषा आ गणितक एकटा अनिवार्य अंगक रूपमे व्याख्या कएल जाएत। बच्चा सभकें एहन क्रिया कलाप सभमे व्यस्त राखब आवश्यक अछि जाहिमे प्रयुक्त भौतिक, जैविक, सामाजिक आ सांस्कृतिक क्षेत्र सभक दृष्टान्तसँ ओकर वातावरणसँ सम्वंधित ज्ञान बढ़ए। प्रयुक्त भाषा कें लैंगिक संवेदनशीलतासँ युक्त होएबाक चाही। शिक्षाक तरीका भागीदारी बढ़एबा आ विवाद करबाले प्रेरित करएबला होएबाक चाही।

वर्ग तीनसँ पाँच धरि, पर्यावरण अध्ययन (ई.भी.एस.) केर विषयक रूपमे शुरू कएल जाएत। प्राकृतिक वातावरणक शिक्षामे जोर ओकर संरक्षण आ बचएबाक आवश्यकता पर होएत। दात्रकें सामाजिक मुद्दा सीा जेना - गरीवी, बाल-श्रम, अशिक्षा, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रमे जाति आ वर्गक समानता पर संवेदनशील होएबाक शिक्षा प्रदान करब शुरू कएल जाएत। विषय वस्तुकें बच्चा सभक दैनिक अनुभवकें आ ओकर वास्तविक जीवनकें प्रतिविम्बित करबाक चाही।

उच्च प्राथमिक अवस्थामे सामाजिक विज्ञानक विषय वस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र आ अर्थ शास्त्र सँ निर्मित होएत। इतिहासमे भारतक विभिन्न भागक विकासकें, विश्वक अन्य भागमे होमएबला घटना अथवा विकास पर खण्डक संग, राखल जएबाक चाही। भूगोल, वातावरण, संसाधन आ विकासक क्षेत्रीयसँ वैश्विक धरिक मुद्दा पर संतुलित दृष्टिक निर्माणमे सहयोग कए सकैत अछि। राजनीति विज्ञान मे छात्रकें स्थानीय, राज्य आ केन्द्रक स्तर पर सरकारक गठन आ क्रिया कलापक आ एहिमे प्रजातान्त्रिक

पानि आ वातावरण

पानि कतएसँ अबैत अछि? समुद्र, महासागर आ नदी कोना बनैत अछि? हमरा सभक पानिक स्थयी स्रोत की अछि? इनार कोना खुनल जा रहल अछि? की पैघ बान्ह छोट बान्हक अपेक्षा बेसी लाभदायक अछि? रेगिस्तानी क्षेत्रमे लोक जलकेँ कोना प्राप्त करैत अछि? सुखार होएबाक कारण?	पानिक प्राकृतिक स्रोत, समुद्र,धरतीक नीचाक पानि,नदी,झील। जल संसाधन मानचित्रीकरण स्थानीय/ क्षेत्रीय/राष्ट्रीय मनुष्यक द्वारा बनाओल गेल आ प्राकृतिक जल स्रोतक बीच संबंधता भौम जलस्तर, हैण्डपम्प द्वारा सिचाइ, पैघ बान्हक वातावरण पर होमएबला असरेक बूझब। विभिन्न क्षेत्रमे जल, रेगिस्तानी क्षेत्र मे जलक स्रोत, पहाड़ी क्षेत्रमे जलक स्रोत सुखार आ बाढ़ि
जलक सामाजिक परिप्रेक्ष्य	
ग्रामीण इनारकेँ के नियंत्रित करैत अछि? जल के अनैत अछि ? की हमरा सभक लगमे पर्याप्त मात्रामे जल अछि? स्वच्छ जल किएक आवश्यक अछि?	जाति आ श्रेणी जलस्रोत पर स्वच्छता आ प्रदूषण नियंत्रण , श्रमक लैंगिक विभाजन आ जलक उपलब्धता पीबाक आ सिचाइक जलक हेतु स्थानीय आ क्षेत्रीय संघर्ष बाजारक शक्ति जकाँ जल स्वास्थ्य शरीरक जलक आवश्यकता स्वच्छ जल पर अधिकार जल सँ उत्पन्न बीमारी सभ

भागीदारीक विषयमे बताओल जाएत। अर्थशास्त्र छात्रकेँ आर्थिक संस्था सभ जेना परिवार, बाजार आ राज्यक संबंधमे दृष्टिक विकासमे सहयोग करत। एहि विषय सभ पर बहु अनुशासनिक तरीकाकेँ देखबैत एकटा खण्ड सेहो होएत।

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञानक विषय वस्तुमे इतिहास, भूगोल,समाज शास्त्र,राजनीति विज्ञान आ अर्थ शास्त्र रहत। मुख्य ध्यान समकालीन भारत पर रहत जाहिसँ अधिगम कर्त्ता मे राष्ट्रक सामाजिक आ आर्थिक चुनौतीक गमभीर ज्ञानक शुरुआत भए सकत। ज्ञान शास्त्रक प्रस्तावित बदलावक परिप्रेक्ष्यमे बहुतो बातकेँ जेना आदिवासी, दलित आ पछुआएल जनसंख्या केर अनेक दृष्टिमे राखल जाएत।

विषयवस्तुकेँ छात्रक प्रति दिनक जीवनसँ जोड़बाक यथा संभव प्रयास कएल जाए। इतिहासमे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन आ एकर समकालीन इतिहासक दोसर पक्ष सभक संग विश्वक अन्य भागक महत्वपूर्ण घटना क्रमकेँ पढ़ल जाए सकैत अछि। इतिहास शिक्षाक उद्देश्य होएबाक चाहीछात्रकेँ ओकर अपन संसार आ पहचान जे समृद्ध आ विविध अतीत सँ आएल अछि, सँ परिचित कराएब। इतिहासकेँ आब ओकर विश्वमे होमएवला परिवर्तन आ अनवरतता तथा शक्ति आ नियंत्रणक पूर्व आ वर्तमान प्रयोगक तुलना करबामे मदति करबाक चाहिऐक। भूगोल शिक्षाक उद्देश्य छात्रमे विकासात्मक मुद्दाक संग पर्यावरण संवंधी चिन्ता आ संरक्षणक हेतु समालोचनात्मक दृष्टि उत्पन्न करब होएबाक चाही। राजनीति विज्ञानमे, मूल ध्यान भारतीय संविधानक संरचनामे निहित दार्शनिक मूल तत्वक विवेचना पर होएबाक चाही, अर्थात् समानता, स्वतंत्रता, न्याय, अनुवंशिकता, धर्म निरपेक्षता, आत्म सम्मान, बहुलता आ शोषणसँ मुक्ति सन मुद्दा पर गम्भीर विमर्श होएबाक चाही। चूकि एहि अवस्थामे अर्थशास्त्रकेँ बच्चाक समरूा प्रस्तुत कएल जाइत अछि तेँ ई आवश्यक अछि जे विषय वस्तुकेँ जन साधारणक दृष्टिसँ निष्पादित कएल जाए।

उच्चतर माध्यमिक स्तर एहि हेतु महत्वपूर्ण अछि किएक तऽ ई छात्रकेँ विभिन्न विषय क्षेत्रक चयनक अवसर दैत अछि। किछु छात्रक हेतु ई अवस्था ओकर औपचारिक शिक्षाक अंत भए सकैत अछि जे ओकरा कार्य आ रोजगारक संसारमे लए जाए सकैत अछि, अन्यक हेतु ई उच्च शिक्षाक आधार प्रदान करैत अछि। ओ चाहे तऽ विशिष्ट शैक्षणिक पाठ्यक्रम अथवा रोजगार परक व्यावसायिक पाठ्यक्रम चुनि सकैत अछि। एहि अवस्थामे कएल गेल शुरुआत मूल ज्ञान आ आवश्यक कलासँ ओकरा युक्त करबामे सक्षम होएबाक चाही जाहिसँ ओ कोनो चुनल गेल क्षेत्रमे अर्थपूर्ण योगदान कए

सकए। सामाजिक विज्ञान आ वाणिज्यमे विभिन्न प्रकारक पाठ्यक्रमक अवसर प्रदान कएल जाए सकैत अछि आ छात्र अपन रुचिक उपयोग कए ओकर चयन कए सकैत अछि। विषय आ कोर्सकेँ विभिन्न धारामे देब आवश्यक नहि अछि आ छात्रकेँ अपन आवश्यकता, रुचि आ इच्छाक अनुसार कोनो विषय अथवा कोर्स चुनबाक अधिकार होएबाक चाही। सामाजिक विज्ञानमे विभिन्न अनुशासन जेना-राजनीति विज्ञान, भूगोल,इतिहास, समाज शास्त्र,अर्थशास्त्र आ मनोविज्ञान होएत। वाणिज्यक अन्तर्गत व्यापार अध्ययन आ लेखा भए सकैत अछि।

3.4.3 शिक्षण शास्त्र आ संसाधनक उपागम :

सामाजिक विज्ञानक शिक्षणकेँ परस्पर विचार संबंधी वातावरणमे सिखएबलाकेँ ज्ञान आ कौशल ग्रहण करएमे मदति करबाक हेतु पुनर्जीवित करब आवश्यक अछि। सामाजिक विज्ञान शिक्षण मे एहन विधिक उपयोग कएल जएबाक चाही जे रचनात्मक, सौन्दर्य बोध आ आलोचनात्मक ज्ञान तऽ बढ़एबे करए संगहि बच्चाकेँ अतीत आ वर्तमानक बीच संबंध बनएबा आ समाजेमे होमएबला परिवर्तनकेँ बुझबामे सक्षम करए । समस्या समाधान, नाटकीयकरण, भूमिका निर्वाह किछु एहन विधा अछि जे उपयोगमे आनल जाए सकैत अछि। शिक्षणमे श्रव्य-दृश्य सामग्री-फोटोग्राफ,चार्ट,नक्शा आ पुरातत्ववादी आ मौलिक सांस्कृतिक प्राकृतिक सनक संसाधनक उपयोग कएन जएबाक चाही। अधिगम क्रियाकेँ सहभागी बनएबाक हेतु आवश्यक अछि ओहि बदलावक जाहिमे मात्र सूचना देबाक थान पर वाद विवाद आ वार्ता कएल जाए, सिखबाक ई उपागम शिक्षक आ शिक्षार्थीकेँ सामाजिक वास्तविकताक प्रति सजग करत। व्यक्ति आ समुदाय सभक जीवनक अनुभवक सहायतासँ विद्यार्थीक अवधारणा स्पष्ट कएल जाए सकैत अछि। बेसी काल ई देखल गेल अछि जे सामाजिक सांस्कृतिक अंतर अपनामे पक्षपात, पूर्वाग्रह आ व्यवहार, कक्षागत संदर्भमे उत्पन्न करैत अछि। एहि हेतु शिक्षणक उपागममे खुलापन होएबाक चाही। शिक्षककेँ कक्षामे सामाजिक वास्तविकताक विभिन्न आयामक विषयमे गप्प करबाक चाही आ अपना तथा विद्यार्थीमे स्व जागरुकता बढ़एबाक हेतु कार्य करबाक चाही।

3.5 कला शिक्षा :

कएक दशक सँ शिक्षा व्यवस्थामे कलाक महत्वक चर्चा चलैत रहल अछि आ बेरि बेरि एकर अनुशंसा कएल जाइत रहल अछि, मुदा एहि दिशामे किदु खास प्रगति नहि

भेल अछि। यदि अपन विशेष सांस्कृतिक विलक्षणताकेँ ओकर सामासिकता आ सभ विलक्षणता सहितबचाएकेँ रखबाक अछि तऽ विद्यालयी शिक्षामे कलाक शिक्षा तत्काल शुरू कएल जएबाक आवश्यकता अछि। कला अध्ययनक शिक्षाक दिशामे प्रोत्साहित कएल जएबाक बदलामे हमर सभक शिक्षा व्यवस्थामे युवा कला साधक सभसँ कलाक विषयमे गप्पो नहि कएल जाइत अछि अथवा ओकरा उपयोगी सख अथवा मनोरंजक गति विधि कहि मान्यता देल जाइत अछि। कला मात्र विद्यालयमे स्थापना दिवस, वार्षिक दिवस, गणतन्त्र दिवस अथवा विद्यालय निरीक्षकक कार्यकंमक अवसर पर प्रदर्शित कएल जाएवला वस्तु बनि कए रहि गेल अछि। एकर अतिरिक्त कलासँ छात्रकेँ विद्यालयमे दूरे राखल जाइत अछि। आ ओकरा सभकेँ ओहि विषय सभ दिस ठेलल जाइत छैक जकरा पढ़ब परीक्षाक दृष्टिसँ बेसी उपयोगी होइत छैक। कलाक सामान्य ज्ञान क्रमशः मात्र छात्रकेँ नहि अपितु अभिभावक, शिक्षक आ एतेक धरि जे शिक्षा प्रशासकोमे ह्रास भए रहल अछि।

शिक्षामे रंगमंच

रंगमंच एक गोट शक्तिशाली मुदा शिक्षामे सभसँ कम उपयोगमे आनल गेल कलाक रूप थिक। अनकासँ सम्मंधमे स्वक खोज, स्वक ज्ञानक विकास आ आलोचनात्मक सहानुभूति मात्र मनुष्येटाक प्रति नहि अपितु प्राकृतिक, भौतिक आ सामाजिक विश्वक प्रति रंगमंच सेहो, सर्वश्रेष्ठ माध्यम थिक।

पाठक नाटकीयकरण करब रंगमंचक एकटा लघु भाग थिक। एहिसँ बेसी सार्थक अनुभव, भूमिका निर्वाह, रंगमंच अभ्यास, शरीर आ स्वरक गति आ नियंत्रण सामूहिक आ सहज प्रदर्शनक द्वारा सम्भव भए सकैत अछि। ई अनुभव शिक्षकक हुनकर स्वयमक विकासक हेतु तऽ महत्वपूर्ण अछिए संगहि बच्चाक देबाक हेतु सेहो ओतबे महत्वपूर्ण अछि।

विद्यालय आ विद्यालय प्रशासन एकटा उपरी आ लोकप्रिय स्वरूपक कलाकेँ प्रश्रय दैत अछि आ गर्वसँ ओकर प्रदर्शन करैत अछि जे मनोरंजक नृत्य कार्यक्रम संगीतसँ परिपूर्ण होइछ मुदा ओहिमे सौन्दर्यात्मकता एकदम नहि होइत छैक। हमरा सभकेँ कलाक

महत्वसँ बेसीकाल धरि दूर नहि रहबाक चाही आ बच्चामे कला सम्बन्धी जागरुकता आ रुचिक प्रसारक प्रोत्साहन करबाक चाही। भारतमे कला धर्मनिरपेक्षता आ सांस्कृतिक विविधताक जीवन्त उदाहरण अछि, ओहिमे अनेक लोक आ शास्त्रीय गायन नृत्य, संगीत, मूर्ति बनबएबला आ माटिक काज करएबला देशक सभ क्षेत्रसँ अबैत अछि। ओहिमे कोनो कलाक अध्ययन हमर सभक युवा छात्रक ज्ञानक मात्र वृद्धिए नहि करत बल्कि विद्यालयक बाहर सेहो जीवन भरि ओकर काज आओत। कला दृश्य आ प्रदर्शन कें पाठ्यक्रममे शिक्षक महत्वपूर्ण अंग बनाओल जएबाक आवश्यकता अछि। बच्चा एहिमे शिक्षा आ दक्षता प्राप्त कए सकैत अछि, मुदा मात्र मनोरंजनेक हेतु एकरा बुझए नहि। कलाक पाठक द्वारा बच्चाकें भारतक विविध आ समृद्व सांस्कृतिक परम्पराक ज्ञान भए पओतैक। कला शिक्षा आवश्यक रूप सँ एकटा उपकरण आ विषयक रूपमे शिक्षाक अंग(कक्षा 10 धरि) होअए आ सभ विद्यालयमे एहिसँ सम्बन्धित सुविधा होअए। कलाक अन्तर्गत संगीत, नृत्य, दृश्य कला आ नाटक–चारूकें सामिल कएल जएबाक चाही। कलाक महत्व सम्बंधमे अभिभावक आ विद्यालय प्रशासन कें अवगत कराओल जाएबाक आवश्यकता छैक। जोर सिखबा पर नहि आ एहिमे दृष्टि सहभागिता पर आधरित होअए।

विद्यालयमे साल भरि, सभ स्तर पर, कलाक माध्यम आ रूपक विषयमे छात्र सभकें खेल खेलमे अथवा विषय बद्ध रूपमे बताओल जा सकैत अछि। संगीत, नृत्य आ नाटक स्व केर विकास मे सहायक होइत अछि। ज्ञान आ अन्यक ज्ञान आदि छात्र कलाक माध्यम सँ आसानीसँ बुझि सकैत अछि। कलाक स्वभाव एहन होइत छैक जे विकलांग बच्चा सेहो बिना कोनो भेद भावकें ओहिमे सामिल भय सकैत अछि। कला आ धरोहर शिल्पकें शिक्षासँ जोरबाक साधन सभ विद्यालयमे होएबाक चाही। एहि हेतु ई महत्वपूर्ण अछि जे पाठ्यक्रममे कलासँ सम्बंधित गतिविधिक हेतु पर्याप्त समय होएबाक चाही। नाटक ,नृत्य आ मूर्तिकलासँ संबंधित कक्षा सभक हेतु डेढ़ डेढ़ घंटाक समय होएबाक चाही। जोर एहि पर नहि होअए जे वयस्कक कला सिखी अथवा पूर्ण कलाक विकास हो अपितु कला शिक्षाक माध्यम सँ बच्चाकें अपनहिसँ विकसित होएबाक अवसर देल जाए, ओहि पर बेसी जोर नहि देल जाए। किछु वर्ष मे शिक्षाक सहायतासँ छात्र स्वतंत्र रूपसँ कला संबंधी प्रोजेक्ट प्रस्तुत कए पाओत जाहिमे ओकर अपन कल्पनाशीलता आ शिक्षाक रंग होएत।

शीत ऋतुक एक भोरमे शिक्षिका बच्चा सभकेँ प्रातःकालीन दृश्य बनएबाक हेतु कहलथिन। एकटा बच्चा अपन चित्रकेँ पूरा कएलक आ सूर्यकेँ लगभग नुकबैत पार्श्वकेँ गहींर कए देलकैक। हम तोरा प्रातःकालीन दृश्य बनएबाले कहने छलियौक, सूर्यकेँ देखएबाक चाही– शिक्षिका चिचियाए उठलीह, ई ध्यान नहि देलथिन जे बच्चाक आँखि खिड़कीसँ बाहर देखि रहल छैक; आइ एखनहुँ तक अन्हार छलैक, सूर्य गहींर कारी मेघक पाछाँ नुकाएल छलाह।

माध्यमिक आ उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयमे कलाक पाठ्यक्रममे छात्रकेँ अपन रुचिक कोनो कलामे विशेषज्ञता प्रप्त काए देल जाए। कलाक ज्ञान सिखैत आ ओकर अभ्यास करैत विद्यार्थी एहि आयु तक कलाक संबंधमे सैद्धान्तिक ज्ञान सेहो प्राप्त कए सकैत अछि जे ओकर ज्ञानक एहि क्षेत्रक विस्तार करत। लोकप्रिय कला चर्चा आ विभिन्न प्रकारक कला परम्परा सभक चर्चा सँ ओकरा सभकेँ पृथक् पृथक् रुचि आ परम्परा सभक जानकारी सेहो भेटि सकतैक । ताहि हेतु ई महत्वपूर्ण अछि जे पाठ्यक्रममे उच्च अथवा निम्न कलाक उल्लेख नहि होअए आ ओहिमे शास्त्रीय आ लोक कला भेद नहि होअए। ई ओकरो तैयार करए जे बारहमीक हेतु कलाक विशेष पत्र पढ़ए चाहैत अछि अथवा आगू कलामे अपन पढ़ाई करए चाहैत अछि।

कला शिक्षा पर शिक्षक सभकेँ बेसी आधार सामग्री देल जाए । शिक्षक आ शिक्षा ओरिएन्टेशनकेँ एकटा महत्वपूर्ण अवयव बनाओल जएबाक चाही जाहिसँ ओ दक्षतासँ आ रचनात्मक ढंगसँ कलाक शिक्षण कए सकथि संगहि बेसी बाल भवन केर, जे शहरमे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वहन कएने छल कैं जिला स्तर पर स्थापित कएल जएबाक चाही आ सभ ब्लौक स्तर पर सेहो। एहि सँ कला आ शिल्प संबंधी कार्य कलापक शिक्षक भए सकत आ बच्चा सभकेँ एकर अवसर भेटत जे ओ एहिमेसँ कोनो कलाकेँ थोड़ेक सीखि सकए।

पारम्परिक हस्तशिल्प परंपरा

हस्तशिल्प एकटा उत्पादक प्रक्रिया थिक, एकटा अद्भुत भारतीय तरीका जे अनाधुनिकता सँ दूर अछि। एहिमे उपयोग मे आनल जाए सकए बला सामग्री भारतमे उपलब्ध अछि आ पर्यावरण हितैषी अछि। एतए जीवन्त हस्तशिल्पक कौशल, तकनीकी, नमूना आ उत्पाद सभक समृद्ध संसाधन आदि जे कला आ कार्य दहू पाठ्यक्रम क्षेत्रक हेतु समृद्ध जरूरी संसाधन बनत आ बनि सकैत अछि। हाथसँ काज करब, सामग्रीक संग तकनीकसँ सहायता करैत अछि, प्रक्रियाकेँ बुझबामे, संसाधन संपन्न होएबाक शुरुआत करबामे आ समस्याक समाधन करबामे। ई अनुभव सभ बच्चाक हेतु मूल्यवान होइत अछि आ कोनो आन अनुभवक पर्याय नहि भए सकैत अछि। ई क्षेत्र इन्क्लूशिभ शिक्षाक हेतु सेहो महत्वपूर्ण अछि। हस्तशिल्प दूनू तरहेँ सृजनात्मक आ सौन्दर्यपरक क्रियाक रूपमे आ कार्य जेकाँ पढ़ाओल जएबाक चाही। एकरा इतिहासक अध्यापन, सामाजिक विज्ञान आ पर्यावरणक अध्ययन, भूगोल आ अर्थशास्त्रमे जोड़ल जाए सकैत अछि। लिंग पर्यावरण आ समुदाय पर एक दृष्टिकोणक विकास कराओल जएबाक चाही।

- हस्तशिल्प पाठ्यक्रममे कलाक भागक रूपमे सृजनात्मक आ सौन्दर्यपरक पक्ष पर जोर दैत जोड़ल जाए सकैत अछि।
- हस्तशिल्पकार स्वयंमे हस्तशिल्पक शिक्षक तथा प्रशिक्षक होएबाक चाही आ ओकर विद्यालयमे अंशकालिक सेवा देबाक हेतु समर्थ करबाक तरीका ताकब आवश्यक अछि।
- हस्तशिल्प एकटा जीवन्त, अनुमानित अभ्यासक रूपमे पढ़ाओल जएबाक चाही। प्रोजेक्टक रूपमे पढ़ाओल जएबाक चाही नेकि कक्षागत अभ्यासक रूपमे।
- विभिन्न पाठ्यक्रम सामग्री सभक योजना विभिन्न हस्तशिल्पक लेल बनाओल जएबाक चाही संसाधन जेना नमूना पुस्तक, स्रोत पुस्तक, उपकरण निर्देशिका, नमूना आ हस्तशिल्प नक्शाक आवश्यकता अछि।
- उपयुक्त सामग्री आ उपकरण सभसँ युक्त हस्तशिल्प प्रयोगशाला विकसित करबाक आवश्यकता अछि।
- हस्तशिल्प मेलाक आयोजन कएल जाए सकैत अछि-बच्चा सभकेँ हस्तशिल्पकार आ हस्तशिल्प परंपरा सभ तथा बच्चाकेँ स्वयं अपन सृजनात्मक जानकारी देबाक हेतु।

3.6 स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा :

ई पूर्णतया मानल बात अछि जे स्वास्थ्य शक्तिसँ प्रभावित जैविक, आथिक, सांस्कृतिक आ राजनैतिक होइत अछि। मूलभूत आवश्यकता जेना भोजन, साफ पीबाक पानि, घर, सफाइ आ स्वास्थ्य सेवा जनताक स्वास्थ्यकेँ प्रभावित करैत अछि आ ई मृत्युदर आ पोषक तत्वक उपलब्धतासँ प्रभावित होइत अछि। स्वास्थ्य बच्चाक समस्त विकासक सूवक होइत अछि ई महत्वपूर्ण ढंगसँ नामांकन,विद्यालयमे उपथ्स्थति आ विद्यालयी शिक्षा पूरा करबाकेँ महत्वपूर्ण रूपेँ प्रभावित करैत अछि। एहि संबंधमे पाठ्यक्रममे स्वास्थ्यकेँ लएकेँ एकटा सम्पूर्ण दृष्टिकोण अपनाओल जाए सकैत अछि । जाहिमे योग आ शारीरिक शिक्षा बच्चाक शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक आ मानसिक विकासमे अपन योगदान कए सकैत अछि ।

कुपोषण आ संचारी रोगक सामना एहि देशक बेसी रास बच्चा सभकेँ करए पड़ैत छैक। पूर्व प्राथमिक शिक्षासँ लए कए उच्च माध्यमिक शिक्षा तक। तेँ हेतु विद्यालयमे सभ स्तर पर एहि समस्याक समाधान करबाक आवश्यकता अछि। विशेषतः कमलोर वर्गक बच्चा आ बालिका सभक संबंधमे ई प्रस्तावित कएल गेल अछि जे ‘‘मिड डे मिल ’’ आ स्वास्थ्य जाँचकेँ पाठ्य अवयव बनाओल जेबाक चाही आ स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा सेहो देल जाए जे विकासक अलग अलग चरण मे स्वास्थ्य संबंधी समस्याक विषयमे बताओत । 1940क दशकमे विस्तृत स्वास्थ्य कार्यक्रम विद्यालय सभक लेल रूपरेखा बनाओल छलैक जकर छओ प्रमुख अवयव छलैक स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छ विद्यालय, पर्यावरण, दुपहरियाक भोजन, स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षा। ई वच्चाक सम्पूर्ण विकासक हेतु आवश्यक अछि आ एकरा पाठ्यक्रममे सामिल कएल जएबाक आवश्यकता अछि। पाठ्यक्रममे योग नव विषय थिक। विस्तृत स्वास्थ्य आ शारीरिक पाठ्यक्रमक हेतु समूहक रूपमे लेल जएबाक चाही आजुक जकाँ टुकड़ा-टुकड़ाक बदलामे । पाठ्यक्रमक मुख्य अवयवक रूपमे खेल आ योगक हेतु जे समय निर्धारित अछि ओकरा कोनहु परिस्थितिमे ने कम कएल जाए ने समाप्त कएल जाए।

एहि आवश्यकताक अनुभव कएल जाए रहल अछि जे किशोर वयक स्वास्थ्य आवश्यकता, खास कए और प्रजनन आ लैंगिक स्वाास्थ्य पर ध्यान देल जएबाक आवश्यकता छैक। चूकि ई आवश्यकता सभ लिंग आ लैंगिकता सँ जे

सामाजिक रूपसँ अत्यंत संवेदनशील अछि, जुड़ल अछि तेँ ओ सभ सही जानकारी प्राप्त करबाक अवसरसँ वंचित रहैत अछि। अतः प्रजनन आ लैंगिक स्वस्थ्यक विषयमे ओकर ज्ञान आ व्यवहार सामान्य धारणा आ गलत अवधारणा सभसँ संचालित होइत अछि जाहि सँ ओकर खतरनाक स्थिति यथा- दबाइ। दुष्प्रयोग आ एच. आइ. वी./ एड्स केर चपेट मे अएबाक संभावना रहैत छैक। आयुक अनुरूप आ पाठक आलोकमे किशोर वयक प्रजनन आ लैंगिक स्वास्थ्य चिंता जाहिमे एच. आइ.वी./एड्स आ दबाई । दुष्प्रयोग सामिल अछि केर समाधान, आवश्यक अछि जाहिसँ वच्चाकेँ ज्ञान आ जीवन कलाक ज्ञज्ञन अर्जित करबामे मदति भेटैक जाहिसँ ओ पैघ होयबाक संग होमएवला सामना करबामे सक्षम भए सकए।

3.6.1 रणनीति :

स्वास्थ्यक बहुआयामी स्वभावक कारणेँ पाठ्यक्रममे शिक्षाक अनेक अवसर अछि। राष्ट्रीय सेवा योजना, भारत स्कॉउट एवं गाइड आ एन. एस. सी.क गतिविधि एहने किछु क्षेत्र थिक। विज्ञान एकर अवसर प्रदान करैत अछि जे शरीर, स्वास्थ्य, रोग जीवित अवयव आ भौजिक वातावरणक विषयमे जानल जाए सकए। समाज विज्ञानसँ समुदायिक स्वास्थ्य आ संक्रमक बीमारिक पसरब आ ओकर निदानक वैश्विक सामाजिक-आथिक दृष्टिक विषयमे पता चलैत अछि। एहि संबंधमे व्यवहारिक शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण पाठ्यक्रममे अपनाओल जाए सकैत अछि।

सम्पूर्ण विकास संबंधी आवश्यकताक संबंधमे एहि विषयक महत्व नीतिएक स्तर पर प्रशासनिक भागीदारी, विद्यालयक आन शिक्षक स्वास्थ्य विभाग, अभिभावक आ बच्चाक सहयोगसँ पुनर्स्थाति कएल जाए सकैत अछि। एहि विषयकेँ मूल होएबाक कारणे स्वास्थ्यक आ शारीरिक शिक्षाकेँ प्राथमिक सँ माध्यमिक स्तर धरि अनिवार्य विषयक रूपमे आ उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर वैकल्पिक विषयक रूपमे होएबाक चाही। मुदा आवश्यकता छैक एकरा आन विषयक बराबर महत्व भेटबाक जे वर्तमानमे नहि देलजाए रहल छैक। पाठ्यक्रमक प्रभावी रूपसँ प्रसारक हेतु आवश्यक अछि जे सभ विद्यालयमे न्यूनतम आवश्यक जगह आ सामग्री होअए, संगहि चिकित्सक आ चिकित्सा अधिकारी नियमित रूपसँ विद्यालयक दौरा करथि। एहि क्षेत्रक हेतु शिक्षकक तैयारीक हेतु आवश्यक अछि योजनाबद्ध आ लगातार प्रयास। ई

विषय क्षेत्र जाहिमे स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक शिक्षा आ योग शामिल अछि केर उचित रूपेँ प्राथमिक आ माध्यमिक सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रममे सम्मिलित कएल जाए। वर्तमान शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण केन्द्र सभक क्षमताक आकलन आ उचित उपयोग कएल जएबाक चाही। तहिना ओकर उपयुक्त पाठ्यक्रम आ विद्यालयमे योगक प्रसारक हेतु शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमकेँ पुनरावलोकन आ पुनर्निर्धारणक आवश्यकता छैक। ई सुनिश्चित करब सेहो आवश्यक अछि जे ई चिन्तन राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट एवं गाइड योजना आ राष्ट्रीय कैडेट कोरक कार्य कलापमे सेहो शामिल अछि। आवश्यकता आधारित दृष्टिकोण, शारीरिक,सामाजिक आ विविध स्तरक 'मानसिक' तैयारीकेँ ध्यानमे राखि कए विद्यालयक विभिन्न स्तर पर सामिल कएल जाए। एहि चिन्तनक एकटा मूल ज्ञान तऽ आवश्यक अछिए मुदा बेसी महत्वपूर्ण आयाम थिक –अनुभव आ स्वास्थ्य, कला तथा शारीरिक स्वास्थ्यताक विकास, खेल,व्यायाम आ व्यक्तिगत तथा सामुदायिक स्वच्छताक माध्यमसँ। स्वास्थ्य आ सामुदायिक जीवनक हेतु व्यक्तिगत आ सामूहिक उत्तरदायित्व पर जोर देल जएबाक आवश्यकता छैक।

राष्ट्रीय स्तरक कएक गोट कार्यक्रम एच. आइ. वी. प्रजनन संबंधी आ बालरोग, टी.बी. आ मानसिक रोग केर सम्बंधमे बच्चा केँ ध्यानमे राखि कए रोकबाक उपाय करबामे लागल अछि। बच्चाक एहि माङ केँ प्रचलित पाठ्यक्रमसँ जोड़ल जएबाक चाही, उपरसँ जोड़ल जएबाक बदलामे।

सूचनाक रूपमे योग प्राथमिके स्तरसँ शुरू कएल जाए सकैत अछि, मुदा योगाभ्यासक औपचारिक शिक्षा छठम वर्गसँ प्रारम्भ कएल जाए। स्वास्थ्य आ स्व्च्छता समेत सभ दृष्टान्त छात्रक जीवनक प्रयोग आ अनुभवसँ लेल जाए। स्थनीय स्तरक खेलकेँ सामिल कएल जएबा पर जोर होएबाक चाही।

ईहो सम्भव अछि जे कम सँ कम ब्लौक स्तर पर प्रतिभाशाली खलाड़ीक हेतु विद्यालयसँ पहिने आ बादमे खेल आ प्रशिक्षणक सुविधा उपलब्ध कराओल जाए। ईहो सम्भव अछि जे ओतए खेल संबंधी सुविधाक विकास हो जाहिसँ खाली समयमे बच्चा ओतए बास्केट बॉल, वॉली बॉल आ स्थानीय खेलक आनन्द उठाए सकए।

3.7 कार्य आ शिक्षा :

कार्यक विषयमे सामान्य अवधारणा अछि जे ई एहन गतिविधि थिक जे किछु करबा अथवा बनएबामे होइत अछि। एकर अर्थ बार्य अथवा क्षमता अथवा दूहूक उपयोग आनक हेतु बदलामे धन अथवा किछु आओर प्राप्त करबाक हेतु कएल जाइत अछि। एहिमेसँ बहुतो कार्य कलाप अन्न एवं दैनिक उपयोगक सामग्रीक उत्पादन, लोकक शारीरिक आ मानसिक स्वास्थ्यक देखरेख, आ प्रशासन तथा सामाजिक संगाठनसँ संबंधित अन्य कार्य सभसँ संबंधित अछि। कोनो समाजमे एहि दूटा मूल आयामक (सामग्रीक उत्पादन तथा निर्वाध गतिसँ कार्यक व्यवस्था) अतिरिक्त बहुतो अन्य कार्य कलाप सेहो मानवीय निश्चिन्तताकेँ प्रभावित करैत अछि आ एहि अर्थमे कार्यक रूप कहल जाइत अछि।

एहि अर्थ मे बुझल जाए तऽ कार्य समाजक आ /अथवा समुदायक प्रति व्यक्तिक वचन वद्धता देखबैत अछि किएक तऽ एक व्यक्ति अपन कार्य आ क्षमताक अनुसार ओकर आवश्यकता पूर्तिक हेतु कार्यरत अछि। दोसर एकर ईहो अर्थ अछि जे कार्यक रूपमे व्यक्तिक योगदानकेँ सामाजिक स्तरसँ नापल जाएत अतः ओकर मूल्यांकन आ परख आनक द्वारा कएल जाएत। तेसर कार्यक अर्थ सामाजिक कार्य कलापमे व्यक्तिक योगदान अछि किएक तऽ चाहे तऽ ई किछु एहन वस्तुक उत्पादन करैत अछि जे जीवनकेँ सम्भव बनबैत अछि अथवा सामान्यतः समाजक कार्य कलापमे मदति करैत अछि। निष्कर्षतः - कार्य मानव जीवनकेँ समृद्ध बनबैत अछि किएक तऽ ई प्रशंसा आ आनन्दक नव आयाम फोलैत अछि।

हमरा सभकेँ नहि बिसरबाक चाही जे बच्चा सभ समाजमे बेसीकाल भेद भावक शिकार होइत अछि आ वयस्क लोकनि बच्चाकेँ प्रवल सामाजिक - राजनीतिक परिवेशमे समाजसँ परिचित करबैत छथि। ई बूझब आवश्यक अछि जे बच्चा आ वयस्क दूनू समान रूपेँ सामाजिक होइज छथि। हमरा सभकेँ ईहो मोन राखब आवश्यक अछि जे बंधुआ मजदूरक रूपमे कार्य सभ बलजोरीसँ पैघ अछि। ई सुनिश्चित करबाक हेतु पर्याच्त उपाय कएल जएबाक चाही जे पाठ्यक्रमक अभिन्न अंगक रूपमे कार्यक प्रवेश कखनहु एहन स्थिति उत्पन्न नहि करए जतद 'कार्य' नहि चाहैत बच्चा पर बोझ बनए अथवा ओ स्वयं बच्चाक शिक्षा आ सामान्य विकासमे बाधा उत्पन्न करए। नियमित आ दोहराओल जाएबला कार्य कलापमे किछु

उत्पादनसँ संबंधित होअए अथवा ओ कार्य जे जाति अथवा लिंगक आधार पर बाँटल होअए, कड़ाइसँ अंठाओल जएबाक चाही। संगहि एकटा शिक्षक/शिक्षिका जे कार्यमे स्वयं बिनु भाग लेनहि, बच्चा सभसँ कार्य करबैत छथि, कार्य कें पाठसँ जोड़बाक उद्देश्यमे सफल नहि भए सकैत छथि। विद्यालयक अंदर कार्य करबकें कखनहुँ बच्चाक शोषणकें उचित ठहरएबाक हेतु प्रयोग नहि कएल जएबाक चाही।

कार्य बच्चाक सिखबाक साधन सेहो छिऐक - घरमे, विद्यालयमे, समाजमे अथवा कार्य क्षेत्रमे बच्चा दुइये वर्षक आयुसँ कार्यक अवधारणाकें बुझए लगैत अछि। बच्चा अपन ज्येष्ठक नकल करैत अछि आ कार्य करबाक चेष्टा करैत अछि। उदाहरणार्थ -बहुत छोट बच्चाकें घर बाहरैत, बैसार करैत, घर बनबैत, अथवा भोजन बनबैत देखब असामान्य अछि। शिक्षाक औजारक रूपमे कार्यक प्रयोग बहुतो बाल शिक्षकक द्वारा कएल जाइत अछि। मोंटेसरी पद्धति शुरुआतहिसँ कार्य कें कलासँ जोड़ैत अछि । तरकारी काटब, वर्गकें साफ करब, बागवानी करब आ कपड़ा खीचब- सब शिक्षा चक्रक अंग थिक। फलदायक कार्य, जे बच्चाक आयु आ क्षमताक अनुरूप हो आ जे बच्चाक सामान्य विकासमे मदति करए- जखन बच्चाक जीवनमे प्रयुक्त कएल जाइत अछि ओकरा मूल्य, मूल वैज्ञानिक अवधारणा, कला आ रचनात्मक प्रस्तुति सिखबामे मदति करैत अछि। कार्यक द्वारा बच्चा एकटा परिचय अर्जित करैत अछि आ स्वयं कें कार्यशील आ उपयोगी अनुभव करैत अछि किऐक तऽ कार्य अर्थ प्रदान करैत अछि, अपना संग समाजक समस्या अनैत अछि आ बच्चा सभकें ज्ञान अर्जित करबामे मदति करैत अछि।

कार्यक द्वारा व्यक्ति समाजमे अपन स्थान पबैत अछि। ई बढ़ैबाक क्षमतासँ युक्त शैक्षणिक कार्य थिक। तें शिक्षा व्यवस्थामे फलदायक कार्यमे भागीदारी, व्यक्तिकें, सामाजिक जीवन आ समाजमे महत्वपूर्ण आ प्रशंशित मूल्यकें बुझबामे मदति करैत अछि। चूकि कार्य किछु संभव लक्ष्यकें निर्धारित करैत अछि आ परस्पर-निर्भरताक जाल उत्पन्न करैत अछि, तें ई अनुशाशित रूपसँ प्रयास करबा पर विश्वास कैत अछि आ अतः स्व नियंत्रण मानसिक उर्जाक ध्यान आ भावनाकें नियंत्रणमे रखबाक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि। कला, जाहिमे महीन कारीगरीक आवश्यकता होइत छैक, केर बेसीकाल अवमूल्यन कएल जाइत अछि- विशिष्टता प्राप्त करबाक आ स्व-अनुशासन सिखबाक माध्यम केर रूपमे । वस्तु सभ(जेना

माटि,लकड़ी इत्यादि) केर द्वारा प्रदर्शित अनुशासन बेसी असरदार आ स्तरीय रूपसँ मानव द्वारा एक दोसराक प्रति प्रदर्शित अनुशासन सँ भिन्न होइत अछि। कार्यक हेतु सामग्री अथवा आन मनुष्यक (बेसी काल दुहू) केर बीच सहयोगक आवश्यकता होइत छैक। अतः एहिसँ गम्भीर बोध आ प्राकृतिक वस्तु आ सामाजिक संबंधक विषयमे बेसी प्रायोगिक ज्ञान भेटैत अछि। ई सभ ओहि भौतिक कलाक अतिरिक्त अछि जे कोनो विषय सिखबासँ भेटैत छैक जाहिसँ जीविकोपार्जन भए सकए। एतए राखल गेल पक्ष कार्यक अर्थ निकालबा आ ज्ञानक निर्माण करबाक आयाम पर ध्यान दिअबैत अछि। ई बाल शिक्षाक कार्य थिक जे 'कार्य' पाठ्यक्रममे कए सकैत अछि।

कार्यसँ एहि तरहक लाभ तखनहि टा उठाओल जाए सकैत अछि यदि एकरा विद्यालयी पाठ्यक्रमक अभिन्न अंग बनाओल जाए। यदि अकादमिक संरचनामे सामिल कएल जाए तऽ कार्य नव तरहक रचनाशीलता आ ज्ञानकेँ विकसित कए सकैत अछि। संगहि कार्यक प्रकृतिकेँ बदलबाक संभावनाक द्वारि सेहो फोलि सकैत अछि । ई आओर आवश्यक भए गेल अछि किएक तऽ भारतमे बेसीरास परिवारमे गृह कार्य आ पारिवारिक व्यापारमे सहयोग देब जीवनक पद्धति अछि, मुदा ई व्यवस्था छात्रक समय पर विद्यालयी दवाव आ सूचना रटबाक अत्यंत प्रतियोगिताक कारणेँ बदलि रहल अछि। प्रतीत होइत अछि जे अकादमिक गतिविधि अनुशासनिक सीमामे कैद भए गेल अछि।

अकादमिक शिक्षा आ कार्यकेँ जखन संग संग जोरि देल जाए तऽ ओहिसँ अकादमिक ज्ञानमे रचनात्मक कार्यक क्षेत्रमे सेहो बेसी सहजता आओत। एकटा सहक्रियात्मक दृष्टिकोणकेँ अपनाओल जाए सकैत अछि। एहि तरहेँ प्रभावी हैण्डपम्पक रचना भेल। आरम्भमे उच्च उड़एबला प्लास्टिकक बैलून बेसी ठंढा वातावरणसँ गुजरबाक क्रममे फाटि जाइत छलैक तखन एकटा वैज्ञानिक दृष्टिकोण बला कारीगर बतओलक जे यदि एहिमे थोड़ेक कार्बन पाउडर दए देल जाइक तऽ ओ सूर्यक प्रकाशक संश्लेषण कए किछु गर्म बनल रहत। सभटा पैघ आविष्कारक कल्पनाशील व्यक्ति रहथि जे विज्ञान नहि बुझैत छलाह। एडीसन, फोर्ड आ फैराडे एही वर्गमे अबैत छथि अथवा ओ जे सभसँ पहिने चश्मा अथवा दूरवीन बनओलनि। एहिमे कोनो संदेह नहि जे हमर सभक कुम्हार, शिल्प, बुनकर, किशान आ चिकित्सक सभक पारंपरिक ज्ञान सेहो एही तरीकासँ आएल जाहिमे व्यक्ति सभ

शारीरिक श्रम तथा अकादमिक चिंतन करैत रहल अछि। हमरा सभकेँ अपन शिक्षामे नवीनता, जिज्ञासा आ प्राकृतिक अनुभवक एहन संस्कृति अपनबैक आवश्यकता अछि।

मुदा वर्तमानमे विद्यालय सभ कार्यकेँ पाठ्यक्रमक अंगक रूपमे स्वीकार करबाक हेतु संरचनात्मक आ शैक्षणिक सामग्रीक स्तर पर तैयार नहि अछि। कार्य आवश्यक रूपसँ अन्तर-अनुशासनिक क्रियाकलाप थिक। तेँ कार्यकेँ विद्यालयी पाठ्यक्रमसँ जोड़बाक हेतु शिक्षासँ एकरा जोरबाक तरीका आ अनुमान एवं मूल्यांकन पद्धतिक ज्ञान आवश्यक होएत।

कार्यक संस्थानीकरणक हेतु रचनात्मकआ साहसी चिन्तनक आवश्यकता अछि किएक तऽ ओहिसँ सामाजिक उपयोगी आ उपभोगी कार्यसँ (एस.यू.पी.डब्लू) संबंधित जड़ता टुटत किछु एहन जकर प्रति हमर सभक शिक्षक आ छात्र उचिते संदेहशील रहैत छथि। हमरा सभकेँ एकर परीक्षण करबाक आवश्यकता अछि जे कोन प्रकारेँ पछुआएल बच्चाक ज्ञान आधार केँ ओकर सम्मानक आ अन्य बच्चा सभक अध्ययनक आधार बनाओल जाए सकैत अछि। ई एहि संदर्भ मे विशेष रूपसँ महत्वपूर्ण अछि जे उच्च मध्यवर्गक बच्चा सभमे अपन सांस्कृतिक विरासतक प्रति उदासीनता बढ़ल जाए रहल छैक। एकर पैघ संभावना अछि जे वृहद् उत्पादक वर्गक विस्तृत ज्ञान आधारक ज्ञानक द्वारा शिक्षा व्यवस्थामे बदलाव आनल जाए सकैत अछि। कार्यकेँ 'वैध' ज्ञानक रूपमे देखल जाए सकैत अछि जे स्त्रीगण आदिक ओहि कार्यक पुनर्मूल्यांकनक मांग करैत अछि जे समाजक हेतु उपयोगी मानल जाइत अछि। उत्पादक कार्यकेँ पाठ्यक्रमक केन्द्रीय आधार बनाओल जाए सकैत अछि। जाहिसँ पठ्यक्रमक किताबी सूचना आधारित आ सामान्यतः चुनौती नहि देल जा सकएबला पद्धति बदलल जा सकैत अछि आ बच्चाक जीवन संबंधी आवश्यकता सभसँ जोड़ल जा सकैछ। प्रभावी आ मूल्यांकनपरक विकासात्मक उपकरणकेँ शैक्षणिक अनुभवक रूपमे अपनाएब बच्चाक जीवनक स्तरक हेतु महत्वपूर्ण भए सकैत अछि। एहि तरहेँ कार्य आधारित शिक्षा व्यावसायिक शिक्षासँ अलग अछि।

पूर्व प्राथमिक सँ लए कए उत्तर माध्यमिक स्तर धरि विद्यालयी पाठ्यक्रमकेँ कार्यक शैक्षिक माध्यमक रूपमे ज्ञानार्जन, मूल्यविकास आ बहुकला विकासक क्षमताक आलोकमे पुनर्निमित कएल जा सकैत अछि। बच्चाक विकासक संग

पाठ्यक्रममे ध्यान देल जएबाक आवश्यकता छैक जे कार्य संसारक हेतु बच्चाकेँ तैयार कएल जाए। एहि हेतु कार्य आधारित शिक्षा पद्धतिक विकास कएल जा सकैत अछि जाहिमे बढ़ैत जटिलताक ज्ञज्ञन तऽ होअए संगहि आवश्यक लचीलापन तथा संदर्भ सेहो होअए। कार्य आधारित विषयक शिक्षा सभ स्तर पर देल जएबाक चाही एहिमे शामिल अछि आलोचनात्मक चिन्तन ,ज्ञानक प्रसार, रचनात्मकता, संवाद शिक्षा, सौन्दर्यात्मकता, सामाजिक दायित्व इत्यदि। एहि हेतु मून्यांकनक मानक सेहो फेरिसँ निश्चित कएल जएबाक आवश्यकता छैक। कार्य आधारित शिक्षाक प्रभावी आ सार्वभैमी कार्यक्रमक विना ई संभव नहि बुझाइत अछि जे यू.इ.इ.(आ बादमे वैश्विक माध्यमिक शिक्षा सेहो) कहियो सफल भए सकत।

3.8 शान्तिक हेतु शिक्षा

हम सभ हिंसाक असाधारण स्तरक समयमे जीवि रहल छी जाहिमे असहिष्णुता, विवाद, सनक आदिक चुनौती नैतिकता, शान्ति आ जन कल्यानक समक्ष अबैत रहैत अछि । युद्ध आ हिंसा विनु सोझराओल झगड़ाक कारण होइत अछि, यद्यपि झगड़ा सदैव हिंसा आ युद्धक रूप नहि लैत अछि। हिंसा झगड़ाक अनेक संभावित कारणमेसँ एक अछि। अहिंसक झगड़ा सोझरएबाक कला केर पोषणक आ रचनात्मक रूपसँ व्यक्ति, समूह आ राष्ट्रक बीच विवादक समयमे प्रयोगक समयमे आवश्यकता छैक। राष्ट्रीय विद्यालय पाठ्यक्रमक काज एहि मामलामे साफ अछि जे राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय आ स्थानीय स्तर पर हिंसाक समय थिक। शिक्षाक महत्वपूर्ण भूमिका शान्ति, सहिष्णुता, न्याय आ दायित्वक संदर्भमे बेसी समयमे भए सकैत अछि । यद्यपि जाहि प्रकारक शिक्षा विद्यालय सभमे देल जाइत छैक ओहिसँ सांकेतिक आ वास्तविक हिंसाकेँ बढ़ावा भेटैत छैक । एहि परिस्थिति सभमे शिक्षाकेँ पुनर्परिभाषित करबाक आवश्यकता छैक आ एहि हेतु विद्यालयी पाठ्यक्रमक प्राथमिकता अछि जे मूल्यक रूपमे ई सभ पाठ्यक्रमसँ जुड़ल होअए आ ओहिमे ओहि मूल्य सभ पर बल दैत अछि तेँ ई एकटा चिंन्ता थिक जाहिमे पाठ्यक्रम आ शिक्षकक चिंतन शामिल अछि।

शान्तिक हेतु शिक्षाक अवधारणाक अनुसार नैतिक विकासक जरूरत छैक जाहिमे मूल्य, दृष्टिकोण आ ओहि कौशल सभक विषयमे बताओल जाए जाहिमे

प्रकृति आ मानव जगतक संग सामंजस्यक पाठ सामिल हो। एहि हेतु जीवनक आनन्द आ व्यक्तित्वक विकास जाहिमे प्रेम, आशा आ हिम्मतक तत्व हो,केर आवश्यकता अछि। एहिमे मानव अधिकार, न्याय, सहिष्णुता, सहयोग,सामाजिक दायित्व तथा विविधता केर सम्मान सेहो सामिल अछि संगहि प्रजातंत्र आ अहिंसक ढंग सँ झगड़ा सोझड़एबा परजोर हो। सामाजिक न्याय, शान्ति शिक्षाक एकटा महत्वपूर्ण पक्ष थिक। समानता आ सामाजिक न्यायक चिंता जाहिमे वंचित,गरीब आ पिछड़ल समाजक शोषण सँ मुक्ति आ अहिंसक सामाजिक व्यवस्थाक निर्माण सामिल अछि, शान्ति –शिक्षाक प्रमुख उद्देश्य थिक। तहिना मानवाधिकार शान्तिक केन्द्रविंदु थिक। यदि व्यक्तिक अधिकारक हनन कएल जाए तँ शान्ति स्थिर नहि रहि सकैत अछि। मानवाधिकारक मूल तत्वअछि– भेदभाव रहित आ बराबरीक अवधारणा जाहिसँ समाजमे शान्तिक वातावरण बनए। ई मुद्दा सभ परस्पर संबंधित अछि। अतः शान्ति शिक्षा कएक मूल्य सभक केन्द्रविन्दु थिक।

शान्ति अध्ययन एहन चिंताक रूपमे विकसित होअए जाहिमे सम्पूर्ण विद्यालयी कार्य कलाप सामिल हो–पाठ्यक्रम, कक्षाक वातावरण, विद्यालय प्रबंधन, शिक्षक छात्र संबंध आ विद्यालयसँ जुड़ल सभटा गतिविधि सामिल होअए। एहि हेतु ई आवश्यक अछि जे पाठ्यक्रम आ परीक्षाक एहि दृष्टि सँ मूल्यांकन होअए जाहिसँ ओ छात्रक अपर्याप्तता, निराशा, धैर्य आ असुरक्षा कें कतेक बढ़बैत अछि, संगहि लग पास आ मीडियाक माध्यमसँ वच्चाक मस्तिष्क पर जे हिंसक प्रभाव पड़ि रहल अछि ओकर नकारात्मक प्रभावकें दूर कए सकए। नैतिक आ शान्तिपूर्ण जीवनक बेसी अर्थपूर्ण उद्देश्यक गम्भीर अर्थ सभकें विकसित कएल जएबाक आवश्यकता छैक। वास्तविक अर्थमे शिक्षा व्यक्तिकें अपन मूल्य सभकें स्पष्ट कए पएबामे सहायक होअए, ओकरा सजग निर्णयक दिशामे प्रेरित करए, हिंसाक स्थान पर शान्तिक चुनाव हेतु प्रेरित करए, ओकरा शान्ति निर्माणक प्रक्रियासँ जोड़ए नेकि ओ मात्र शांतिक उपभोक्ता बनल रहत।

3.8.1 रणनीति :

नैतिक विकासक मतलब करब अथवा नहि करब नहि थिकैक बल्कि एकर माध्यमसँ छात्र ई सिखि सकैछ जे की ठीक अछि? की दया थिक? आ व्यक्तिगत तथा सामाजिक मूल्यक संदर्भमे सामान्य हितमे की उचित अछि।

शान्ति जागरुकताक हेतु गतिविधि

वयस 5 + सावधानी पूर्वक देख रेख करी बच्चा सभकेँ पंक्तिमे ठाढ़ करियौक। ओकरा सभकेँ केराक गाछ अथवा टीकक गाछ अथवा कन्नाक गाछक एकटा पत्ता दए दिऔक, एक एक कएकेँ ओहि बच्चा सभकेँ मूड़ीक ऊपरसँ पत्तीकेँ खिचैत अथवा ओ जेना चाहए ओहि पत्तीकेँ पछिला पंक्ति तक पहुँचाए दियौक। फेर एकटा बच्चा ओहि पत्तीकेँ आगू आनए आ फेरि चक्रक शुरुआत करए। तकर बाद बच्चा सभसँ कहल जाए जे ओहि पत्तीकेँ विभिन्न तरहसँ पकरबाक कारणेँ होमएबला क्षतिकेँ देखए। ई गतिविधि पत्तीक विषयमे आ कोन गाछक थिक ताहिसँ संबंधित विमर्श केँ बढ़ाए सकैत अछि। ओहि एक पत्तीक क्षति पूरा प्रकृतिक क्षतिक अनुवृति थिक। पत्ती सम्पूर्ण सृजनक प्रतीक थिक।

वयस 7+ भावना बाँटब : बच्चा सभकेँ एकटा गोल घेरामे बैसाकेँ पुछियौक '' तोहर जीवनक सभसँ खुशीक दिन कोन छलौक? ओ दिन बहुत खुशीक किऐक छलौक? '' सभ बच्चाकेँ जबाब देमए दियौक । किछु बच्चा सभकेँ एक अथवा बेसी भूमिकाक निर्वाह करए दियौक । जहिना बच्चा भावनाकेँ आदान प्रदान करबाक विचारसँ परिचित भए जाए, ओकरासँ बेसी कठिन प्रश्न पूछल जाए जेना ''तोँ कथीसँ वास्तवमे भयभीत होइत छेँ ? तोँ एहन अनुभव किऐक करैत छेँ केहन अनुभव करैत छेँ जखन तोँ ककरो लड़ैत देखैत छिही। तोरा ओहन किऐक लगैत छौक? तोरा वास्तवमे की दुखी करैत छौक? किऐक?''

वयस 10+ अन्यायकेँ न्यायसँ दूर करी : वर्णन करियौक जे विश्वमे अन्यायक बहुत कारण छैक। ईहो बतबियौक जे न्याय विश्वमे शान्तिक रचना करबाक मूल मानक थिकैक। अन्यायक दू अथवा तीन उदाहरण दियौक। बच्चा सभकेँ बेसी उदाहरण देबाले कहियौक। तकर बाद प्रश्न पुछियौक ''अन्यायक कारण की छलैक? समान परिस्थितिमे तौ केहन अनुभव करबेँ ?'' किछु बच्चाकेँ ओकर अनुभव सम्पूर्ण कथामे बनबए दियौक।

वयस 12+ शान्तिक अधिवक्ता बनी : बच्चा सभकेँ कहियौक जे ओ शान्तिक अधिवक्ता थिक जे ओ देशक हेतु शान्तिक नियम बनाओत। ओकरा सभक द्वारा सुझाओल गेल पाँच गोट नियमक सूची बनाउ। अनकर द्वारा सुझाओल गेल कोन नियम अहाँ अपन सूचीमे जोड़ए चाहब? कोन नियमकेँ अहाँ स्वीकार नहि करैत छी? आ किऐक?

बच्चा जे सुनैत आ देखैत अछि तकरा बुझि तऽ सकैत अछि मुदा कहबा आ करबाक द्वन्दकेँ बुझि पबएमे सक्षम नहि भए पबैत अछि। एतेक धरि जे घरक छोटो सन विवाद बच्चा पर गम्भीर प्रभाव छोड़ि सकैत अछि। ज्येष्ठ सभक लगातार विवाद आ अभिभावक लोकनिक टुटैत सम्बंध एकटा एहन भय आ विषादक कारण बनैत अछि जे युवावस्थामे हिंसाक रूपमे प्रगट होइत अछि। मात्र अकादमिक उद्देश्य सभक हेतु सेहो अभिभावक आ छात्रकेँ संग अनबाक आवश्यकता छैक। व्यक्तिगत नैतिकताक विकास मात्र अभिभावक आ विद्यालये पर नहि छोड़ल जा सकैत अछि।

पृथक्- पृथक् आयु समूहक हेतु नैतिक विकासक भिन्न -भिन्न उपाय ताकल जा सकैत अछि। आरम्भिक वर्गमे छात्र अपन आसपासकेँ बुझबामे आ ओकर तथा अपना बीच सम्बंधमे चेतनाक विकासमे लागल रहैत अछि। ओकर व्यवहार सजायसँ बचबाक हेतु आ पुरस्कार पबैक प्रति होइत छैक । ओ नीक बेजाय आ उचित अनुचितक अन्दाज एहिसँ लगबैत अछि जे कोन गप्प पैघक द्वारा मानल गेलैक आ कोन नहि। एहि स्तर पर ओ पैघमे जे देखैत अछि तकरे अनुरूप नैतिक मूल्यकेँ अपन ज्ञान बनबैत अछि।

जेना जेना बच्चा पैघ होइत अछि, ओकर तार्किक क्षमताक पर्याप्त विकास तँ होइत छैक मुदा ओ एखनहुँ एतबा वयस्क तऽ नहिएँ होइत अछि जे मान्यता आ मानक पर प्रश्न उठाए सकए। अनका प्रभावित करबाक आदत आ स्वयंकेँ मजबूत देखबाक क्रममे ओकरामे कानून तोड़बाक आदत होइत छैक । एहि चरणमे मानक आ नियमक आधारक विषयमे मनाही आदि पर वाद विवादक माध्यमसँ बताओल जा सकैत अछि। एहिसँ बच्चाकेँ नीक बेजायक पहचान हाहोएतैक आ जीवनक नैतिक आधारक ज्ञान बनतैक।

बादमे जखन अमूर्त चिंतनक ओकरामे विकास भए जाए तखन ओकरा तार्किक ढंगसँ बता सकैत छिऐक जे नैतिक व्यवहार की होइत छैक। एहिसँ नैतिक सिद्धान्तक स्वीकृति आ ओकर आन्तरीकरण भए सकैत अछि आ जकरा लम्बा समयमे ओकरा संग राखि देखल जा सकैत अछि। कोनो बाहरी सत्ताक अभावमे सेहो नैतिक रूपसँ वयस्क व्यक्ति पूर्णरूपसँ नियम कानूनक अनुरूप कार्य

करैत अछि आ बुझैत अछि जे समाजमे सम्पूर्ण व्यवस्था ओ शान्ति स्थापित कएकेँ रखबामे एकर की योगदान छैक।

हमर सभक पुरान आ नीक शिक्षक मानैत छलाह जे खिस्सा आ संस्मरणक माध्यमसँ आध्यात्मिक आ सामाजिक संदेश देल जा सकैत अछि। एकरा संग ईहो सर्वभौम सत्य थिक जे चाहे बच्चा कतबो मन्द बुद्धि होअए, ओकर घरक जीवन कतबो खराब होइक, किछु ने किछु ओकरा लग करबाक हेतु होइत छैक । शिक्षककेँ ओकर प्रतिभा आ आत्मविश्वासक विकासमे योगदान करबाक चाही आ धरकबएवला भाषाक प्रयोग आ अनठबएबला व्यवहार करबासँ बचबाक चाही।

मूल्यक शिक्षाक मतलब होइत अछि बांछनीय व्यवहारक ज्ञान । एकर मतलब ईहो भेल जे जे अनुचित अछि, अस्वीकार्य अछि तकरा अस्वीकार करब। एहि कारण छात्र अवसर पर अपन असली भावनाकेँ नुकाकए मात्र कहबाक हेतु मूल्यक गप्प करए लगैत अछि । एकरा मात्र गप्प सप्पक हिस्सा नहि रहए देल जएबाक अपितु नैतिक व्यवहारक विषयमे अनुभव आ चिंतनक हेतु सार्थक वार्तालापक अंग बनएबाक उपाय करबाक आवश्यकता छैक, मानव व्यवहार संबंधी क्लिष्ट नीति आ व्यवहारकेँ तकबाक आ बुझबाक बदलामे।

शिक्षक लोकनिकेँ जानि कए शान्तिसँ जुड़ल मूल्यक विषयमे जे विद्यालयमे पढ़ाओल जाइत अछि,आधार पर बच्चाक विकासक अवस्थामे बतएबाक चाहिअनि। उदाहरणार्थ शिक्षक कोनहु पाठमे नुकाएल अवयवकेँ सकारात्मक भावक रूपमे जगएबाक हेतु अनुभव आदिक आधारपर शान्तिक मूल्यक रूपमे बता सकैत छथिन। प्रश्न, खिस्सा- पिहानी, खेल-कूद,व्यवहारिक चर्चा,उदाहरणरूपक आ मूल्य स्तरीयकरणक माध्यमसँ शान्तिक शिक्षा देल जा सकैत अछि। नैतिक शिक्षा आ ओकर व्यवहारिक रूप व्यक्तिगत, सामाजिक, सामुदायिक आ वैश्विक आयामसँ जोड़ि कए देखल जा सकैत अछि। एकटा शिक्षक जे शान्तिक अध्ययन अध्यापनक तैयारी कए चुकल होथि एहि अवसर पर हुनक गप्प दण्ड आ अन्तर संबंधक विषयमे बता सकैत छथिन। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रममे शान्तिक शिक्षाकेँ वैकल्पिक विषयक रूपमे सामिल कएल जएबाक चाही।

शान्ति गतिविधिसँ संबंधित सुझाव :

- विद्यालयमे विशेष क्लव आ रिडिंग रूमक व्यवस्था, जे शान्तिसँ संबंधित समाचार पर एकाग्र हो आ एहन घटना पर जे सामाजिक न्याय आ समानताक नियमकेँ तोड़ैत हो।
- एहन फिल्मक सूची तैयार करब जे न्याय आ शान्तिक मूल्यसँ संबद्ध होअए। ओकरा समय समय पर विद्यालयमे देखाओल जाए।
- शान्तिक अध्ययनमे मीडियाकेँ सहयोगी बनाओल जाए। प्रमुख समाचार पत्रकेँ बच्चाकेँ संबोधित करबाले बजाओल जाए। बच्चाक विचार कम सँ कम एक बेरि मासमे समाचार पत्र-पत्रिकामे छपए तकर उपाय होअए।
- विद्यालयमे धार्मिक आ सांस्कृतिक बहुलताक उत्सवक आयोजन।
- एहन कार्यक्रमक आयोजन जाहिसँ स्त्रीक प्रति सम्मान आ उत्तरदायित्वक भावनाक विकास होअए।

3.9 वातावरण आ शिक्षा :

वातावरण एक एहन स्थान थिक लतए कोनो प्रजातिक अस्तित्वक हेतु उचित परिस्थिति होअए। सीखब सभ पशु प्रजातिक मूल स्वभाव थिक । पशु अपन वातावरणक गुणक विषयमे - भोजन होएबाक,सहयोगी होएबाक अथवा शत्रु होएबाक संकेतक माध्यमसँ बुझैत अछि। अतः हमरा सभक पूर्वजक हेतु अपन क्षेत्र भ्रमण, ज्ञानक साधन भेल। मुदा जेना वातावरण पर मानवक प्रभाव पड़ल आ लोक सभ विश्वकेँ अपन सुविधाक अनुसार बेसी सँ बेसी बदलए लागल, ज्ञानक ई माध्यम समाप्त होमए लागल आ एखन ई स्थिति अछि जे औपचारिक शिक्षा बच्चाक वातावरणसँ काफी दूर भए गेल अछि। आब जखन वातावरण अत्यन्त तेजीसँ नष्ट भए रहल अछि, हम सभ अपन वातावरणक उचित देखभाल करबाकेँ बूझब शुरू कएलहुँ अछि। तेँ मानव जातिकेँ अपन जड़ि केँ तकबाक चाही जाहिसँ वातावरणकेँ सम्पर्ककेँ पुनः स्थापित कएल जाए आ एकर संरक्षणक महत्वकेँ बुझल जाए। तखन

वस्तुतः ‘‘वातावरण आ शिक्षा’’ पर्यावरण शिक्षाक पर्यायवाची होएत। ई महत्वपूर्ण मुद्दा सभकेँ विभिन्न अनुशासनक भागक रूपमे पर्यावरण शिक्षा पढ़एबासँ अनुभव कएल जा सकैत अछि, ई निश्चित करैत जे यथार्थ क्रिया सभक हेतु पर्याप्त समय देल गेल हो। ई तरीका भौतिकी, गणित,रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगोल,इतिहास, राजनीति शास्त्र,स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षा,कला,संगीत इत्यादिक संदर्भमे उपयोग कएल जा सकैत अछि। जीवनक परिस्थितिक संदर्भमे बनाओल गेल कार्य कलाप, सिखनिहारक व्यस्तताक हेतु अर्थपूर्ण भए जाइत अछि। उदाहरणार्थ –वर्षा, स्थान आ समयक अनुसार काफी विविधता दे,खबैत अछि। एहि विविधताक आँकड़ा उपलब्ध अछि आ गणित आ भौतिकीमे अनेक मनलग्गू कार्य कलापक हेतु प्रयुक्त कएल जा सकैत अछि। भौतिकीमे असमतल भूमि पर द्रवक बहाव तथा उँचाई बढ़बाक संग वायुक शीतलीकरण आ अवक्षेपीकरण घटबाक संग ठीक विपरीत होएबाक घटनाकेँ सामान्य प्रयोगक माध्यमसँ देखाओल जा सकैछ। गणितमे लम्बा समयक आँकड़ाक गहन विश्लेषण–जेना वर्षा घटबाक पचास वर्षक आँकड़ा– प्रतिवेदन,दृष्टान्त आ व्याख्यासँ संबंघित योजनाक हेतु उत्तम संभावना प्रदान करैत अछि। तहिना गन्दगी साफ करएबला संयंत्रसँ निकलैत घास,रसायन विज्ञानसँ संबंधित अनेक योजनाक हेतु मूल पदार्थक काज कए सकैत अछि। संगहि विद्यालयकेँ पंचायत, निगम आ शहरी निकाय सभक संग जैविक विविधता आ एहिसँ जुड़ल ज्ञानक दस्तावेजीकरणक संबंधमे कार्य कए सकैत अछि। विद्यालयक किछु रोचक मुद्दा जेना – औषधीय गाछक उपलब्धता आ प्रयोग अथवा जलमे रहैत किछु दुर्लभ आ संकट ग्रस्त माछ सभक रक्षा सन कार्यकेँ जीव विज्ञानक योजनाक रूपमे शुरू कए सकैछ। कला, संस्कृति ,नृत्य आ शिल्पक माध्यमसँ वातावरण आ एकर तत्व (पशु, वन,नदी,गाछ इत्यादि) केर प्रतिनिधित्व, जैव विविधताक प्रति मानवक ज्ञानकेँ प्रदर्शित करैत अछि। एहने अवधारणा आदिवासी आ अनुसूचित जातिक लोक सभक जीवनसँ सेहो जुड़ल अछि किएक तऽ ओ सभ जीवन यापनक हेतु प्रकृतिक जैव विविधता पर निर्भर करैत अछि। एहि तरहक ज्ञानकेँ पंजीवद्ध करब, लोक सभक जैव विविधताक लेखा तैयार करबाक अंग थिक आ छात्र सभकेँ एहि तरहक लेखाकेँ तैयार करबा सन फलदायक कार्यमे लगाओल जा सकैत अछि।

जंगली गाछ सभ जे वनवासी लोकनिक भोजनक महत्वपूर्ण भाग होइत अछि, केर पौष्टिक स्तरक अनुमान लगएबाक कार्य, स्वास्थ्य शिक्षाक महत्वपूर्ण भाग भए सकैत अछि। तहिना अपन स्थानीय वातावरणक नक्शा बनाएब, पर्यावरणक इतिहासक दस्तावेजीकरण आ वातावरण सँ संबंधित राजनीतिक मुद्दा सभक विश्लेषण, भूगोल,इतिहास आ राजनीति विज्ञानक योजनाक अंग भए सकैत अछि। पानिक हेतु स्थानीय, राज्य, राष्ट्र आ अंतर्राष्ट्रीय विवाद, एहि ज्ञान सभसँ संबंधित विविध क्रिया कलाप आ योजनाक समृद्ध स्रोत भए सकैत अछि।

3.10 अध्ययन आ मूल्यांकनक योजना :

विद्यालय शब्दक मतलव कम बेसी पूरा भारत वर्षमे कक्षा एकसँ दस तकक होइत छैक, किछु राज्यमे ई बारहमी कक्षा धरि होइत छैक जखनकि अन्य राज्यमे एगारहमी आ बारहमीकेँ विद्यालय विश्वविद्यालय पूर्व अथवा जुनियर कॉलेज शिक्षाक रूपमे जानल जाइत अछि। किछु विद्यालयमे दू तीन साल पूर्वक कक्षा सेहो लगैत अछि। विद्यालयी शिक्षाक चारि भागमे विभाजनक मतलव प्रशासनिक दृष्टिकोणक अतिरिक्त सेो काफी अछि। पाठ्यक्रमक निर्माण आ शिक्षाक तैयारीक हिसाबसँ एहि चरण सभक विकासक वैधता छैक। चरणबद्ध तरीका सँ देखला पर पाठ्यक्रम संबंधी चिंतन आ विद्यालय संगठन द्वारा वर्तमान 'एकल ग्रेड' कक्षा सभक द्वारा उत्पन्न कएल गेल समस्यासँ बच्चाकेँ वयस आधारित आ कक्षा आधारित वातावरणमे राखल जाइत अछि। एक अथवा दू शिक्षकवला प्राथमिक विद्यालयक पुनर्कल्पना एकटा एहन शिक्षा समूहक रूपमे कएल जा सकैत अछि जाहिमे विविध अभिरुचि सभक आ शिक्षा आवश्यकता सभ हो समय बद्ध ढंगसँ बहुग्रेड आधारित कक्षा चलएबाक बदलामे। बच्चा सभक अनुमान जे ओ की ज्ञान अर्जित कएलक, विद्यालयमे लम्बा समय बितओलाक बाद होएबाक चाही, नकि सलाना आधार पर।

एहिसँ बच्चामे शिक्षाक प्रति बेसी सम्मानक भावना उत्पन्न होएतैक। न्यूनतम अध्ययन सामग्री (एम. एल. एल.) अध्ययन पर पुनः बल देबासँ सालक अंतक परिणामक दृढ़ता उभड़ि कें आओत आ एहिसँ ई सब पाठहिमे समटि कए रहि जाएत। पाठ्यक्रम शिक्षा आ चरणबद्ध आकलनसँ पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम आ शिक्षासाधन तैयार करबामे आ शिक्षककें छात्रक विकासक विषयमे योजना बनएबा आ ओकर योग्यता आ प्रत्यय सभक विषयमे सोचबाक अवसर भेटतनि।

3.10.1 आरम्भिक बाल शिक्षा :

आरम्भिक बाल्यकाल विशेषतः छओसँ आठ सालक वयस एहि दृष्टि सँ महत्वपूर्ण होइत अछि जे ई जीवनक आ पूर्ण सम्भावनाक विकासक आधार तैयार करैत अछि। प्रयोगसँ ई सिद्ध भेल जे एहि समयमे मस्तिष्कक विकासक किछु महत्वपूर्ण काल अबैत छैक । बादक व्यवहार, मूल्य आ सिखबाक इच्छाकें ई समय प्रभावित करैत अछि। सहयोगक अभाव अथवा अनठाएब नकारात्मक प्रभाव छोड़ि सकैछ जे कखनहुँ काल स्थायी भए सकैछ। आरम्भिक बालपन देखरेख आ शिक्षा (इ.सी.सी.इ.) चाहैत अछि जे बच्चाकें अवसर आ अनुभव एहि तरहे देल जाए जे ओकर सर्वांगीन विकासम- शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक आ विद्यालयी तैयारीमे काज आबए। एतए दृष्टिकोण सम्पूर्ण आ एकीकृत होइत अछि जाहिमे बच्चाक स्वास्थ्य आ पोषणक गम्भीर संबंध ओकर मानसिक,सामाजिक आ शैक्षणिक विकाससँ होइत छैक। पाठ्यक्रम ढाँचा आइ.सी.सी.इ.क शिक्षा पद्धति एहि सर्वागीन दृष्टिकोण पर आधरित होएबाक चाही,जाहिमे विकासक विभिन्न क्षेत्र,सभ उप-स्तर पर बच्चाक व्यवहार आ अनुभवक रूपमे ओकर सिखबाक आवश्यकता सामिल अछि।

एतय मानल बात अछि जे बच्चामे अपन आसपासक वातावरणकें बुझबा गमबाक सहज इच्छा होइत छैक। आरम्भिक वर्षमे शिक्षा, बच्चाक अभिरुचि आ प्रथमिकताक आधर पर होएबाक चाही। ओकर संदर्भ ओकर अनुभव होअए नेकि औपचारिक रूपसँ ओकर रचना। बच्चाकें अनुकूल वातावरण ओ होइत अछि जे अनुभव आ उद्दीपनमे सहायक हो जे बच्चाकें किछु करबाक,प्रयोगक आ स्वतंत्र अभिव्यक्तिक अनुभव प्रदान करए आ एहन सामाजिक बन्धन हो जे ओकरा

विश्वास,सुरक्षा आ उष्मा प्रदान करए। खेल,संगीत,गीत,कला आ स्थानीय वस्तुक मदति सँ अन्य क्रियाकलाप, बजबा, सुनबाक आ अपनाकेँ व्यक्त करबाक अन्य गतिविधिक अतिरिक्त एहि चरणमे शिक्षाक प्रमुख अवयव थिक। ई महत्वपूर्ण अछि जे बच्चाकेँ आरभ्भिक शिक्षामे काज आबए,ओकर परिचित हो आ ओकर वातावरणसँ हो,यद्यपि एकटा बहुभाषिक वर्ग छात्रकेँ जल्दी शुरू कएल दोसर भाषा(अँग्रेजी) आ शिक्षाक माध्यम सँ प्रथम वर्गहिमेँ तालमेल बैसएबामे मदति करत। इ.सी.सी.इ.क अन्तर्गत बच्चासँ विद्यालय पूर्व तक बच्चा अबैत अछि ताहि हेतु ई महत्वपूर्ण अछि जे ओकरा हेतु जे गतिविधि आ अनुभव होअए से विकासमूलक होअए।

आरम्भहिसँ अक्षमताक अन्दाजकेँ उचित ढ़ंगसँ उत्प्रेक्षक सभक उपयोग कएल जाए तँ अनुपलब्धिक निराशासँ बचल जाए सकैत अछि। चेतावनी ई अछि जे बच्चाकेँ ओकर इच्छाक विरुद्ध पढ़बा,लिखबा अथवा अंकगणित सिखबाले बाध्य नहि कएल जाए सँगहि विधिवत शिक्षा अल्पवयसहिमे शुरू नहि कएल जाए, आने विद्यालयपूर्व शिक्षा संस्थानकेँ प्राथमिक विद्यालमे प्रवेशक प्रशिक्षण केन्द्र बनाओल जाए। सुझाव तऽ ई अछि जे इ.सी.सी.इ क अन्तर्गत 0-8 वर्षक बच्चाकेँ सामिल कएल जाए (जाहिसँ एकर अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयक वर्ष सभकेँ सेहो आनल जा सकए) एहि अर्थमे इ.सी.सी.इ. आ ओकर पद्धति सभक सर्वांगीन दृष्टिकोण (विशेषतः सर्वांगीन विकास) गतिविधि आधारित शिक्षा,लिखबासँ पूर्व भाषाकेँ सुनब आ बाजब, संदर्भ, घर आ विद्यालयक सततता आदिसँ बाल्यावस्थाक समयमे शिक्षा देल जा सकैत छैक आ प्राथमिक शिक्षाक मार्ग प्रशस्त कएल जा सकैत छैक।

इ.सी.सी.इ.क कार्यक्रम बहुलताक छवि प्रस्तुत करैत अछि, सरकारी ,गैर सरकारी (स्वंसेवी क्षेत्र) आ नीजी स्तर पर कएक प्रकारक सेवा उपलब्ध अछि। यद्यपि एहि कार्यक्रमक क्षेत्र बहुत सीमित छैक, आ एकरा द्वारा देल जाएबला सेवा बहुत खराब छैक। पैघ संख्याामे बच्चा, जाहिमे बेसी गरीब वर्ग सँ अछि, कैं एहि कार्यक्रमक लाभ नहि भेटि पबैत छैक। विद्यालय पूर्व कार्यक्रममे बेसीरास छात्रकेँ एकरस वातावरणमे दबाउ दिनचर्यामे थका देल जाइत छैक, ओकरा बान्हल

बन्हाओल ज्ञान बेसीकाल अंग्रेजीमे देल जाइत छैक,घरक हेतु अभ्यास देल जाइत छैक आ कमहि वयसमे खेलएबासँ वंचित कए दैत छैक । ई बेकार आ अपकारक व्यवस्था अछि जे अभिभावक लोकनिक महत्वकांक्षा आ विद्यालयपूर्व अध्ययनक अत्यधिक व्यवसायीकरणक उपज थिक । सम्प्रति एहि प्रकारक व्यवस्था बच्चाक विकास आ सिखबाक संवेदना जगएबामे बाधक होइत अछि। बेसीरास ई समस्या सभ इ.सी.सी.इ. कैं मुख्य शिक्षा व्यवस्थाक अंग नहि बुझबाक कारणेँ होइत अछि। ध्रुवीकृत सेवा सभ बेरि बेरि दोहराओल जाइत सामाजिक रूढ़िकैं देखबैतेटा नहि अछि बल्कि ओकरा बढ़बितो अछि। भारतीय समाजमे पाओल जाइत लैंगिक पूर्वाग्रह आ पितृसत्तात्मक व्यवस्थाक कारणेँ शिशुगृह आ बच्चाकैं दिनमे देखरेखक सुविधा दिस ध्यान नहि देल गेल, खासकए गरीब ग्रामीण आ शहरी कार्यरत महिलाक हेतु। एहि अनठएबाक बालिकाक शिक्षा पर अधलाह असर होइत छैक ।

इ.सी.सी.इ.क एकटा नीक कार्यक्रम बच्चाक सर्वांगीन विकास पर सकारात्मक प्रभाव दए सकैत अछि । ई अपने आपमे एकर पर्याप्त कारण अछि जे सभ बच्चाक प्रारम्भिक शिक्षाक गप्प कएल जाए आ एहि हेतु दुर्भाग्यपूर्ण अछि जे 0-6 वयसक बच्चाकैं संविधानक धारासँ बाहर राखल गेल अछि संगहि विद्यालयमे बच्चाक नामांकन आ ओकप परिणामक बीच बहुत संकटपूर्ण संबंध रहलैक अछि। सभ बच्चाकैं एकहि रंग शिक्षा देल जा सकए एहि उद्देश्यक हेतु पर्याप्त धनहिटा उपलब्ध कराओल जएबाक आवश्यकता नहि छैक बल्कि स्तरक पाँचटा मूल तत्व-विकासक दृष्टिसँ उपयुक्त पाठ्यक्रम,उपयुक्त रूपेँ प्रशिक्षित आ पुरस्कृत शिक्षक, उचित शिक्षक छात्र अनुपात एवं समूह आकार, छात्रक छात्रक आवश्यकतानुसार उपयुक्त संरचना आ उत्साहवर्द्धक तरीकासँ पर्यवेक्षणकैं विभिन्न रणनीतिक माध्यमसँ प्राप्त करबाक प्रयास करबाक चाही। जखनकि विकेन्द्रीकरणक आवश्यकताक अनुभव कएल जा रहल अछि तैं आवश्यक अछि जे उपयुक्त विनियम निश्चित कए लेल जाए आ एकटा विषयात्मक ढाँचा बनाए लेलजाए जाहिसँ बच्चाक विकास एहिसँ प्रभावित नहि हो बहु भूमिकाक आधार पर सभ स्तर पर सामर्थ्यक विकासक प्रयास आ एकर हेतु उपयुक्त राशिक सेहो प्रावधान होअए।

3.10.2 प्रारम्भिक विद्यालय :

प्रारम्भिक शिक्षा कक्षा 1सँ 8 धरिक शिक्षाकेँ आइ काल्हि आवश्यक शिक्षाक रूपमे मानल जाइत अछि कारण जे शिक्षा मूल अधिकारक रूपमे शामिल भए गेल अछि। एहि समयमे बच्चाकेँ पढ़बा लिखबा आ अंकगणित, विज्ञान आ सामाजिक विज्ञान केर मूल जानकारी देल जाइत छैक। आठ सालक ई समय ज्ञानात्मक विकास आ तर्क शक्ति, बुद्धिमत्ता आ कार्यक क्षेत्रमे प्रवेषक हेतु आवश्यक कलाक विकासक दृष्टिसँ बहुत महत्वपूर्ण होइत छैक।

सार्वभौम प्राथमिक शिक्षाक लक्ष्यक प्राप्तिक हेतु प्रयास तेज करबाक कारणेँ आब प्राथमिक विद्यालय सभक पहुँच विविध पृष्ठभूमिसँ आबएबला विद्यालय जाएबला आयुक बच्चा सभ तक भेलैक अछि। उदारता आ बहुलता मुद्रा विना शिक्षाक स्तरसँ सामंजस्य केनहि एहि समय शिक्षाक सभसँ पैघ चिह्न होएबाक चाही। एहि समय शिक्षा एकीकृत होअए बच्चाक अपन भाषा सिखबाक आ आत्मविश्वास अर्जित करबामे सहायक होअए चाहे ओ विद्यालयक अंदर हो अथवा बाहर।

विद्यालयक प्रथम चिंता बच्चाक भाषाक क्षमताक विकासकेँ लएकेँ होअए- वाचिक आ साक्षरता संबंधी भाषाक रचनात्मक प्रयोग करबाक, सोचबाक आ संवाद करबाक हेतु भाषाक प्रयोगक क्षमताक विकासक संबंधमे। एहि गप्प पर विशेष बल देल जएबाक चाही जे ओकरा हेतु अवसर अधिक होअए जे अपन मातृभाषाक माध्यम सँ पढ़ए चाहैत अछि। आदिवासी आ छोट भाषा समूहमे सेहो आ चाहे छात्रक संख्या कम होअए तैयो। व्यवस्थामे एहि विकल्पकेँ विकसित आ संवर्धित क्षमता होएबाक चाही संगहि एकर तंत्र सेहो विकसित कएल जाए जाहिसँ एकर भविष्यक संभावना बनल रहत आ नीक शिक्षाक ई एकटा उदाहरण बनए। एकरा पएबाक हेतु भारतक बहुभाषी प्रतिभाकेँ बचएबाक बहुत प्रयास करबाक आवश्यकता छैक आ त्रिभाषा फार्मूला लागू करबाक सेहो। एहि मध्य अंग्रजी सेहो पढ़ओल जा सकैत अछि, मुदा भारतीय भाषाक मोल पर नहि।

गणितीय चिंतनक विकास गिनतीसँ शुरू भए कए आनन्द पूर्वक आगू बढ़ए बेसी अमूर्त विचार सभक दिस एकरा समर्थन देल जएबाक आवश्यकता छैक। एहि आरम्भिक वर्षमे कक्षा चारि तक पढ़बामे आबएबला समस्या सभकेँ चिन्हि

लेल जएबाक आ भाषा तथा गणितमे ओकर सुधार संबंधी प्रयास सेहो होएबाक चाही।

एहि प्रकारक ठोस प्रयास पर्यावरणक एकीकृत अध्ययनक हेतु सेहो अपनाओल जएबाक आवश्यकता अछि जाहिमे बच्चाकेँ अपन ज्ञानकेँ विद्यालयी ज्ञानक संग मिलाओल जएबाक आवश्यकता छैक, किछु वर्षमे ई अध्ययन बेसी अनुशासनात्मक दृष्टिकोण दिस बढ़त मुदा ओकर विषय एकीकृत होअए, ओकर भीतर प्रत्ययक विकासक अवसर होअए ताहि हेतु शब्दावली आ विधाक तरीकाक ज्ञान आवश्यक अछि।

कला आ शिल्पक अध्ययन आवश्यक उपाय अछि मात्र सौन्दर्य बोधेक विकासक हेतु नहि अपितु कार्यक हेतु आवश्यक सामान बनएबाक कला, रुखि आ शिक्षाक विकासक हेतु सेहो। पाठ्यक्रमकेँ बच्चाकेँ व्यावहारिक जीवनक शिक्षा आ विभिन्न प्रकारक कार्यक अनुभव करएबामे सक्षम होएबाक चाही । खेल कूदक माध्यमसँ शारीरिक विकास सेहो आवश्यक अछि। विद्यालयी अध्ययनक क्रममे तरह तरहक गतिविधि सभ कराओल जएबाक चाही जाहिमे सांस्कृतिक कार्यक्रममे भाग लेब, कार्यक्रमक आयोजन, विद्यालयक बाहर घूमब, एहन अवसर देब जाहिसँ रचनात्मकता आ आत्मविश्वासक विकास हो, जाहिसँ बच्चा रचनात्मक, आत्मविश्वासी तथा आनक प्रति संवेदनशील होअए आ शुरुआत करबाक आ जिम्मेदारी बहन करबामे समर्थ होअए। निर्देशन एवं मंत्रणा देबाक कार्यक पृष्ठभूमि रखएबला शिक्षक गण, एहन कार्य कलापक योजना एवं ओकर नेतृत्व कए सकैत छथि जे बच्चाक विकासात्मक आवश्यकताक पूर्ति करए आ एहि तरहेँ ओकर स्वयं एवं कार्य क्षेत्रक संसारक विषयमे आवश्यक अवधारणाक विकासमे मदति करए। ओ लोकनि समाजक विविध वर्गसँ अबएबला छात्र सभकेँ प्रारम्भिक विद्यालयी अवस्थामे आवश्यक मदति आ मार्ग दर्शन कए सकैत छथि।

पाठ्यक्रमक झुकाव पाठ्यक्रम आधारित होअए नकि परिणाम आधारित ।विकासक ई सभ अवसर छात्रकेँ देल जएबाक चाही। ओकरो जाहिमे किछु अक्षमता सेहो होअए। एकर ध्यान राखल जएबाक चाही जे पाठ्यक्रम प्राथमिकता, अभिरुचि आ विभिन्न समुदायक सामर्थ्यकेँ लय कए रूढ़ि केँ बढ़बा देनिहार नहि हो। एहि

संदर्भमे कार्यक नाम पर क्रमशः – व्यावसायिक शिक्षा कें अपनओनाइ समावेसी पाठ्यक्रमक महत्वपूर्ण पक्ष भए सकैत अछि।

3.10.3 माध्यमिक विद्यालय :

माध्यमिक विद्यालय गहन शारीरिक परिवर्तन आ परिचय बनएबाक समय होइत छैक। गहन उर्जा आ जीवन्तताक सेहो यैह समय होइत छैक। अमूर्तक संग तर्क संगति आ तर्क शक्तिक प्रयोग केर क्षमता उत्पन्न होइत छैक जाहिसँ छात्रमे बुद्धिमत्ता आ ज्ञानक विकासक गम्भीर भाव अबैत छैक। आत्म केर समाजसँ संबंध सेहो एही समयमे उत्पन्न होइत छैक।

एहि स्तर परपाठ्यक्रमक सामान्य लक्ष्य विविध अनुशासनक विषयमे जानकारी बढ़ाएब आ ओकर क्षमततासँ छात्रकें परिचय कराएब आ ओकर सम्भावना केर विषयमे बताएब होइत अछि। एहि तरहक चर्चासँ ओकर अपन अभिरुचिक विकास होइत छैक ओ ओकर अन्दाज अपनहुँ करए लगैत अछि जे कोन प्रकारक पाठ्यक्रम ओकरा भविष्यमे अपनएबाक चाही। एहि तरहक आवश्यकताक पूर्ति प्रशिक्षित शिक्षक आ पेशेवर मार्गदर्शकक व्यवस्थित मार्गदर्शन, उपदेशक माध्यमसँ भए सकैछ। पैघ संख्यामे बच्चाक हेतु ई वैकल्पिक चरण होइत छैक, विद्यालय छोड़ि कए उत्पादक शिक्षा सिखबाक अपनएबाक। पैघ संख्यामे बच्चा सभकें सामाजिक आर्थिक कारणसँ पढ़नाइ छोड़ए पड़ैत छैक आ ओ कार्यक हेतु आवश्यक क्षमता प्राप्त करबामे लागि जाइत अछि। पुस्तकालय आ प्रयोगशालाक सुविधा आवश्यक होअए आ एकर प्रयास होअए जे सभ छात्रक एहि सुविधा धरि पहुँच हो।

ई सभ दू वर्ष धरि बोर्ड परीक्षामे सम्मानजनक अंक अनबाक प्रेतसँ ग्रसित रहैत अछि किएक तऽ एहि परीक्षाक प्राप्तांक भविष्यक विकल्पकें निर्धारित करैत अछि। विद्यालय सभक दिससँ गर्वक संग कहल जाइत अछि तऽ दशमीसँ पहिनहि सत्रक समाप्ति धरि पाठ्यक्रम पूरा कए देल जाइत छैक । परीक्षा आधारित एहि शिक्षाक बदलावक आ चुनौती देल जएबाक आवश्यकता छैक । की बच्चा सभकें सभसँ उत्पादक समय एक वर्ष अथवा ओहिसँ बेसी समय धरि एहि तरहक गैर उत्पादक कार्यमे बर्बाद कएल जएबाक चाही ? की ई संभव नहि अछि जे साल

भरि संतुलित ढंगसँ शिक्षा देल जाए जाहिसँ परीक्षाक तैयारी सेहो भरिसक बेसी नीक ढंगसँ भए सकए । परीक्षाक नाम पर पाठ्यक्रममे खेल कूद आ कलाक विषयसँ सामंजस्य कएल जा सकैत अछि। ई आवश्यक अछि जे एहि विषयकेँ बचाओल जाए आ एहि संबंधमे गम्भीर प्रयास कएल जएबाक आवश्यकता छैक जे एहि अवधिमे कार्यकेँ सार्थक प्रयाससँ जोड़ल जा सकए।

देशक बेसीरास बोर्ड एहि समयमे कोनो वैकल्पिक पाठ्यक्रमक अवसर नहि दैत छैक : दूटा भाषा (जाहि मे एक अंग्रेजी) गणित, विज्ञान आ समाज विज्ञान परीक्षोपयोगी विषय थिक एहि समूहमे गणित आ अंग्रेजीक पाठ्यक्रम, जे छात्रक असफलताक पैघ कारण होइत छैक, केँ फेरिसँ बनएबाक आवश्यकता छैक। परीक्षामे 'पास- फेल' केर अवधारणाकेँ सेहो बदलल जएबाक आवश्यकता छैक आ 'उत्तीर्ण'क मतलबक सेहो समीक्षाक आवश्यकता छैक। एहिसँ जुड़ल मुद्दा सभक चर्चा अध्याय 5 मे सर्वांगीन विकासक खण्डमे देल गेल अछि।

किछु बोर्ड छात्र सभकेँ अर्थशास्त्र, संगीत आ भोजन पानिमेसँ वैकल्पिक विषय चुनबाक अवसर दैत छैक। एही प्रकारक विकल्पकेँ बढ़ाओल जएबाक चाही आ बेसी पारम्परिक विषय सभकेँ एहिमे सम्मिलित कएल जएबाक विषयमे सोचबाक आवश्यकता छैक । व्यावसायिक पाठ्यक्रम सेहो शुरू कएल जा सकैत अछि। स्थानीय समुदायमे कार्य करबाक हेतु कएक तरहक विकल्प ताकल जा सकैत अछि, उदाहरणार्थ गैरेजमे गाड़ीक देखरेख, दर्जीक कार्य आ चिकित्सा सँ जुड़ल सेवा सभकेँ जोड़ि कए सार्थक वैकल्पिक विषय बनाओल जा सकैत अछि। विद्यालय बोर्ड एहि तरहक ज्ञानकेँ मान्यता दए सकैत अछि आ एहि तरहक अनेक विषयकेँ सेहो मान्यता दए सकैत अछि जकर शिक्षा विद्यालयसँ बाहर हो। हमर सभक देशमे अनेक व्यावसायिक पाठ्यक्रममे स्तरक ह्रास भेल अछि आ ओ छात्र सभकेँ कार्यो भरिक सार्थक शिक्षा देबामे असफल रहल अछि। कएक मामलामेँ तऽ पाठ्यक्रम एहन होइत छैक जे पते नहि चलैत अछि, जे शिक्षा नौकरी प्राप्त करबाक लेल लेल जा रहल अछि अथवा नौकरी लेबाक हेतु।

3.10.4 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय :

उच्च माध्यमिक अवस्थामे अकादमिक आ व्यावसायिक पाठ्यक्रमक दशाक समीक्षाक आवश्यकता छैक-बोर्ड परीक्षा आ नामांकन परीक्षा पर बेसी जोर तथा तथाकथित अकादमिक संरचनाकेँ बेसी महत्व देल जएबाक कारण जाहिमे व्यावसायिक शिक्षाक विकास ठीक ढंगसँ नहि भए पाबि रहल अछि। एहि दू सालक अवधि मे अपन रुचि आ योग्यताक आधार पर भविश्यक योजना बदबैत अछि।

अध्ययनक हेतु वैकल्पिक पाठ्यक्रमक चयनक अवसर देल जएबाक संभावना जाहिसँ व्यक्ति ज्ञानक विभिन्न क्षेत्रक संधान कए सकैत अछि, एहि स्तर पर महत्वपूर्ण अछि आ व्यक्तिगत महत्व आ रुचि आ भविष्यक हेतु अवसर प्रदान करैत अछि। अनुशासनक संधान आ समृद्ध अंतर अनुशासनिक ढंगसँ समस्याक समाधान एहि चरणमे संभव भए सकैत अछि। एहन विश्लेषण सभकेँ मान्यता देल जएबाक आवश्यकता छैक जे विषय अंदर आ बाहर चलैत रहए।

बेसी रास बोर्ड कएक तरहक पढ़ाइक अवसर दैत अछिजे अनिवार्य भाषा पाठ्यक्रमक अतिरिक्त होइत अछि। ओहि औपचारिक अथवा अनौपचारिक बाधाक विषयमे सोचबाक आवश्यकता छैक जे छात्रकेँ पढ़बाक विषयक चयनक संकीर्ण विकल्प प्रदान करबाक कारणेँ होइत अछि। कएक बोर्ड विज्ञान, कला, वाणिज्य केर रूपमे विषय समूहक बाधा उत्पन्न करैत अछि। सी.बी.एस.इ. छात्रकेँ विषय समूह चुनबाक संभावना पर रोक नहि लगबैत अछि मुदा किछु समूहक बढ़ैत आ विषयक आपसी स्तरकेँ ध्यानमे रखैत एहिमेसँ कएक गोट विकल्प आब छात्रक हेतु बन्द कएल जा चुकल अछि संगहि विश्वविद्यालय सभकेँ सेहो अपल नामांकन प्रक्रियाक समीक्षा करबाक आवश्यकता छैक किएक तऽ नामांकन बारहमी स्तर पर पढ़ाओल जाएबला विषयक आधार पर कएल जाइत अछि। परिणामस्वरूप कएकटा महत्वपूर्ण विषय आ विषय समूह उदाहरणतः भैतिकी, गणित, दर्शन,साहित्य, जीव विज्ञान आ इतिहास छात्रक हेतु बन्द भए जाइत अछि।

आइ काल्हि विद्यालय मेकिकल आ इञ्जिनियरिंग केर पाठ्यक्रमक आधार पर पाठ बनबैत अछि आ कृत्रिम रूपसँ ओहिसँ बन्हि लाइत अछि लोकप्रियता आ समयसारणीक नाम पर । देशक कएक भागमे ले छात्र कला आ कोनो उदार विषय पढ़ए चाहैत छथि तकरा संग बेसी विकल्प नहि रहि जाइत छैक।

विद्यालय छात्र सभकेँ अपारंपरिक पाठ्यक्रम अपनबए सँ सेहो हतोत्साहित करैत छैक, बेसीकाल समय सारणीक नाम पर हमर सभक हिसाबसँ छात्र सभक हेतु सभटा अवसर फुजल रखबाक चाही। यदि कोनो विद्यालयमे कोनो विषयमे बेसी छात्र नहि हो तऽ आसपासक विद्यालय सभ सँ गप्प कएल जा सकैत अछि जाहिसँ ओ ओहि विषयक शिक्षक उपलब्ध कराए सकए । एहि तरहक शिक्षकक व्यवस्था ब्लौक स्तर पर सेहो कएल जा सकैत अछि जे एहन विषय पढ़ाए सकथि जे साधारणतया ओतए उपलब्ध नहि होइत अछि। विद्यालय बोर्ड सभकेँ विषय अथवा विषय समूहकेँ लोकप्रिय बनएबाक दिशामे सक्रिय भूमिकाक निर्वहन करबाक चाही।

बारहमी धरि अध्ययनक विषय अपन अनुशासनक समकालीन आ वर्तमान विकासक अनुकूल होएबाक चाही। अनुशासनक देबालकेँ कम कए अन्तर अनुशासनात्मक दृष्टिकोण विकसित करबाकचाही। छात्रकेँ अनुशासन आ क्षेत्रक अन्तर्गत ओहि समयक कोनो महत्वपूर्ण ज्ञान क्षेत्रकेँ पढ़बाक छूट देबाक हेतु पाठ्यक्रमक एहन आकार बनाओल जा सकैत अछि जाहिसँ ओहिमे विकल्पक प्रावधान रहए ओहिमे बहुत सूचना सामिल कए ओकरा ठसाठस भरि देबाक बदलामे। उदाहरणार्थ इतिहासमे पुरातत्वक विकल्प देल जा सकैत अछि, तहिना भैतिकीमे खगोल विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान आ राकेट विज्ञानक विकल्प देल जा सकैत अछि ।

पाठ्यक्रमकेँ सभ किछुसँ भड़बाक दवावक कारणेँ ज्ञानक कएक गोट महत्वपूर्ण पक्ष प्रायोगिक आ क्षेत्र भ्रमण संदर्भ कार्य, प्रोजेक्ट प्रस्तुतीकरण आदि पाछू छुटि जाइत अछि जाहिसँ शिक्षामे ह्रास भए रहल अछि । सुसज्जित पुस्तकालय आ प्रयोगशालाक कम्प्यूटर धरि पहुँच आवश्यक छैक आ एहि बातक सभटा प्रयत्न कएल जाए जे विद्यालय आ जुनियर महाविद्यालय एहन संसाधनसँ भड़ल पुरल रहए।

व्यावसायिक शिक्षा वस्तुतः ओहन लोककेँ ध्यानमे राखि कए शुरू कएल गेल छलैक जे काजमे ओहि लोक सभसँ पहिनहि लागि जाइत अछि जे पारंपरिक अकादमिक धारा पास कएकेँ ओहिमे अबैत अछि अथवा अध्ययन आ अनुसंधानक हेतु अबैत अछि। हम सभ व्यवसाय आ अकादमिककेँ मिलाए देबाक विचार तीन कारणसँ दैत छिऐक - पहिल, व्यवसायक बदलैत दृष्टिकोण सेहो

एकटा एहन उदार पाठ्यक्रमक माङ करैत अछि जे कार्य आ ओकर कौशलक अकादमिक जाँच कए सकए ओहिसँ सम्बोधित अनुशासनिक मदतिसँ। दोसर, जे अकादमीक अनुशासनक शिक्षा ग्रहण कए रहल होथि सेहो एहि प्रकारक पाठ्यक्रमक अध्ययनसँ अपन विकल्प बेसी नीक बनाए सकैत अछि। अन्ततः उर्ध्व आ क्षैतिज गमन भए सकैत अछि यदि दूक बदलामे एकहिटा अनुशासन रहए। किछु समयक बाद विकल्प सभकेँ अपनामे जोड़ि कए ओकरा प्रस्तावित वेट(भी.आइ.टी.) सँ जोड़ल जा सकैत अछि।

एहि स्तर पर विकासक प्रकृतिकेँ देखि कए प्रशिक्षित व्यवसायपरक व्यक्ति सभसँ विचार- विमर्श छात्र सभकेँ निश्चित कराओल जएबाक चाही। स्व रोजगार चेतना रोजगार तकबाक आ ओकर योजनाक हेतु छोट परिसंवाद सेहो बहुत आवश्यक अछि।संगहि ई समय किशोर वयक होइत अछि- व्यक्तिक जीवनक एहन समय जाहिमे ओ परिवार , मित्र मंडली आ वि?ालयी परिथिति सँ सामंजस्य बैसएबाक हेतु व्यक्तिगत, सामाजिक आ मानसिक समस्यासँ लड़ि रहल होइत अछि। विद्यालयमे एहि सुविधा सभक उपलब्धता बढ़ैत अकादमिक आ सामाजिक दवावकेँ सहन करबामे मदति आ सहयोग करत।

3.10.5 फुजल विद्यालय आ सेतु विद्यालय :

राष्ट्रीय फुजल विद्यालय केर संग शुरू भएकेँ कएक गोट राज्यमे फुजल विद्यालय बोर्ड(ओपन स्कूल बोर्ड) कार्यरत अछि आ ओ छात्र सभकेँ बेसी विकल्प प्रदान कए रहल अछि। ओ जे विषय चयनक हेतु दैत छैक से व्यापक छैक। परीक्षा देबामे विशेष नरमी दोसर बोर्ड सँ क्रेडिट स्थानान्तरणक सुविधा संग फुजल विद्यालय सर्टिफिकेट देबाकेँ मानवीय बनौलक अछि। फुजल विद्यालयक विषयमे जानकारी आ ओहि तक पहुँच किछु कठिनाह छैक संगहि ई धारणा सेहो प्रचलित अछि जे अन्य बोर्डक परीक्षासँ ओकर समतुल्यता रहत अथवा नहि। एहि परीक्षा सभक अन्य बोर्ड स्तरक परीक्षाक संग आयोजन निर्धारित करबासँ ईहो निश्चित भए सकत जे छात्रक साल नष्ट नहि हो।

सेतु पाठ्यक्रम (व्रिज कोर्स) देशक कएक भागमे ओहि छात्र सभकेँ सक्षम बनएबाक हेतु चलाओल जाइत अछि जे विद्यालयसँ बाहर कोनो कार्यक्रममे

पठाओल गेल आ बादमे घूमिकए अपन वयसक हिसाबसँ कक्षामे दए देल गेल। मध्य सत्रमे आवश्यक होइत अछि जे खूब बूझल गमल कार्यक्रम हो जे पाठ्यक्रमक आवश्यकताकेँ पूरा करएबला होअए । एहिसँ किछुओ कम ओहि तरहक कमी होएत जकरा छात्र पहिनहि भोगि चुकल अछि आ ओकर अधिकारक गप्पकेँ गम्भीरतासँ नहि लेल जाइत अछि। गम्भीर शोध आ शिक्षाक विकासक सामग्री एहन कार्यक्रम सभक सफलताक हेतु आवश्यक होइत अछि। ओकरा लागू करब आ बच्चाकेँ विद्यालयमे राखल जएबाक बाद लगातार अकादमीक आ सामाजिक समर्थन अत्यावश्यक भए जाइत अछिं ।

3.11 आकलन आ मूल्यांकन :

भारतीय शिक्षामे मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव आ चिंतासँ जुड़ल अछि। पाठ्यक्रम, परिभाषा आ नवीकरण सभ प्रयास व्यर्थ भए जाएत यदि मूल्यांकन आ परीक्षा ओकरा संग रहए । हम सभ एहि बात केँ लएकेँ चिंतित छी जे शिक्षा आ अध्यापनकेँ सार्थक आ आनन्ददायक बनएबाक प्रभाव पर परीक्षाक कुप्रभाव नहि पड़ए। वर्तमान विद्यालय पूर्व दौड़हिसँ शुरू कएकेँ बोर्ड परीक्षा सभ नकारात्मक रूपसँ सभ आकलन आ परीक्षाकेँ प्रभावित करैत अछि।

संगहि एकटा नीक मूल्यांकन आ परीक्षााक व्यवस्था ज्ञानक प्रक्रियाक एकीकृत अंग भए सकैत अछि आ ओहिसँ अध्येताक संग संग शिक्षा व्यवस्थाकेँ सेहो ओकर अनुसंधानक लाभ उठएबाक चाही। ई खण्ड शुरू होइत अछि विद्यालयक सामान्य पढ़ाइ- लिखाइक मूल्यांकन आकलनसँ जे पाठ्यक्रमसँ संबंध रखैत अछि। परीक्षा व्यवस्था आ बोर्ड परीक्षासँ जुड़ल मुद्दा पर विचार अध्याय 5 मे कएल गेल अछि।

3.11.1 आकलनक उद्देश्य :

शिक्षाक संबंध सार्थक आ फलदायी जीवनक हेतु कविकेँ तैयार करब होइत अछि। आ मूल्यांकनक संबंध एहन विश्वासपरक मूलयांकनसँ होएबाक चाही जे कोन स्तर धरि हम सभ वर्ममान शिक्षाकेँ प्रयोग करबामे सफल रहलहुँ अछि।

एहि नजरिसँ मूल्यांकनक वर्तमान प्रक्रिया अपर्याप्त अछि आ ककरो शिक्षाक लक्ष्यक पूर्तिक प्रति क्षमताक विकासक ठीक चित्रण नहि कए पबैत अछि।

मुदा मूल्यांकनक एहि सीमित उद्देश्यकेँ पूरा करबाक हेतु विद्वत्तापूर्ण आ अकादमिक विकास तखनहि सम्भव अछि जखन शिक्षककेँ पहिनहि सँ ओकर प्रशिक्षण कराओल जाए। मात्र आकलनक तकनीकेक विषयमे नहि अपितु मूल्यांकनक आधार आ ओहिमे उपयोगमे आबएबला विविध उपकरणक विषयमे सेहो। विद्यार्थीक उपलब्धिक अतिरिक्त एकटा शिक्षककेँ अपन प्रदर्शनक आकलन परक अध्ययन करब सेहो अएबाक चाही जे हुनक विद्यार्थी कोन क्षेत्रमे केहन प्रदर्शन कए रहल अछि। आकलनक उद्देश्य निश्चित रूपसँ शिक्षाक प्रक्रिया आ सामग्रीकेँ बेसी नीक बनओनाइ थिक आ विभिन्न विद्यालयक संदर्भमे ओकर लक्ष्यक परीक्षण करब जे कोन सीमा धरि छात्रक क्षमताक विस्तार भए रहल अछि। कहब आवश्यक नहि जे सामान्य दैनिक गतिविधि सभ आ अभ्यासकेँ प्रभावी ढंगसँ शिक्षाक प्रक्रियाक आकलनक कार्यमे लगाओल जा सकैत अछि।

नीक जकाँ कएल गेल आकलन आ नियमित टिप्पणी छात्र सभकेँ ओकर तैयारीक विषयमे बतबैत अछि जाहिसँ ओ अपन स्तरमे सुधार कए सकए। ओ अभिभावक सभकेँ सेहो हुनक बच्चाक तैयारीक आ विकासक विषयमे बता पबैत अछि। ई प्रतियोगिता बढ़बए बला माध्यम नहि थिक। यदि बेसी नीक शिक्षाकेँ अपनएबाक अछि तऽ छात्रकेँ बाँटि कए पद बँटबासँ आ बच्चा सभमे हीन भावना भरिकेँ नहि भए सकैत अछि।

अन्तिम विश्वसनीय आकलनक विषय – अध्ययनकेँ पूरा भेला पर एकटा सर्टिफिकेट देअए जाहिमे शिक्षाक मात्रा आ सीमाक विषयमे जानकारी हो। लोकप्रिय धारणा अछि जे मूल्यांकनसँ सुधार भए सकैत अछि जकरा शिक्षा द्वारा उत्पन्न कएल जा सकैत अछि – ई पाठ्यक्रम निर्माणमे बहुत समस्या ठाढ़ कएलक अछि। सुधार शब्दकेँ सीमित कए देल जएबाक चाही। ओहि तरहक अध्ययन अथवा ओहि बच्चाक अध्ययन तक जे अंक गणित सनक विषय पढ़ि रहल होअए। सुधारक हेतु किछु विशेष प्रकारक पाठ्य सामग्री तैयार करबाक आवश्यकता होइत छैक जाहिसँ छात्रसँ व्यक्तिगत आधार पर ओकरा दूर कएल जा सकए।

जकरा पढ़बा आ अक्षरक ज्ञान प्राप्त करबामे असफलता आ अक्षरकेँ पढ़बासँ संबंधित अथवा संख्यात्मक (खास कएकेँ गणितीय गणनाक सांकेतिक पक्ष आ दसमलव पद्धति अंकक स्थान इत्यादि) मामलामे कठिनाइ अबैत छैक तकरा सक्षम बनाबी। शिक्षककेद्द उपचारात्मक परीक्षणक हेतु विशिष्ट परिक्षणक आवश्यकता छनि जे हुनकर उपचारात्मक परीक्षणमे मदति करतनि। ईक तहिना उपचारात्मक कार्यक हेतु विशेष रूपसँ विकसित सामग्री आ योजना चाही जाहिसँ शिक्षक एहि कार्यक हेतु बच्चाकेँ एक एक कएकेँ समय दए सकथि । शुरुआत एहिसँ भए सकैत अछि जे ओ की जनक्त अछि आ ओकरा की बुझबाक आवश्यकता छैक केर एकटा नियमित आकलनक प्रक्रिया आ एकटा सतर्क अवलोकनक माध्यमसँ बुझब ।

मूल्यांकनक ई उद्देश्य नहि थिक :

- बच्चाकेँ दवावमे अध्ययनक हेतु प्रेरित करब।
- बच्चाकेँ नाम देब जेना भुस्कौल, तेज, समस्यात्मक विद्यार्थी। एहन विभाजन अधिगमक समय जिम्मेदारी विद्यार्थी पर दए दैत छैक आ शिक्षा शास्त्रक भूमिका आ उद्देश्यकेँ गौन कए दैत अछि।
- ओहि बच्चा सभकेँ चिन्हब जकरा उपचारात्मक शिक्षणक आवश्यकता छैक एहिमे औपचारिक मूल्यांकन कएने विना शिक्षक शिक्षणेक क्रममे शिक्षणक योजना आ व्यक्तिगत ध्यान दएकेँ कए सकैत छथि।
- सिखबाक समस्या सभकेँ आ समस्या क्षेत्रकेँ चिन्हब पैघ अवधारणात्मक समस्या, मूल्यांकन, भाषा आ औपचारिक परीक्षणसँ चिन्हल जा सकैत अछि। समाधानक हेतु विशेष परीक्षण आ प्रशिक्षणक आवश्यकता छैक।

परिभाषिक शब्दक अत्यंत उपयोग शिक्षण शास्त्रक प्रभाविकतासँ जुड़ल सामान्य समस्या सँ ध्यान हटबैत अछि आ ओ बच्चेकेँ पूर्ण रूपसँ सिखबाक आ ओहिमे असफल होएबाक हेतु जिम्मेदार मानैत अछि।

3.11.2 सिखनिहारक आकलन : छात्रक अधिगमक गुणवत्ता आ परिमाण केर लएकेँ तैयार कएल गेल एकटा सार्थक रिपोर्ट केँ विस्तृत होएबाक चाही। हमरा सभकेँ मूल्यांकनक नव मानकक खोज करबाक चाही। छात्रक कोनो विशेष विषयमे प्रदर्शनक आकलनक अलावा ओकरामे सिखबाक प्रति रुख,रुचि आ स्वतंत्र रूपसँ सिखि पएबाक क्षमताक सेहो आकलन होअए।

3.11.3 शिक्षाक क्रममे आकलन :

रिपोर्ट कार्ड तैयार करबसँ शिक्षक केँ अपनहि छात्रक विषयमे जानकारी भेटैत छनि जे ओहि सत्रक समयमे ओ की सिखलक आ कोन क्षेत्रमे ओकरामे सुधारक आवश्यकता छैक। एहि तरहक रिपोर्ट कार्ड तैयार करबाक हेतु शिक्षककेँ सभ छात्रकेँ प्रतिदिन समय देबाक चाही। एहि आधार पर सभ छात्रक एकटा दैनिक डायरी तैयार कए लेबासँ रिपोर्ट कार्ड तैयार करबामे सुविधा होएत। संगहि भिन्न-भिन्न समयमे तैयार कएल गेल छात्रक नोटिसक सेहो ओकर सिखबाक प्रक्रियाकेँ व्यवस्थित रूप सँ बुझबामे सहायता भए सकैत अछि।

मानल जाइत अछि जे आकलनकेँ शिक्षाक असुविधाकेँ दूर करबाक कार्य करबाक चाही। शिक्षक परीक्षाक समयमे ओकरा नहि बुझि सकैत छथि। शिक्षाके समय मे शिक्षक ओकर गप्पकेँ बुझि सकैत छथि आ ओकरा दूर करबाक उपाय सेहो बताए सकैत छथि।

3.11.4 पाठ्यक्रमक ओ क्षेत्र जे अंकक हेतु नहि जाँचल जा सकैत अछि :

पाठ्यक्रमक सभ विषय परीक्षा द्वारा नहि जाँचल जा सकैत अछि। पाठ्यक्रमक क्षेत्रमे सिखबाक प्राकृतिक विरोधात्मक प्रक्रिया सेहो थिक। एहिमे संगीत, स्वास्थ्य, योग शिक्षा, कला आदि अबैत अछि शारीरिक शिक्षा, कला आदि अबैत अछि। शरीरिक शिक्षा आ योगक कला आधरित अवयवक मूल्यांकन तऽ भए सकैत अछि मुदा स्वास्थ्य पक्षक मूल्यांकनक हेतु लगातार आ स्तरीय अनुमानक आवश्यक्ता वर्तमानमे एकरा सभकेँ पाठ्यक्रममे कम महत्व देल जएबाक चलन छैक। एकरा नहि तऽ ठीकसँ समय देल जाइत छैक आने साधन उपलब्ध कराओल जाइत छैक। किछु दिन सँ ई एहि विषय आ गतिविधि सभकेँ कम महत्वपूर्ण बनाए देलक अछि। ई क्षेत्र स्रोत सामग्री आ पाठ्यक्रमक योजनाक अपर्याप्ततासँ ग्रस्त अछि आ

गम्भीरताक कर्म सँ चिन्हित कएल जाइत अछि। एकरा सभकेँ जे समय विद्यालयमे भेटैत छैक तकर सेहो अन्य विशेष कक्षाक आयोजन कएकेँ बलि चढाए देल जाइत छैक। ई पाठ्यक्रमक ओहि भागक संग समझौता थिक जकर काफी महत्व छैक आ जकरामे काफी क्षमता छैक। यदि हम एकरा हेतु अंक नहियो दिऐक तैयो हम एहि क्षेत्रमे ओकर विकासक आकलन कए सकैत छी । हिस्सेदारी, रुचि लगावक स्तर आ जाहि स्तर धरि क्षमता आ कौशलकेँ तरासल जा सकए ओ निशानी थिक जे शिक्षककेँ एहिमे मदति कए सकैत अछि जे बच्चा एहि गति विधि सभसँ की पाबि आ सिखि रहल अछि। बच्चा सभसँ अपन विषयमे टिप्पणी लिखबएबासँ शिक्षक केँ बच्चाक प्रगतिकेँ बुझबाक अवसर भेटतनि आ ओ पाठ्यक्रम आ शिक्षणशास्त्रीय तरीकासँ सुधारक हेतु पुष्ट पोषण पाबि सकत।

निपुणता :

शिक्षण आ संबंधित आकलनक केन्द्रविंदुकेँ पाठ्यक्रम आ तथ्ययुक्त विषयवस्तुसँ दूर लए जएबाक एकटा प्रचार थिक निपुणता। अधिगमक न्यूनतम स्तर उपागममे दक्षताकेँ विस्तृत उपदक्षता आ उपकौशलमे तोड़ल गेल छैक, ई बुझैत जे एकर कुल योग निपुणता छैक । ई तर्क संगत मुद्दा यान्त्रिक उपकौशलक सूची आ ओकर निष्पत्तिक दृढ़ समय सारणी अधिगमक प्रति चिंता व्यक्त नहि करैत अछि। एहि विस्तृत सूची हेतु अधिगम आ परीक्षणक शिक्षण करब अव्यवहारिक आ शिक्षण शास्त्रक दृष्टिएँ ठीक नहि अछि।

3.11.5 आकलनक प्रकृति आ विधि :

आकलन आ परीक्षा वैध आधार पर आधारित होएबाक चाही। जखन तक बच्चामे परीक्षाक स्मृतिक क्षमताक परीक्षण कएल जाएत तखन धरि पाठ्यक्रमकेँ सिखबाक दिशामे मोड़बाक सभ प्रयास व्यर्थ भए जाएत संगहि ओहिमे मूल्यांकन करैत काल छात्रक चिंतन प्रक्रियाक अध्ययन सेहो होअए जे ओ सूचना कतएसँ

प्राप्त कएलक। ओकर वास्तविक जीवनमे की उपयोग कएलक आ ओकर विश्लेषण आ मूल्यांकन कोन प्रकारेँ कएलक?

आकलनक हेतु जे प्रश्न राखल जाए ओ पुस्तकीय सीमासँ आगू जाएबला होअए, चुनौतीपूर्ण आ फुजल प्रश्न सेहो पुछल जाए। नीक प्रश्न तैयार करब एकटा कला थिक आ जिला तथा राज्य स्तर पर प्रतियोगिता करबाएकेँ एकरा बढ़ाबा देल जा सकैत अछि। प्रश्न एही तरहेँ होअए जे ओ छात्रमे आत्मविश्वासक विकास करए।

प्रश्नक प्रकार जेकि आकलनक हेतु सेट कएल जाइत अछि तकरा पाठ्य पुस्तकमे देल गेल प्रश्नसँ अलग होएबाक चाही। बेसी काल बच्चाक अधिगममे बाधा पहुँचैत छैक जखन शिक्षक बच्चाक उत्तरकेँ स्वीकार नहि करैत छथि किऐक तँ ई उत्तर गाइड पुस्तकमे देल उत्तरसँ भिन्न होइत छैक।

एकटा नीक एवं असरदार फुजल किताब परीक्षाक उपाय करब एकटा चुनौती छैक जाहि हेतु हमरा सभकेँ विद्यालयक प्रत्येक स्तर पर पाठ्यक्रममे प्रयास करबाक चाही। एकरा हेतु शिक्षक आ परीक्षककेँ अधिगमक, अनुप्रयोग आ विश्लेशण पर बल देबाक आवश्यकता छैक नेकि ओहि तथ्य पर जे ओहि पाठ्यपुस्तक मे देल गेल होअए। किछु सफल प्रदर्शन छैक जतए एहि प्रकारक परीक्षा वृहद स्तर पर कराओल गेल आ शिक्षक सभ पर एहि परीक्षाक परिणाम निकालबाक भार देल गेल । एहि प्रकारसँ प्रोजेक्ट आ प्रयोगशाला कार्यकेँ सेहो मजबूत आ विश्वसनीय बनाओल जा सकैत अछि।

ई महत्वपूर्ण अछि जे जाँचल गेल पुस्तिका सभकेँ प्राप्त कएलाक बाद बच्चा अपन उत्तर फेरिसँ लिखए आ शिक्षक ओकरा फेरिसँ देखथि आ निश्चित करथि जे बच्चा की सिखलक अछि ।

प्रतियोगिता अभिप्रेरणा दैत अछि मुदा ई अभिप्रेरणा आन्तरिकक बदलामे बाहरी रूप थिक। चूकि ई आसान विधि अछि तेँ शिक्षक आ विद्यालय उत्कृष्टताक प्रेरणा देबाक हेतु बेसीकाल इएह विधि अपनबैत छथि । विद्यालय सभ पूर्व प्राथमिक वर्षहिसँ बच्चा सभकेँ श्रेणीबद्ध करब आरम्भ कए देलक अछि जाहिसँ ओकरामे प्रतियोगिताक भावनाक विकास हो। एहि तरहक प्रतियोगिताक भावना अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव दैत छैक आ समयक संग विद्यार्थीकेँ शुरुआत

करबाक योग्यता आ अपन आवश्यकताक पूर्तिक हेतु कएल जाए बला कार्यमे 3चित क्षमता समाप्त भए जाइत छैक । एहि कक्षा गत संस्कृतिक बच्चा पर अस्वस्थ्य प्रभाव पड़ैत छैक जाहिसँ बच्चा स्वकेन्द्रित आ समूह कार्यक हेतु अनुपयुक्त भए जाइत अछि। परीक्षाकेँ अनावश्यक महत्व देल जाइत छैक, बेसीकाल निरीक्षण आ गोपनीयताक कठोर व्यवस्थाक संग। जखन कि भौतिक आ मनोवैज्ञानिक प्रभाव मध्य विद्यालय धरि देखबामे नहि अबैत छैक मुदा ओ बच्चा सभमे उच्च स्तरक तनाव दैत छैक । विद्यालय आ शिक्षक सभसँ पूछल जएबाक चाही जे वास्तवमे एहि अभ्याससँ किछु लाभ होइत छैक। कोन सीमा तक अधिगमकेँ एहन अंक देबएवला आ श्रेणीबद्ध करएबला यन्त्र चाहिऐक।

ग्रेडिंग आ जाँच बच्चाक उपस्थितिमे होएबाक चाही जाहिसँ ओकरा पता लागि सकए जे ओकर उत्तर गलत छैक अथवा सही । आ किएक? बच्चा सभसँ ओकर उत्तरक विषयमे पुछलासँ जे ओ ई उत्तर किएक देलक, शिक्षक लिखल उत्तर सँ आगू जाए सकैत छथि। ई प्रक्रिया मे अंक देबाक निर्णय परक चलन केँ हटा सकैत अछि आ बच्चाकेँ समर्थ बना सकैत छथि, अपन गलतीकेँ बुझबामे आ तकरा द्वारा सिखबामे । कखनहु काल प्रधनाचार्य विरोध करैत छथि ई कहिते जे बच्चाक उपस्थितिमे सुधार वस्तुनिष्ठताकेँ कम करैत अछि। ई वस्तुनिष्ठताक हेतु भटकल मुद्दा अछि जे प्रतियोगिताक व्यवस्थासँ आएल अछि जतए बच्चाक निर्णय तक करबामे विश्वास कएल जाइत अछि। वस्तुनिष्ठताक ई मुद्दा मूल्यांकनमे गलत स्थान पर अछि, जे शैक्षिक लक्ष्यक संग सम्मिलित अछि।

मात्र अधिगम परिणामेटा नहि अपितु अधिगम अनुभवक सेहो मूल्यांकन होएबाक चाही। अधिगमकर्त्ता अपन अनुभवक पूर्णता पर प्रसन्न होअए। एहि प्रकारक अनुभव ओकरा स्वनियंत्रणक योग्यता प्रदान करैत छैक जे सिखबाक हेतु ‘सिखबा’ केर हेतु आवश्यक अछि। एहन सूचना शिक्षकक हेतु सेहो लाभकारी अछि आ अधिगम व्यवस्थाकेँ सुधारबाक हेतु उपयोगमे आनल जा सकैत अछि।

3.11.6 स्व आकलन एवं प्रतिक्रिया :

आकलनक सतहकेँ ओहि प्रक्रियाकेँ बढ़एबाक अछि जे छात्र आ शिक्षक द्वारा लक्ष्य निर्धारित कएल जाइत अछि। पढ़ाइमे सुधारक हेतु प्रतिक्रिया आदिक माध्यमे मूल्यांकन सतत चलएबाक चाहिऐक।

स्तरीकरण आ आकलन छात्रक समक्ष हो जाहिसँ ओ बुझि सकए जे ओ की गलती कएलक आ किऐक ओकरा बुझाओल जएबाक चाही।

बच्चाक संग प्रत्येक कक्षा गत अंतर्क्रिया ओकर अपन मूल्यांकनक हेतु आवश्यक अछि । बहुत छोट बच्चा सेहो अपन विषयमे , जे ओ की कए सकैत अछि आ की नहि, बता सकैत अछि। शिक्षकक भूमिका प्रत्येक बच्चाकेँ अनुभव तथा अवसर प्रदान करबाक थिक जे ओ अपन क्षमताक अनुसार सभसँ बढ़ियाँ सीखि सकए आ ओकर बौद्धिक गुण, शारीरिक स्वास्थ्य, खेल-कूद क्षमता, भावनात्मक एवं सौन्दर्यपरक विकास कए सकए।

रिपोर्ट कार्ड एहन होएबाक चाही जे अभिभावकक समक्ष बच्चाक प्रत्येक क्षेत्रमे विकासक संपूर्ण आकलन प्रस्तुत करए। शिक्षककेँ प्रत्येक बच्चाक विषयमे किछु कहबाक हेतु समर्थ होएबाक चाही जाहिसँ शिक्षकक बच्चाक प्रति व्यक्तिगत ध्यानक अनुभव कएल जा सकए। मात्र शिक्षककेँ नहि बल्कि बच्चा सेहो अपन आकलन कए सकए आ एहि स्व आकलनकेँ सेहो अपन रिपोर्ट कार्डमे दर्शाओल जाए। वर्तमानमे बहुत रास रिपोर्ट कार्ड विषयक क्षेत्रक सूचना दैत अछि परन्तु बच्चाक विकासक आन पक्षक विषयमेँ किछु ने कहैत अछि जाहिमे ओकर स्वास्थ्य, शारीरिक फिटनेस, खेलक योग्यता अबैत छैक । बच्चाक शिक्षा आ विकासक एहि पक्षक विषयमे गुणात्मक कथन शैक्षणिक मुद्दा पूर्ण आकलन दर्शाओत।

3.11.7 ओ क्षेत्र जकर विषयमे पुनर्चिंतनक आवश्यकता अछि :

पाठ्यक्रममे एहन कएक गोट विषय अछि जकर आकलन कएल जा सकैत अछि आ जकर हेतु हमरा सभ लगमे पर्याप्त उपकरण नहि अछि। एहिमे अशिक्षा सामिल अछि जे समूहमे देल जाइत छैक, जेना थ्येटर आदिक शिक्षा, एहन शिक्षा जाहिमे क्षमताक विकास काफी पहिनहि भए चुकल अछि आ जे सावधानीपूर्वक देखल जएबाक मांग करैत अछि।

लगातार आ विस्तृत मूल्यांकने एकमात्र सार्थक मूल्यांकन पद्धति थिक। एहि पर सेहो ध्यान देल जएबाक आवश्यकता छैक जे कोन प्रकारेँ एकर प्रभावी तरीकासँ उपयोग हो। एहिमे शिक्षकक काफी समय आ क्षमता लगैत छैक । यदि एहिसँ छात्रक तनाव बढ़ैत अछि जे ओकर सभ वस्तुक मूल्यांकन भए रहल तऽ एहिसँ शिक्षाक उद्देश्य पराजित होइत अछि। अतः आकलनक एकटा विश्वसनीय संस्थाक गठन होएबाक आवश्यकता अछि जे मूल्यांकनक सीमित रूप अपनाबए आ आकलनक अधिगमनकेँ अर्थपूर्ण रेकॉर्ड बनएबाक हेतु ओकर मूल्यांकनमे किछु आओर पक्षकेँ सामिल करए।

प्रश्न राखब :

एकटा लौह प्लांट आरम्भ करबासँ पहिने कोन चारिटा गप्प ध्यानमे रखबाक चाही ?

केर स्थान पर

यदि एकटा उद्योगपति लौह प्लांट लगबए चाहैत अछि तऽ ओ कोन स्थानक चयन करत ? कोन तरहेँ चिड़ियाक चोंचक आकार अनुकूलनमे सहायक अछि।

केर स्थान पर

अपन लग पासमे देखाएबला साधारण चिड़ै सभक चित्र बनाउ। आकृतिक आधार पर ओकर चोंचक वर्णन करू। ओकर भोजनक की अभ्यास होएतैक आ अहाँक समाजमे ओकरा भोजन कतए भेटैत होएतैक?

3.11.8 विभिन्न अवस्थामे मूल्यांकन :

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा तथा कक्षा 1 एवं 2 क स्तर पर : एहिमे ओकर गुणवत्ताक आकलन होअए, ओकर शारीरिक तथा स्वास्थ्य संबंधी विकास जे दैनन्दिनिक परस्पर भाव पर आधारित होअए ।

कक्षा 3 सँ 8 धरि : एहि स्तर पर मौखिक आ लिखित परीक्षाक कतोक रूप होअए । बच्चाकेँ एकर पता होएबाक चाहिऐक जे ओकर मूल्यांकन भए रहल छैक, मुदा ई प्रक्रिया ओकरा हेतु भयोत्पादक नहि होअए। श्रेणी अथवा अंक वा गुणात्मक उपलब्धिक विषयमे बनाओल गेल अथवा ई जे कोन क्षेत्रमे ध्यान दिअएबाक छैक एहि चरणमे आवश्यक अछि। बच्चा द्वारा स्वयं अपन कएल गेल मूल्यांकन सेहो कक्षा 5 क बाद रिपोर्ट कार्डक हिस्सा बनबाक चाही। परीक्षाक बदलामे रिपोर्टक छोट –छोट अन्तराल पर मूल्यांकन परीक्षण होअए। सत्र आधारित परीक्षा कक्षा 7 क बाद आरम्भ कए देबाक चाही जखन बच्चा मानसिक रूपसँ बेसी सामग्री पढ़बाक आ परीक्षामे प्रश्नकेँ हल करबाले किछु समय बितएबाक हेतु तैयार भए जाइत अछि।

एक बेरि पुनः प्रगति रिपोर्टमे स्वास्थ्य आ पोषण संबंधी सामान्य सूचनाक अलावा छात्रक कुल प्रगतिक विषयमे अभिभावकक परामर्श आ सूचनाक हेतु लिखल जाए।

कक्षा 7 सँ 12 धरिक–माध्यमिक आ उच्च माध्यमिक स्तरः स्व मूल्यांकनक अतिरिक्त पाठ्यक्रमक ज्ञान अभिगमक आधार परीक्षा, प्रोजेक्ट रिपोर्ट आदि होअए। अन्य बातक मूल्यांकन निरीक्षण आ आत्ममूल्यांकन द्वारा होअए।

रिपोर्ट कार्डमे छात्रकेँ ओकर उपलब्धिक आ प्रतिशतता आदिक जानकारी देज जाए । एहिसँ ओकरा अपन अध्ययनक क्षेत्रकेँ बुझबामे मदति भेटत जे कोन विषय पर एकाग्र कएल जाए आ अगिला अध्ययनक विषयमे चयन करबामे सुविधा भए सकत।

000

फोटो

बच्चा सभ पर एहि तरहक बोझ लादब वास्तवमे क्रूड़ता थिक। हमरा अपन पुत्रक मदति हेतु एहि छौड़ाकेँ राखए पड़ल।

(साभार : आर .के. लक्ष्मण – टाइम्स आफ इण्डियासँ)

अध्यायक- 4
विद्यालय एवं कक्षाक वातावरण

4.1 भौतिक वातावरण
4.2 सक्षम वातावरणक विकास
4.3 प्रत्येक छात्रक सहभगिता
4.4 अनुशासन आ सहभागिता प्रबंधन
4.5 अभिभावक एवं समुदायक लेल स्थान
4.6 पाठ्यक्रम स्थल एवं सिखबाक संसाधन
4.7 समय
4.8 शिक्षक लोकनिक स्वायत्तता एवं व्यावसायिक स्वतंत्रता

सामाजिक सम्बंधक तानी-भरनीसँ शिक्षाक प्रारंभ होइत छैक जतए शिक्षक एवं छात्रक पारस्परिक क्रियाकलाप औपचारिक एवं अनऔपचरिक होइत छैक। शिक्षार्थी समुदाय-शिक्षक एवं छात्रक लेल विद्यालय एकटा संस्थागत स्थान थिक। अपन मित्रक संग विद्यालय मैदानमे खेलेनाइ पलखतिक समयमे बेंच पर बैसिकए गप्प कएनाइ, प्रातः कालीन प्रर्थना लेल एवं अन्य उत्सवक आ विशेष अवसर पर एकत्रित होएब, कक्षाक पढाइ, कक्षाक जांच परीक्षासँ पहिने चिंतित भए कए किताबक पन्ना उनटओनाइ आ शिक्षक एवं सहपाठी सभक संग आनन्ददायक यात्रा करब,आदि। एहि क्रियाकलाप सभसँ छात्र सभक मध्य पारस्परिक निकटता बढ़ैत छैक आ शिक्षार्थी समुदायक रूपमे एकटा चरित्रक निर्माण होइत छैक। विद्यालय एकटा स्वरूप निर्मित करबामे शिक्षक गण एवं प्रधनाध्यापकक भूमिका आइओ महत्वपूर्ण अछि, यद्यपि ओ पर्दाक पाछाँ पृष्ठभूमि मे रहैत छथि, विशेष रूपसँ विद्यालयक परीक्षा एवं अन्य विशेष अवसरक दिनचर्याकेँ योजनाबद्ध एवं लागू करबामेँ विद्यालय एवं कक्षाक वातावरणकेँ कोन प्रकारे व्यवस्थित कएल जाए कि

पारस्परिक क्रियाकलाप एवं दोसरकेँ सीखए आ सिखबामे सहयोग करए एवं प्रोत्साहन देअए? विद्यालयकेँ कोन तरहेँ विकसित कएल जाए जाहिसँ बच्चा स्वयंकेँ सुरक्षित, प्रसन्न एवं सहज अनुभव करए और ताहिसँ शिक्षककेँ संतुष्टि होइनि? वातावरणक भैतिक एवं मनोवैज्ञानिक आयाम पारस्परिक सम्बंधित छैक एहि अध्यायमे हमरालोकनि वातावरणक अध्ययन करब ई जनबाक हेतु जे बच्चाक शिक्षाकेँ वातावरण कोना प्रभावित करैत छैक?

4.1 भौतिक वातावरण :

चेतन आ अचेतन रूपसँ बच्चा नियत अथवा अनियत कालमे सेहो अपन विद्यालयक भौतिक वातावरणक सम्पर्कमे निरंतर रहैत अछि, तथापि शिक्षाक लेल भैतिक वातावरणक महत्व पर पर्याप्त ध्यान नहि देल जाइत छैक । कक्षामे प्रायः आवश्यकतासँ अधिक बच्चा रहैत छैक आ, वैकल्पिक व्यवस्था नहि जतबा रहैत छैक से अनाकर्षक आ अरुचिकर एवं बच्चाक संवेदनशील आवश्यकताक अनुकूल नहि। विद्यालयक अनुपयुक्त संरचना शिक्षकक कार्य क्षमता एवं कक्षाक व्यवस्थाकेँ भयंकर रूपसँ कुप्रभावित कए सकैत छैक। वस्तुतः एहि चतुर्दिक भौतिक वातावरणक भूमिका केवल शैक्षणिक गतिविधिकेँ संरक्षण देबा धरि सीमित अछि।

बच्चकेँ जँ ओकर रुचिक स्थानक विषयमे पूछल जाइत छैक तँ प्रायः ओ एहन स्थलक चुनाव करैत अछि जतए चहल-पहल होइक, जे मैत्रीपूर्ण एवं जीवंत होइक। जीव-जन्तु,चिड़ै-चुनमुन्नी,उनमुक्त स्थान, फूलक गाछ-पातक बीच,शंतिपूर्ण वातावरणमे खेलओनाक संग रहब ओ पसन्द करैत अछि। बच्चाकेँ आकर्षित करबाक लेल एवं आकर्षण बनल रहैक ताहि लेल विद्यालयमे एवं एकर लग-पास एहन वस्तु सभक रहब आवश्यक छैक।

प्रकृतिक इजोतसँ कक्षाकेँ प्रकाशित कएल जा सकैत छैक। बच्चा द्वारा बनाओल गेल भिन्न- भिन्न कलाकृति सँ कक्षाक भीतरी देबालकेँ आ विद्यालयक विभिन्न स्थानकेँ सज्जित कए एकरा जीवंत स्वरूप देल जा सकैत छैक। चित्रकला रेखाकृति एवं अन्य कलाकृति केँ देबाल पर सजल देखि बच्चा एवं अभिभावक धरिकेँ एकटा प्रवल भाव संप्रेषित होएतैक जे बच्चाक कार्यक सराहना भए रहल छैक। एहि कलाकृति सभकेँ भिन्न-भिन्न उँचाइक स्थान पर राखल जएबाक चाही

जाहिसँ कि प्रत्येक वयसक बच्चा सहज रूपेँ देखि सकए। अधिकांश विद्यालय जीर्ण –शीर्ण मकानमे संचालित होइत अछि, जे नीरस, अन्हार एवं अनाकर्षक वातावरण प्रस्तुत करैत छैक। विद्यालयक शिक्षक, अधिकारी एवं वास्तुकारक सहयोगसँ साधरण पुनर्नवीकरण कए एकरा बदलल जा सकैत छैक।

विद्यालयक अत्यन्त मूल्यवान पूँजी ओकर भवन छैक। ओकरा सर्वाधिक शैक्षिक मूल्य प्राप्त करबाक चाही। भवनक पुनर्नवीकरण अथवा नवनिर्माण कालमे सृजनात्मक एवं व्यवहारिक संसाधनक प्रयोगकेँ शैक्षणिक मूल्यक अधिकतम विस्तार कएल जा सकैत छैक। भौतिक वातावरणक संवर्धनात्मक परिवर्तनसँ ने केवल सौन्दर्यात्मक परिर्वतन होयतैक बल्कि एकटा स्वभाविक बदलाव होएतैक, जे भैतिक स्थान शिक्षाशास्त्र आ बच्चासँ जुड़ैत छैक। देशक विभिन्न भागक विद्यालय एवं कक्षामे कलाकृतिक स्थायी प्रदर्शनी लागल रहैत छैक। एहि प्रकारक दृश्यावली रुचिक विकासमे समुदाय होउक ,किन्तु पश्चात् नीरस आ आकर्षणहीन भए जाइत छैक। छोट आकारक भित्तिचित्रक सही चुनाव विद्यालयकेँ अधिक आकर्षक बनएबामे उपयुक्त भए सकैत छैक। विद्यालयक देबालक उपयोग बच्चा द्वारा बनाओल कलाकृति अथवा शिक्षक द्वारा बनाओल सारणीक लेल होएबाक चाही , जे प्रत्येक मासमे बदलल जएबाक चाही। एहि ढंगक भित्ति प्रदर्शनीक तैयारी करब एवं प्रदर्शनी लगएबामे सहयोग करब सेहो बच्चाक सिखबाक गतिविधि हेतु मूल्यवान होएत।

अनेक विद्यालयमे क्रीड़ा अथवा बाह्य गतिविधिक लेल मैदान अपर्याप्त छैक। एहिसँ बाह्य गतिविधि द्वारा सीखब सीमित भए जाइत छैक। न्यूनतम उपलब्ध आवश्यक संसाधन एवं सामग्रीसँ सुनिश्चित कएल जाए आ प्रधानाध्यापक संकुल आ प्रखण्ड स्तर पर काज कएनिहार एहि पर जोर देथि आ शिक्षककेँ सहयोग करथि।

एहन लचकदार परियोजनाक समर्थन करबाक चाही जे पाठ्यक्रमक लक्ष्यकेँ प्राप्त करबामे सहायक हो। विद्यालयक प्रायः सभ पहलू पर ई लागू होइत अछि। अनेक शिक्षा शास्त्र जकरा प्रयास पूर्वक प्रोत्साहित कएल गेल छैक, जेना –डी.पी.इ.पी. क परामर्श छैक– कक्षाक वातावरण एहन बनाओल जा सकैत छैक, जाहिमे बच्चा छोट –छोट समूहमे वा पैघ घेरा बनाकए बैसए आ खिस्सा सुनि सकए। एहि ढंगसँ बैसि कए स्वयं लिखि–पढ़ि सकैत अछि, रेडियो, टी.भी. प्रसारणक हेतु बच्चाक निकट पहुँचि सकैत छैक। एहि लेल टेबुल–कुर्सी,बेंच वा

शतरंजीक व्यवस्थाकेँ वैकल्पिक रूप देल जा सकैत छैक। अनेक विद्यालय एहि लचकदार परियोजनाक अनुरूप साज-सज्जाक समानक व्यवस्था कए लेलक अछि। छोटकी चौकी, छोट कुर्सी-टेबुल आ शतरंजी, जाहि पर एक अथवा दूटा बच्चा एक संग बैसि सकए, एहि ढंगक कक्षाक हेतु उपयुक्त होएतैक। विकलांग बच्चा लेल ओकर विशेष आवश्यकताक अनुरूप व्यवस्था कएल जा सकैत छैक। एखनहुँ अधिकांश विद्यालयमे लोहाक भारी भरकम उपस्कर पर व्यय कएल जाइत छैक। बेंच डेस्ककेँ मात्र पतियानीमे लगाओल जा सकैत छैक जे शिक्षक - ब्लैक बोर्ड केन्द्रित शिक्षण प्रणाली केँ प्रोत्साहित करैत छैक। ताहूसँ बढ़ि ई डेस्क सभ ने चौरगर रहैत छैक , तेँ बच्चाक पुस्तक अथवा अन्य सामग्री रखबाक हेतु पर्याप्त जगह नहि रहैत छैक। आ नहि एहिमे पीठकेँ आराम देबा लेल टेक केर व्यवस्था रहैत छैक । एहि प्रकारक उपस्कर सभक निषेध विद्याालय सभमे होएबाक चाही।

विद्यालय एवं कक्षाक अधिकतम उपयोग शिक्षण संसाधनक रूपमे कएल जएबाक चाही। कतिपय जगह पर प्राथमिक विद्यालयक कक्षाक देबाल लगभग चारि फीट धरि कारी रंगसँ पोतल रहैत छैक, जाहिसँ बच्चा तकर उपयोग चित्रकारी अथवा सिलेटक रूपमे कए सकए। किछु विद्यालयक जमीन पर रेखागणितक आकृति बनल रहैत छैक, छात्र तकर उपयोग अन्य शैक्षणिक गति विधिक लेल करैत छथि। कोठलीक एक कोणक उपयोग पाठ्य सामग्री , खिस्साक किताब, पहेली कार्ड आ आन सभ शिक्षण सामग्री रखबाक हेतु कएल जा सकैत अछि। जखन कोनो बच्चा अपन अध्ययन निर्दिष्ट समयसँ पूर्व सम्पन्न कए लेअए, तखन ओकरा कक्षाक एहि कोणमे जा कए स्वेच्छासँ कोनो सामग्री चुनबाक छूट भेटबाक चाही जाहिसँ ओ स्वयं केँ व्यस्त राखि सकए।

भौतिक स्थान सँ सीखब

बच्चा अपन संसारकेँ बहु इन्द्रियसँ अनुभव करैत अछि विशेषतः दृष्टि आ स्पर्श इन्द्रियसँ एक त्रि-आयामी स्थान बच्चाकेँ सिखबाले एक विशेष व्यवस्था दए सकैत अछि कारण जे ओ पाठ्यपुस्तक तथा ब्लैक बोर्डक संग दैत बच्चाक हेतु बह ुइन्द्रिय अनुभव प्रभावित कए सकैत अछि। स्थानिक आयाम, संरचना, आकाश, कोण, गति, तथा स्थानिक विशेषता सभ अन्दर-बाहर,समिति, ऊपर नीचाक उपयोग भाषा विज्ञान, गणित तथा पर्यावरणक मूल अवधारणाकेँ संप्रेषित करबाक हेतु कएल जा सकैछ। ई विचार उपलब्ध तथा नव स्थान पर लागू कएल जा सकैत अछि।

कक्षागत स्थान : खिड़की सुरक्षा जालीकेँ एहि प्रकार बनाओल जा सकैत अछि जाहि पर बच्चा पूर्व लेखन कौशलक तथा भिन्नकेँ करबाक अभ्यास कए सकए, कोणक प्रसारकेँ केवारक नीचाँ कक्षाक आलमारीकेँ पुस्तकालयक रूप देल जा सकैत अछि, अथवा ऊपर लागल पंखाकेँ विभिन्न रंगसँ रङि देल जाए जाहिसँ बच्चा रंग बदलैत चक्कक आनन्द उठाए सकत।

कक्षाक बाहरक स्थान : खम्भाक घटैत बढ़ैत छाह जे सतय बुझबाक विभिन्न तरीका बुझबैत अछि,सूर्यघड़ीक कार्य करैत अछि। शीत ऋतुक विभिन्न पर्णपातीक गाछ जे जड़ि मे पतझाड़ लैत अछि आ गृष्ममे हरियर रहैत अछि,जाहिसँ बाहरक भौतिक वातावरण आरामदेह रहए। एकटा रोमांचक खेल मैदान, पुरान टायरक उपयोग करैत , एक एहन स्थान जतए बस/ट्रेन/पोष्टऑफिस/दोकानक स्थान।

जतए बच्चा माटि आ बालक संग खेलाइत भारतक रेखांकित नक्शामे अपन पहाड़, नदी,घटी बनाएब : स्थानक छानबीन आ खेाज : तीन आयामक छानबीन स्थान आ बाहर प्राकृतिक वातावरण गाछ वृक्षक संग जे बच्चाकेँ छानवीन करबा तथा स्वयं केँ अधिगम सामग्री,रंग, एकान्त आ कोण केँ तकैत, बागवानी करैत बरसातक पानिक एकत्रीकरण देखए आ अभ्यास करबा ले प्रेरित करए।

बच्चाकेँ ओहन क्रिया कलापमे भाग लेबाक हेतु प्रोत्साहित करबाक चाही जे विद्यालय एवं कक्षाकेँ पढ़ाइ-काज -क्रीड़ाक दृष्टिकोणसँ आकर्षक बनाबए। अधिकांश सरकारी विद्यालयमे बच्चाकेँ सफाई करबाक जिम्मेदारी देबाक स्वस्थ परंपरा छैक जे बच्चाक दिनचर्यामे विद्यालयक कार्य केँ सम्मिलित करबाक हेतु प्रोत्साहित करैत छैक। अत्यंत दुःखक बात ई जे एहनो विद्यालय छैक जतए सफाईक काज केवल छात्रासँ अथवा पिछड़ा जातिक बच्चासँ कराओल जाइत छैक। संभ्रान्त वर्गीय विद्यालयक बच्चा सफाईक जिम्मेदारी नहि लैत अछि। सफाईक काज प्रायः सजाएक रूपमे देल जाइत छैक । एहि तरहक व्यवहार लिंग आधार पर कार्यक आवंटन, एवं अरुचिकर कार्यकेँ पिछड़ा जाति समुदायक वंशानुगत कार्यक रूपमे संबद्ध कएनाइ आदि नियम सामाजिक जड़िसँ उत्पन्न भेल आ बढ़ाबा दैत छैक। विद्यालय सर्व साधारणक / सबजाना स्थल थिक। अतः ओहि ठाम समानताक मूल्यक संग -संग श्रम एवं सभ कोटिक कार्यक हेतु सम्मानजनक भाव आ तकर समुचित ज्ञान रहबाक चाही। ई महत्वपूर्ण अछि जे शिक्षक एहि लेल सजग रहथि जे संस्कृतिक मानदंडक आधार पर - ककरा की करबाक छैक -कार्यक बँटबारा नहि करथि । दोसर दिस कक्षाकेँ साफ राखब एवं वस्तु जात यथास्थान राखब आदि कतिपय गतिविधि एहन अनुभव थिक जाहिसँ बच्चा अपन व्यक्तिगत आ सामाजिक जिम्मेदारी - सरोकारसँ परिचित होइत छथि आ अपन कक्षा एवं विद्यालयकेँ यथासाध्य आकर्षक रखैत छथि। पैध समूहक एकटा हिस्सा होएबाक ज्ञान आ एक संग समूहमे कार्य करबाक अपेक्षित क्षमता, बच्चाकेँ कक्षा आ विद्यालयक समूहमे सम्मिलित कराए विकसित कएल जा सकैत छैक।

कक्षाक आकार एक महत्वपूर्ण कारक थिक जे शिक्षककेँ पाठ्यक्रम संपादन प्रक्रियामे कएल गेल विधि आ अभ्यासक चयनकेँ प्रभावित करैत अछि। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अनुभव दर्शओलक अछि जे 1:30 सँ अधिकक अनुपात विद्यालयी शिक्षाक कोनो अवस्थाक हेतु बाँछित नहि अछि। 1966 मे कोठारी कमीशनक रिपोर्टमे चेतावनी देल गेल जे पैघ कक्षा शिक्षणक गुणवत्ताकेँ गम्भीर हानि पहुँचाओत आ भीड़वला कक्षामे सृजनात्मक शिक्षणक सब बात अपन महत्व केँ नष्ट कए दैछ।

- वास्तवमे संरचनात्मक सुविधाक उपलब्धता-सिखएबलाक मददगार आ कार्यकलाप मूलक परिवेशक निर्माणक हेतु अत्यावश्यक अछि। जगह, भवन आ फर्नीचरक स्तरक निर्धारण, नीक स्तर प्राप्त करबाक विचारकेँ पोषित करत।
- स्थानक निर्धारण-आयु, समूहक आकार, शिक्षक-छात्र अनुपात आ कार्यकलापक प्रकृति पर निर्भर करैत अछि।
- भवन- भवन सामग्री,निर्माणक कला आ पद्धति सेहो स्थान आ संस्कृतिसँ- वातावरण, परिस्थिति आ उपलब्धताक आधर पर निर्धारित होइत अछि जखनकि सुरक्षा आ स्वच्छतासँ समझौता नहि कएल जा सकैछ। शौचालयक हेतु अनेक कम लागत बला उपाय सभ उपलब्ध अछि आ आवश्यक नहि अछि जे सम्पूर्ण देशमे एकहि स्तरक विद्यालय भवन होअए।
- उपस्कर- आयुक अनुसार क्रियाकलापक हेतु उचित नियम होएबाक चाही। कार्यकलाप आसपासक सामग्रीक उपयोगसँ होएबाक चाही- प्रयोगशाला आ अन्य निषिद्ध स्थानकेँ छोड़िकए।
- समय-स्थान आ आयुक अनुरूपेँ बनाओल गेल नियम समय सारिणी आ सामयिक कलेण्डर पर सेहो प्रयुक्त होइत अछि।

4.2 सक्षम वातावरणक विकास :

सार्वजनिक स्थलक रूपमे विद्यालयमे समानता , सामाजिक विविधता आ बहुलताक प्रति सम्मानक भाव होएबाक चाही। एहि मूल्यकेँ सजगतापूर्वक विद्यालयक दृष्टिकोणक हिस्सा बनाओल जएबाक चाही आ व्यवहारमे आरम्भहिसँ झलकबाक चाही । सिखबाक हेतु समर्थ शिक्षण वातावरण ओ होइत अछि जतए विद्यार्थी सुरक्षित अनुभव करैत होअए, जतए डरक कोनो स्थान नहि होअए, जे समानताक आयाम पर कार्य करैत होअए आ जकरामे बरावरीक स्थान होअए। बेसी काल शिक्षककेँ एहिमे किछु बेसी प्रयास नहि करए पड़ैत छनि, मात्र समान भाव विकसित करबाक होइत छनि जाहिमे विद्यार्थी सँ किछु विशेष भेद भाव नहि कएल जाए। शिक्षककेँ कक्षामे एहन वातावरणक विकास करबाक चाहियनि जाहिमे विद्यार्थी खुलि कए प्रश्न पूछि सकए। कोनो विषयक पढ़ाइ करबा काल खुलि कए

विद्यार्थी आ शिक्षक अपनामे सम्वाद कए सकथि। जावत धरि ओ ओहिसँ जुड़ल अपन अनुभव नहि बनाओत, अपन शंकाकेँ दूर नहि करत, ओ सिखबाक प्रक्रियाक हिस्सा नहि बनि पाओत। विद्यार्थीक टिप्पणीकेँ अनसूनी करबाक बदलामे तथा चुप्पीकेँ वर्गमे सख्तीसँ लागू करबाक बदलामे यदि शिक्षक विद्यार्थी केँ चर्चाक हेतु उत्साहित करथि तँ शिक्षक देखता जे वर्ग अधिक जीवन्त बनि जाएत आ शिक्षा ओहन एकरस आ नीरस नहि रहि जाएत, अपितु ओ मानसिक अन्तः क्रियाक रोमांचस्थली बनि जाएत। एहि तरहक वातावरण सभ अवस्थाक विद्यार्थीमे आत्मबलक विकास करत। एकर बाद जाकए सिखबाक स्तर उच्च होएत।

शिक्षक आ विद्यार्थी एकटा पैघ समाजक हिस्सा होइत छथि जतए जाति, लिंग,भाषा, धर्म आ आर्थिक स्थिति पर आधरित पहचान सामाजिक अन्तःक्रियाकेँ सूचित करैत अछि। यद्यपि ई विभिन्न सामाजिक,सांस्कृतिक आ धर्मिक संदर्भमे पृथक-पृथक अछि। आदिवासी आ दलित समुदाय, अल्पसंख्यक समुदायक लोक आ स्त्रीगणकेँ अधिकतर अपन पहचानक कारण समाजमे महत्वपूर्ण संसाधनमे बराबरीक अवसर नहि भेटि पबैत अछि आ बहुत तरहक संस्थानमे प्रवेशक अवसर नहि भेटैछ। शोध आ विद्यालयक प्रक्रियासँ पता चलैत अछि जे विद्यालयक विद्यार्थीक पहचान विद्यालयक भीतर ओकरा लएकेँ कएल जाएबला व्यवहारेकेँ पूर्णरूपेण प्रभावित करैछ आ ई सभ किछु ओकरा अर्थपूर्ण आ सिखबाक समान अवसर सँ रोकैत अछि। विद्यालयक अध्ययनक अनुभवक रूपमे बच्चा अनौपचारिक संदेशक माध्यमे शिक्षकक व्यवहार आ विद्यालयक सांस्कृतिक मानक आ मूल्यक रूपमे पर्याप्त ग्रहण करैछ। ई भावक पृष्ठपोषण करैत अछि। 'पुरुषत्व' आ 'स्त्रीत्व'क आवश्यक गुणक भाव ओहिमे भए सकैत अछि,विशेषतः एक तरहक जीवन शैली पर ओहिमे जोर भए सकैत अछि,खास कए शहरी मध्य वर्ग, ओकर अतिरिक्त सभक ओहिमे उपेक्षा होइछ। दलित आ पिछड़ल जातिक लोक, अन्य उपेक्षित वर्ग जेना वेश्याकर्मीक बच्चा अथवा जाहि माए बापक बच्चा एड्स पीड़ित होथि, ओ बहुधा वर्गमे उपेक्षित व्यवहारक शिकार होइत छथि, मात्र शिक्षके द्वारा नहि अपितु अपन सहपाठीक द्वारा सेहो। छात्रा सँ सामान्यतः रूढ़िवादी ढंगसँ भविष्यमे, माए अथवा पत्नीक रूपमे भूमिकाकेँ लएकेँ अपेक्षा होइत छैक, ओकरा अपन क्षमताक विकास आ अधिकारक दावा पेश करबालेल

प्रोत्साहित नहि कएल जाइछ। अपंग बच्चाक संग असहिष्णु व्यवहार होइत अछि।विद्यालयकेँ एकर महत्वक प्रति सजग होएबाक चाही जाहिमे विद्यार्थी सँ जाति, धर्म अथवा कोनो आन आधार पर अनुचित व्यवहारक भाव नहि रहए। दोसर दिस विद्यालयक संस्कृति एहन होअए जे ओकरामे नीक विद्यार्थी बनबा पर जोर होअए आ एहन वातावरण विकसित होअए जतए सभ विद्यार्थीक क्षमता आ अभिरुचिक विकास हो।

औसतन शिक्षक आ विद्यार्थी प्रतिदि 6 धंटा आ वर्षमे 100 घंटा विद्यालयमे व्यतीत करैत छथि। ओ भौतिक वातावरण जाहिमे ओ लोकनि कार्य करैत छथि, समान आरामदेह आ सुखद स्थान होएबाक चाही। एहि हेतु विद्यालयमे न्यूनतम सुविधा होअए जाहिमे आवश्यक उपस्कर, मूल सुविधा(शौचालय, पीबाक पानि) इत्यादि हो।

ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रमे पर्याप्त संख्याते एहन विद्यालय अछि, विशेषतः दलित एवं अनुसूचित जातिक बस्ती पर तथा जतए उपेक्षित वर्गक बहुलता अछि। ई विद्यालय बच्चाकेँ मूल सुविधा सेहो नहि उपलब्ध करबैत अछि जखनकि सरकारी मानक सभक हेतु समान अछि।

शिक्षक,प्राचार्य तथा ग्राम शिक्षा समिति अथवा विद्यालय विकास मोनिटरिंगकेँ राज्यक भौतिक ढाँचागत सुविधाक सरकारी मानक सँ अवगत होएबाक चाही । जतए ई सुविधा पर्याप्त नहि अछि, एकरा उपलब्ध करएबाक प्रयास करबाक चाही जाहिसँ विद्यालयी कार्य कम बाधाक संग आगू बढ़ए। यदि अधिकारिक सहयोग नहि भेटए अथवा ओहिमे देरी होअए तऽ स्थानीय समुदायक सहयोग लेल जा सकैत अछि ओकर सहभागिता तथा इच्छा शक्तिसँ एहि प्रयास केँ सफल बनबैत विद्यालय अध्यापककेँ शैक्षणिक कार्य पर ध्यान देबा मे अधिक सहयोग कए सकैत अछि।

4.3 प्रत्येक बच्चाक सहभागिता :

भागीदारी शब्द अपना आपमे निरर्थक अछि। ई संबद्ध वैचारिक संरचना एकटा अर्थ प्रदान करैत अछि आ राजनीतिक आयाम दैत अछि। उदाहरणार्थ एकटा तानाशाही व्यवस्थामे कार्य करब आ प्रजातान्त्रिक व्यवस्थामे कार्य करबामे बहुत अंतर छैक। आब सभ्य समाजक भागीदारी , विकास चक्रमे आवश्यक भए गेल अछि मुदा सभ्य समाजक प्रकृति आ ओहि भागीदारीक उद्देश्य किछु व्याख्या सँ संचालित होइत रहल अछि जे नागरिकक अर्थ की होइत छैक। आब सभ्य समाजक भागीदारी होइत छैक, आ प्रत्येक नागरिकक भागीदारीक अर्थ गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) केर भागीदारी होइत छैक, आ प्रत्येक नागरिकक भागीदारी-जेना स्थानीय प्रशासनमे -प्रमुख चुनौती उत्पन्न कए रहल अछि।

भारत विश्वक विशालतम आ प्राचीनतम प्रजातन्त्रमेसँ एक थिक ; ई पाठ्यक्रम संरचना एहि बातकेँ ध्यानमे राखि केँ बनाओल गेल अछि। शिक्षा कोनो राष्ट्रक ताना वानाकेँ परिभाषित करैछ आ एहिमे छात्रकेँ प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाक प्रति सकारात्मक अनुभव प्रदान करएबला क्षमता छैक । बीनल कपड़ामे प्रयुक्त धागाक प्रकृति रंग मजबूती आ व्यवहार जकाँ सभ भारतीय बच्चाकेँ प्रजातन्त्रमे भाग लेब आ एकर संरक्षण आ संवर्धनक हेतु अनकासँ वार्तालाप आ सभक निर्माण करब सेहो सिखाओ जा सकैत अछि। ई व्यक्ति सभक बीच परस्पर संबंधक स्तर आ प्रकृतिए अछि जे हमर सभक देशक सामाजिक राजनीतिक संरचनाकेँ निर्धारित करैत अछि। यद्यपि बच्चा सभकेँ बेसीकाल सामसजिक भेदभावक शिकार बनए पड़ैत छैक। बच्चा आ चेतन सभ अपन घरक, समाजक आ आसपासक सांसारिक अनुभवसँ सिखैत अछि । ई बुझब आवश्यक अछि जे वयस्क लोकनि बच्चाकेँ प्रखर सामाजिक -सांस्कृतिक वातावरणसँ परिचय करबैत छथि। एहि वातावरणमे शामिल अछि ओ आदर्श जाहिसँ बच्चा टेलिवीजन आ संसारक अन्य माध्यमक द्वारा परिचित होइत छथि। ई अनुभव जाति, वर्ग, लिंग, प्रजातन्त्र आ न्यायक प्रति ओकर दृष्टिक निर्माणमे सहायक होइत अछि। ई धारणा सभ यदि आ जखन बेरि बेरि एकहि तरहक माध्यम सँ अबैत अछि तऽ ओ मूल्यमे बदलि जाइछ। सामाजिक स्तर पर लोकक समूहकेँ एकहि तरहक अनुभव होइत छैक आ ओ अपनामे ओकरा बटैत अछि जाहिसँ ओ अनुभव संस्कृति आ कखनहुँ काल

सिद्धान्तमे बदलि जाइछ। ई पुनरावृति होमएबला प्रक्रिया थिक आ जतेक बेरि चक्रक आवृति होइत अछि –मूल्य आ संस्कृतिक निर्माण होइत अछि, तखन तक यावत लोकक अनुभव एक दोसरासँ भिन्न नहि होअए। भिन्न अनुभवककेँ, पूर्व अवधारणाकेँ बदलबाक हेतु मजबूत आ वास्तविक होएबाक चाही। यदि पूर्व व्यक्तिगत अथवा सुनल अनुभव अथवा कोनो आदर्श नहि हो तऽ बच्चा 18 वर्षक भेलाक बावजूद लोकतन्त्रमे भाग लेब आ एकर संरक्षण आ संबर्द्धनकेँ नहि बुझि सकैछ ।

बच्चाक भागीदारीक निहितार्थ आओर गम्भीर अछि–सामाजिक बराबरी,लोकतन्त्र,धर्मनिरपेक्षता आ बराबरीक हमर सभक सांस्कृतिक संक्षण आ ओकरा नव उँचाई तक लए जाएब। एहि मूल्य सभकेँ यथार्थमे बदलबाक हेतु संयुक्त आ उचित रूपेँ बनाओल गेल पाठ्यक्रमक आवश्यकता छैक जे छात्रक भागीदारी केँ सुनिश्चित करए। विद्यालयमे वर्तमानमे व्याप्त अस्वस्थ प्रतियोगात्मक वातावरण एहन मूल्यकेँ प्रोत्साहित करैत अछि जे संविधानमे देखाओल गेल मूल्य सभक विपरीत अछि। लोकतन्त्र आ लोकतंत्रक भागीदारीक सकारात्मक अनुभव विद्यालयमे आ विद्यालयक बाहर देल जाए। एहि अनुभवमे बच्चा आ युवा सभकेँ सक्रिय रूपमे शामिल कएल जाए जाहिसँ सम्मिलित करबाक मूल्यकेँ बढ़ाबा भेटैक आ लोकसभ भागीदारी प्रजातन्त्रक मूल्यकेँ बुझि सकए।

लोकतन्त्रक भागीदारीकेँ सुनिश्चित करब सेहो कमजोर आ वांछित वर्गक विकासक महत्वपूर्ण माध्यम थिक । यदि भारतकेँ बराबरी, लोकतन्त्र आ धर्मनिरपेक्षता आधारित राष्ट्र , जतए ओकर सभ नागरिक न्याय,सवतंत्रता, बराबरी आ मेल मिलापक आनन्द उठाए सकए, बनएबाक परिकल्पनाकेँ साकार करबाक अछि, तऽ बचाक भागीदारीकेँ सुनिश्चित करब एहि दिशामे सभसँ महत्वपूर्ण डेग होएत। विद्यालयी व्यवस्थाक सफलताक हेतु कोनो समाजमे आ वृहत रूपेँ पूरा भारत वर्षमे भागीदारीक माध्यमसँ शिक्षा देब सभसँ महत्वपूर्ण अछि। एहिमे विफल रहब, पूरा तन्त्रक विफलतामे परिवर्तित भए जाएब होएत, तेँ एहि मुद्दाकेँ सभसँ पहिने, समाधान करबाक आवश्यकता छैक। ई मात्र गणित अथवा विज्ञानक शिक्षा जकाँ महत्वपूर्णहिटा नहि अछि बल्कि ओहूसँ बेसी किऐक तऽ ई सभ अनुशासनक अनिवार्य अंग थिक। ई एकटा ज्वलंत मुद्दा अछि आ सभ शिक्षा पद्धति आ क्षेत्रमे

जोड़ि देल गेल अछि आ सभ पाठ्यक्रमक निर्माणमे एकरा सर्वोच्च प्राथमिकता भेटलैक अछि।

- इन्कूजन एक नीति थिक, कार्यक्रम नहि।
- विकलांगता एक सामाजिक जिम्मेदारी थिक-एकरा स्वीकार करी।
- समय विशेष शैक्षिक आवश्यकता वला छात्रक विद्यालयमे प्रवेश।
- विशेष शैक्षिक आवश्यकता वला विद्यार्थीकेँ नकारबाक हेतु कोनो प्रकारक चयनक प्रक्रिया नहि हो।
- बच्चा फेल नहि होइछ ओ विद्यालयक विफलता देखबैछ।
- अन्तरक स्वीकृति विविधताक उत्सव।
- इन्कूजन मात्र विकलांगते धरि सीमित नहि अपितु एकर अर्थ थिक कोनो बच्चाक बहिष्कार नहि होएब।
- मानवीय अधिकार सीखू आ मानवीय त्रुटि केँ जीतू।
- विकलांगता समाज द्वारा निर्मित अछि - एकरा तोरू।
- बाधा सभकेँ हटाउ,सुविधा दियौक; बच्चाक संग समायोजित करू ।
- भौतिक, सामाजिक तथा व्यवहार संबंधित बाधाकेँ दूर करू।
- सहभागिता हमर सभक शक्ति थिक; जेना- विद्यालय समुदाय; विद्यालय -शिक्षक; शिक्षक - शिक्षक; शिक्षक - विद्यार्थी, विद्यार्थी - विद्यार्थी; शिक्षक - अभिभावक; विद्यालय तंत्र एवं अन्य तंत्र।
- शिक्षणक सभसँ बढ़ियाँ अभ्यास इन्क्लूजन अभ्यास थिक।
- एक संग मिलि कए पढ़ब प्रत्येक बच्चाक हेतु लाभदायक थिक।
- सहारा देबए बला सेवा सभ -आवश्यक सेवा थिक।
- यदि पढ़ए चाहैत छी तऽ बच्चा सभसँ सीखू।
- कमीकेँ नहि बल्कि शक्तिकेँ चीन्हू।
- अपनामे आदर भाव, आत्मनिर्भरता बढ़ाउ।
- विविध सम्प्रेषण साधन, यथा-ए.ए.सी.,पेन,ब्रेलर,संप्रेषण बोर्ड, इत्यादिक उपयोग करू।

4.3.1 छात्रक अधिकार :

भारत बच्चाक अधिकार पर आधारित संधि (सी.आर.सी.) पर हस्ताक्षर कएलक अछि। एहि संधिक तीनटा सभसँ महत्वपूर्ण सिद्धान्त छैक- भागीदारीक अधिकार, समूह अथवा संगठन बनएबाक अधिकार आ सूचनाक अधिकार। यदि बच्चा आ युवा अपन सभ अधिकारकेँ बुझए चाहैत अछि तऽ ई तीनटा अनिवार्य छैक। सी. आर. सी. मात्र बच्चाक सुरक्षा आ ओकरासँ संबंधित योजना आ सेवा पहुँचएबा मात्रसँ संबंध नहि रखैत अछि बल्कि ओ ईहो सुनिश्चित करैत अछि जे एहि सेवा सभक स्तर आ प्राकृतिक मूल्यांकन ओकरहि ,द्वारा कएल जाए। संगहि ओ बच्चा सभक हितक संवर्द्धन आ संरक्षण सेहो करैत अछि ।

यद्यपि सी.आर.सी. बच्चा सभक ओकरासँ संबंधित गप्पमे विचार देबाक आ वैचारिक स्वतंत्रताक अधिकारकेँ सुनिश्चित करैत अछि। मुदा बेसी काल ओकरा सभकेँ अपन जीवन, कार्य - कलाप आ भविष्यसँ संबंधित विमर्शमे भाग लेबासँ वंचित कएल जाइत छैक। भागीदारीक अधिकार आन अधिकार सभ जेन -सूचना तक पहुँच, संगठन बनएबाक स्वतंत्रता आ स्वतंत्र एवं निष्पक्ष विचार उत्पन्न करबाक स्वतंत्रतासँ संबद्ध अछि। बच्चाक भागीदारी सिद्धान्तकेँ बच्चासँ संबंधित सभ मुद्दासँ जोड़ल जएबाक चाही।

वास्तविकतामे सामाजिक,राजनीतिक आ आर्थिक संरचना एखनहुँ परम्परागत अछि; बच्चा आ युवा, समाजक सभसँ वंचित वर्ग अछि, ओकर असरदार भागीदरी ओकरा सभकेँ संगठित होएबाक अवसर प्रदान करबासँ संबद्ध अछि। संगठन ओकरा सभकेँ दृष्टि, शक्ति आ समूकि स्वर प्रदान करैत अछि। किछु खास व्यक्ति आ 'चुनल' बच्चा अथवा युवा सभक भागीदारीकेँ भेद भावसँ ग्रसित होएबाक भय रहैत छैक आ ई भागीदारी असरहीन होइत अछि किऐक तऽ एहन प्रतिनिधि अनकर नहि बल्कि अपनहिँ प्रतिनिधित्व करैत अछि आ एहिसँ शान्त आ कम जागृत सभ वंचित रहि जाइत अछि तथा एहिमे गड़वरीक संभावना बेसी रहैत छैक।

दोसर दिस, बच्चा आ युवा सभक संगठित भागीदारी, जाहिमे कमजोर वर्गक बचचा सेहो शामिल होअए, बच्चा सभकेँ शक्ति,बेसी सूचना तक पहुँच, आत्मविश्वास, परिचय आ व्यक्तित्व प्रदान करैत अछि। कोनो बच्चा अथवा युवा जे एहि समूहक प्रतिनिधित्व करैत होअय - पूरा समूहक विचार आ आकांक्षाकेँ स्वर दैत अछि। ओकरा सभक एहि ठाम आएब, समस्या समाधानक सामूहिक तरीका सेहो उपलब्ध

करबैत अछि। मुदा ई सुनिश्चित करब आवश्यक अछि जे एहि सामूहिक स्वरक विकासमे प्रत्येक बच्चाकेँ हिस्सा लेबाक अवसर भेटए।

4.3.2 सम्मिलित करबाक हेतु रणनीति :

एकटा सम्मिलित करबाक नीतिकेँ सभ विद्यालयमे आ पूरा शिक्षा व्यवस्थामे एकरा लागू कएल जएबाक आवश्यकता छैक । विद्यालय आ ओहिसँ बाहरक ओकर जीवनक सभ पक्षमे प्रत्येक बच्चाक भागीदारी सुनिश्चित कएल जाए। विद्यालयकेँ एकटा एहन केन्द्रक रूपमे विकसित कएल जएबाक आवश्यकता छैक जे बच्चाकेँ ओकर जीवनक हेतु तैयार करए आ ई सुनिश्चित करए जे सभ बच्चा, खास कए अलग तरहक क्षमतासँ युक्त, पिछड़ल पृष्ठभूमिसँ आएल तथा कठिन परिस्थितिक सामना करैत बच्चा आ शिक्षाक एहि क्षेत्रसँ सभसँ बेसी लाभ उठा पाबए । क्षमता प्रदर्शित करबाक आ मित्र सभक संग ओकरा बँटबाक अवसर – बच्चा सभक विचार आ भागीदारीकेँ पोषित करबाक शक्तिशाली माध्यम थिक। हमर सभक विद्यालयमे हम सभ एकहि छात्रकेँ बेरि बेरि चुनैत छी। यद्यपि ई छोट समूह एहि मौकाक लाभ आत्मविश्वास आ परिचय अर्जित कए उठबैत अछि, बाँकी बच्चा सभ बेरि बेरि निराशाक शिकार होइत अछि आ परिचय आ मित्र मण्डलीक स्वीकृति प्राप्त करबाक प्रतीक्षामे विद्यालयक समय व्यतीत करैत छथि। उत्कृष्ट कार्य आ क्षमताकेँ प्रोत्साहित करबाक चाही मुदा संगहि सभ छात्रकेँ अवसर देल जएबाक आ ओकर विशिष्ट क्षमताकेँ चिन्हबाक आ प्रोत्साहन देल जएबाक आवश्यकता छैक।

एहिमे ओ छात्र सभ शामिल अछि जे शारीरिक अक्षमताक शिकार अछि आ तेँ देल गेल कार्य केँ पूरा करबाक हेतु ओकर बेसी समय मदतिक आवश्यकता भए सकैछ। ताहू सँ नीक ई होइत जे एहन गतिविधि सभक योजना बनएबा कालमे शिक्षक वर्गक सभ छात्र सँविमर्श करथि आ ई सुनिश्चित करथि जे सभ छात्रकेँ योगदानक समान अवसर भेटैक। तेँ ई आवश्यक जे योजना बनएबाक समयमे शिक्ष, सभ छात्रक सहभागिता सुनिश्चित करबा पर ध्यान देथि। एहिसँ शिक्षकक रूपमे हुनकर प्रभाव प्रदर्शित होएत ।

हमर सभक बहुतो विद्यालय, खास कए नीजी विद्यालय सभ, जे शहरी उच्च मध्य वर्गकेँ लक्ष्य कए चलैत अछि,मे प्रतियोगिता आ वैयक्तिक उपलब्धि पर

अत्यधिक ध्यान देल जाइत अछि। बेसी काल, जखनहि बच्चा विद्यालयमे प्रवेश करैत अछि ओकरा एकटा हाउस आवंटित कए देल जाइत छैक। मगर बाद विद्यालयक सभ कार्य कलापक हेतु अंक निर्धारित होइत अछि जे हाउसक अंकक रूपमे जोड़ल जाइत अछि जाहि आधार पर वार्षिक पुरस्कार वितरण होइत अछि। एहि तरहक हाउसक प्रति वफादारीक कारणेँ सभ बच्चा अपन हाउसक हेतु अंक जुटएबाक हेतु प्रयत्नशील आ व्यग्र भए जाइत अछि। एहिसँ शिक्षाक उद्देश्यक सेहो ह्रास होइत अछि किऐक तँ बच्चा अत्यधिक प्रतियोगिताक कारणेँ अनकासँ नीक करबाक उद्देश्य रखैत अछि नहि की किछु नीक आ अपनाकेँ संतुष्ट करएबला कार्यक उद्देश्य । बेसीकाल दोसर बच्चाक ताकएवलाक नजरिक समक्ष रहबाक कारणेँ एहि व्यवस्थासँ सामाजिक संबंध नष्ट होइत छैक, मित्रक बीच संबंध अधलाह होइत छैक आ सहयोग आ अनका प्रति संवेदनशीलता सन नैतिक मूल्यक ह्रास होइत छैक । आवश्यकता एहि बातक अछि जे शिक्षक गण एहि बातकेँ स्पष्ट करथि जे ओ कोन स्तर धरि प्रतियोगिताक भावनाक विद्यालयमे प्रवेश आ विद्यालय जीवनक सभ पक्षकेँ ओहिसँ प्रभावित होमए देबए चाहैत छथि जाहिमे हुनक कार्य, शिक्षा आ रुचिकेँ बढ़ाबा देबाक बदलामे व्यवस्था आ अनुशासन व्यवस्थित राखब छनि ।

विद्यालय सभ छात्रक विविध क्षमता आ योग्यताकेँ संकीर्ण सिद्धान्तक आधार पर अल्प वयसहिमे अवमूल्यन कए दैत अछि। सभ छात्रक व्यक्तित्वक विकास करबाक बदलामे ओ छात्र सभकेँ संकीर्ण आधार पर बँटैत अछि– 'श्रेष्ठ', 'सामान्य', 'सामान्यसँ नीचाँ' आ 'असफल' केर रूपमे। बेसी काल ओकरा एहि श्रेणी व्यवस्थासँ बाहर निकलबाक अवसर नहि भेटैत छैक। एहि श्रेणी व्यवस्थाक बच्चा पर अत्यन्त हानिकारक असर पड़ैत छैक। बच्चा सभकेँ एहि श्रेणी व्यवस्थाकेँ स्वीकार करबाले प्रेरित करबाक हेतु ओ ओकरा सभकेँ 'भुस्कौल' आदि नामसँ बजबैत अछि, बैसबाक व्यवस्थामे भेद उत्पन्न करैत अछि आ किछु एहन विभेद उत्पन्न करैत अछि जे देखार रूपसँ बच्चाकेँ उपलब्धिक आधार पर बँटैत अछि। उत्तर नहि बुझल होएबाक भयसँ बहुतो बच्चा वर्गमे शान्त बेसल रहैत अछि आ एहि तरहेँ भागीदारी आ शिक्षक समान अधिकारसँ वंचित रहैत अछि । एहन असफल होएबाक, परीक्षामे नीक प्रदर्शन नहि कए पएबाक आ अपन स्थानसँ हटि जएबाक भय 'उपलब्धि प्राप्त' करएबलाकेँ सेहो रहैत छैक जकर कारणेँ ओ किछु

नब करबाक क्षमतासँ वंचित भए जाइछ। ई आवश्यक अछि जे बच्चाकेँ गलती करबाक आ ओहिसँ सिखबाक अवसर देल जाए आ पूर्णांक नहि प्राप्त करबाक भयसँ मुक्त कएल जाए। विद्यालयकेँ समाज आ अभिभावक सभ तक ई संदेश पहुँचाएब आवश्यक अछि जे बच्चा पर अल्प वयसहिसँ आदर्श बनबाक हेतु दवाब नहि देथि बच्चा सभकेँ 'सर्वोत्तम उत्तर' रटबाक हेतु खानगी शिक्षकक अथवा घरक समय व्यतीत करबाक बदलामे खिस्साक किताब पढ़बामे, खेलएबामे उपयुक्त गृहकार्य करबामे तथा ओकरा दोहरएबामे समय व्यतीत करबाले अभिभावक लोकनिकेँ प्रेरित करबाक चाहियनि। तनाव प्रवंधनक हेतु पाठ्यक्रमकेँ तकबाक बदलामे विद्यालयक अध्यक्ष आ प्रबंधनकेँ चाहिऐक जे ओ अपन पाठ्यक्रमकेँ तनाव रहित बनाबए आ अभिभावककेँ विचार देनि जे ओ विद्यालयसँ बाहरक बच्चाक जीवनकेँ तनाव रहित बनाबथि।

एहन विद्यालय जे अत्यधिक प्रतियोगितावाद पर जोर दैत अछि ,आन विद्यालय (सरकारी समेत) सभक द्वारा आदर्शक रूपमे नहि देल जएबाक चाही । कोठारी आयोग द्वारा चारि दशक पूर्व सुझाओल गेल समान विद्यालयी पद्धति आइयो प्रासंगिक अछि किएक तँ ई संवैधानिक मूल्यक अनुरूप अछि। विद्यालय सभ एहि मूल्यक पालन करबामे तखनहि सफल होएत यदि ओ एहन वातावरण बनाबए जाहिमे सभ बच्चा आनन्द आ निश्चिन्तताक अनुभव करए। ई विचार आब आओर प्रासंगिक भए गेल अछि किएक तँ आब शिक्षाकेँ मौलिक अधिकारमे सामिल कए लेल गेल अछि जाहिसँ लाखो पहिल पीढ़ीक बच्चा सभक नामांकन विद्यालयमे भए रहल अछि। ओकरा सभकेँ स्थिर रखबाक हेतु निजी समेत सभ व्यवस्थाकेँ बुझए पड़त जे एखनुक क्षमताक, व्यक्तित्वक अथवा आशाक कोनहुँ नियम ओकरा सभ पर लागू नहि भए सकत। विद्यालय प्रशासनकेँ ईहो बुझबाक चाहिऐक जे जखन विभिन्न सामाजिक-आर्थिक आ सांस्कृतिक परिवेशसँ आएल बच्चा बच्ची सभ संग पढ़ैत अछि तऽ कक्षाक वातावरण बेसी समृद्ध आ प्रेरणादायक भए जाइत अछि।

4.4 अनुशासन आ सहभागिता प्रबंधन :

विद्यालय, खासकए सरकारी विद्यालय शिक्षक आ प्रधानाध्यापके जकाँ बच्चाक सेहो थिकैक। शिक्षक आ छात्रक बीचमे अन्योन्याश्रय संबंध छैक,

खासकए एहि समयमे जखन सूचन तक पहुँच सिखबाक माध्यम थिक आ शिक्षाक निर्माण ओहि संसाधनसँ होइत अछि जे शिक्षकक इर्द गिर्द घुमैत अछि। दुनू एक दोसराक विना कार्य नहि कए सकैत अछि। शिक्षाक आदान प्रदानकेँ लाभ देनिहार आ प्राप्त कएनिहारक सिद्धान्त सँ जिज्ञासा उत्पन्न करओनिहार आ सिखनिहारक सिद्धान्त दिस लए जाए पड़त जाहिमे शिक्षाक आदान प्रदान सभक दायित्व होअए।

वर्तमानमे 'नीक' आ 'उचित' व्यवहार छात्रक आ छात्र समूहक हेतु विद्यालय द्वारा निर्धारित कएल जाइत अछि। विद्यालयमे अनुशासन राखब शिक्षक आ प्रशासनिक व्यक्ति (बेसी काल क्रीड़ा शिक्षक आ प्रशासक) केर दायित्व होइत अछि। बेसीकाल ओ लोकनि छात्रसँ वर्गक मुखियाक (वर्गक मोनिटरक) चयन करैत छथि जकरा पर व्यवस्था आ अनुशासनक दायित्व होइत छैक । एहिमे पुरस्कार आ सजाए प्रमुख भूमिकाक निर्वहन करैत अछि। जे एकर अनुपालन करैत छथि ओ संयोगहिसँ ई प्रश्न करैत छथि जे एहि नियमक अनुपालनक बच्चाक सम्पूर्ण विकास,आत्मसम्मान आ पढ़बाक इच्छा पर की प्रभाव पड़ैत छैक। अनुशासनक कएक प्रकार जेना- अनुपयुक्त दण्ड आ मौखिक अथवा अमौखिक दुर्व्यवहार एखनहु कतोक विद्यालयमे प्रयुक्त होइत अछि आ एकर प्रयोग बच्चाकेँ ओकर मित्र मण्डलीक समक्ष अपमानित करबामे कएल जाइत अछि। तखनहुँ कतोक शिक्षक आ अभिभावक एकर तात्कालिक आ दूरगामी कुप्रभावसँ अपरिचित रहबाक कारणेँ एकर समर्थन करैत छथि । ई आवश्यक अछि जे शिक्षक गण एहि तरहक परंपराक विवेचन करथि आ सोचथि जे की ई शिक्षाक उद्देश्यक पूर्ति करैत अछि? उदाहरणार्थ मौजाक लम्बाइ आ क्रीड़ा वस्त्रक सफाई केर अध्ययनक दृष्टि सँ कोनो महत्व नहि छैक। वर्ग मे शान्ति स्थापित करबासँ, एक - एक कए उत्तर देबाक हेतु कहबासँ आ ठीक उत्तरक ज्ञान भेलहि पर उत्तर देबाक अवसर देबासँ संबंधित नियम बराबरी आ समान अवसर सन मूल्यक अवहेलना करैछ। एहन नियम सभसँ बच्चाक शिक्षाक हेतु आवश्यक कार्य जेना-छात्रमे सामाजिक चेतनाक विकास सन क्षेत्रकेँ हतोत्साहित करैत अछि यद्यपि ओ शिक्षकक हेतु वर्ग संचालन आ पाठ्यक्रमक समापनकेँ सुविधगर बनबैत अछि।

छात्रमे स्व अनुशासनक महत्व /आदत केँ उत्पन्न करब-शिक्षाक प्रगति आ छात्रक रुचि आ क्षमताक विकासक हेतु महत्वपूर्ण अछि। अनुशासन, देल गेल

कार्यक पूर्तिकेँ क्षमता प्रदान करए आ एहिमे मदति करए। एकरा छात्र आ शिक्षक दुनूक हेतु स्वतंत्रता, विकल्प आ स्वयत्तता प्रदान करबाक चाहिऐक। ई अनिवार्य अछि जे छात्रक हेतु नियम बनएबामे ओकरा सम्मिलित करबाक चाही जाहिसँ ओ एकर निहितार्थकेँ बुझि सकए आ एकर अनुपालनकेँ अन दायित्व बुझए। एहि तरहेँ ओ स्व अनुशासनक हेतु पद्धति बनाएब आ निर्णय लेब तथा लोकतांत्रिक प्रणालीकेँ बुझि सकत। तहिनाओ शिक्षक ओ छात्र तथा छात्रक बीचमे उत्पन्न मतभिन्नताकेँ समाप्त करबाक उपाय ताकि लेत। शिक्षक गण ई सुनिश्चित करथि जे कम सँ कम नियम बनए आ सेहो एहने जकर आसानीसँ पालन कएल जा सकए। छात्रकेँ नियम तोड़बाक कारण अपमानित करबासँ कोनो लाभ नहि अछि खास कए तखन जखन नियम तोड़बाकपर्याप्त कारण होअए। उदाहरणार्थ हल्ला गुल्लासँ युक्त वर्ग शिक्षकक आ प्रधानाध्यापकक क्रोधक कारण बनैत अछि मुदा ईहो संभव अछि जे ई शिक्षकक वर्गकेँ नियंत्रित करबामे असफल कारण नहि होअए बल्कि एकटा जीवन्त आ सहभागितासँ युक्त वर्गक उदाहरण होअए।

तहिना समयबद्धता लएकेँ विद्यालयक प्रधानाचार्य अकारण कठोर रबैया रखैत छथि। यदि कोनो बच्चा ट्रैफिक जामक कारणेँ परीक्षामे देरीसँ पहुँचैत अछि तऽ ओकरा दण्ड नहि भेटबाक चाहिऐक, तैयो हम सभ देखैत छी जे उच्च मूल्यक नाम पर एहि प्रकारक नियम लागू कएल जाइत अछि। बच्चा, ओकर अभिभावक आ शिक्षक लोकनिकेँ हतोत्साहित करए बला एहि प्रणालीकेँ उचित नहि कहल जा सकैत अछि। पहिने विद्यार्थी सँ बुझबाक चाही जे ओ नियम किऐक भंग कएलक, पुनः दण्डक विषयमे सोचल जएबाक चाही। शिक्षक आ संस्थानक प्रमुख यदि सत्ता क स्थान पर अधिकारक प्रयोग करथि तऽ उचित होएत। औचकता आ अतार्किकता सत्ताक लक्षण हेइत अछि आ एहिसँ भय होइत अछि, सम्मान नहि। छात्र,शिक्षक आ प्रशासकक सह भागिता प्रबंधनक हेतु तंत्रक विकासक आवश्यकता छैक । छात्र सभकेँ, छात्र कौशलक हेतु अपन प्रतिनिधि स्वयं चुनबाले प्रोत्साहित कएल जएबाक आवश्यकता छैक। तहिना शिक्षक, प्रशासन आ अभिभावक लोकिनिक संगठित होएब सेहो आवश्यक अछि।

4.5 अभिभावक आ समुदायक हेतु स्थान :

विद्यालय यद्यपि निर्देशित शिक्षाक स्थान थिक, मुदा ज्ञान निर्माणक प्रक्रिया लगातार चलए बला थिक जे विद्यालयसँ बाहरे चलैत रहैत अछि। यदि ज्ञान निर्माण लगातार चलए बला प्रक्रिया थिक जे विद्यालय, घर, कार्यालय,समाज आदि सभ जगह पर चलैत रहैत अछि तऽ विद्यालयी कार्य अथवा गृह कार्यक अलग तरीकासँ योजना बनाअेल जएबाक आवश्यकता छैक । एकरा एहि पर निर्भर नहि होएबाक चाही जे अभिभावक ओही पर जोर देथि जे पहिनहिसँ विद्यालयमे सिखाओल गेल अछि। बच्चाकेँ करबाले कतोक गति विधि निर्धारित कएल जा सकैछ जकरा ओ स्वयं करए अथवा अभिभावकक मदतिसँ। एहिसँ अभिभावककेँ एकर अवसर सेहो भेटि सकैत छैक जे ओ एकरा बूझि सकथि जे हुनकर बच्चा की सिखि रहल अछि।

विद्यालय पाठ्यक्रमक निर्माणमे समुदायकेँ सेहो आमंत्रित कएल जा सकैत अछि आ एहि तरहेँ विद्यालयसँ बाहरक पैघ संसारकेँ पाठ्यक्रमिक प्रक्रियामे भाग लेबाक अवसर दए सकैत अछि। छात्रक माए बाप आ समुदायक सदस्य गण विद्यालयमे 'रिसोर्स पर्सन' केर रूपमे आबि सकैत छथि । उदाहरणार्थ मशीनसँ संबंधित अध्यायमे स्थानीय मिस्त्रीकेँ बजाओल जा सकैत अछि जे मशीनकेँ ठीक करबाक विषयमे जानकारी देथि आ ईहो बताबथि जे ओ कोना गाड़ी ठीक करब सिखलनि ।

(1) छात्रक शिक्षा जगत आ सिखबामे समाजक भागीदारीक माध्यमसँ समाज कए सकए :

- मौखिक इतिहास(लोकोक्ति, पलायन, वातावणक स्तर ह्रास, व्यापारी आ लोकक बसबासँ संबंधित), आ परंपरागत ज्ञान (बीया बाग करब आ फसल काटब, मौनसून, परंपरागत कला कौशल इत्यादि) बच्चाकेँ प्रदान जतए विद्यालयमे दृष्टान्तक आवश्यकता होअए ।
- विषय वस्तुकेँ प्रभावित ,क्षेत्रीय, वास्तविक आ उपयुक्त उदाहरणक माध्यमसँ।
- बच्चाक अन्वेषण आ ज्ञान एवं सूचनाक निर्माणमे मदति।

- लोकतन्त्रक अभ्यासमे मदति- सूचना निर्माण,योजना, पर्यवेक्षण तथा स्थानीय प्रशासन आ विद्यालयक संग अन्वेषणमे भाग लए कैं ।
- गामकैं शैक्षणिक वातावरणमे बदलि कए जाहिसँ 'विद्यालय रूपमे गाम' केर अवधारणा सत्य भए सकए।

तहिना छात्रकैं, ओकर गृहभाषा प्रयोग करबामे मदति करबाक समयमे आ विद्यालयक भाषाक परिवर्तनक समयमे शिक्षक गण स्थानीय भाषामे संवाद , ओकर शिक्षा आ ओहिमे शिक्षण सामग्री तैयार करबाक हेतु स्थानीय भाषा बजनिहार सभक मदति लए सकैत छथि । चयन विशेष पाठ्यक्रमिक योजना जकर संदर्भ हो आ विशेषज्ञक उपलब्धता आ हुनका तक पहुँच पर निर्भर करत। विद्यालयकैं अभिभावक आ समाजक शिक्षा प्रक्रियामे सह भागिताक संभावनाक अन्वेषण करएबाक चाही। एहि संबंधसँ विषय वस्तु आ संस्थानिक शिक्षाक शिक्षण शास्त्रकैं बाँटल जाए सकत।

सभ विद्यालयकैं अभिभावकक भागीदारी आ संलग्नता सुनिश्चित आ संवर्द्धित करबाक हेतु उपाय करबाक चाही। बेसीरास विद्यालय विद्यालयक कार्य कलाप संबंधी अभिभावकक प्रश्नकैं निरर्थक बुझैत अछि। सामान्यतया निजी विद्यालय अभिभावक कैं मात्र उपभोक्ता बुझैत अछि आ हुनकासँ कहैत अछि जे यदि विद्यालयक कोनो कार्य कलाप नीक नहि लागनि तऽ छात्रकैं विद्यालयसँ हटा लेथि । किछु विद्यालय गरीब अभिभावककैं किछु नहि बुझैछ आने हुनका कोनो स्थान दैत छनि। दुनू तरहक व्यवहार अभिभावकक उचित चिंताक प्रति असम्मानजनक कहल जा सकैत अछि।

निष्कर्षतः, विद्यालयक वातावरण छात्रक हेतु मदति करए बला बनएबाक हेतु आ अभिभावक तथा स्थानीय समाजसँ विद्यालयक संबंधकैं मजबूत बनएबा लए,किछु संस्थानिक ढाँचा जेना -अभिभावक- शिक्षक संघ,स्थानीय समिति आ किछु विद्यालयमे छात्र संघ अछि। राष्ट्रीय पर्व आ किछु आन कार्यक्रम जेना - सांस्कृतिक आ खेल दिवस केर अवसर पर बेसी रास विद्यालय सभ अभिभावककैं अमंत्रित करैत अछि। आ स्थानीय निवासी लोकनिकैं एहि अवसर पर आमंत्रित कएलासँ सामुदायिक केन्द्रक रूपमे विद्यालयक महत्व बढ़त। विद्यालय आ एकर सुविधाक देखरेख केर हेतु सेहो स्थानीय समाजक मदति लेल जाए सकैत अछि।

विद्यालयक छहरदिबाली बनएबामे , सुविधाक विस्तार करबामे तथा कतोक अन्य कार्यमे स्थानीय सहयोगक उदाहरण अछि। मुदा सामुदायिक सहभागिताक अर्थ गरीब परिवार पर आर्थिक बोझ नहि होएबाक चाही। दोसर दिस किछु एहन विश्वासक वातावरण भए सकैत अछि जाहिमे विद्यालयक जगहकेँ स्थानीय कार्यक हेतु उपयोग कएल जा सकए आ एकर देख रेख समूहिक उत्तरदायित्व हो।

4.6 पाठ्यक्रम स्थल आ सिखबाक संसाधन :

4.6.1 पाठ आ पुस्तक :

पाठ्यपुस्तककेँ लएकेँ लोकप्रिय अवधाणा ई अछि जे ई पपठ्यक्रम निर्माणक प्रमुख स्थल होइत अछि। जखनकि पठ्यक्रम निर्माणक किछु अधिक विस्तृत प्रक्रिया होइत अछि। नीक पाठ्यपुस्तक सरुचिपूर्ण एवं ढंग सँ लिखल, निर्मित आ व्यावसायिक ढंगसँ संपादित कएल जएबाक बाद मात्र सूचनाक संकलन नहि होइत अछि, अपितु ओहिमे बच्चाक हेतु महत्वपूर्ण ढंगसँ अन्तःक्रियाकेँ जगह देल जाइत अछि। मुदा पाठ्यक्रमक सुधार पाठ्यपुस्तकसँ सेहो आगू अछि यदि ओहिमे आन प्रकारक सामग्रीक सेहो समावेश होअए। उदाहरणार्थ विषयक शब्दकोष तैयार कए किताबकेँ परिभाषा आ विभिन्न प्रकारक सूचना सम्पर्क बोझ सँ बचाओल जा सकैछ आ शिक्षककेँ प्रत्येककेँ बुझबा पर बल देल जा सकैछ। वर्गमे तीव्र गतिसँ शिक्षा, जवर्दस्त गृहकार्य आ नीजी ट्यूशनकेँ त्रिकोणीय संबंध जेकि तनावक पैघ कारण थिक, केँ कमजोर कएल जा सकैछ यदि पाठक प्रत्येक विस्तार, गतिविधि, छोट समूह कार्य आदिकेँ ध्यानमे राखि पाठ तैयार करथि आ तकनीकी परिभाषाकेँ विषय कोषक भसोसे छोड़ि देल जाय ।

सहायक पुस्तक, कार्य पुस्तिका आ अतिरिक्त अध्ययन क्रम एकर बाद अबैत अछि। किछु विषय यथा भाषाक हेतु एहन सामग्रीकेँ नकारि नहि सकैत छिऐक, मुदा एहि प्रकारक सामग्रीक अवधारणा पर पुनर्विचारक आवश्यकता अछि। वर्तमान पाठ्य सामग्रीमे विभिन्न विधाक अरुचिकर पाठ अछि,आ कार्य पुस्तिकामे विद्यमान रहैछ। गणित, प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञानक विषयमे एहन सहायक सामग्रीकेँ विकसित करबाक आवश्यकता अछि। एहि तरहक पुसतक सभ बच्चाक ध्यान पाठसँ अपन लग पासक संसार पर केन्द्रित कए सकैत अछि।

वस्तुतः कला सन विषयक हेतु कार्य पुस्तिका मुख्य कक्षा सामग्रीक रूपमे कार्य करैत अछि। पर्यावरणक अध्ययनार्थ तैयार कएल गेल पुस्तिका एकर नीक उदाहरण थिक जाहिमे बच्चाक परिचय गााछ वृक्ष, चिड़ै आ प्राकृतिक जीवन सँ कराओल गेल अछि। एहि तरहक संसाधन शिक्षककेँ वर्गमे प्रयोगक हेतु भेटबाक चाहिऐक।

एटलसक सेहो पृथ्वीक विषयमे बच्चाक जानकारी बढ़एबामे पैघ भूमिका होइत अछि चाहे ओ जल-थल,मनुष्य आ जीवन, इतिहास आ संस्कृति आदिक एटलस, भूगोल, इतिहास आ अर्थशास्त्रक सीमाक प्रत्येक स्तर पर विस्तार कएल जा सकैछ। ज्ञानक एहि क्षेत्रसँ संबंधित पोस्टरक संग आनो सामग्री सभ जाहिमे सामान्य जागरुकता बढ़बैत अछि, कैं बढ़ाबा देलासँ सेहो सिखबाक विस्तार भ्ए सकैछ। एहिमेसँ किछु थिक लिंग भेद, विशेष आवश्यकता वला बच्चाकेँ शामिल करब आ संवैधानिक मूल्यसँ वर्णित चित्र। एहि तरहक सामग्री विद्यालयमे उपलब्ध कराओल जा सकैछ। निर्देशिका आ शिक्षिकाक हेतु सामग्री सेहो पाठ्यपुस्तकहि जकाँ आवश्यक अछि। नव तरहक पाठ्यपुस्तककेँ लागू करबाक संग शिक्षकक हेतु पुस्तिका सेहो तैयार कएल जएबाक चाही। ई पुस्तिका सभ पाठ्य पुस्तकसँ पूर्व प्रधानाचार्य आ शिक्षक धरि पहुँच जएबाक चाही। शिक्षकक हेतु पुस्तिका सभ कतोक ढंगसँ तैयार कएल जा सकैत अछि। आवश्यक नहि अछि जे ओ पाठ्यपुस्तक सभ अध्याय पर आधारित होअए। यद्यपि ईहो मात्र एक तरीका भए सकैत अछि। आनो प्रकारकेँ एही तरहेँ उपयुक्त कहल जा सकैछ जाहिमे बनल बनाओल परिपाटीक आलोचना होअए आ नव सुझाव होअए। संगहि ओहिमे आधार सामग्रीक सूचना होअए, दृश्य- श्रव्य सामग्री होअए, विषय सँ जुड़ल इंटरनेट साइटक जानकारी आदि सेहो शिक्षकक योजनामे मददगार भए सकैत अछि। एहि तरहक आधार सामग्री शिक्षकक प्रशिक्षण आ पाठ्य योजनाक क्रममे उपलब्ध होएबाक चाही।

सोझ रूपसँ संगठित सामूहिक वर्ग (बहु श्रेणी अथवा बहु क्षमता) कैं आवश्यकता छैक एक श्रेणी वर्ग - जे मानैत अछि जे सभ छात्र शिक्षक द्वारा संगहि संबोधित कएल जा रहल अछि आ सभ एकहि स्तर पर अछि आ तैं सभकेँ एकहि टा कार्य करबाक चाही - केर हेतु बनाओल गेल पाठ्य पुस्तकसँ हटबाक ।

आवश्यकता छैक शिक्षकर्कें पाठ आ पाठ समूहक हेतु बनाओल गेल योजना पर आधारित सामग्री उपलब्ध कराओल जएबाक।

- तत्व आधारित अध्याय जाहिमे विभिन्न स्तर पर विभिन्न समूहक हेतु बहुतो अभ्यास होअए।
- श्रेणीमे बाँटल आत्म अनुमान सामग्री जाहिसँ बच्चा स्वयमहि व्यस्त भए सकए, शिक्षकक कम सँ कम मदति लेबाक आवश्यकता होअए आ अपनहि अथवा आन छात्रक संग कार्य कए सकए।
- पूरा समूहक कार्य योजना -जेना खिस्सा कहब एवं छोट नाटक करब जाहिसँ छात्र विभिन्न कार्य कए सकए। उदाहरणार्थ वर्ग 1 सँ 5 धरिक सब बच्चा खरगोश आ सिंहक लोक कथार्कें व्यवस्थापित कए सकैत अछि, तकर बाद समूह 1 आ 2 फ्लैश कार्डक उपयोगसँ विभिन्न जानवरक नाम लिखि सकैत अछि; समूह 3 आ 4 चित्रकलाक समूह तैयार कए सकैत अछि आ छोट समूह मे कार्य करैत प्रत्येक चित्रक सामने ओहि सँ जुड़ल खिस्सा लिखि सकैत अछि; आ समूह 5 खिस्साक पुनर्लेखन कए सकैत अछि, कोनो आन समाप्ति देखबैत । उपयुक्त सामग्रीक अभावमे बेसीरास शिक्षक एक श्रेणी वर्गमे छात्रर्कें धोखा देबाक अनुभव करैत छथि, एहि परिणामक संग जे बेसी रास छात्रक हेतु कार्य समय काफी कम भए जाइत छैक ।

4.6.2 पुस्तकालय :

विद्यालय पुस्तकालय काफी समयसँ नीतिगत सुझावक हिस्सा रहल अछि, मुदा विद्यालयमे कार्यक पुस्तकालय कमे देखल जाइत अछि। भविष्यक योजनार्कें ध्यानमे रखैत पुस्जकालयर्कें विद्यालयक प्रत्येक स्तर पर आवश्यक अंग मानल जएबाक चाही। शिक्षक आ विद्यार्थी दुनूर्कें ज्ञानक स्रोतक तथ आनन्दक हेतु पुस्तकालयक उपयोग करबार्कें अीिप्रेरित आ प्रशिक्षित कएल जएबाक चाही। विद्यालयक पुस्तकालयक कल्पना एक एहन बौद्धिक स्थलक रूपमे कएल जयबाक चाही जतए शिक्षक, विद्यार्थी आ निकटस्थ समुदायक लोक ज्ञानक गंभीर

अर्थ आ कल्पनाशीलताक खोजमे आबथि / पुस्तकक सूची तथा अन्य व्यवस्थाकेँ ओतए एहि तरहेँ विकसित कएल जएबाक चाही जे बच्चा आत्मनिर्भर पुस्तकालय उपयोगकर्ता बनि सकए । पुस्तक आ पत्रिकाक अतिरिक्त पुस्तकालयमे सूचना तकनीकक नव आयामक सुविधा होएबाक चाही जाहिसँ विद्यर्थी विस्तृत विश्वसँ जुटि सकए। आरम्भमे ब्लौक स्तर सँ या संकुल स्तर पर पुस्तकालयक व्यवस्था कएल जा सकैत अछि। भविष्यमे भारतक प्रत्येक स्तरक विद्यालयकेँ पुस्तकालयसँ लैस कएल जएबाक चाही। देशक विभिन्न भागमे, ग्रामीण क्षेत्रमे सामुदायिक पुस्तकालय चलि रहल अछि तऽ जिला स्तर पर जिला मुख्यालयमे सरकारी पुस्तकालयक व्यवस्था अछि । भविष्यक योजनामे पुस्तकालयक माध्यमे संसाधनक अधिकतम उपयोग सुनिश्चित कएल जा सकैत अछि । राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेशनकेँ एकरा हेतु अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराओल जएबाक चाही जाहिसँ विद्यालयमे पुस्तकालय तंत्रक स्थापनाक बाद ओ ओकर देखभालक व्यवस्था सम्हारए ।

दैनिक विद्यालयी जीवन मे पुस्तकालय कतोक प्रकारक उद्देश्यक पूर्ति कए सकैत अछि। सप्ताहमे मात्र एकहिटा वर्ग लाइब्रेरीक व्यवहारक हेतु होअए तऽ बच्चामे पढ़बाक आदत बनि जएतैक विद्यार्थीकेँ पुस्तक लेबाक सुविधा भेटबाक चाहिऐक। शिक्षकक पुस्तकालयक संचालन, प्रवंधन आ उपयोग केर प्रशिक्षणसँ एहि स्थितिसँ निपटि सकैत छी । जतए विद्यालय भवनमे पृथकसँ पुस्तकालयक कक्षाक व्यवस्था रहैत छैक ओतए बैसबाक आ प्रकाशक उत्तम व्यवस्था करबासँ सकारात्मक वातावरण बनत। ईहो संभव भए सकैत अछि जे शिक्षक पुस्तकालयक संसाधनक व्यवहार द्वारा पुस्तकालयमे कक्षा आयोजित करथि, पुस्तकालयक भीतर कक्षा अथवा पुस्तकालयसँ पर्याप्त पुस्तक कक्षामे लए जएबाक हेतु सेहो पुस्तकालयक व्यवहार होएबाक चाही । ब्लौक आ संकुल स्तर पर एहि प्रकारक पुस्तकालयक माध्यमसँ पाठ्यक्रमक पुनर्नवीकरणकेँ मजबूत कएल जा सकैछ । प्रत्येक ब्लौककेँ कोनो एक विषयक विशेषज्ञ बनाओल जाए जाहिसँ जिलामे पर्याप्त संसाधन भए सकए।

पुस्तकालय

सप्ताहमे एकटा घंटी पुस्तकालय अध्ययनकेँ देल जा सकैत अछि। एहि समयमे बच्चा पुस्तकालयमे बैसए आ पढ़ए/पछिला किताबकेँ ओ घुराबए तथा नव पोथी लए जाए ।

यदि पुस्तकालय कक्ष नहि अछि तऽ शिक्षक -विद्यार्थीकेँ अवस्थाक अनुसार पुस्तक आनि दए सकैत छथि आ ओहि पुस्तक समूहसँ बचचाकेँ पुस्तकक चुनाव करबाले कहि सकैत छथि । ई आवश्यक अछि जे बच्चा स्वयं पुस्तक पसिन्न करए, ई नहि जे शिक्षक ओकरा बाँटथि ।

भाषा कक्षामे पुस्तक आनल जा सकैत अछि । प्रोजेक्ट वर्कक हेतु बच्चासँ पुस्तकालयमे संदर्भ देखबा ले कहल जा सकैछ। भाषा कक्षाक बीचमे बच्चाकेँ कहल जा सकैछ जे पिछला सप्ताह पढ़ल पुस्तकक विषयमे लिखए।

बच्चाकेँ अन्य बच्चाक पढ़ल खिस्साकेँ सुनबाले कहल जा सकैछ। अवकाशमे विद्यालयक पुस्तकालयकेँ फुजल राखल जएबाक चाही।

4.6.3 शिक्षा तकनीक

पाठ्यक्रम योजनामे शिक्षा तकनीकक महत्व सर्वव्यापक अछि मुदा शैक्षणिक रूपसँ एकर अधिकतम उपयोगक हेतु एखन धरि विस्तृत मार्गदर्शन आ योजना उपलब्ध नहि अछि। सामान्य ढंगेँ तकनीकक प्रयोग सूचनाक प्रसारक हेतु कएल जा रहल अछि अथवा नीक शिक्षकक कमीकेँ पूरा करबाले जे भर्तीक खराब नीतिक कारणेँ होइछ। शिक्षण तकनीककेँ यदि शिक्षाक गुणवत्ताक कमीकेँ पूरा करबाक मात्रक हेतु प्रयोग कएल जाए तऽ एहि कारणेँ शिक्षण सँ शिक्षकक मोह भंग भए सकैत अछि। यदि शिक्षण तकनीक पाठ्यचर्या सुधारक साधन बनि जाए तऽ एहिसँ अधिकतर शिक्षक आ विद्यार्थीमे उत्पादकक भाव सेहो बढ़त , ओ मात्र शान्त उपभोक्ताटा नहि बनल रहताह। एकर विकास आ प्रयोग हेतु विस्तृत स्तर पर विचार-विमर्शक आवश्यकता अछि। शिक्षा तकनीकक

साक्षात अनुभव करएबाक हेतु सभ स्तर ब्लाक आ संकुल संसाधन केन्द्र,जिला, राज्य आ राष्ट्रीय स्तरक संस्थान आ विद्यालय मे एकर सुविधा उपलब्ध कराओल जएबाक चाही। एहि तरहक अनुभव जे विद्यार्थी, शिक्षक आ प्रशिक्षककेँ उपलब्ध करबाओल जाए सकैत अछि ओहिमे कोनो, ग्रामीणक गप्प सप्पक ऑडियो टेप वा कोनो विडियो गेम भए सकैत अछि। बच्चाकेँ यदि मल्टी मीडिया उपकरण प्रयोग द्वारा अपन प्रस्तुतिक अवसर देल जाए तऽ एहिसँ ओकर अपन रचनात्मक, कल्पनाक हेतु नव अवसर प्राप्त होइत अछि।

शिक्षा तकनीककेँ मात्र एक तरहेँ देखबा आ सुनबासँ बढ़ि कए यदि उपरोक्त विधिसँ शैक्षिक तकनीकी संसाधनक अनुभव होअए तऽ देशक तकनीकी संसाधनक नीक उपयोग कएल जा सकैछ। सीडी आधारित कम्प्यूटरक बदलामे नेट आधारित क्म्प्यूटरक प्रयोग केँ बढ़ावा दए कए ग्रामीण आ सुदूर इलाकामे पाठ्यक्रमक गुणवत्ता, नव विचार आ सूचनाकेँ पहुँचएबा लए ओकर प्रयोग कएल जा सकैत अछि। एहि तरहक परम्परासँ मात्र श्रोता भावेटा नहि, तकनीककेँ शैक्षणिक बनाओल जा सकैछ।

पूर्व उत्पादनक कोशिस कएल जाए एकर बावजूद जे अनुकरणात्मक माहौल वा पाठ्यपुस्तक पढ़ाएब आ प्रयोगशालाक प्रयोगकेँ जीवंत करब इ.टी. (शिक्षा तकनीक)क क्षमताकेँ नीक ढंगेँ अनुभव करबाक हेतु आनल जएबाक चाही, यदि विषयकेँ गैर उपदेशात्मक ढंगसँ विकसित कएल जाए जाहिमे विद्यार्थीकेँ वेव केर ज्ञानसँ जोड़बाकेँ मुफत कए देल जाए। भारतीय भाषामे एहि तरहक ज्ञान कमे उपलब्ध अछि। यैह कारण थिक जे शहरी आ ग्रमीण विद्यार्थीक बीच आ अंग्रेजी माध्यमक विद्यार्थी तथा क्षेत्रीय भाषाक माध्यमक विद्यार्थीक दूरी बढ़ल जा रहल अछि। बच्चाक हेतु एहि तरहक ज्ञानकोष आ डॉक्यूमेंट्रीक संभावना एखन पूर्ण रूपेण विकसित नहि भ्ए सकल अछि। समयक संग एहि तरहक पुस्तक आदि तैयार कएल जा सकैछ जाहिमे नीक ऑडियो वीडियो सामग्री आ इंटरनेट साइटक सूची होअए तथा जतए नीक सामग्री भेटए। सर्वकालिक (क्लासिक) सिनेमाकेँ माध्यमे उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि जेना ग्रामीण जीवनक शिक्षणक मध्य या नेतऽ सी.डी. पर या राष्ट्रीय स्तर पर संचालित कोनो व्यवसाइट द्वारा सत्यजीत रायक क्लासिक फिल्म ‘पाथेय पांचाली’

देखाओल जाइत अछि। भविष्यक पाठ्य पुस्तकक कल्पना एहि तरहेँ कएल जा सकैछ जाहिमे विभिन्न विषयक ज्ञान आ ओकर अनुभवक साक्षात्कार एक संग संयोजित होअए। उदाहरणार्थ मध्य विद्यालयक जाहि पाठ्य पुस्तकमे राजस्थानक इतिहास आ मीराक उल्लेख होअए ओहिमे मीराक एक भजन सेहो सामिल होएबाक चाही आ ईहो जे ओकर श्रोता कतए छथि जाहिसँ विद्यर्थी एम. एस. सुब्रलक्ष्मीक आवाजमे मीरा वाइक भजन सुनि सकथि।

ज्ञान आ अनुभवक एहि प्रकारक एकीकरण सँ शिक्षा ओहि बोर्ड आ समस्यासँ मुक्ति पावि सकैछ जाहिसँ ओ आइ गुजरि रहल अछि। गणित आ विज्ञानमे, अपंग बच्चाकेँ पढ़यबाले आइ.टी. मिश्रित शिक्षा तकनीक काफी उपयोगी साबित भए सकैछ । महत्वपूर्ण अछि जे पाठ्यक्रमक लक्ष्यकेँ पएबाक क्रममे एकर संभावनाक व्यवहार कएल जाए जाहिमे अधिक वयस आधारित शिक्षा नीतिक उपयोग योजना सेहो होअए । सरकार तथा अर्थ प्रवंधक अन्य संस्थाकेँ शिक्षण तकनीकक पूर्ण संभावनाक आ ओकर लाभ पर ध्यान देबाक आवश्यकता अछि।

प्राथमिक विद्यालयक बच्चाक हेतु वीडियो स्वांग प्रदर्शन हाथसँ करबाक अनुभव आ शिक्षाक पर्याय नहि बनि सकैछ।

4.6.4 उपकरण आ प्रयोगशाला :

विद्यालयकेँ शिन्पकारी आ अन्य कलाक दृष्टिसँ आवश्यक उपकरणसँ पूर्ण कएल जएबाक आवश्यकता छैक। यदि बुद्धिमत्ता पूर्वक योजना बनाओल जाए तँ एहि प्रकारक पाठ्यक्रम द्वारा विद्यालयकेँ रचनात्मक स्थान बनएबाक लक्ष्यकेँ प्राप्त कएल जा सकैछ । एहन शिल्प जे हमर धरोहरक हिस्सा थिक साप्ताहिक वा पाक्षिक आधार पर सिखाओल जा सकैत अछि आ ओहि हेतु शिल्पक आधार यथा - चरखा, कैंची सन विविध उपकरणक भिन्न-भिन्न हस्त शिल्पक अनुसार आवश्यकता होइत अछि। ई महत्वपूर्ण अछि जे पाठक एहि हिस्सामे लिंगक आधार पर भेद भाव नहि कएल जाए आने एकर प्रधान लक्ष्यसँ

भटकाव होअए, जे अपन भौतिक आ सामाजिक वातावरणक सहयोग आ कल्पनाक आधार पर सांस्कृतिक संवर्द्धन करैत अछि। यैह गप्प कलाक विषयमे सेहो कहल जा सकैछ, ओकरो पाठ्यक्रमक हिस्सा बनाएब आवश्यक होएत। उपकरणक साक्षात अनुभव सभ विद्यार्थीक हेतु मूल्यवान अनुभव अछि, विशेष ध्यान रखनिहार छात्रक संदर्भमे एकर संज्ञानक महत्वकेँ बूझल जा सकैत छैक। कलाक माध्यमे बच्चाक अनुभूति आ सामर्थ्यक विकास साक्षरता आ शान्तिक सांस्कृतिक विकासमे सहायक भए सकैत अछि।

विद्यालय, विशेषतः ग्रामीण इलाकाक, विभिन्न प्रयोगशाला दीन हीन अछि अथवा ओहिमे गणित संबंधी गतिविधि हेतुउपकरण नहि अछि। एहि तरहक सुविधाक अभाव विद्यार्थीक विषय विकल्पकेँ सीमित करैछ आ भविष्यक हेतु समान अवसरसँ वंचित कए दैछ। तेँ ई आवश्यक अछिजे पर्याप्त सुविधावला प्रयोगशाला विद्यालयमे उपलब्ध रहए। प्राथमिक विद्यालयकेँ विज्ञान आ गणितकेँ कोणक लाभ देल जा सकैत अछि, जखनकि माध्यमिक स्तर तक पूर्ण विकसित प्रयोगशाला उपलब्ध कराओल जएबाक आवश्यकता अछि।

4.6.5 अन्य प्रकारक स्थल आ जगह :

ओ जगह जकर पाठ्यक्रममे चर्चा होइत अछि भौतिक रूपसँ विद्यालय परिसर सँ बाहर होइत अछि, मुदा ओहो ओतबे महत्वपूर्ण अछि जकर ऊपर चर्चा कएल गेल अछि । ओ स्थल थिक –स्मारक, संग्रहालय आ प्राकृतिक भौतिक साधन जेना नदी, पहाड़, आ प्रतिदिन जाए बला स्थान जेना– बाजार, पोस्ट ऑफिस इत्यादि। अगर शिक्षक सुन्दर ढंगसँ एहि संसाधनक योगसँ विद्यालयक दिनचर्या बनावथि तऽ संभव थिक जे बच्चाक शिक्षाक स्तर नीक होअए । कक्षाक गतिविधिकेँ पाठ्यपुस्तक धरि सीमित कए देलासँ बच्चाक अभिरुचि आ सामर्थ्यक विकासमे बाधा अबैत अछि। विद्यालयक दैनिक या वार्षिक दिनचर्याक अध्ययनसँ एक तरहक कतोक बाधाक पता लगाओल जा सकैत अछि। ताराक अध्ययनक हेतु रातुक आकाश एहि लेल नहि उपलब्ध होइछ कारण जे विद्यालयक फाटक ने तऽ रातिमे फुजैत अछि आने रातिमे विद्यालयक छत पर ककरो जएबाक अनुमति भेटैछ। डुबैत सूर्यक अध्ययन या

जूनमे मॉससूनक आगमन, विद्यालयक दिनचर्यासँ बाहर पड़ैछ। देशक विभिन्न विद्यालयी बच्चाक आदान प्रदान आ एतए धरिजे सार्क देशक संग सेहो एहि तरहक आदान –प्रदान परस्पर ज्ञानकेँ बढ़बएमे सहायक भए सकैछ।

शिक्षक आ शिक्षा प्रशासककेँ एक भए एहि तन्त्रकेँ एहि तरहक रूढिसँ मुक्त करएबाक आवश्यकता अछि। संगहि पाठ – निर्माता, पाठ्यपुस्तकक लेखक आ शिक्षक पुस्तिकामे एहन पाठ्यक्रमक क्षेत्रक विस्तार करैत अछि। एहि मानसिकतासँ मुक्तिक आवश्यकता अछि जे शारीरिक गतिविधि आ कला शिल्प विषय 'एक्स्ट्रा करीकुलर' क हिस्सा होइत अछि।

4.6.6 बहुलता आ वैकल्पिक सामग्रीक आवश्यकता :

भारतीय समाजक मानसिकता आ ओकर प्रकृति ई मांग करैत अछि जे मात्र नाना प्रकारक पाठ्यपुस्तकेटा नहि छापल जाए अपितु आनो आन सामग्री तैयार कएल जाए जाहिसँ बच्चाक रचनात्मकता, सहभागिता आ रुचिक सभ तरहेँ विकास भए सकए जाहिसँ ओकर सिखबाक क्षमता बढ़ए । कोनो एक पाठ्यपुस्तक विविध समूहक बच्चाक विसतृत आवश्यकताक पूर्ति नहि कए सकैत अछि। संगहि ओ पाठ कतोक प्रकारेँ पढ़ाओल जा सकैत अछि। विद्यालय चाहे सरकारी होअए अथवा नीजी, केर भिन्न भिन्न विषयक हेतु पाठ्यपुस्तकक विकल्प होएबाक चाही। अलग –अलग बोर्ड या पुस्तकालयक व्यूरो एकसँ अधिक पुस्तकक शृंखला प्रकाशित करबाक विषयमे सोचि सकैत अछि अथवा अन्य प्रकाशक पुस्तकक चयन कए सकैत अछि आ विद्यालयक समक्ष चयनक कतोक विकल्प देल जा सकैत अछि।

कतोक वर्ष पूर्व 1953 मे माध्यमिक शिक्षा आयोग पाठ्यपुस्तकक कमीकेँ दूर करबाले कतोक सुझाव देने छल जाहिमे एहि गप्प पर जोर छलैक जे कोनो विषयक अध्ययनक हेतु मात्र एकहिटा पुस्तक नहि होएत, देल गेल मानकक अनुसार कतोक पुस्तक प्रकाशित होएबाक चाही। चुनाव विद्यालय पर छोड़ल जएबाक चही। पाठ्यक्रमक विकासक आवश्यकता वला खण्डमे कोठारी आयोग एहि बात पर जोर देलक जे पाठ्यक्रमक पुनरीक्षण तदर्थ प्रकृतिक रहल

अछि जे राज्य स्तर पर तैयार होइत रहल अछि आ विद्यालयमे ओ एक समान लागू होइत अछि।

ई प्रक्रिया शिक्षक आ प्रधान शिक्षकक एजेन्सीकेँ कम करैत अछि आ नवाचार आ खोजक संभावनाकेँ असंभव बनबैत अछि। ई रिपोर्ट बनबैत अछि जे पाठ्यक्रम सुधारक आधार उपयुक्त पाठ्यपुस्तकक निर्माण, प्रशिक्षण आ अन्य प्रकारक शैक्षणिक उपकरण होइत अछि।

एहन कोनो अनुभव जे शिक्षककेँ बच्चाक विकासमे आवश्यक लगैत अछि, पाठ्यक्रममे रहबाक चाही, एहि गप्पक परवाह बिनु कएनहि जे ओकरा कहाँ आ कतए व्यवस्थित करबाक अछि।

पाठ्यक्रमक पुनर्संरचना तखनहि लागू भए सकैछ जखन ओकरा अधिकारीक सहयोग आ समर्थन प्राप्त होअए।

4.6.7 संसाधनक जोगार आ व्यवस्था :

शिक्षणक सहायक सामग्री तथा अन्य प्रकारक सामग्री-पुस्तक, खेलौना आदि, विद्यालनकेँ बच्चाक हेतु रुचिकर बनाए दैत अछि। देशक किछु राज्यमे तऽ डी.पी.इ.पी. कार्यक्रम आदिक धन द्वारा शिक्षण सामग्रीक निर्माण सेहो भेल अछि। कतोक जगह पर्याप्त बनल बनाओल सामग्री उपलब्ध अछि। ब्लौक आ संकुल स्तरक शिक्षणकेँ मात्र नीक ढंगेँ तैयार कएल जएबाक आवश्यकता अछि । बच्चा आ शिक्षककेँ ध्यानमे रखैत विभिन्न गैर सरकारी संगठन तथा अन्य संस्था द्वारा तैयार कएल गेल सामग्री उपलब्ध अछि। एकर अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री होइत अछि जकर मूल्य तऽ बहुत कम होइत अछि मुदा ओ कक्षामे रखबाक हेतु बहुत उपयोगी होइत अछि। विशेषतः प्राथमिक स्तरक विद्यालयमे शिक्षककेँ विभिन्न प्रकारक आधार सामग्री जुटएबाक चाही जकरा शिक्षणक आधार बनाओल जाए जे किछु वर्ष धरि चलि सकए जाहिसँ हुनका द्वारा लगाओल गेल मूल्यवान समयक किछु सदुपयोग भए सकए । उपकरणमे स्ट्रायोफोन या कार्ड बोर्ड ने तऽ आकर्षक होइत अछि ने टिकाउ।

ओकर जगह पर रेक्सिन, खर आ कपड़ाक विकल्प अपनाओल जा सकैछ। अन्य प्रकारक आधार सामग्री जेना नक्शा आ चित्रावलीकेँ विद्यालयक द्वारा आपसमे बाँटल जा सकैछ, यदि ओकरा क्लस्टर सेंटर पर राखल जाए जे संदर्भ पुस्तकालय जकाँ कार्य करए। जाहि शिक्षककेँ पढ़एबाक क्रममे आवश्यकता होनि लए लेथि, पुनः वापस कए देथि, आ फेर दोसर शिक्षक लेथि। एहि तरहेँ एक शिक्षक जे संसाधन जुटाबथि दोसर ओहिसँ काज लेथि। एहि तरहक कतोक तरहक मिलल जुलल विकल्प तैयाार कएल जा सकैछ।

एहि प्रकारक संसाधनक उपलब्धता उपलब्ध वित्तीय संसाधन विद्यालयक संस्था जकरा मदतिक आवश्यकता छैक, पर निर्भर करैत अछि। कोन तरहेँ विद्यालय एहि संसाधनकेँ बना सकत? किछु तऽ सरकारी कार्यक्रम अछि जेना आपरेशन ब्लैक बोर्ड, जाहिमे प्रथमिक आ उच्च माध्यमिक स्तर पर न्यूनतम सामग्री उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि। तहिना एकटा योजना अछि जे संकुल स्तरक विद्यालयक हेतु साइकिल आ खेलओना खरीदबाक हेतु प्रोत्साहित करैत अछि । विद्यालनकेँ एहि योजनाक लाभ उठएबाक चाही आ स्थानीय स्तर पर शिक्षण आ खेल सामग्री जुटएबाक हेतु प्रयास करबाक चाही। प्रभावी शिक्षणक हेतु आइ काल्हि शिक्षण तकनीक पर बेसी बल देल जाइत अछि। किछु विद्यालयमे आब कम्प्यूटर आधारित शिक्षाक चलन बढ़ल अछि तऽ किछु इलाकामे रेडियो आ टेलिवीजनक अध्यापनमे व्यवहार होइत अछि।

मुदा एहि सामग्रीक प्रभावी उपयेाग करबाक अछि तऽ योजना बद्ध कार्य करबाक आवश्यकता अछि। पैघ योजनाक रूपमे हिस्साक सहभागिता आ बुद्धि विवेककेँ प्रोत्साहित करबाक आवश्यकता अछि। शिक्षककेँ पहिनहिसँ एहि हेतु तैयारी करबाक आवश्यकता छनि यदि वर्गमे हुनका द्वारा प्रदर्शित कएल जाएवला सामग्रीकेँ प्रदर्शित करबाक छनि। यदि वर्गमे कोनो गतिविधिक योजना बनाओल जाए तऽ पर्याप्त सामग्री होएबाक चाही जे कक्षाक प्रत्येक विद्यार्थी ओकर व्यवहार कए सकए। एकसरे अथवा समूहमे यदि मात्र एकहिटा विद्यार्थीकेँ उपकरणक व्यवहारक अवसर भेठए आ अन्य विद्यार्थी तमशगीर बनल रहए तऽ ई समयक दुरुपयोग थिक।

मध्य आ उच्च विद्यालयमे प्रयोगशाला होएबाक सतत गप्प कहल जाइत रहल अछि मुदा आइयो ओ ओतेक उपलब्ध नहि अछि जतेक ओकर आवश्यकता छैक, प्रयोग आ उपकरणक अनुभव बच्चाकेँ देबाक हेतु, जे विज्ञानक पाठ्यक्रमक अंश थिक , कम सँ कम क्लस्टर स्तर पर एक क्लस्टर प्रयोगशाला बनाओल जाए सकैत अछि। क्लस्टरक विद्यालय अपन समय –सारणी एहि तरहक बनाबए जे सप्ताहमे एक-आध दिन ओकर क्लस्टर स्तर पर विज्ञान प्रयोगशालामे लागए। ब्लॉक स्तर पर विज्ञान प्रयोगशालाक सेहो विकास कएल जा सकैत अछि जाहिसँ नीक उपकरण सभ उपलब्ध कराओल जा सकए।

सिखबाक एक एहन सांस्कृतिक विकास, मात्र कलेक स्तर पर नहि अपितु ओकर बाहर आ विद्यालयक बाहर सेहो एक एहन दृश्य भए सकैछ जकर अर्न्तगत कतोक प्रकारक गतिविधि आयोजित कएल जा सकैछ। शिक्षक एहि प्रकारक प्रोजेक्ट गतिविधि सभ, चाहे ओ पाठ्यपुसतक सँ संबंध रखैत हो अथवा ओकर बाहरे तैयार करथि, विद्यार्थीकेँ स्वयं किछु करबाले अवसर भेटि सकए।

4.7 समय :

एहिसँ पूर्वक दस्तावेजमे एक खण्ड शिक्षण हेतु आवश्यक समय सीमाक अनुशंसा लए कए अछि। किछु प्रमुख चिन्ता जे हम सभ पहिलुका दस्तावेजसँ प्राप्त कएलहुँ अछि ओहिमे एक ईहो जे शिक्षणक दिनक कुल समय सीमाक उलंघन नहि कएल जाएत एन.सी.एफ. 1998 मे पाठ्यक्रमक समय सीमा 200 दिन निर्धारित अछि । एन.सी.एफ.मे जे प्रस्ताव देल अछि विविध पाठ्यक्रमक समय सीमाक लए कए मोटा – मोटी ओकरा आधार बनाओल जएबाक चाही। एकर भीतरसँ हम सभ ओ रास्ता निकालि सकैत छी जे बच्चा द्वारा विद्यालयमे कुल बिताओल गेल समय बच्चाक शिक्षणक हेतु उपयोगी होअए।

विद्यालनक वार्षिक कैलेण्डर आइ काल्हि राज्य स्तर पर होइत अछि जे वार्षिक कैलेण्डरकेँ किछु अधिक विकेन्द्रीकरण कएल जाए , जाहिसँ ओ स्थानीय मौसम आ पावनिक अनुसार भए सकए। एहि तरहक कैलेण्डरकेँ विकेन्द्रीकृत कएकेँ जिला स्तर पर लागू कएल जा सकैछ ।

कोनो बदलावक कारण स्थानीय मौसम भए सकैत अछि । उदाहरणार्थ यदि मौसम भारी होअए आ बाढ़िक क्षेत्र होअए तऽ नीक होएत जे विद्यालयक छुट्टी ओही समयमे होअए। किछु विद्यालयक अभिभावक विद्यालयसँ गर्मीक समयमे सेहो विद्यालय चालू रखबाले कहैत छथि । खेलएबाक हेतु सेहो गर्मी अधिक होइत छैक। किछु एहनो इलाका अछि जतए केर अभिभावककेँ ई बुझाइत होनि जे छुट्टी कटनीक समयमे होअए जाहिसँ बच्चा ओहिमे सहयोग करत। एहि तरहेँ थोड़ बहुत छूट बच्चाकेँ ओहि दुनियाँ, जाहिमे ओ रहैत अछि, कतोक प्रकारक कुशलता सिखबाक अनुमति दैत छैक मुदा स्थानीय समुदायक जीवनक अनुभवक विना काज चलाबए आ विद्यालयक कारणेँ एहिसँ दूरे जाथि। स्थानीय छुट्टी ब्लॉक स्तर पर तय कएल जाए।

विद्यालयक भिन्न -भिन्न गति विधिक योजना एहि तरहक बनए जाहिमे सभ शिक्षकक संग ग्राम विद्यालय शिक्षा समितिक सदस्य सेहो ओहिमे रहथि। विद्यालयक ग्रेडक अनुसार ओहिमे पढ़ाई होअए अथवा ओहिमे किछु शिथिलता रहए, एकरहु योजना पहिनहि बनि जएबाक चाही।

ई कहब आवश्यक अछि जे एहि तरहक लचीलापनक दुरुपयोगकेँ रोकबाक दिशामे उपाय होअए। सभ समुदायक बच्चाकेँ स्थान देल जएबाक मामलामे उदार नहि होइत अछि। ई विद्यालयक लक्ष्यक विपरीत सेहो भए सकैछ जे विद्यालयक एहन लचीलापनक लाभ उठाकए स्थानीय समुदाय अपन भेदभावपूर्ण संस्कृतिक प्रसार नहि करए। ई एक तरहेँ बच्चाकेँ बँधुआ मजदूरक रूप देब होएत । बच्चाकेँ आराम करबाक, खेलएबाक तथा अपना लेल समय बचएबाक हक छैक। किछु स्थानीय परम्परा आ स्थानीय संस्कृति एहि तरहक बाल्यपनक समर्थक होइत अछि। सामान्यतः बालिकाकेँ बच्चेसँ घरक काजमे लगाए देल जाइत छैक। बच्चा पर पढ़ाइक दबाव बढ़ल जाइत छैक आ विद्यालयक बाद ओकरा ट्यूशन पढ़ए पड़ैत छैक, तेँ ओकरा खेलएबाले कम समय भेटैत छैक। विद्यालयकेँ बच्चाक एहि अधिकारकेँ बचएबा लए बच्चाक परिवारसँ लगातार सम्पर्क बना कए रखबाक चाहिऐक।

विद्यालय दिनमे कतेक काल धरि चलए तकर निर्णय ओ पंचायतक संग विचार विमर्श कए लए सकैत अछि जाहिमे एहू बातक ध्यान राखल जाए जे

विद्यार्थी कें अएबामे कतेक समय लगैत छैक। एहि तरहक उदारता रखने विद्यालयमे विद्यार्थी बढ़त। मुदा एकर मतलव ई किन्नहुँ ने जे शिक्षणक अवधि घटा कए 6 घंटासँ कम भए जाए (जाहिमे इ.सा.सी.इ.क तीन धंटा) यदि शिक्षक आ विद्यार्थी दूरसँ अबैत होथि तऽ ई हमर सभक सामाजिक संबंधक हेतु नीक होएत जे वसक समय बदलल जाए जाहि सँ ओ सभ समय पर पहुँच सकथि । ई एहि तरहेँ व्यवस्थित होएबाक चाही जे ओ ने देरी सँ आबथि आने सवेरे जाथि।

विद्यालयक अपन दिनचर्या विभिन्न प्रकारक विविधतासँ भड़ल होएबाक चाही जाहिमे पाठ आ अनुभवक उचित अनुपात होएबाक कारण जे बच्चाकेँ ओहि दुनूक आवश्यकता होइत छैक जकरा हम ओकरा सिखबए वा अनुभव कराबए चाहैत छी। दोसर ओकर अपेक्षा जे हम सभ किछु संगठनक मुद्दाक चर्चा करी जाहिसँ ओ योजना ओ योजनाबद्धता आ विद्यालयमे विताओल अपन समयक उपयोगितासँ परिचित भए सकए।

अधिकांश विद्यालयमे दिन भिनसरक एसेम्बलीसँ शुरू होइत छैक जखन पूरा विद्यालय एक ठाम जुटैत अछि। विद्यालयमे एहि समयक उपयोग किछु करबामे भए सकैत छैक, चाहे ओ भिनसुरका अखवारक मुख्य पंक्ति पढ़बामे हो,किछु अन्य शारीरिक अभ्यास हो अथवा राष्ट्रीय गीत गएबामे होअए। एहिमे किछु आओर कार्य कलाप जोड़ल जा सकैत अछि, यथा- संग-संग गओनाइ, खिस्सा सुननाइ, बाहरक कोनो व्यक्तिकेँ बच्चासँ गप्प करबाले बजओनाइ, अथवा राष्ट्रीय वा स्थानीय स्तरक कोनो महत्वपूर्ण कार्यक्रम पर कोनो छोट- मोट कार्यक्रम केनाइ। जाहि कक्षाक लगमे किछु रोमांचक करबाक होअए तऽ ओ पूरा विद्यालयकेँ सम्मिलित कएकेँ करए । प्रति दिन नहियों तऽ सप्ताहमे एक वा दू दिन भिनसरक एसेम्बली एहि संबंधमे आयोजित कएल जा सकैत अछि। संयुक्त विद्यालयमे विषयक अनुसार जुनियर आ सीनियर स्तरक बच्चाक भिन्न-भिन्न एसेम्बली लगाओल जा सकैत अछि। कोनो एक मुख्य पंक्ति (समाचारक हेड लाइन) यथा मुजफ्फराबादक बस यात्राकेँ एक विशेष सत्रक विषयक रूपमे दए कें ओकरा पाठ्यक्रमसँ जोड़ल जा सकैत अछि।

अधिकांश दस्तावेजमे 45 मिनटक एक अवधिक समय सारणीमे सिखनाइ सिखओनाइक समयक मूल इकाईक रूपमे देल गेल अछि। सामान्यतः एकरा 30–35 मिनटक बनाए देल जाइत छैक। एकर शिक्षणँ कोनो सार्थक संबंध नहि बनि पबैछ। एक कक्षा मोलिक रूपेँ कतोक पाठ पर आधारित होएबाक चाही।

मुदा विद्यालयक समय सारणीमे एक –डेढ़ घंटाक वर्गक सेहो जगह होएबाक चाही जाहिमे कला शिल्प, प्रोजेक्ट अाविा चित्रकारी सिखबाक होअए।एहने समय विविध विषयक समाकलित शिक्षण आ प्रभावी समूह कार्यक हेतु सेहो ओहिमे होअए ।

कहब आवश्यक अछि जे बहु श्रेणीय वर्गमे शिक्षककेँ विद्यार्थीक शिखण समयक प्रति अधिक योजनाबद्ध होएबाक आवश्यकता छनि। भाषा आ गणित सन विषयक शिक्षणक समय प्रतिदिन निर्धारित होअए, आनक नहि। साप्ताहिक समय सारणीमे सामान्य क्रिया कलापसँ किछु भिन्न करबाक गुंजाइस होअए मुदा ओ पूरा सपताहमे संतुलित होअए। आावश्यक अछि जे विभिन्न विषयकेँ सिखबामे लगएबला समयक ध्यान राखल जाए आ ओहि अनुसारेँ समय सारणीमे सुधार कएल जाए।

प्रातःकालीन प्रार्थना सभा :

दिनक शुरुआत शिक्षक आ बच्चासभ विद्यालय आ कक्षाकेँ ओहि दिनक हेतु तैयार करबाक संग करैत छथि।

वर्ग (शैचालय समेत) केर साफ सफाई, कक्षामे ब्लैक बोर्ड लगाएब, सामानकेँ व्यवस्थित करब, बच्चा आ शिक्षकमे स्वामित्व एवं ओहि सभ सामान आ जगह जकर ओ सभ व्यवहार करैत छथि, केर प्रति कर्तव्य बोध करबैत छनि। एहिसँ ओकरा अपनामे वार्तालाप आ पछिला दिनक घटनाकेँ बँटबाक मौका सेहो भेटि जाइत छैक जाहिसँ वर्गमे एहि तरहक गप्प करबाक आवश्यकता समाप्त भए जाइत छैक।

आम सभाक बीच सभकेँ एकठाम बैसबाक चाहिऐक ई नहि जे कक्षा आ रेखाक अनुसार किन्तु छोट बच्चाकेँ पैघसँ आगाँ बैसबाक चाहिऐक।

सप्ताहमे एक दिन कोनो प्रेरणादायक खिस्सा सुनबामे समय व्यतीत करबाक चाहिऐक। दोसर दिन संगीत सुनब, पाहुन संग गप्प– सप्प, यात्राक अनुभव अखवारसँ रोचक प्रसंग पढ़ब आ ओहि पर गप्प सप्प करबाक चाही आ पुनः सभकेँ वर्गमे चल जएबाक चाही।

कार्यक समयक अवधारणा एक आवश्यक हिसाब लगएबला तरीका थिक जकरा द्वारा ई पता लगाओल जा सकैत अछि जे बच्चा सक्रियतासँ कतेक समय सिखबामे दैत अछि। एहि समयक अन्तर्गत सुननाइ,पढ़ब-लिखब, गतिविधि करब, विचार विमर्श करबामे लागल समय अबैत अछि। एहिमे अपन खेप अएबाक प्रतीक्षा करब, ब्लैक बोर्डसँ उतारब वा दोहराएब नहि अबैछ। विशेष कए बहुश्रेणीय कक्षामे बच्चाक आवश्यकताक हेतु सिखएबलाक अधिगम गति विधिक योजना एवं रूपरेखा बनबैत काल ई ध्यान रखबाक चाही जे बच्चकेँ कार्यक हेतु अधिक समय भेटए।

विद्यार्थीक हेतु विशेष कए जखन ओ उच्च श्रेणीमे जाइत अछि। पाठ्क्रम तथा अन्य योजना बनबैत काल ओकरासँ अपेक्षित कुल अध्ययन समय आमने सामनेक अध्ययन, स्व अध्ययन अथवा गृहकार्यकेँ अध्ययनमे राखल जएबाक चाही।

कुल गृह कार्यक समय : दोसर वर्ग तक कोनो गृह कार्य नहि आ तेसर वर्गसँ ।
प्राथमिक : सप्ताहमे 2 घंटा ।
उच्च प्राथमिक : प्रति दिन 1 घंटा(सप्ताहमे 5 घंटा) ।
माध्यमिक आ उच्च माध्यमिक : प्रतिदिन 2 घंटा (सप्ताहमे 10-12 घंटा) ।

शिक्षकक हेतु आवश्यक अछि कि ओ एक संग बैसि कए बच्चाकेँ देखएबला गृहकार्यक मात्राकेँ तर्क संगत योजना बनाबथि।

4.8 शिक्षकक स्वायत्तता आ व्यावसायिक स्वतंत्रता :

शिक्षणक माहौल बनएबाले शिक्षकक सवतंत्रता आवश्यक अछि जाहिसँ ओ बच्चाक विविध आवश्यकताक ध्यान राखि सकए । जतेक स्वतंत्रता, उदारता विद्यार्थीकेँ चाहिऐक ततबे शिक्षककेँ सेहो। सम्प्रति प्रशासनिक योजना, परीक्षा आ केन्द्रीय योजनाक कारण शिक्षकक स्वायत्तता बाधित होइछ। यदि पाठ संबंधी स्वायत्तता होइतो अछि तऽ शिक्षक खुलि कए ओकर उपयोग नहि कए सकैत छथि कारण जे प्रशासकक आदेश हुनका नहि रहैत छनि। अतः आवश्यक अछि जे पाठ संबंधी चयनमे हुनकर मदति लेल जाए । जहिना वर्गकेँ उदार प्रजातांत्रिक बनएबाक आवश्यकता अछि, तहिना विद्यालय प्रशासन आ प्रशासन तंत्रकेँ सेहो। शिक्षक मात्र आदेश प्राप्तकर्त्ता नहि रहथि अपितु हुनको आवाज

सुनल जाए। आ हुनका एहि तरहक निर्णयक छूट भेटनि जे कक्षामे आ विद्यालयक तात्कालिक आवश्यकताकेँ पूर्ति करबामे सहायक हो। शिक्षक आ हुनक प्रमुख संबंध समानता आ आपसी सम्मान पर आधारित होएबाक चाही संगहि निर्णय, बातचीत आ विचार -विमर्शक आधार पर होअए। गतिविधिक वार्षिक, मासिक आ साप्ताहिक कैलेण्डरमे समीक्षा आ योजनाक हेतु शिक्षकक परस्पर सम्पर्क हेतु जगह होएबाक चाही । एकटा एहन वातावरणक विकासक आवश्यकता अछि जाहिमे शिक्षकमे मिलि जुलि कए काज करबाक भावनाक तंत्र होएबाक चाही। रेडियो आ टी.भी. सन तकनीककेँ कक्षामे प्रवेश विना हुनका पुछनहि भेटि जाइत छैक जे ओ ओकर उपयोग करए चाहैत छथि वा नहि अथवा ओ ओकर की उपयोग करताह?

एक बेरि लागि गेने शिक्षक गणसँ उम्मीद कएल जाइत अछि जे ओ ओकर प्रयोग करथि। एहि पर हुनक कोनो अधिकार नहि रहैत छनि जे ओहिसँ की प्रसारित होएत अथवा हुनक शिक्षण योजनासँ ओ कोना जुटि पाओत।

4.8.1 चिंतन आ योजना निर्माणक हेतु समय :

- प्रतिदिन कमसँ कम 45 मिनटक समयमे दिन भरिक काजक समीक्षा होएबाक चाही,बच्चाक विषयमे टिप्पणी बनएबाले, अगिला दिनक तैयारी । ई समय ओहि समयक अतिरिक्त होएबाक चाही जाहिमे ओ गृहकार्य देखैत छथि।
- साप्ताहिक आधार पर (कम सँ कम 2-3 घंटा) शिक्षणक समीक्षा करबाक चाही, गतिविधिकेँ प्रस्तावित करब आ अगिला सप्ताहक हेतु पाठकक समूह तैयार करबाक हेतु।
- मासिक कार्यक समीक्षा (कम सँ कम 1 दिन) बच्चाक अधिगम आ समूह, जकरा शिक्षक पढ़एबा लए उपेक्षित, शिक्षण संबंधी गतिविधिक सीमांत तय करबाक हेतु ।

- वर्षक आरम्भ आ अंतमे (2 वा 3 दिन) विद्यालयक वार्षिक योजना तैयार करबाक चाही जाहिमे एहन गतिविधिक योजना बनए जे सभ विद्यार्थी भाग लए सकए, स्थानीय छुट्टी सेहो देल जएबाक चाही। वार्षिक दिवस(राष्ट्रीय,खेल-कूद दिवस,सांस्कृतिक) अभिभावक-शिक्षक बैसकक हेतु होअए। वर्गक समूहक हेतु शैक्षणिक यात्रा आ प्रोजेक्टक कार्यक्रम सेहो बनाओल जएबाक चाही जकरा दू कक्षा मिलि कए सेहो कए सकैछ। विद्यालय सजाएब आ कक्षा तथा विद्यालयक वातावरणकेँ ठीक करबा सम्बन्धी जिम्मेदारी सेहो देल जा सकैछ, जेना पोस्टर बदलब,बाहरी साज -सज्जा, समुदायक संग विद्यालयक योजना सेहो तैयार कएल जएबाक चाही जाहिमे पहिनेसँ किदु मुद्दा तय कए लेल जाए यथा-नामांकन,वर्गमे उपस्थिति , उपलब्धि इत्यादि। सम्प्रति नौकरीक मध्य प्रशिक्षण संबंधी समय (20 दिन प्रति वर्ष आवश्यक) केर बँटवारा एहि तरहक समाक्षा, चिंतन आ योजना हेतु कएल जा सकैत अछि।

संकुल स्तर पर एक विषयक शिक्षककेँ मासिक बैसकक आयोजन जाहिमे ओ अपन विचार राखि सकथि आ अगिला मासक तैयारी कय सकथि, करबाक चाहियनि।

इन्क्लूसिव कक्षा 7-8क बच्चाक हेतु एहि विषयके विस्तारित करब :

विज्ञान : की क्यो वर्णन कए सकैत छी, जे मशीन की थिक? उदाहरण नहि व्याख्या करू। शब्दकोषमे एकर अर्थ देखू,आ श्यामपट्ट पर लिखू। आब एकर अर्थ कोनो विज्ञानक पुस्तक अथवा शब्दकोषमे देखू। की कोनो भेद बुझाइछ? कोन परिभाषा बुझबामे सुगम अछि अथवा अहाँके कोन उचित लगैत अछि? आब की हम औजार,उपकरण आ मशीनमे भेद बता सकैत छी?

सामाजिक विज्ञान : के ई बुझए चाहब जे पहिल छापाखाना,टेलीफोन,बल्ब,ऑटोमोबाइल,रेडियो/टेलीविजन,ह्वील चेयर,सुनएबला मशीन,कुकिंग गैस,स्टोब,सिलाई मशीन, रेफ्रिजरेटर, कम्प्यूटर कहिया बनाओल गेल, ककरा द्वारा आ कोन देशमे?

सोचबाक कोशिश करू तथा बादमे ई ताकू जे एहि आविष्कारसँ पूर्व लोक कोना रहैत छल? कोनो मशीनक हमर जीवन मे नहि होएबाक की अर्थ थिक? ओकर स्थान पर उपयोगमे की आनल जाइत छल?

विचार विमर्शक विषय :

की अधिकतर आविष्कृत मशीन उपयोगमे आनल जाइछ?

एकरा द्वारा-

1.सम्पन्न वर्ग,2.कम सम्पन्न वर्ग,3.स्त्रीगण,4.पुरुष,। बताउ किऐक?

के मशीनक अधिक प्रयोग करैत छथि-स्त्री/पुरुष?

अंग्रेजी : निबंधक विषय : एक मशीन जे हमर सभक जीवन बदलि देलक (सुनबाक यन्त्र,ह्वील चेयर आ अन्य वस्तु) आ मशीन जे हम कीनए चाहब आ किऐक?

प्रोजेक्ट : मशीन जे हमर जीवन बदलि देलक - सकरात्मक / नकारात्मक।

मशीन जे हमरा लग अछि/ नहि अछि आ ओ समय, आराम आ मूल्यक संदर्भमे कोन तरहेँ हमर जीवनकेँ प्रभावित करैत अछि आ की अहाँ बुझैत छी जे कोना मशीन (कोनो एक) भविष्यमे आओर बेसी सुधरि सकैछ?

भविष्यक हेतु एक मशीनक फोटो बनाउ या ओकरा विषयमे लिखू अथवा नमूना बनाउ अथवा एक कार, मोटर साइकिल, बैलगाड़ी, ह्वील चेयरक नमूना बनएबामे कोन गप्पकेँ ध्यानमे राखए पड़ैत अछि आ एकर क्षमता आ सौन्दर्यात्मक प्रस्तुतिकेँ कोना बढ़ाओल जा सकैछ?

सप्ताह भरिक विषय योजना : मशीन (मध्य विद्यालय इन्क्लूशिव कक्षा 6-7-8 क हेतु) ।

कक्षा 1 -खेल, जखन कोनो शब्द बाजी, तऽ दिमागमे जे आबए, बाजि दी(निजी वा सार्वजनिक रूपेँ) पुनः सूची पर चर्चा। एहि मशीनक समानताक आधार पर वर्गीकरण करी आ वर्गीकरणक कोनो ढंग पर सोची आ साटि-साटिकेँ सूची बनाबी।

कक्षा 2- मशीनक विषयमे अहाँ जे किछु बुझए चाहैत छी ओकरा प्रश्नक रूपमे लिखू। पुनः देखू जे ककर उत्तर अहाँ बुझैत छी अथवा ठीक सँ नहि बुझैत छी।

शिक्षक प्रत्येक छात्रकेँ किताबक संदर्भ देखबैत आ आन स्रोत जेना लोकसँ गप्प करब केर बतबैत, ओकरा उत्तर तकबा लए प्रेरित करथि। बच्चाकेँ गृह कार्यले ई प्रश्न देल जा सकैछ जे कोन सर्वश्रेष्ठ मशीन अछि, जकरा ओ चिन्हैत अछि? एहि प्रश्न पर ओ घरमे अभिभावक , भाइ -बहिनसँ चर्चा कए सकैत अछि।

कक्षा 3- बच्चा अपनामे गृह कार्यक विमर्श करए ओ वर्ग 3 केर छात्रसँ उत्तर पूछए आ शिक्षककेँ देखाबए । शिक्षक सेहो बच्चा सभसँ मशीनसँ सम्बंधित कविता सुनएबा लए कहथि आ यदि ओ नहि जनैत होअए तऽ स्वयं सुनाबथि (तैयारीक संग आबथि)

कक्षा 4- पाठ्य पुस्तकमे मशीनक अध्याय पढ़ल जाए । बच्चा सभ पढ़ए आ देखए जे ओ मशीनक विषयमे कतेक जनैत अछि। ओहिमे देल गेल प्रश्नक उत्तर देअए।

कक्षा 5- विद्यार्थी खेलओना ट्रक बनाए सकैत अछि जकराले ओ संदर्भ पोथी तथा अन्य उपलब्ध सामग्रीक सहायता लए सकैछ। शिक्षक कक्षा 4क अंतमे एक सूची दए सकैत छथि जे बच्चा तैयार कएकेँ आबए।

कक्षा 6- कार्य पूरा करबाक समय । एतए विषयक पढ़ाई समाप्त आ शिक्षक कहथि जे बाँकी प्रश्नक उत्तर ओ सभ कक्षाक बाहर अपनहि ताकए।

अध्याय-5
व्यवस्थागत सुधार

5.1 गुणवत्ताक चिन्ता
5.2 पाठ्यक्रम पुनर्नवीकरणक हेतु शिक्षक -शिक्षा
5.3 परीक्षा सुधार
5.4 कार्य आधारित शिक्षा
5.5 विचार आ व्यवहारमे नवाचार
5.6 नव सहयोग

विद्यालयी पाठ्यक्रमक राष्ट्रीय आयाम जे संरचना पछिला अध्ययामे आएल ओ सामाजिक विवकेक संग शिक्षाक लक्ष्यसँ प्रेरित अछि, ओहि विद्यार्थी सभकेँ केन्द्रमे रखैत जे ज्ञानक ग्रहणकर्ता मात्र बनल रहबाक बदलामे अपन व्यक्तिगत आ सामूहिक प्रयाससँ सक्रियतासँ ज्ञानक रचनामे जुटल अछि। एहि प्रकारक पाठ्यक्रमक दृष्टिकोणकेँ समर्थन देल जएबाक आवश्यकता छैक आ बच्चाक शिक्षामे व्यावहारिकताक समावेशक सम्वर्द्धनक आवश्यकता छैक। एहिमे महत्त्वपूर्ण अछि एकटा व्यवस्थाक जे निरीक्षण आ अकादमीक नेतृत्वक द्वारा शिक्षक तैयार करए आ हुनक शैक्षिक गतिविधिमे सहयोग करए, पाठ्यपुस्तक आ अध्ययन सामग्रीकेँ तैयार करबाक व्यवस्था, पंचायती राज संस्था आ विकेन्द्रीकरण कार्य आधारित शिक्षा आ व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण (वेट) आ सबसँ महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक तत्त्व परीक्षा व्यवस्था। पाठ्यक्रम शिक्षक द्वारा गतिविधि आ बच्चाक द्वारा ओकर व्यवासयक

हेतु बनए। विद्यालयक भावना आ शिक्षकक कार्य कलाप दूनू आलोचनात्मक रूपसँ व्यवस्थापक ढाँचासँ जुड़ल अछि। ओ कोन संकटक स्थल सभ अछि जकर पहचान कएल जएबाक आ ओहि पर ध्यान देल जएबाक आवश्यकता छैक, तकर चर्चा आगू कएल गेल अछि।

5.1 गुणवत्ताक चिन्ता :

विभिन्न स्तर पर शिक्षक गुणवत्ता संबंधी प्रयास केर हेतु बेसी आवश्यकता अछि जे पाठ्यक्रममे सुधार आनल जाए। वर्तमानमे पाठ्यक्रमक जे स्थिति अछि तकरा एहि प्रकारसँ देखबाक आवश्यकता छैक–

- सूचनाकेँ ज्ञान मानि लेबाक प्रबृत्तिकेँ उलटि देल जाए। ई प्रवृत्ति विषयक ऊपरसँ नीचाँ स्तर तक जएबाक हेतु उत्साहित करैत अछि।
- बच्चाक शिक्षणकेँ अलगसँ देखबाक प्रवृत्तिक स्थान पर विकासात्मक मानक केर अनुपयोगकेँ रखबाक चाही जाहिमे अभिप्रेक्षण आ क्षमताक वृद्धिमे सम्पूर्णता दृष्टिगत होइत अछि।
- उपयोगी कार्यकेँ ज्ञानर्जन, मूल्यक विकास आ बहुकला विकासक हेतु माध्यमक रूपमे देखल जएबाक चाही– विद्यालय पूर्वसँ उच्चतर माध्यमिक स्तर धरि।
- पाठ्यक्रम संबंधी विकल्प छात्रक सन्दर्भमे होएबाक चाही। लचीलापन आ विविधता संबंधी उपागम सुनिश्चित कएल जएबाक चाही जाहि पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 आ 1992 क कार्य योजना पर बल देल गेल अछि।
- 1984 क चट्टोपाध्याय समिति केर सुझावक अनुसार शिक्षक सभक शैक्षिक दक्षतामे सुधार ओहि नीतिमे प्रतिबिम्बित होएबाक चाही जे शिक्षकक नियुक्ति, पूर्वसेवा प्रशिक्षण, सेवारत प्रशिक्षण आ कार्य परिस्थितिसँ संबंधित छैक।
- शिक्षा तकनीककेँ कक्षा आ शिक्षक–प्रशिक्षामे सहायक सामग्रीक रूपमे देखल जएबाक चाही नेकि विकल्पक रूपमे। ई अनुशंसा सभ एहि बातक संकेत दैत अछि जे हमर सभक मुख्य चिन्ता ई अछि जे गणुवत्ता जे अछि से व्यवस्थागत गुण थिक नेकि पएबाक योग्य कोनो वस्तुक लक्षण। विस्तृत अर्थमे गुणवत्ता कोनो व्यवस्थाक एहि क्षमताक परिचायक होइत अछि जे ओ अपनामे सुधार कए, कमी सभकेँ दूर कए, नव

क्षमताक विकास कोन प्रकारेँ करैत अछि। हमर सभक व्यवस्थामे जाहि प्रमुख सुधाारक आवश्यकता छैक ओ ई अछि जे एकर आन्तरिक जड़ता बदलावक प्रति अनिच्छाकेँ दूर कए सकए। ई वैह चुनौती सभ थिक जे ओकरा आधुनिक बनएबाले पैघ स्तर पर उदारता प्रकट करैक आवश्यकता छैक। पाठ्यक्रम आ प्रशिक्षण नव विकेन्द्रीकृत ढाँचामे प्रासङ्गिक बनल रहए तकरा हेतु आवश्यक अछि जे सुधारक पद्धति आ लक्ष्यकेँ सुस्पष्टतासँ निर्धारित कएल जाए। निम्नलिखितकेँ प्राथमिकता देल जएबाक चाही :

- विद्यालयकेँ अपन स्तर पर सामग्री किनबाक, स्थानीय संस्था सभक संग सहयोग आ प्राइवेट विद्यालय सभक संग अपन क्षेत्रक अन्य विद्यालय सभकेँ सेहो योजनामे शामिल करबाक हेतु निर्णय लेबाक छूट होयबाक चाही।
- प्राथमिक, उच्च प्राथमिक आ माध्यमिक स्तरक बीच अपनामे सहयेाग पाठ्यक्रमक निर्माण आ पुस्तक रचनाक समयमे तय करबाक चाही।
- एहि प्रकारक संरचनाक विकास होअए जाहिमे विद्यालय शिक्षक आ सुप्रसिद्ध विषय विशेषज्ञ सिलेवस निर्माण आ पाठ्य पुस्तकक रचनामे संग-संग कार्य करथि।
- एहन अवसर बनाओल जाए जाहिमे स्थानीय स्तर पर प्रतिनिधि संस्था शिक्षकक कार्यशीलताकेँ बढ़ाए सकथि।
- गैर सरकारी संगठन आ निर्णयकारी संस्थाक बीच सहयोग ।
- निर्णयक विभिन्न स्तर पर संवाद आ पारदर्शिताक विकास।

गुणवत्ता मात्र कार्यशीलतेक पैमाना नहि होइत अछि, एकर मूल्य परक आयाम सेहो होइत छैक। शिक्षाक गुणवत्तामे सुधार संबंधी प्रयास तखनहि सफल भए सकैत अछि जखन ओकरा संग-संग समानता आ सामाजिक न्यायक प्रसार सेहो होअए। तन्त्र आ विद्यालयक प्रकारक बढ़बाक कारणे शिक्षा व्यवस्थाक स्तर पर अधलाह प्रभाव पड़ैत छैक किएकतँ एहिसँ समाजक प्रबुद्ध वर्गक ध्यान छात्रक छोट संख्या पर चल जाइत छैक। समान विद्यालयी तन्त्रक विकास आवश्यक अछि जाहिसँ संपूर्ण देशमे शिक्षाक स्तर समान भए सकए जे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचनाक उद्देश्य सेहो थिक आ एहिसँ ईहो सुनिश्चित होइत जे जखन विभिन्न परिवेश सँ आएल बच्चा

सभ संग पढ़ैत अछि तऽ विद्यालयक शिक्षा स्तर सुधरि जाइत अछि आ वातावरण समृद्ध भए जाइत अछि। यदि पाठ्यक्रमक दर्शन (लचीलापन, परिप्रेक्षता आ बहुलता) जे एहि दस्तावेजमे सम्मिलित अछि केर समान विद्यालयी तंत्रक विकासक आधार बनाओल जाए तऽ एकटा राष्ट्रीय पद्धति जाहिमे कोनो दू गोट विद्यालय समान नहि होअए- केर सपना साकार भए जाएत। पाठ्यक्रमक योजनामे सामाजिक न्यायक कएक गोट सोझ निहितार्थ छैक किछु गौण अभिप्राय सेहो छैक। एकटा अभिप्राय तऽ ई अछि जे एकरा हेतु विशेष प्रयास कएल जएबाक आवश्यकता छैक जे शिक्षा सामाजिक पहचानक विकास करए। भाषिक आ धार्मिक अल्पसंख्यक बच्चा सभक हेतु संविधान प्रदत्त दृष्टिकोणसँ विशेष प्रबंध कएल जाएबाक आवश्यकता छैक। आदिभाषी भाषाक संबंधमे किछु राज्य एहन उल्लेखनीय व्यवस्था कए रखलक अछि जे बच्चाक आरम्भिक शिक्षा ओकर अपनहि भाषामे व्यवस्था कएल जाए। तहिना नीति बनाकए मदरसा शिक्षा व्यवस्थाकेँ मजबूत कएल जएबाक व्यवस्था छैक।

पाठ्यक्रम नीतिक उद्देश्यक रूपमे सामाजिक न्यायकेँ सूक्ष्मतासँ शामिल कएल जाए बेसी चुनौतीपूर्ण अछि। ई शिक्षकक जागरुकता आ सामर्थ्य, उदारता आ पाठ्यक्रम लेखक, शिक्षक आदिक कल्पनाशील समन्वयसँ सम्भव भए सकैत अछि। शिक्षा सभ छात्रक हेतु विकासक अनुभव होअए चाहे ओ कोनो सामाजिक-आर्थिक अथवा सांस्कृतिक वर्गसँ अबैत होअए- तकर हेतु शिक्षक- प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आ पाठ्य पुस्तक निर्माणक उचित प्रक्रिया अपनाओल जएबाक चाही।

शिक्षक- प्रशिक्षण कार्यक्रम बी0 एड0, एम0 एड0 आइ जाहि स्थितिमे अछि ताहिमे शिक्षकक एहि जिम्मेवारी दिस जे ओ कक्षामे एहन वातावरण बनाबथि जतय पिछड़ल समाजक बच्चा आ विशेषतः बालिका सभक हेतु सेहो अनुकूल वातावरण होअए, ध्यान नहि देल जाइत छैक। पाठ्यक्रम निर्माण अथवा पाठ्य पुस्तक लेखनक क्रममे सांस्कृतिक भिन्नताक गप्प बादमे अबैत अछि जखनकि ओकरा ओकर भीतरी हिस्सा होएबाक चाही। जेण्डर आ विशेष शिक्षाक मामला समानहि अछि। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा पर एक एन0 सी0 इ0 आर0 टी0 केँ कएक गोट सुझावमेसँ एकटा सुझाव एकटा किशोरी दिससँ अएलैक जाहिमे कहल गेल छलैक जे एकर हेतु विशिष्ट व्यवस्था कएल जएबाक चाही जे बालक सभमे एकर चेतना जागए जे

बालिका सभसँ कोन प्रकारक व्यवहार करबाक अछि। एक विचारकेँ कक्षा आ विद्यालयक संस्कृति संबंधी सभ पक्षसँ जोड़ल जएबाक चाही।

5.1.1 आकादमिक योजना आ गुणवत्ताक निरीक्षण :

विद्यालयी शिक्षाक अकादमिक योजना मुख्यतः वार्षिक परीक्षा पर आधारित अछि। एकर दृष्टि एहि पर होइत छैक जे कोन प्रकारेँ शिक्षाकेँ साल भरिमे विषय पढ़ाएब आ विद्यालयक अन्य गतिविधि सभक बीच विभाजति कएल जा सकए। ई एन0 सी0 ई0 आर0 टी आ विभिन्न शिक्षा विभागक द्वारा कएल जाइत अछि आ ई राज्यक सभ विद्यालय पर समान रूपसँ लागू होइत अछि। विद्यालयी स्तर पर योजनाक महत्त्व पर कोठारी कमीशन जोर देने छलैक जखन ओ सभ विद्यालयक हेतु एकटा सांस्थानिक योजना तैयार करबा आ संबद्ध विकासात्मक कार्यक्रम पर जोर देने छलैक।

सार्थक अकादमिक योजना प्राचार्य आ शिक्षकक सहभागितासँ तैयार भए सकैत अछि। एक योजनागत अवयब ई भए सकैत अछि जे विद्यालयक भौतिक संसाधनमे प्रयासक सुधार होअए। दोसर ई जे छात्रक विविध आवश्यकताक ज्ञान आ ओकरा पूरा करबाक हेतु विद्यालयकेँ देल जाएबाला आकदमिक सहयाकताक पहचान। योजनाक प्रक्रिया एकटा महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया थिक जकर माध्यमसँ विद्यालय पैध समुदायक बच्चाकेँ शिक्षासँ जोड़ि सकैत अछि। एहिमे ग्राम शिक्षा समिति तथा अन्य वैधानिक संस्था सभ शामिल अछि। गहन योजना, जाहिमे ग्रामीण स्तर पर विद्यालयमे आबएबला आ ओकर मानव संसाधनक ज्ञान, जाहिसँ यथार्थ रूपमे विद्यालय प्रत्येक बच्चाकेँ ध्यानमे राखि योजना तैयार कए सकए। योजना निर्माण आ ओकरा लागू करबाक दिसामे विद्यालय स्तर पर अधिक स्वतन्त्रता होअए। संगहि ईहो आवश्यक अछि जे धन उपलब्ध कराओल जाए तकर उपयोगकेँ लएकेँ पूर्ण ढीलापन रहए आ ओहि खर्चमे उत्तरदायित्व आ पारदर्शिता सेहो रहए।

एकटा एहन तन्त्रकेँ विकसित करबाक आवश्यकता अछि जाहिमे अधिक विस्तृत असल योजना निचला स्तर पर बनए, ई नहि जे राष्ट्रीय अथवा प्रांतीय स्तर पर बनल योजनाकेँ यथावत लागू कए देल जाए। मात्र तखनहि विद्यालय आ शिक्षकक 'चयन' स्वायत्तता आ बच्चाक प्रति विद्यालयक उत्तरदायित्व सार्थक भए सकत।

जिला स्तर पर विकेन्द्रीकरणकेँ लागू करबाक हेतु एक विस्तृत योजनाक रूपरेखा तैयार कएल जएबाक आवश्यकता अछि। तखनहि लक्ष्यक निर्धारण ओकरा लेल योजना-निर्माण आ ओकर उत्तरदायित्व वहन सभ स्तर पर भए सकत।

5.1.2 विद्यालयमे आ विद्यालयक निरीक्षण हेतु अकादमिक नेतृत्व :

विद्यालय प्राचार्यक अकादमिक नेतृत्वक भूमिका एखन पर्याप्त रुपेँ दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। सर्वतोभावेन विद्यालयमे हुनका प्रशासनिक सत्ताक रूपमे देखल जाइत अछि। यद्यपि ओहि सत्ताक उपयोगक हेतु हुनकामे आवश्यक नियन्त्रणक अभाव होइत अछि अथवा नियमित विद्यालयक कार्य-कलापकेँ चलएबा संबंधी पूर्ण अधिकार हुनका नहि रहैत छनि। विद्यालयी पाठ्यक्रम चयन संबंधी ने हुनका अधिकार छनि आ ने शक्ति। प्राचार्य आ शिक्षककेँ एहि बात पर विचार करबाक चाहियनि जे कोन प्रकारक सहयोग ओ अपन विद्यालयक हेतु चाहैत छथि प्रशिक्षण संबंधी गप्प हुनकालोकनिकेँ उठएबाक चाहियनि आ निरीक्षणमे सहभागी बनबाक चहियनि। वर्त्तमानमे हुनकालोकिनकेँ शिक्षकसँ भिन्न नहि बुझल जाइत छनि, कम सँ कम अकादमिक मामलामे। प्राचार्य आ प्राचार्यक समूह जे भूमिका विद्यालयक समूहक निवाहि सकैत छथि तकरा प्रमुखतासँ रखबाक आवश्यकता अछि। एहि संबंधमे संसाधन निर्माणक आवश्यकता पर जोर देबाक आवश्यकता अछि।

विद्यालयमे आइ काल्हि गुणवत्ता बढ़ाएब, पर्यावरण चेतनाक प्रसार आ स्वास्थ्य आदि सन राष्ट्रीय चिन्ताकेँ ध्यानमे राखि कए कएक तरहक कार्यक्रम चलएबा पर जोर अछि। प्राचार्यकेँ बेसी काल कएक तरहक कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु कहल जाइत अछि। अपन लक्ष्य आ पद्धतिमे हुनकालोकनिक गतिविधि एक दोसरक संग मिलल जुलल होइत अछि। ई महत्त्वपूर्ण अछि जे विद्यालय स्तर पर योजना बनएबाक प्रक्रियामे शिक्षककेँ सेहो शामिल कएल जाए जे कोन प्रकरेँ ओ लोकनि एहि कार्यक्रमके नियमित विद्यालय कार्यक्रमक हिस्सा बनाए सकताह। ई कार्यक्रम समुदाय आ ब्लॉक स्तर पर चलाओल जा सकैत अछि।

परम्परागत रूपसँ विद्यालयक देखभाल विद्यालय निरीक्षक करैत छथि। ई व्यवस्था शिक्षककेँ अकादमिक समर्थन देबाक बदलामे हुनकालोकिन पर बेसी नियन्त्रणमे

बनाओने रहैत अछि। विद्यालय निरीक्षकक अनेक कार्य अछि जाहिमे विद्यालयक निरीक्षण सेहो शामिल अछि। हुनक निरीक्षण संयोगेसँ होइत अछि आ ओहि आभ्यन्तर सजायक डरेँ शिक्षक आ विद्यार्थी विद्यालयक सकारात्मके छवि प्रस्तुत करैत छथि, वस्तवकिताकेँ नुकाए रखैत छथि। एहिसँ निरीक्षण पुलिसिया कारवाईमे बदलि जाइत अछि। विशिष्ट कक्षा-अध्ययनक संदर्भमे निरीक्षणक माध्यमे गुणवत्ता बढ़ाओल जा सकैत अछि। लक्ष्य, मानक आ व्यावहारिक अर्थमे निरीक्षणक व्यवस्थाकेँ पर्याप्त सोचि विचारिकेँ लागू कएल जएबाक चाही जाहिसँ अपेक्षित परिणाम भेटि सकए।

5.1.3 पंचायत आ शिक्षा :

संविधानक 73 सँ संशोधनक द्वारा गाम, जिला आ तालुक स्तर पर देशमे पंचायती राज व्यवस्था लागू कएल गेल जाहिसँ ग्रामीण विकास कार्यक्रम, आर्थिक विकासक कार्यक्रम, सामाजिक न्याय आदिक दिशामे लोक सामूहिक रूपसँ कार्य कए सकए। 73 म संशोधनमे एहन 29 विषयकेँ चिहिन्त कएल गेल अछि जकरा पंचायतकेँ स्थानान्तरिक कएल जएबाक अछि, जाहिमे प्राथमिक आ माध्यमिक शिक्षा, वयस्क एवं अनौपचारिक शिक्षा, पुस्तकालय, तकनीकी प्रशिक्षण आ व्यावसायिक शिक्षा शामिल अछि। प्रत्येक राज्य सरकार राज्य पंचायती राज एक्ट बनओलक जाहिसँ विकेन्द्रीकरणक संवैधानिक प्रावधानक आधार पर प्रजातान्त्रिक विकासक मार्ग प्रशस्त होअए।

कार्यकलापमे अनेकार्थकता आ परस्पर व्याप्ति

देशक कतोक राज्यमे गतिविधि कएल गेल अछि जाहि आधार पर पंचायती राज्यक भिन्न-भिन्न स्तरकेँ लागू कएल जा सकए। कतोक राज्यमे एहिसँ संबंधित कार्य पी0आर0आइ0 केँ प्रत्येक स्तर पर दए देल गेल अछि। यद्यपि व्यवहारमे तालुक आ ग्राम पंचायत सन संस्था किछुए कार्यक निष्पादन करैत अछि। किछु राज्यमे दरमाहा बँटबाक छोड़ि तालुक आ ग्राम पंचायत शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला आ बाल विकासक क्षेत्रमे भरिसके कोनो उल्लेखनीय कार्य करैत अछि। एतदतिरिक्त भिन्न- भिन्न स्तर पर अनेकार्थता आ परस्पर व्याप्ति पाओल जाइत अछि।

ई उलझन बेसी काल तीन स्तरमे संघर्षक कारण बनि जाइत अछि। विशेषतः एहि अर्थमे : योजनाके बनबैत अछि? निर्णय के लैत अछि? चयन के करैत अछि? सहमति के दैत अछि? लागू के करैत अछि? धन के उपलब्ध करबैत अछि? देखैत के अछि? स्पष्ट अछि जे भिन्न-भिन्न स्तर पर भूमिका निर्धारणमे स्पष्टताक अभाव अछि।

पूरकताक सिद्धान्त : पूरकता पंचातयी राजक आधार थिक। पूरकताक सिद्धान्तक अनुसार जे काज जाहि स्तर पर संभव अछि ओकरा ओही स्तर पर कएल जएबाक चाही, उच्च स्तर पर नहि। जे काज निचला स्तर पर सुचारु रूपसँ कएल जा सकए तकरा ओही स्तर पर कएल जएबाक चाही। ई एकटा तर्क आ यथार्थ विश्लेषणक माङ करैत अछि जाहिसँ पंचायती राजक विविध स्तर पर सुचारु रूपसँ कार्यक सम्पादन भए सकए।

पंचायती राजकेँ मजबूती प्रदान करब : समानान्तर स्वायत्त रजिस्टर्ड संस्था सभ भिन्न-भिन्न स्तर पर बनाओल जएबासँ, उदाहरणार्थ जिला सारक्षता समिति, डी0 पी0 ई0 पी0 समिति, राज्यस्तरीय एस0 एस0 ए0 समिति, तालुका आ गामक स्तर पर सेहो एहि प्रकारक समितिक गठन पंचायती राजक शक्तिकेँ काफी कमजोर कए दैत छैक। ई समानातर संस्था सभ भिन्न-भिन्न स्तर पर विभिन सेक्टरमे बृहद् रूपसँ पसरि गेल अछि। प्रत्येक गामे ई सभ देखबामे अबैत अछि- ग्राम शिक्षा समिति, जलागम विकास समिति, रैयत मित्र समिति, जंगल समिति आदि। एहिमेसँ कानो पंचायतक प्रति उत्तरदायी नहि होइत अछि। एहि समितिकेँ बाहरक धन प्रदान करए बला संस्था सभ धन उपलब्ध करबैत अछि आ अधिकतर एहिमे गामक धनाढ्य लोक सभ रहैत छथि।

संक्षेपमे पंचायती राजक कार्य-कलापक मुख्य समस्या अछि :

- पंचायती राज्यक विभिन्न स्तर पर कार्य आ उपलब्ध धनकेँ लएकेँ कोनो समन्वय नहि।
- गामक स्तर पर समानान्तर समितिक गठन प्रजातान्त्रिक तरीकासँ निर्वाचित संस्था सभ पर हावी भए गेल अछि। ई एक तरहेँ स्थानीय योजनामे जन-भागीदारीक मजाक उड़बैत अछि।

पछिला किछु वर्षसँ ब्लौक आ जिला स्तर पर एहन आँकड़ा रखबाक जोर पकड़ने अछि जाहिमे विद्यालयमे नाम लिखओनिहार विद्यालय छोड़निहार आ ओकर

उपलब्धिक हिसाब राखए। बृहद् विद्यालय प्रबंधनक हिसाबसँ सेहो एकर उपयोग होइत अछि। एहि आधिकारिक दबावमे जे एहि तरहक आकड़ा विस्तारसँ राखल जाए, विद्यालय पर दबाव बढ़ल अछि। एहिसँ बिनु चाहनहुँ विद्यालयक प्रदर्शनमे संख्याक महत्त्व बढ़ल अछि जखनकि अकदमिक योजना आ पाठ्यक्रमक प्रसारकेँ जोड़बाक दिशामे कोनो खास नहि भेल अछि।

ब्लौक संसाधन केन्द्र (बी0 आर0 सी0) आ संकुल संसाधन केन्द्र (सी0 आर0 सी0) प्रायः सभ जिलामे अपन विद्यालय आ शिक्षक पर नजरि रखैत अछि। प्रशिक्षण देबाक हेतु जिला शिक्षा आ प्रशिक्षण संस्थान प्रत्येक जिलामे बनाओल गेल अछि। परस्पर व्याप्त गतिविधि आ स्पष्टताक अभावमे एहि संस्था सभक कार्य प्रभावित होइत अछि। बेसी काल एहन संसाधन केन्द्रक अधिकारी मात्र प्रशासनिक आ आकड़ा जमा करबाक काजक हेतु रहि जाइत छथि। विद्यालय स्तरक अकादमिक योजनाक विकेन्द्रीकरण आ शिक्षकक सक्रिय एवं रचनात्मक सहयोग पाठ्यक्रम प्रसारमे बच्चाक जरूरतकेँ ध्यानमे रखैत कएल जा सकैत अछि। ई आवश्यक अछि जे ब्लौक संसाधन केन्द्र आ संकुलन संसाधन केन्द्रकेँ सक्रिय कएल जाए जाहिसँ ओ महत्त्वपूर्ण भूमिका निमाहि सकए। ई आवश्यक अछि जे एहि केन्द्र सभमे जानकार व्यक्ति सभक भूमिका तय कयल जाए। विषयक जानकारी आ प्रशिक्षणक आधार पर हुनक क्षमताक विकास कएल जाए आ कार्य करबाक हेतु हुनका किछु स्वायत्तता देल जाए। कतहु आन ठाम बनाओल गेल कार्यशालाक आयोजन कएल जएबाक बदलामे। ई केन्द्र सभ अपन स्थानीय आवश्यकताक अनुसारेँ कार्यशालाक आयोजन कए सकैत अछि। विद्यालय निरीक्षणक नियम, व्यवस्थित निरीक्षणक तरीका, अकादमिक मदति आदिक तरीका ताकल जएबाक आवश्यकता अछि। एकटा एहन सांस्थानिक तन्त्रक सेहो आवश्यकता छैक जे संसाधन केन्द्र द्वारा विकसित कार्यक समन्वय करए।

शिक्षकक हेतु विद्यालय आधारित अकादमिक सहायताकेँ मजबूत अनाओल जएबाक क्रममे ई आवश्यक अछि जे गाम, समुदाय आ ब्लौकक स्तर पर आ ओहि तरहेँ शहरी इलाकामे सेहो एहन जानकार लोकक सूची बनाओल जाए जाहिसँ समय-समय पर शिक्षक आवश्यकतानुसार विचार लए सकथि। ई सम्भव भए सकैत अछि जे एहि प्रकारक सहायता ब्लौक/संकुल स्तर पर तैयार कएल जाए आ ओकरा

फेरि नियमित शिक्षक सहायता कार्यक्रमसँ जोड़ि कए एकरा हेतु धन उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि।

5.2 पाठ्यक्रम पुनर्नवीकरणक हेतु शिक्षक शिक्षा :

यद्यपि 1960 क दशकसँ शिक्षक केर शैक्षिक निपुणताकेँ अत्यावश्यक मानल जाइत रहल अछि मुदा एकर जमीनी यथार्थ चिन्तनीय छैक। कोठारी आयोग (1964-66) एहि बात पर जोर देलक अछि जे शिक्षक शिक्षाकेँ अकादमिक जीवनक मुख्य धारासँ जोड़ल जएबाक चाही, मुदा शिक्षक- शिक्षा संस्था सभ द्वीप जकाँ चलि आबि रहल अछि। चट्टोपाध्याय समिति (1983-85) केर अनुशंसा छलैक जे 12 मी क बाद माध्यमिक स्तरक शिक्षक प्रशिक्षण केर अवधि पाँच वर्षक होएबाक चाही, ईहो सुझाव देल गेल छलैक जे विज्ञान आ कला संबंधी महाविद्यालयमे एकटा शिक्षा विभागक सेहो स्थापना होएबाक चाही जाहिसँ छात्र शिक्षक शिक्षाकेँ विषय बनाए सकथि। 1993 क यशपाल समितिक रिपोर्ट 'बिनु बोझक शिक्षा' मे कहल गेल छैक 'एहि कार्यक्रममे जोर एहि पर होअए जे प्रशिक्षु सभमे स्वअधिगम आ स्वतन्त्र चिन्तनक विकास भए सकए।

वास्तवमे यद्यपि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रममे तन्त्रक आवश्यकताकेँ ध्यनमे रखैत कार्यक्रममे बनाओल जाइत छैक जाहिमे शिक्षाकेँ मात्र सूचनाक संचारण मानल जाइत छैक, पाठ्यक्रम सुधारमे प्रयासकेँ प्रर्याप्त ढंगसँ शिक्षक- शिक्षा द्वारा समर्थन नहि भेटि पओलक अछि। पैघ स्तर पर पैरा शिक्षकक नियुक्ति व्यावसायिक शिक्षकक छविकेँ मलिन कएलक अछि। 1990 क दशकक बेसीरास प्रयास शिक्षकक नौकरीक समयमे प्रशिक्षाकेँ लए कए छलैक। ई सेवा पूर्व आ सेवारत शिक्षकक दूरीसँ चौड़ा कएलक अछि। विद्यालयक शिक्षककेँ उच्च ज्ञानक केन्द्रसँ अलग राखब जारी अछि। हुनक वास्तविक आवश्यकताक दिस ककरहु ध्यान नहि गेलैक अछि। वर्तमान कार्यक्रम सभमे अध्ययन-अध्यापन, पाठ्यक्रमक संरचना आ विद्यालय आ समाजक संबंधक कोनो जगह नहि छैक। नवीनतम नवचारी शैक्षणिक प्रयोगसँ सेहो एकरा कम मतलब छैक।

5.2.1 शिक्षक शिक्षाक संदभमे वर्तमान चिंता :

वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम सभ एहन व्यवस्था मे शिक्षककेँ रहबाक प्रशिक्षण दैत अछि जतए शिक्षाकेँ सूचनाक आदान-प्रदानक रुपमे देखल जाइत अछि। पाठ्यक्रममे सुधारक प्रयास अपर्याप्त शिक्षक शिक्षणक कारणे प्रायः असफल रहल। व्यावसायिकक रूपमे शिक्षकक परिचयकेँ पैघ स्तर पर पारा-शिक्षकक बहालीक कारणे धूमिल भेल। शिक्षकक सेवाकाल प्रशिक्षण 1990क आसपासक बेसीरास प्रयासक मूल छल। एहिस सेवा-पर्व आ सेवाकाल शिक्षक प्रशिक्षणक बीचक दूरी आओर बढ़ल। पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक आ माध्यमिक शिक्षक, उच्चतर शिक्षाक केन्द्रसँ दर राखल जाइत छथि आ व्यावसयिक विकासक हुनक आवश्यकता पर अखन तक क्यो ध्यान नहि देलक अछि। वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम ने कोनो परिप्रेक्षमे नव विचार अथवा शिक्षा पद्धति पर ध्यान दैत अछि आने विद्यालय आ समाजकेँ जोड़बा पर। एहिमे नव शैक्षणिक प्रयोगक हेतु सेहो कोनो स्थान नहि छैक।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमक पूर्वक अनभुव कहैत अछि जे एहिमे ज्ञानकेँ देल गेल वस्तुक रुपमे 'पाठ्यक्रममे शामिल मानल जाइछ आ बिनु प्रश्न पुछनहि स्वीकार कए लैत छथि। छात्र-शिक्षक अथवा नियमित शिक्षक द्वारा कखनहु पाठ्यक्रमकेँ ढंगसँ अध्ययन नहि कएल जाइत अछि।। शिक्षकक भाषिक दक्षता बढ़ाओल जएबाक आवश्यकता छैक, वर्तमान शिक्षक- शिक्षा कार्यक्रम सभ पाठ्यक्रममे भाषाक महत्त्वकेँ नहि बुझइछ। ई मानल जाइत अछि जे कार्यक्रमक क्रममे विषय-विशेषक शिक्षा आ निर्देशक माध्यमक बीचमे अपनहि संबंध स्थापति भए जाइत अछि। बेसीरास शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम छात्र-शिक्षककेँ अपन अनुभवक वर्णन करबाक अवसर नहि दैत अछि आ तेँ परिवर्तनक माध्यमक रूपमे शिक्षककेँ तैयार नहि कए पबैछ।

5.2.2 शिक्षक शिक्षाक दर्शन :

शिक्षक-शिक्षाकेँ विद्यालयी व्यवस्थाक बढ़ैत आवश्यकताक प्रति संवेदनशील होएबाल चाही। एहि हेतु एकरा शिक्षककेँ तैयार करबाक चाही एहि तरहक होएबाले :

- सिखएबा- सिखबाक समयमे उत्साहवर्द्धक, मदति करएबला आ मानवीयता बढबएबला जाहिसँ छात्र अपन योग्यताकेँ बुझि सकए, अपन शारीरिक आ शैक्षिक क्षमताकेँ चीन्हि सकए आ एकर संवर्द्धन कए सकए आ जिम्मेदार नागरिक बनबा सन सामाजिक आ मानवीय मूल्यकेँ उत्पन्न कए सकए आ
- एहन समूह जे पाठ्यक्रमक नवीकरणक हेतु, जाहिसँ ओ बदलैत सामाजिक परिप्रेक्ष्य आ सिखनिहारक व्यक्तिगत आवश्यकताक अनुसार प्रासंगिक रहि सकए केर सक्रिय सदस्य बनाबले

एहि दर्शनक अनुभव करबाक हेतु शिक्षक- शिक्षा कार्यक्रमक निम्नलिखित गुण होएबाक चाही -

- एकरा सिखबाक तरीका बुझबाक चाही आ एहि हेतु उपयुक्त वातावरण निर्माण करबाक चाही।
- सिखबाकेँ पढ़बा-पढ़एबाक परिप्रेक्ष्यमे निर्मित व्यक्तिगत अनुभवक रूपमे देखबाक चाही नहि कि पाठ्यपुस्तकमे निहित ज्ञानक रूपमे।
- जाहि परिप्रेक्षमे कार्य करबाक हो तकर सामाजिक, व्यावसायिक आ प्रशासनिक परिदृश्यक प्रति संवेदनशील होएबाक चाही।
- उपयुक्त क्षमताक विकास करबाक चाही जाहिसँ मात्र वास्तविक स्थितिमे उपर्युक्त ज्ञानक विकास नहि होअए बल्कि ओकर निर्माणक क्षमता सेहो होअए।
- समृद्ध ज्ञान आ भाषिक दक्षता प्राप्त होअए से उपाय करबाक चाही। शिक्षक अपन व्यक्तिगत आकांक्षा, अपन धारणा, क्षमता आ झुकावकेँ बुझि सकए।
- परिस्थिति विशेषक परिप्रेक्ष्यमे शिक्षक रूपमे व्यावसायिक स्थितिक आकलन कए सकए।
- मूल्यांकनकेँ लगातार चलएबला शैक्षणिक प्रक्रिया बुझए।
- कला शिक्षक द्वारा बच्चामे कलात्मक आ आध्यात्मिक ज्ञान विकसित करए।
- पिछड़ल जा अक्षम बच्चा समेत सभ बच्चाक शैक्षणिक आवश्यकताक पूर्ति करए।
- शिक्षकक व्यवसायपरकता बढ़एबाक हेतु बदलल परिवेशमे एकटा संयुक्त शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमक आवश्यकता छैक।

- ओ बच्चा सभ जे प्रतिदिनक शैक्षिणक, व्यक्तिगत आ सामाजिक समस्याक समाधान हेतु विशेष मदति चाहैत अछि केर हेतु 'समाधानकर्ता' आ 'सहायक' बनाबाक हेतु आवश्यक सहयोगी क्षमताक विकास करबाक।
- ई सिखबाक जे फलदायी कार्य कोना विभिन्न विषयक ज्ञानार्जनक माध्यम, मूल्यक विकास आ बहुकला विकासक स्त्रोत बनि जाइछ।

5.2.3 शिक्षक शिक्षा कार्यक्रममे प्रमुख परिवर्तन :

- ई बुझबाक चाही जे सिखनिहार कें प्राथमिकता देल जएबाक छैक। सिखनिहारकें निष्क्रिय ग्रहणकर्ताक रूपमे देखबाक बदलामे सक्रिय भागीदारक रूपमे देखल जएबाक चाही आ ओकर क्षमताकें स्थिर नहि बूझि परिवर्तनशील आ सोझ निज अनुभवक माध्यमसँ विकास करबामे सक्षम मानबाक चाही। पाठ्यक्रमक प्रारूप एहि तरहें तैयार कएल जाएत जाहिसँ ओ सिखनिहारकें खेल आ कार्यक समय देबाक अवसर प्रदान करए; एहन कार्य पर बल देबए जाहिसँ शिक्षक सिखनिहारक प्राकृतिक तथा सामाजिक अनुभवसँ जुड़ल प्रश्नकें बूझि सकथि; बच्चाक सोचबा आ सिखबाक विषयमे सूझक प्रयोग कए सकथि; आ बच्चाके ध्यानसँ हास्यपूर्वक आ संदवेदना पूर्वक सुनबाक अवसर पाबथि।
- शिक्षाकें एहन सहभागी क्रियाक रूपमे प्रोस्ताहन देल जएबाक चाही जे सिखनिहारक सामूहिक सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे, मित्रमण्डलीमे, समाजमे अथवा संपूर्ण राष्ट्रमे होइत अछि। गाँधी, टैगोर, श्री अरबिन्द, गिजुभाई, जे कृष्णमूर्ति , आ डी बी सन शिक्षाविदक विचारकें अवस्य अध्ययन कएल जाद मुदा बिनु कोनो सन्दर्भक आ एकर बिनु परवाह केने जे ई विचार कतए जनम लेलक । तें आश्चर्य नहि जे ई पढ़ल आ स्मरण तऽ कएल जाइत अछि मुदा संयोगहि कहियो अध्यापक-शिक्षक द्वारा प्रयोगमे आनल जाइत होअए जे एहि विचारकें प्रशिक्षु शिक्षकक समक्ष रखैत छथि। भागीदारीक प्रक्रिया आत्म- अनुभवक पर आधारित अछि जाहिमे सिखनिहार अपन ज्ञानक रचना- ग्रहण करबाक क्षमता, वार्तालाप, देखबा आ देखएबासँ करैत अछि।

- प्रमुख परिवर्तन अछि शिक्षक भूमिकामे जतए ओ ज्ञानक स्रोत,संरक्षक आ सिखएबा-सिखबाक प्रक्रियाक प्रबंधक तथा शैक्षणिक ओ प्रशासनिक आदेश- जे नियम अथवा पाठ्यक्रममे निदृष्ट हो केर लागू करएबाक केन्द्रबिन्दु थिकाह। आब हुनकालोकनिक भूमिका ज्ञानक स्रोतक बदलामे ज्ञान निर्माणमे, सूचनाकेँ ज्ञानमे बदलबामे, विविध अनुभवक माध्यमसँ ज्ञान अर्जित करबामे आ सिखनिहारकेँ अपन शैक्षणिक लक्ष्यक प्राप्ति' करबाले प्रोत्साहित करएबामे बदलबाक आवश्यकता छैक।
- एकर अतिरिक्त ज्ञानक अवधारणामे सेहो बदलाव एलैक अछि। आब ज्ञानकेँ लगातार होमए बला प्रक्रिया मानल जाइछ जे वास्तविक अनुभव सँ देखबा, परखबा अदि सँ होइत छैक, सँ प्राप्त कएल जाइत अछि। शिक्षक-शिक्षामे ज्ञानक भाग शिक्षाक अनुशासनक सीमा बला क्षेत्रसँ लेल गेल छैक आ ओकरा एहि रूपमेँ प्रस्तुत करबाक आवश्यकता छैक। एकर अर्थ भेल जे शिक्षाक दृष्टिसँ कोनो व्याख्याकेँ प्रस्तुत करबाक हेतु सावधानीपूर्वक प्रयासक आवश्यकता छैक नहि कि मात्र सैद्धान्तिक विचारकेँ 'शिक्षाक हेतु आवश्यक' अनुशासनक रूपमे।
- शिक्षक-शिक्षामे ज्ञान शिक्षाक परिप्रेक्ष्यमे बहु अनुशासनिक प्रकृतिक अछि। दोसर शब्दमे शिक्षक-शिक्षामे अवधारणात्मक ज्ञानकेँ एहि तरहेँ संलग्न कए जाए जाहिसँ ओ शैक्षिक घटना जेना कार्य, कर्त्तव्य, प्रयास, तरीका, अवधारणा आ घटना केँर व्याख्या कए सकथि।
- एहि तरहक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम कोनो सैद्धान्तिक गप्पकेँ देखबाक आ एकर प्रायोगिक पक्षकेँ संयुक्त रूपसँ बुझबाक अवसर नहि कि अलग अलग अवयवक रूपमे। ई प्रशिक्षु- शिक्षक आ शिक्षककेँ क्षेत्रीय प्रयासक प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करएबामे मदति करैत अछि। अतः एक बेर स्वयं आ अनका द्वारा प्रयोग कएल जएबाक बाद, ई अध्ययन व्यवस्थाक प्रति व्यक्तिकेँ अपन दृष्टि विकसति करबामे मदति करत। एहि प्रकारक शिकक्ष सिखबा योग्य वातवरण बनएबाले बेसी उपयुक्त होएताह आ वर्तमान परिस्थितिकेँ सुधारबाक प्रयास करताह ने कि मात्र तकनीकी ज्ञान आ आत्मविश्वासक सहायतासँ अपनाकेँ ओकर अनुरूप बनओता।

  एकटा अन्य महत्त्वपूर्ण बदलाव अछि शैक्षणिक प्रक्रिया पर सामाजिक परिप्रेक्ष्यक प्रभावकेँ बुझब।

- सिखब ओहि सामाजिक परिप्रेक्ष्यसँ अत्यन्त प्रभावित होइत अछि जतएसँ शिक्षक आ छात्र अबैत छथि। विद्यालय आ वर्गक सामाजिक वातावरण, सिखबाक प्रक्रिया आ पूरा शिक्षा व्यवस्थाकेँ प्रभावित करैत अछि। एकरा देखैत आवश्यकता छैक जे सिखनिहारक मनोवैज्ञानिक अवस्था पर अन्यन्त जेार देबाक बदलामे ओकर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ राजनैतिक परिप्रेक्ष्यकेँ ध्यानमे राखल जाए।

- विभिन्न परिप्रेक्ष्यक कारणे सिखबामे अंतर अबैत छैक। विद्यालयी शिक्षा, विद्यालयसँ बाहरक विस्तृत सामाजिक परिप्रेक्ष्यसँ प्रभावित आ संवर्द्धित होइत अछि।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रममे समकालीन भारतीय समाजक समक्ष उपस्थित मुद्दा आ चिंता, भारतक विविधतापूर्ण प्रकृति आ परिचय, लिंग, समानता, जीवनयापन आ गरीबी सँ जुड़ल मुद्दा सभक हेतु स्थान होएबाक चाही। एहिसँ शिक्षगणकेँ शिक्षाकेँ परिप्रेक्ष्यपूर्ण बनएबामे आ शिक्षाक उद्देश्यक तथा समाजसँ एकर संबंधकेँ बुझबामे मदमि भेटतनि।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रममे प्रदर्शनक मूल्यांकन पद्धतिमे बदलाव- वार्षिक सँ लगातार होमएबला प्रक्रिया, केर बुझबाक आवश्यकता छैक। शिक्षक अध्यापक, छात्र-शिक्षकक मदति आ सहयोग करबाक, खोज करबाक आ जोड़बाक, लिखबाक एवं पढ़बाक, प्रयास आ प्रस्तुतिमे मौलिकता आदि क्षमताक मूल्यांकन करैत छथि।
- मूल्यांकनक अनेक प्रकार अछि- स्व-मूल्यांकन, मित्र मंडली द्वारा मूल्यांकन, शिक्षकक सहयोग आ सालक अंतमे वार्षिक मूल्यांकन। सभ मूल्यांकनक उद्देश्य सुधार, अन शक्ति आ कमजोरी केँ बुझब, ककरा मजबूत करबाक अछि से बुझब आ सिखबाक प्रक्रियामे अगिला उद्देश्य निर्धारित करब होइत छैक।
- मूल्यांकन अंकक रूपमे (मात्रा सूचक) नहि होएत बल्कि वर्गक आधार पर (स्तर सूचक) होएत जतए छात्रक उपलब्धिक लगातार मूल्यांकन होइत अछि आ ओकर वर्गीकरण विभिन्न क्रियाकलापमे प्रदर्शनक आधार पर होइत छैक।
- संक्षेपमे शिक्षक-शिक्षाक नव दर्शन विद्यालयी व्यवस्थामे परिवर्तनक प्रति बेसी उत्तदायित्व केर बोध कराएब होएत किएक तऽ एहिमे आमूलचूल परिवर्तन भए रहल छैक। प्रमुख अन्तरण नीचाँ देखाओल गेल अछि।

प्रमुख अन्तरण	
सँ	**तक**
❑ शिक्षक केन्द्रित, स्थिर संरचना	❑ सिखनिहार केन्द्रित, लचीला प्रक्रिया
❑ शिक्षक निर्देशित आ निर्णीत	❑ सिखनिहारक स्वायत्तता
❑ शिक्षक मार्गदर्शन आ देखरेख	❑ व्यवस्था, मदति आ सिखबाकेँ प्रोत्साहन
❑ शिक्षा ग्रहण केनिहार	❑ सिखबामे भागीदारी
❑ वर्गक अंदर शिक्षा	❑ विस्तृत सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे शिक्षा
❑ ज्ञान देल जाएबला आ निश्चित	❑ज्ञान विकसित आ निर्मित होएबला
❑ अनुशासन पर जोर	❑ बहुअनुशासनिक शिक्षा पर जोर
❑ एकध्रुवीय अनुभव	❑ विविध आ विस्तृत अनुभव
❑ मूल्यांकन छोट, कम	❑ विशद, लगातार

शिक्षकक हेतु आवश्यक तैयारी

- बच्चाक ध्यान राखब आ ओकरासँ आवेश।
- सामाजिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक संदर्भमे बच्चाक ज्ञान।
- ग्रहण करएबला आ लगातार सिखएला होएब ।
- शिक्षाकेँ अपन व्यक्तिगत अनुभवक सार्थकताक रूपमे देखब, ज्ञान निर्माण मननशील ज्ञानक लगतार प्रक्रियाक अंग होइत अछि।
- ज्ञानकेँ पाठ्य पुस्तकक बाह्य ज्ञानक हिस्साकेँ नहि देखि सम्मिलित संदर्भ आ व्यक्तिगत सन्दर्भमे ओकर निमित्तकेँ देखब।
- समाजक प्रति अपन दायित्व आ बेसी नीक विश्वक हेतु कार्य करब।
- फलदायी कार्य आ हाथ सँ कएल गेल कार्यक अनुभवक क्षमताकेँ बुझब-वर्गमे आ वर्गसँ बाहर।
- पाठ्यक्रमिक संरचना, नीति, निर्धारण आ विषयवस्तुक अन्वेषण।

5.2.4 शिक्षक शिक्षा आ प्रशिक्षण :

शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षकक व्यावसायिक विकास आ विद्यालयमे बदलावक कारक बनि सकैत अछि। एहिसँ शिक्षक अपन अनुभवकेँ पक्का कए आत्मविश्वास अर्जित करैत छथि। एहिसँ अन्य शिक्षक सभसँ व्यावसायिक ढंगसँ निपटबा आ ज्ञानकेँ नव करबामे सहायता भेटैत छैक।

शिक्षा समिति (1964-66) सुझाव देने छल जे नौकरीक क्रममे शिक्षक सभक प्रशिक्षण आयोजन विश्वविद्यालय आ शिक्षक संगठन सभक द्वारा कएल जएबाक चाही आ सभ पाँच सालमे एहि तरहक कार्यक्रम अनुसन्धानक आकड़ाक आधार पर निश्चित होएबाक चाही आ प्रशिक्षण संस्थानकेँ साल भरि सेमिनार, कार्यशाला, रिफ्रेशर कोर्स आ समर इन्स्टीच्यूट आयोजित करबाक चाही। नेशनल, रिफ्रेशर कोर्स आ समर इन्स्टीच्यूट आयोजित करबाक चाही नेशनल कमीशन ऑन टीचर्स (1983-85) शिक्षक केन्द्रक विचार सामने रखने छल जे एकटा मिटिंग स्थल जकाँ होअए जतय लोक जुटए आ अपन अनुभवकेँ बाँटए। एकर सुझाव छलैक जे शिक्षक शिक्षावकाश पर ज्ञानक केन्द्रक यात्रा पर जाए सकैत छथि। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) सेवापूर्व आ बादक शिक्षाकेँ जोड़ि देलक। ई सभ जिलामे डाइटक कल्पना कएलक। 250 शिक्षा महाविद्यालयक श्रेणी बढ़ाकए ओकरा कॉलेज ऑफ टीचर्स एजुकेशन बनाए देबाक हेतु कहलकैक। संगहि ई पचास उच्च शिक्षा अध्ययन संस्थान स्थापित करबाक हेतु कहलकै आ एस0सी0 इ0 आर0 टी0 केँ मजबूत कएल जएबाक गप्प कएलक।

आचार्य राममूर्ति शिक्षा समिति (1990) दर्ज कएलक जे रिफ्रेशर कोर्स आदि शिक्षकक विशेष आवश्यकता सबसँ जोड़ि देल जाए आ मूल्यांकन तथा पुनश्चर्या सेहो एकर अंग बनए। ओहन जगह सभ पर जतए प्राथमिक विद्यालय तक पहुँच बढ़एबाक हेतु, बहुश्रेणीय विद्यालय सभक स्थापना कएल गेल अछि, एहि तरहक वर्गक संचालनक हेतु शिक्षककेँ विशेष प्रशिक्षण केर आवश्यकता छनि आ ई प्रशिक्षण एहने व्यक्ति प्रदान कए सकैत छथि जनिका एहि व्यवस्थामे वर्ग प्रबंधन आ व्यवस्थापनक अनुभव होनि। उपयुक्त सामग्री आ युनिट एवं शीर्षकक योजना बनएबामे सहयोगक बिना, यदि प्रबंधनक विषयमे बताओल जाए तऽ ओ ओहि शिक्षकक हेतु जनिक अनुभव आ सोच मात्र एक श्रेणी वर्ग तक सीमित अछि, बेकार भए जाइत अछि।

मात्र की करबाक चाही से बतएबाक बदलामे विस्तृत युनिट योजना प्रयोगिक अनुभवक संग ओहि जगह पर जतए बहुश्रेणी वर्ग शिक्षा व्यवस्थाक स्थापना भेल होअए आ ओहि सँ जुड़ल चलचित्र केर प्रयोग प्रशिक्षणमे करबाक चाही जाहिसँ शिक्षकक आत्मविश्वास बढ़ए।

5.2.5 सेवारत शिक्षक शिक्षाक प्रयास आ नीति :

नव शिक्षा नीति (1986) केर ध्यानमे रखैत प्राथमिक आ माध्यमिक विद्यालयक शिक्षकक शिक्षाक हेतु डाइट, आइ0 ए0 एस0 इ0, सी0 टी0 ई0 आदिक गठन पर बल देल गेल। 500 डाइट, 87 सी0 टी0 ई0, 38 आइ0 ए0 एस0 इ0 आ 30 एस0 सी0 इ0 आर0 टी0 क गठन भए चुकल अछि मुदा ओहिमेसँ कएक केर संसाधन केन्द्रक रूपमे काज शुरू करब एखन बाँकी अछि। डी0 पी0. ई0 पी0 ब्लौक आ संकुल संसाधन केन्द्र बनओलक आ सेवारत शिक्षक-शिक्षाक प्रयास कएलक आ संकुल स्तरक विद्यालयमे शिक्षा तकनीकमे प्रमुख बदलाव आनल गेल। विस्तृत प्रयास आ एकर बावजूद जे किछु इलाकामे एहिसँ सुधार भेल अछि, सेवारत शिक्षक शिक्षाक शिक्षण पर किछु खास प्रभाव पड़ल होअए, एहन देखबामे नहि आएल अछि।

प्रशिक्षण गुणवत्ताक एकटा पैघ मानक ई अछि जे शिक्षकक हेतु प्रासङ्गिक की अछि। मुदा एहि तरहक बेसीरास कार्यक्रम वास्तविक आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि नहि बनाओल जाइत अछि। बेसीरास सम्भाषण अधारित दृष्टिकोणेँ होइत अछि जाहिमे प्रशिक्षु लोकनिकेँ हिस्सेदारी करबाक अवसर नहि भेटैत छनि। दुर्भाग्यसँ कार्य आधारित शिक्षा, उच्च कक्षाक प्रबंधन, समूह शिक्षा आ सम्मिलित ज्ञान सनक विषय जे देखाओल जएबाक माङ करैत अछि, कक्षामे पढ़ाओल जाइत अछि। विद्यालय पुनश्चर्याक सेहो आरम्भ नहि भए सकल आ संकुल स्तरक बैसार सभ शिक्षक सभमे व्यावसायिक आवश्यकता उत्पन्न नहि कएलक जे ओ हुनका संग बैसथि, चिन्तन करथि आ संग योजना बनाबथि।

पाठ्यक्रमकेँ बदलबाक कोनो प्रयासक पाछू सुव्यवस्थित सेवाकाल शिक्षा आ विद्यालय शिक्षक आधारित सहयोग होइत अछि। सेवाकाल शिक्षा कोनो घटना नहि भए सकैछ, ओ एकटा प्रक्रिया थिक जे ज्ञान, विकास आ व्यवहारमे बदलाव, शिक्षा आदि पर आधारित होइत अछि- जे कार्यशाला आदिक माध्यमेसँ देल जाए सकैत अछि।

एहिमे मात्र विशेषज्ञ लोकनिसँ ज्ञाने प्राप्त करबा पर जोर नहि रहबाक चाही, व्यावहारिक शिक्षाकेँ बढ़ाबा देल जएबाक चाही आ छात्रक समूह पर आधारित अभ्यास कुल रणनीतिक अंग भए सकैत अछि। आत्मचिन्तनकेँ एहि कार्यक्रमक महत्त्वपूर्ण अवयव मानल जाए सकैत अछि। एकटा प्रशिक्षण नीति तैयार कएल जएबाक चाही जाहिमे ओकर आवधिकता, संदर्भ आ कार्यक्रमक पद्धतिक चर्चा होअए मुदा गुणवत्ता आ जीवन्त परस्परता बेसी विकेन्द्रीकृत व्यवस्थाक आवश्यकता छैक जाहिमे प्रशिक्षाक पद्धति आ लक्ष्य स्पष्ट निर्धारित होअए। किछु तनकीक पर आधारित 'समूह प्रशिक्षण' केर प्रयोग सेहो कएल जाए सकैत अछि मुदा एहि हेतु बेसी साहस आ ईमानदारीक आवश्यकता छैक जाहिमे सेवारत शिक्षककेँ सोझे सोझे गैर व्यावसायिक ढंगसँ एहि तरहक कार्य मे लगाए देल जाए।

प्रयासरक तकनीकक उपयोगसँ पाठ्यक्रम सुधारक हेतु सकारात्मक वातावरण बनाओल जाए सकैत अछि यदि ओकर उपयोग एहन स्थानक रूपमे होअए जतए वाद- विवादक कार्य कराओल जाए जाहिमे प्रशिक्षक आ समुदायक लोक सेहो भाग लेअए। नव तकनीकमे अभिरुचि जाग्रत करबाक हेतु ओहिसँ साक्षात्कार आवश्यक छैक। प्रशिक्षण संस्थानमे कम्प्यूटर आ अन्य तकनीकी सुविधाक उपलब्धता अपर्याप्त छैक ई एकटा कारण छैक जे नव सम्प्रेषण तकनीकक सम्भावना विद्यालय आ प्रशिक्षण संस्थानक दृष्टि बदलि सकबामे पूर्ण भूमिका नहि निभाए सकल।

सेवापूर्ण अध्ययन आ सेवाकाल अध्ययन क्रममे शिक्षक लोकनिक पर्याप्त अभिमुखीकरण होअए आ एहन क्षमताक विकास होअए जे ओ पाठ्यक्रमक ढाँचाक चुनौतीकेँ बूझथि। सेवाकल प्रशिक्षण विशेष रूपसँ शिक्षकक कक्षानुभवक संदर्भमे होएबाक चाही। डाइट सनक कार्यक्रमक प्रशिक्षण आयोजित करबाक जनिक उत्तरदायित्व छनि, केर एहि तरहक कार्यक्रम आयोजित करबाक चाही जे शिक्षक आ विद्यालयकेँ ओहिसँ लाभ होअए। उदाहरणार्थ सेवाकाल प्रशिक्षणकेँ जाहि तरहेँ कामचलाउ ढंगसँ निपटाओल जाइत अछि तकर बदलामे किछु विद्यालयक चयन कए लेल जाए आ कम-सँ कम दूटा शिक्षककेँ प्रत्येक विद्यालयसँ प्रशिक्षणक हेतु बजाओल जाए। डाइट बी0 आर0 सी0 क सहयोगसँ एहन विद्यालयक चयन कए सकैत अछि। एहिसँ शिक्षाक समय प्रभावित नहि होअए आ प्रशिक्षु सिद्धान्त आ व्यवहारक बीचक

संबंधकेँ बुझि सकथि। प्रशिक्षणक हेतु अवधिकेँ साल भारिमे बाँटल जा सकैत अछि जाहिसँ शिक्षक कक्षामे ओकर अनुभव प्राप्त कए सकथि ।

प्रशिक्षणक अन्तर्गत कएक प्रकारक गतिविधि एकर अतिरिक्त सेहो अबैत अछि जेना प्रशिक्षण संस्थानमे व्याख्यानक आयोजन कराएब, विद्यालय अथवा समुदायमे कार्यशालाक आयोजन आ शिक्षककेँ प्रोजेक्ट देब आदि। सेवापूर्व आ सेवाकाल प्रशिक्षणकेँ जोड़बाक हेतु आ सेवापूर्व प्रशिक्षााक हेतु विद्यालयमे इंटर्नशिप आयोजित कराओल जा सकैत अछि आ विद्यार्थी शिक्षकसँ कहल जा कसैत अछि जे ओ अपन विद्यालयेमे कक्षाक कार्य कलाप देखथि। एहिसँ मात्र शिक्षक-प्रशिक्षककेँ प्रशिक्षण कार्यक्रमकेँ मजबूत बनएबामे मदतिएटा नहि भेटतनि वल्कि प्रशिक्षण कार्यक्रममे शिक्षकक चिन्तनक आधार सेहो भए सकैत अछि। एहि प्रक्रियाकेँ आगू बढ़बैत संबंधित विद्यालयक प्रधानाचार्यक संग गप्पक सत्र आयोजित कएल जाए जाहिसँ ओ कक्षा आधारित पढ़ाइक ढंगमे किछु परिवर्तन अनबामे मदति कए सकथि जे प्रशिक्षु शिक्षक चाहैत होथि। देख-रेख आ जानकारी लेबाक कार्यमे एस0सी0इ0 आर0 टी0 /डाइट/बी0 आर0 सी0 आ सी0 आर0 सी0 केँ सेहो शामिल कएल जाए सकैत अछि जाहिसँ पुनश्चर्या अभिलेखीकरण आ शोधक रूपमे अकादमिक सहयोग भए सकए।

5.3 परीक्षा सुधार :

'बिनु बोझक शिक्षा' रिपोर्टमे कहल गेल छैक जे दसमी आ बारहमीक अंतमे होएबला परीक्षाक एहि अर्थमे समीक्षा एकल जएबाक चाही जे एखुनका पाठ-आधारित आ क्विज परीक्षाक विधिकेँ बदलल जाए कारण जे एहिसँ तनावक स्तर काफी बढ़ि जाइत छैक। शहरी बच्चा काफी नीक प्रदर्शन करबाक तनावमे रहैत अछि तऽ ग्रामीण बच्चा एहि कारण तनावमे रहैत अछि जे पता नहि जे ओकर तैयारी एतबो छैक की नहि जे ओ सफलता पाबि सकए। असफलताक उच्च दर विशेषतः ग्रामीण, गरीब आ सामाजिक पिछड़ल सभमे जाहि तरहेँ देखबामे अबैत अछि ताहिसँ लगैत अछि जे मूल्यांकन परक परीक्षा- पद्धति पर गम्भीर विचारक आवश्यकता छैक। यदि ई व्यवस्था कार्यक होइतैक तऽ कोनो कारण नहि देखाइत अछि जे ने विकास कए पाबए ने सिखि पाबए।

दसमी आ बारहमीक परीक्षामे तनाव कम करबाक आ सफलता बढ़एबाक उपाय :

पाठ आधारित परीक्षासँ समस्या सोझरबै आ ज्ञान परकता दिस-पाठ आधारित परीक्षासँ शिक्षा-पद्धति आ शिक्षा पर खराब असर पड़ैत छैक। दूहूसँ परीक्षाक समयमे तनाव उत्पन्न होइत छैक। किछु मूल तालिका आ सूत्र बुझाए देल जएबाक चाही आ स्मृति आधारित परीक्षाक बदलामे जोर विश्लेषण, मूल्यांकन आ व्यावहारिक उपयोग पर होअए।

छोट अवधिक परीक्षा अवधि दिस झुकाव जाहिमे 25 सँ 40 प्रतिशत लघुत्तरीय प्रश्न होअए आ बाँकीक बहु विकल्पीय प्रश्न। 90 प्रतिशत उपस्थित छात्रकेँ पत्र पूर्ण रूपसँ अबैत हो आ ओकर समीक्षा करबामे सेहो सक्षम होअए।

छात्रक अपनहि विद्यालयमे परीक्षाक आयोजन होअए, गलत प्रथा सभकेँ एहि प्रकारेँ रोकल जाए सकैत अछि जे ओतए परीक्षाक पर्यवेक्षणक कार्य दोसर विद्यालयक शिक्षक करथि।

परीक्षाकेँ कोनहु कीमत पर आगू नहि बढ़ाओल जाए।

विद्यार्थीकेँ ओतबे पत्रक परीक्षा देबाक अधिकार होअए जतबेक तैयारी होअए। तीन सालक बीचमे परीक्षा पूरा भए सकए। एकटा माङ पर परीक्षा प्रणालीक रूपमे विकसित कएल जा सकैत अछि जाहिमे छात्र तखनहि परीक्ष देअए जखन ओ बूझए जे ओकरा हेतु तैयार अछि।

पास-फेल लिखबाक बदलामे जाहिसँ वाँछित दक्षताक अभावक पता चलैत छैक पुनर्परीक्षा वाँछनीय लिखल जाए।

पुनर्परीक्षा रिजल्टक तुरन्त बाद होअए जाहिसँ छात्रक साल नष्ट नहि होअए।

गणित आ अंग्रेजीक मूल्यांकन दू स्तर पर कएल जा सकैत अछि- सामान्य आ उच्चतर। लम्बा अन्तरालमे सभ विषयकेँ दू स्तर पर पढ़ाओल जाए जाहिमे सामान्यतः विद्यार्थी छओमेसँ तीन अथवा दू विषय पढ़ए आ उच्चतरमे बाँकी तीन अथवा चारि।

'बदलए बला समय सीमा' युक्त परीक्षा प्रणाली छात्रक तनावकेँ दूर करबामे मदति कए सकैत अछि।

मार्गदर्शन आ विचार विद्यालयमे उपलब्ध काराओल जा सकैछ, जे छात्रक तनाव संबंधी समस्याक समाधान करए आ छात्र, अभिभावक एवं शिक्षककेँ बतावए जे छात्रक तनावकेँ कोना दूर राखल जा सकैत छैक। बोर्डमे 'हेल्पलाइन'क स्थापना सेहो छात्र आ अभिभावकक मदति कए सकैत अछि।

5.3.1 प्रश्नपत्र निर्धारण, परीक्षा आ रिपोर्ट :

वर्तमान परीक्षाकेँ अधिक वैध बनएबाक हेतु प्रश्न निर्धारणकेँ कोन रूप देबाक आवश्यकता अछि। ध्यान नीक प्रश्न निर्धारण पर होअए मात्र प्रश्न निर्धारण पर नहि, एहि तरहक प्रश्न मात्र विशेषज्ञेक द्वारा नहि बनाओल जएबाक चाही। नीक जकाँ प्रचारित कए शिक्षक सभसँ, विषयक प्रोफेसर सभसँ, राज्यक शिक्षाविद सभसँ आओर एतेक धरि जे छात्रसँ सेहो साल भरिक बीचमे प्रश्न माङि लेबाक चाही। एहि प्रश्नकेँ विशेषज्ञक भिन्न-भिन्न मानकक आधार पर वर्गीकृत कए देबाक चाही। एकर बाद उपयोगक रेकार्ड आ परीक्षाक रेकार्ड प्रश्न पत्र तैयार करबाकाल राखी।

शिक्षक, मूल्यांकनक अपर्याप्त पारिश्रमिक भेटबाक कारणेँ नीक, ढंगसँ उत्तर पुस्तिका जँचबाक हेतु उत्साहित नहि होइत छथि। जेँकि सभ बोर्डक हालत नीक अछि तेँ गुणवत्ताक हेतु धन केँ कारण नहि बनए देबाक चाही। कम्प्यूटरीकरणक कारण परीक्षार्थीक तथा परीक्षकक पहचानकेँ नुकाकेँ राखब आब आसान भए गेल अछि। गलत व्यवस्था रोकबाले उत्तर पुस्तिकाकेँ अदल-बदल कए देल जाए। एहि तरहक आदत जे छात्र बाहरक व्यक्तिक मदतिसँ परीक्षामे चोरी नहि करए, ओकरा पहिल नब्बे मिनटमे परीक्षा केन्द्र छोड़बाक अनुमति नहि देल जाए (प्रश्नपत्र परीक्षाक बाद ओकरा देल जा सकैत अछि)।

कम्प्यूटरीकरणक कारण अंक पत्र पर विस्तृत प्रदर्शन मानककेँ दर्शायब संभव भए गेल अछि- पूर्णांक /श्रेणी, विषय विशेषक सभ छात्रक बीच प्रतिशत, ईहो संभव भए गेल अछि जे विभिन्न शिक्षकक संगति आ सतर्कताक मूल्यांकन भए सकए। अंतिम मानक, हमरा विचारेँ गुणवत्ताक गम्भीर परखक मानक थिक। एहि सूचनाकेँ सार्वजनिक बनओलासँ उच्च शिक्षा संस्थानक स्तरीयताकेँ लएकेँ अधिक जटिल आ सापेक्ष दृष्टिकोणकेँ अपनाबए पड़त। एहि विश्लेषणसँ पारदर्शिता आओत। ओहि स्थल पर रिचेकिंगक हेतु प्रार्थीक संख्यामे पर्याप्त

कमी आएल जतए छात्रकेँ एकटा निर्धारित फीसक बदलामे अपन उत्तर पुस्तिकाक प्रतिलिपि भेटि जाइत छैक।

सत्रक मध्यमे हम सभ विद्यालय आधारित आकलन तैयार कए सकी आ एहन उपायक विषयमे सोची जाहिसँ एहि तरहक आन्तरिक आकलन बेसी विश्वसनीय बनि सकए। सभ विद्यालयकेँ लगातार आ विस्तृत मूल्यांकन (सी.सी.ई.) क योजना लागू करबाक हेतु एकटा लचीला पद्धतिक आविष्कार करबाक चाहिऐक, मुख्य रूपसँ अनुमान, समाधान आ शिक्षाक संवर्द्धनक हेतु। योजनाकेँ विद्यालयक सामाजिक वातावरण आ भूमिक उपलब्धताक ध्यान रखबाक चाही।

5.3.2 मूल्यांकनमे लचीलापन :

कतोक मनोवैज्ञानिक आंकड़ा आब देखबैत अछि जे विभिन्न सिखनिहार विभिन्न तरीकासँ सिखैत (आ मूल्यांकन करबैत) अछि। तेँ परीक्षा भवनमे कलम-पेंसिल माध्यमसँ होएबाक अतिरिक्त मूल्यांकनक आओर बहुतो तरीका होएबाक चाही। मौखिक जाँच आ समूह कार्यक मूल्यांकनकेँ प्रोत्साहित करबाक चाही। सम्पूर्ण देशमे छोट पायलट प्रोजेक्टक रूपमे फुजल किताब परीक्षा आ समय बंधन रहित परीक्षा महत्त्वपूर्ण होएत। एहि तरहक नवीकरण, परीक्षाकेँ मोन रखबाक क्षमताक परीक्षण सँ उच्चस्तरीय क्षमता सभ जेना-व्याख्या, विश्लेषण आ समस्या समाधानक कलाक परीक्षण दिस लए जाएत। पारंपरिक परीक्षाकेँ सेहो एहि प्रणाली दिसि बेसी नीक प्रश्न पत्र रचना आ परीक्षार्थीकेँ स्तरीय आ आवश्यक सूचना (जेना आवर्त्तन सारिणी, त्रिकोणमितिक सूत्र, नक्शा, ऐतिहासिक तिथि, आ सूत्र) प्रदान करबासँ मोड़ल जाए सकैत अछि।

सिखएबलाक प्रकृति आ शिक्षाक स्तरमे विविधताक कारणेँ ई सोचब जे सभ छात्र सभ विषयमे समान क्षमताक प्रदर्शन करए, जहिसँ ओ शिक्षाक अगिला सीढ़ी पर चढ़ए, अनुचित अछि। भारतमे शहरी-ग्रामीण समाजक दूरी केँ देखैत सेहो ई विचार निरर्थक अछि। ई गप्प दस्तावेजमे संग्रहित अछि जे ग्रामीण विद्यालय सभ मे पढ़ब छोड़बाक पैघ कारण गणित आ अंग्रेजीमे असफल रहब होइछ। बोर्डकेँ एहि विषयक परीक्षा दू (तीनो) स्तर पर लेबाक संभावना तकबाक चाहिएक आ छात्रकेँ विकल्प होइक जे ओ कोनो एक स्तरक परीक्षा देअए। एकर अर्थ इ नहि होएबाक चाही जे विभिन्न स्तरक हेतु पाठ्यपुस्तक अथवा पाठ्यक्रम भिन्न होएत।

'सभक हेतु एक परीक्षा' प्रणाली संस्थाक हेतु तऽ सुविधगर होइत अछि मुदा छात्रक हितैषी नहि। आ नहि ई तेजी सँ विकसित होइत भारतीय रोजगार-बाजारक आवश्यकता- जे बढ़ैत विशेषज्ञता पर आधारित अछि, केर पूर्ति करैत अछि। औद्योगिक सभा आधारित मूल्यांकन कें बेसी मानवीय आ अलग कएल व्यवस्था सँ बदलबाक आवश्यकता छैक।

यदि कोनो अर्थशास्त्री भविष्यवाणी करैत छथि जे आगामी दशक मे चारि मे चारू नौकरी सेवा क्षेत्रसँ होएत तऽ भारतीय शिक्षा- व्यवस्थामे आमूलचूल परिवर्तनक आवश्यकता छैक। जेना अत्यन्त कम भारतीय स्तरीर कार्य करैत छथि आ बेसी सँ बेसी श्रम करैत छथि बाँकी भारतीयक समस्या समाधानक हेतु, तहिना भारतीय परीक्षा पद्धतिकें सेहो बेसी फुजल, लचकदार, निर्माणशील आ लोकक हितैषी बनए परत।

5.3.3 अन्य स्तर पर बोर्डक परीक्षा :

कोनो तरहें बोर्ड अथवा ओहि तरहक अन्य संस्थाक द्वारा बोर्ड अथवा राज्यस्तरीय परीक्षा सभक आयोजन विद्यालयक अन्य स्तर पर नहि कराओल जा सकैछ। उदाहरणार्थ कक्षा 5,8 आ 11 संगहि कक्षा 10 क परीक्षा सेहो ओकरा हेतु वैकल्पिक कए देल जाए जे कक्षा 11 मे ओही विद्यालयमे रहए चाहैछ (आ जकरा बोर्डक प्रमाणपत्रक आवश्यकता नहि छैक) एकर स्थान पर विद्यालयक आंतरिक परीक्षा लेल जा सकैत अछि।

5.3.4 प्रवेश परीक्षा :

विद्यालयक बोर्ड परीक्षा आ प्रतियोगिता प्रवेश परीक्षा सभकें भिन्न कएल जएबाक आवश्यकता छैक। एहि परीक्षा सभक तनाव कम भए सकैत अछि यदि ओ कम देबए पड़ैक। एकटा केन्द्रीय संस्था समन्वयक केर कार्य करए आ एहि परीक्षा सभक आयोजनक तैयारी देखए जे सालमे कएक बेरि आयोजित होअए आ देश भरिमे जकर केन्द्र होअए। एकर ध्यान सेहो राखए जे परीक्षा सभ समय पर होअए आ परिणाम सेहो समय पर भेटए। एहि प्रकारक राष्ट्रीय जाँच संस्थाक परीक्षामे छात्र द्वारा प्राप्त अंककें सभ प्रकारक विश्वविद्यालय आ व्यावसायिक पाठ्यक्रममे छात्रक भर्तीक आधार बनाए सकैत अछि। वास्तविक प्रतिकृति आ परीक्षाक तैयारीकें एहि नोडल संस्थाक कार्यक्षेत्रमे नहि परबाक चाही।

5.4 कार्य आधारित शिक्षा :

कार्य आधारित शिक्षाक अर्थ होइत अछि जे परिवेश, प्राकृतिक संसाधन आ जीवनयपनसँ संबंधित बच्चाक ज्ञान-मूल, सामाजिक ज्ञान आ कला कें विद्यालयी व्यवस्थामे ओकर आत्मसम्मान आ शक्तिक श्रोत बनाओल जा सकैछ। एकरा पाठ्यक्रमिक अनुभवकें संगठित करबाक समयमे अर्थपूर्ण आ परिप्रेक्ष्यपूर्ण संदर्भ बुझल जाए। एहि अर्थमे अनुभव मूलकें आओर विकसित कएल जा सकैछ- कार्यक बेसी विकसित रूप जेना सामाजिक व्यवस्तता केर माध्यमसँ। अनुमान अछि जे ई प्रयास अनुशासनात्मक ज्ञान, संविधानसँ लेल गेल मूल्यक विकास जाहिसँ समाजमे बदलाव आनल जाए सकैछ, आ बहु कला विकास जे वैश्वीकृत अर्थ-व्यवस्थाक चुनौतीसँ निपटबाक हेतु आवश्यक हो केर बेसी छात्र हितैषी बनाओत। ई शैक्षिक पद्धतिए अछि जे शैक्षिक कलाक उपयोग- फलदायक आ अन्य प्रकारक कार्यकें वैश्विक ज्ञानसँ जोड़बाले करबाक हेतु कहैत अछि।

फलदायी कार्यकें शैक्षिक माध्यमक रूपमे विद्यालयी पाठ्यक्रममे जोरबासँ शिक्षाक आयाम सभ जेना- दर्शनिक, पाठ्यक्रमिक, संरचनात्मक आ संगठनात्मक- पर कतोक परिवर्तनकारी प्रभाव होएत। कार्य आधारित शिक्षक शिक्षाक किछु पक्ष जेना-अकादमिक स्वायत्तता आ विश्वसनीयता पाठ्यक्रम योजना, विषयवस्तुक आधार, शिक्षक भर्ती आ शिक्षा, अनुशासनिक पक्ष, उपस्थिति आ विद्यालय निरीक्षण, विषयवस्तुसँ बाहरक ज्ञान, विद्यालयी कैलेण्डरक संगठन,कक्षा आ वर्ग,विद्यालयसँ बाहर शैक्षणिक स्थानक गठन, मूल्यांकनक आधार आ प्रक्रिया एवं लोक परीक्षा केर अवधारणाकें बदलबाक आ ओकरा पुनर्गठित बरबाक मांग करत। एकर सभक अर्थ ई भेल जे पाठ्यक्रमिक सुधार आ स्तर सुधारक, व्यवस्थाक सुधारसँ अन्योनाश्रय संबंध छैक।

5.4.1 व्यावसायिक शिक्षा ओ प्रशिक्षण :

वर्तमानमे व्यावसायिक शिक्षा मात्र +2 स्तर पर लेल जाइत छैक आ ओतहु ई बंधन छैक जे ओ कोनो धारा विशेषसँ जुड़ल अछि। एन0पी0ई0 1986 क लक्ष्यक विपरीत जाहिमे वर्ष 2000 तक नामांकित छात्रमेसँ 25 प्रतिशतक नामांकन व्यावसायिक पाठ्यक्रममे होएबाक लक्ष्य छलैक, वर्तमानमे पाँचो प्रतिशत सँ कम छात्र एहि विकल्पक प्रयोग करैत अछि। एहि कार्यक्रमक कमजोर होएबाक बहुतौं आवधारणात्म, प्रबंधनात्मक आ संमाधनात्मक

कारण लगातार 25 वर्ष तक रहलैक। निकृष्ट धारा बुझल जएबाक अतिरिक्त ई कमजोर संरचना, औजारक अभाव अप्रशिक्षित अथवा अयोग्य (बेसीकाल अंशकालिक) शिक्षक, पुरान पाठ्यक्रम, गतिशीलताक अभाव, कार्यक्षेत्रसँ संपर्कक अभाव, विश्वसनीय मूल्यांकन पद्धतिक अभाव, प्रशिक्षणकाल प्रमाणक व्यवस्था आ अंततः रोजगारपरकताक अभाव (केन्द्रीय प्रायोजित माध्यमिक शिक्षाक व्यावसायीकरणक अवलोकन करएबला कार्यसमितिक रिपोर्ट– एन0 सी0 ई0 आर0 टी 1988) केर कारण दुर्दशाग्रस्त भेल। स्पष्टः एकटा असरदार व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमक निर्माण, जे अत्यन्त पैघ आ आवश्यक अछि, बहुत दिन सँ बाँकी अछि। कार्य–आधारित शिक्षाक पाठ्यक्रमक अभिन्न अंगक रूपमे संस्थानीकरण, पूर्व प्राथमिक सँ +2 स्तर धरि, सँ व्यवसायिक शिक्षाक संबंधमे नव अवधारणा आ एकर पुनर्निमाण जाहिसँ ओ वैश्विक अर्थव्यवस्थाक चुनौती सँ निपटि सकए, केर आशा कएल जाइछ।

तेँ ई प्रस्तावित कएल जाइत अछि जे हम सभ चरणबद्ध ढंगसँ व्यावसायिक शिक्षा आ प्रशिक्षण (वेट) केर नव कार्यक्रम निमार्ण करी जे मिशनक रूपमे उत्पादित आ लागू भए सकए, आ जाहिमे ग्राम, संकुल, प्रखंड, अनुमंडल, जिला मुख्यालय आ महानगरक स्तर पर वेट केन्द्रक स्थापना शामिल होअए। ई राष्ट्रहित भे होएत जे जतय संभव हो, विद्यालयी संरचनाक (जकर बेसीकाल दिनक किछुए भागक हेतु उपयोग होइछ) वेट केन्द्र स्थापनाक हेतु उपयोग कएल जाए। एहि तरहक वेट केन्द्र संस्था के राष्ट्रीय परिदृश्यमे उपलब्ध संरचनाक उपयोग करैत स्थापना होएबाक चाही। एहिसँ आई0 टी0 आई0, पॉलिटेकनिक, तकनीकी विद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्राम विकास एजेंसी, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (आ सहायक सेवा), अभियत्रण, कृषि, चिकित्सा महाविद्यालय, विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी प्रयोगशाला, सहकारी संस्था, आ विशेष औद्योगिक प्रशिक्षण सरकारी एवं निजी क्षेत्रमे, केर विस्तारक संभावना बढ़त। एहि उपाय सभसँ वर्तमान 600 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जाहिमे व्यावसायिक पाठ्यक्रम उपलब्ध अछि केर संसाधनक प्रयोग नब वेट कार्यक्रमक हेतु भए सकत। एहि विद्यालय सभक वर्तमान व्यावसायिक शिक्षकक समक्ष विकल्प होएबाक चाही जे या त ओ ओही विद्यालयमे फलदायी कार्यक योजनामे शामिल भए जाथि अथवा ओहि संस्थानक अथवा क्षेत्रक नबका वेट केन्द्रसँ जुड़ि जाथि।

वेट कैँ एहि तरहक बनाओल जाएत जाहिसँ ओ एहन सभ छात्र जे नब कला सिखए चाहैत छथि अथवा व्यावसायिक शिक्षाक माध्यमसँ जीविकोपार्जन करए चाहैत छथि–पाठ्यक्रम छोड़लाक अथवा पूरा कएलाक बाद केर मदति कए सकए। वर्तमान

व्यावसायिक धाराक विपरीत, वेट कें एकटा 'नीक आ सम्मानजनक' विकल्प बनबाक चाही नहि कि 'अंतिम विकल्प'। विद्यालयक संग एहि वेट केन्द्र सभकें सेहो सभके सम्मिलित करएबला बनाओल जाएत जाहिसँ ओ मात्र सामाजिक, आर्थिक अथवा सांस्कृतिक रूपसँ पिछड़ल बच्चेटाक मदति नहि करए बल्कि शारीरिक आ मानसिक रूपसँ असमर्थ बच्चासभक सेहो। व्यवसाय मनोविज्ञान आ सूचनाक नीक व्यवस्था (विकासात्मक औजारक रूपमे) बच्चाकें अपन भविष्यक व्यवसाय आ रोजगारक योजना बनएबामे आ पाठ्यक्रमक योजना एवं विकामे सांस्थानिक नेतृत्व उत्पन्न करबामे मदति करत। प्रस्तावित वेटक अंतर्गत बदलएबला मोड्यूलक प्रमाणपत्र अथवा विविध समयक डिलामा कोर्स (अल्प समयक समेत) होएत जे सामाजिक-आर्थिक परिवेशक परिप्रेक्ष्यमे होएत। प्रत्येक वेट केन्द्र/संस्था/अथवा संकुल स्तर पर पाठ्यक्रमक हेतु विकेन्द्रीकृत योजना बनाओल जाएत, कोनो क्षेत्रमे तेजी सँ बदलैत तकनीक आ उत्पादनक एव सेवाक व्यवस्थाकें ध्यान मे रखैत, संगहि लोकक प्रचण्ड बहुमतक जीवनयापन आ प्राकृतिक संसाधन तक पहुँच कें ध्यान मे रखैत। एहि पाठ्यक्रममे प्रवेश आ निकासक अनेक मार्ग रहत, संगहि साख जमा रखबाक सुविधा सेहो रहत। सभ कोर्सक एकटा पर्याप्त अकादमिक भाग सेहो होएत (अथवा हेतु पाठ्यक्रमक व्यवस्था अथवा दूनू) जहिसँ अकादमिक आ व्यावसायिक कार्यक्रमसँ एकर संबंध बनल रहए। कोनो वेट केन्द्रक शक्ति एहि गप्प पर निर्भर करत जे ओ छात्रक आवश्यकतानुसार कतेक पाठ्यक्रम उपलब्ध करबैत अछि।

वेट कार्यक्रमकें समय-समय पर पुवर्नवीकरण होएबाक चाही जाहिसँ ई कोनो क्षेत्रक जीविकोपार्जन आ व्यवसायक प्रति प्रासंगिक रहि सकए। केन्द्र अधीक्षक अथवा संस्थान प्रमुखकें पर्याप्त संरचना आ संसाधन भेटबाक चाहिएनि संगहि हुनका आवश्यक अधिकार आ अकादमिक स्वतंत्रता सेहो देल जाए जाहिसँ ओ 'कार्य-क्षेत्र' केर आसपासमे स्थापना कए सकथि जाहिसँ क्षेत्रीय ग्रामीण शिल्प, कृषि अथवा वन आधारित उत्पादन तंत्र तथा उद्योग एवं सेवा केर हेतु आवश्यक मानव आ प्राकृतिक संसाधनक उपयुक्त उपयोग भए सकए। एहि सहयोगात्मक व्यवस्थासँ तीनि टा लाभ अछि। पहिल- वेट केन्द्र स्थापित करबामे कम पूजीक आवश्यकता छैक। दोसर- छात्रकें क्षेत्रमें उपलब्ध नवीनतम तकनीक तक पहुँच होएत। तेसर- एहिसँ छात्रकें वास्तविक जीवनक कार्यानुभव आ समस्या जेना योजना बनाएब, उत्पादन करब आ बाजारमे पठाएब सँ सामना होएत। एहि हेतु आवश्यक बना देल जाए जे उत्पादन आ सेवामे लागल सभ सुविधा जेना-खेती, वन-विकास, सरकारी आ गैर सरकारी उद्योग (कुटिर

आ लघु उद्योग समेत) विद्यालयक संग 'कार्यक्षेत्र' बनएबामे आ एकर प्रशिक्षण एवं मूल्यांकनमे सहयोग करए।

वेट केन्द्रक सफलता मूल्यांकनक , समानता, सांस्थानिक विश्वसनीयता ('कार्य क्षेत्र' आ व्यक्तिगत दक्षता तक) आ शिक्षाक विश्वसनीय व्यवस्थाक निर्माण पर निर्भर करत। ध्यान एहि बातक राखल जएबाक चाही जे एहि तरहक स्तरीकरण भारतक विविध क्षेत्रक कला आ ज्ञानकेँ नकारबाक साधन नहि बनए, खासकए आर्थिक रूपसँ पिछड़ल क्षेत्र जेना पूर्वोत्तर, पहाड़ी क्षेत्र, तटीय क्षेत्र आ मध्य भारतीय आदिवासी क्षेत्र। उचित संरचनात्मक स्थान आ स्वागत करैत वातवरण वेट केन्द्रमे बनबए पड़त जाहिसँ कृषक, पशुपालक, मल्लाह, माली, कलाकार, मिस्त्री, शिल्पकार आ अन्य स्थानीय सेवा देनिहार (आई0 टी0 समेत) केर 'रिसोर्स पर्सन' क रूपमे बजाओल जाए सकए।

वेटक हेतु योग्यताकेँ घटाओल जाए सकैछ आ कक्षा पाँचक प्रामणपत्र एहि हेतु वांछित योग्यता बनाओल जाए- वर्ष 2010 तक जखन 'सर्वशिक्षा अभियान' 'सार्वभौम प्राथमिक शिक्षाक' लक्ष्यकेँ प्राप्त कए लेत, तकर बाद एकरा बढ़ाकए आठम वर्ग कएल जा सकैछ आ बादमे कक्षा दस जखन 'सार्वभौम माध्यमिक शिक्षा' केर लक्ष्यक पूर्ति भए जाए। मुदा कोनहु स्थितिमे 16 वर्षसँ कमक बालक केर नामांकन वेट केन्द्रमे नहि होएबाक चाही । प्राथमिके स्तरसँ बच्चा सभक इच्छा आ कला सिखबाक केन्द्रक रूपमे वेट केन्द्र कार्य कए सकैछ- विद्यालयसँ पूर्वक आ बादक समयमे । एहि तरहक केन्द्रकेँ विद्यालय सभसँ वार्ता करबाक चाही जाहिसँ कक्षाक समयोमे कार्य आधारित पाठ्यक्रम दुहूक सहयोगसँ चलाओल जा सकए।

वेटक एहि संस्करणकेँ यथार्थमे बदलबाक हेतु कतोक नव सहयोगी संस्था आ संसाधन केन्द्रक विभिन्न स्तर - जिला, राज्य/ केन्द्र शासित प्रदेश आ केन्द्रीय स्तर पर स्थापना करए पड़त, वर्तमान राष्ट्रीय संसाधन संस्था जेना - एन.सी.ई.आर.टी., पी.एस. एस.सी.आई.वी.ई.(भोपाल) केर सशक्ति करणक अतिरिक्त।

5.5 विचार आ व्यवहारमे नवाचार :

5.5.1 पाठ्य पुस्तकक बहुलता :

एहि दृष्टिकोणसँ जे पाठ्यक्रममे सार्थक ढंगसँ बच्चा आ ओकर विविध सांस्कृतिक सन्दर्भकेँ, भाषाकेँ शामिल कएल जाए, ई महत्वपूर्ण अछि जे पाठ्य पुस्तक लेखनकेँ विकेन्द्रीकरण कए देल जाए। एकरा ध्यानमे रखैत जे क्षमता कतेक अछि आ ओकरा संभव बनएबाक व्यवस्था अछि वा नहि। पाठ्य पुस्तक लिखबामे काफी सामर्थ्यक आवश्यकता होइत छैक जाहिमे अकादमिक आ शोध परकता, बच्चाक विकासक ज्ञान, संवादपरकता आ निर्मित आदिक ज्ञान सेहो अबैत अछि। तखन धरि एस0सी0ई0आर0टी0 जकरा वर्तमानमे पाठ्य पुस्तक लेखनक भार देल गेलैक अछि, एहि उद्देश्यक हेतु सेहो ओ केन्द्रक कार्य कए सकैत अछि आ चुनाव, लेखन आदिक कार्य सामूहिक रूपसँ बाँटि देल जाए, एकर बदलामे जे एकहिटा विषय - विशेषज्ञ सभ जिम्मेदारी सम्हारए। एहि सम्मिलित अध्यवसायक लाभ सबमेसँ एकटा ई अछि जे ई एकटा आधार बनएबाक कार्य करैत अछि- एहि मान्यताक स्पष्टीकरण जे बच्चा कोन प्रकारेँ सीखए, विषय ज्ञान आ शोध सामग्री बच्चासँ संवाद बनएबाक प्रक्रियाक ज्ञान, पाठ्य पुस्तक निर्माणक क्रममे बच्चाक चिन्तनकेँ जगह देब आ पृष्ठपोषण बुझबामे इत्यादि। विश्वविद्यालय सभसँ आकदमिक आ शोधक मदति, गैर सरकारी संगठन आ व्यावसायिक लोक सभसँ एहिमे जानकारी लेल जा सकैत अछि। पाठ्य पुस्तकक रास्ता बहुत दुष्कर होइत छैक किएक तऽ शिक्षक आइ काल्हि एहि अध्याय सभकेँ पढ़एबामे असमर्थ भए जाइत छथि किएक तऽ ई विस्तृत आ अस्पष्ट होइत छैक। पाठ्य एहि तरहसँ लेल गेल होइत छैक जे ओकर विद्यालयक देश- कालसँ कोनो मतलब नहि होइत छैक तेँ ई एकटा नीक विचार भए सकैत अछि जे पाठ्य पुस्तक लेखकक समक्ष एकटा कक्षा एहि हिसाबसँ आयोजित होअए आ ओकर अनुभव आ ओहिमे आएल सुझाव केर आधार पर पाठ्य पुस्तक तैयार होअए। एहि तरहक गतिविधिक आयोजन तखनहु कएल जाए जखन पाठ्य पुस्तकक विषयवस्तुमे नवाचारक प्रयोग होअए (बच्चाक अनुभवकेँ जखन पाठ्य पुस्तकमे जगह देल जाय) एहिसँ कक्षाक परिस्थिति आ शिक्षकक तैयारीक आन्दाज सेहो भए सकत।

आदर्श रूपसँ तऽ हम सभ कएक तरहक पाठ्य पुस्तकक उपलब्धताक गप्प कए रहल छिऐक जाहिसँ एक तऽ शिक्षकक समानने विकल्प भए जएतनि आ

बच्चाक रुचि आ आवश्यकताक अनुरूप विविधताक समावेश सेहो ओहिमे भए सकत। जखन काफी पुस्तक आ सहायक सामग्री उपलब्ध होअए तऽ एहिसँ शिक्षक सेहो उत्साहित भएकेँ ई चयन कए सकताह जे कोन-कोन पाठ अथवा विषय छात्रक हेतु उपयुक्त छैक। एहिसँ किछु हद तक शिक्षकक स्वायत्तता आ चुनावक अवसर बढ़ि जएतनि। वैकल्पिक रूपसँ ओ ई अवसर सेहो छात्रकेँ प्रदान कए सकैत छथि जे ओ भिन्न-भिन्न स्रोतकेँ देखए आ एकर बुद्धि विकसित करए जे कोना एकहि विषय वस्तु कए प्रकारसँ प्रस्तुत कएल जा सकैछ एहिसँ पुस्तकालयक आदतकेँ बढ़ाबा भेटतैक। मुदा एकरा हेतु शिक्षककेँ पाठ्य पुस्तक आ सहायक सामग्रीक उपयोगक हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशाला आदिक द्वारा पाठ्यक्रमक नव ज्ञान उत्पन्न कएल जा सकैछ आ विद्यालयक भीतर पुस्तकालय अथवा कएक विद्यालयक हेतु एकटा संसाधन केन्द्र सहायता तन्त्र केर सुनिश्चित करबाक आवश्यकता छैक। विभिन्न विद्यालयक बीच पुस्तकालय साझी करबाक लएकँ सेहो गम्भीरता पूर्वक सोचल जाए सकैत अछि आ एकरा सरकारी आ निजी विद्यालयक सहयोगसँ सेहो विकसित कएल जा सकैत अछि। सामुदायिक पुस्तकालयक स्थापनाक विषयमे सेहो सोचल जा सकैत अछि।

बहु विकल्पी पाठ्य पुस्तककेँ बढ़ाबा देबाक हेतु जे आधिकारिक रूपसँ विद्यालय द्वारा अनुमोदित होअए, पाठ्य पुस्तक निर्माणमे निजी क्षेत्रकेँ प्रोत्साहन देत। एहि संदर्भमे ई महत्वपूर्ण अछि जे राज्यस्तरीय संस्थाकेँ शिक्षामे शोध आ प्रशिक्षाक हेतु तैयार कएल जाए, जकर जिम्मेदारी सभमे पाठ्य पुस्तक निर्माण सेहो शामिल होअए जाहिसँ ओ निजी प्रकाशक सभसँ निपटि सकए। जेनाकि पूर्वहु कहल जाए चुकल अछि यदि एस0 सी0 इ0 आर0 टी0 साझी रूपसँ पाठ्य पुस्तक तैयार करए तऽ एहिसँ ओकर स्तर सेहो सुधरत, क्षमताक विकास होएत संगहि संस्थानमे सेहो नव जान आओत गैर सरकारी संगठन सभ काफी नीक पाठ्य पुस्तक आ सहायक सामग्री तैयार कएलक अछि जकर विद्यालयमे उपयोग कएल जा सकैत अछि एकरा हेतु एकटा विनियामक संस्था बनएबा पर सेहो विचार कएल जा सकैत अछि जे पाठ्य पुस्तक लेखक संविधान प्रदत्त मूल्य आ सिद्धान्त (विशेषतः समानता, धर्म निरपेक्षता आ प्रजातन्त्र) शिक्षाक लक्ष्य आदिक विषय वस्तुमे उचित निर्वाहकेँ सुनिश्चित करए। संगहि ईहो देखबाक आवश्यकता छैक जे पाठ्य पुस्तक निर्माण निजी लाभक हेतु नहि हो आ शिक्षा आसान भए

जाए। पाठ्य पुस्तककेँ लए कए अभिभावक, शिक्षक आ नागरिक समूहक चर्चाकेँ बढ़ाबा देबाक चाही आ ओकरा इन्टरनेट पर सेहो उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि जाहिसँ ओहि पर चर्चा होअए आ सुझाव आबए। विश्वविद्यालय सभकेँ पाठ्य पुस्तक केर अध्ययनकेँ बढ़ाबा हेतु कहल जा सकैत अछि जाहिसँ विद्यालय क ज्ञानकेँ लए कए नियमित शोध चलैत रहए।

5.5.2 **नवाचारकेँ बढ़ाबा :**

वेसीकाल शिक्षक विद्यार्थीक ओकर कक्षामे पाठ्यक्रमक ज्ञान करएबाक हेतु विशेष कक्षागत संदर्भ अध्यापनक नव-नव तरीका अपनबैत छथि (ओ संकीर्ण स्थान, पैघ संख्या, शिक्षा उपकरणक अभाव, छात्रक अनेकता आ आसन्न परीक्षाकेँ लएकेँ भए सकैत अछि)। ई प्रयास व्यावहारिक होएबाक संग-संग कएक बेरि नीक आ रचनात्मक भए सकैत अछि, मुदा ओकर बाँकी शिक्षक समुदाय आ विद्यालयकेँ सेहो पता नहि होइत छैक आ बेसीकाल शिक्षक स्वयं सेहो ओकर बेसी महत्त्व नहि दैत छथि। शिक्षाक अनुभव बाँटब आ एहि प्रकारक शिक्षाक अनुभवकेँ ओ एक दोसरासँ साझी कए सकैत छथि। एहिसँ नव विचार, प्रयोग आ नवाचारकेँ अवसर भेटतैक। कोन प्रकारेँ शिक्षा आ अध्ययनक नव रचनात्मक तरीकाकेँ अपनाओल जाए जाहिसँ ओ व्यवस्थाक अंग बनि सकए? आरम्भमे विद्यालयमे एकटा संरचना अनाओल जा सकैत अछि आ समुदाय आ ब्लौक स्तर पर शिक्षक सभकेँ कक्षाक अनुभव साझाी करबाक हेतु प्रोत्साहित कएल जा सकैत अछि यदि नीक लागए तऽ एहिमेसँ किछु सुझावकेँ अपनाओलो जा सकैत अछि। ईहो आवश्यक अछि जे विद्यालयक अन्दर आ बाहर विद्यालय शिक्षककेँ संसाधन आ संग कार्य करबाक समय उपलब्ध कराओल जाए। नीक बूझल जाएबला विधिकेँ दर्ज कएल जाए आ ओहिसँ संबंधित शोध सेहो। एखन एहि संबंधमे डाइटक लगमे धन छैक। एस0 एस0 ए0 सेहो विद्यालय आधारित शोधक हेतु धन उपलब्ध करबैत अछि, जकर विभिन्न विधिकेँ दर्ज करबामे उपयोग कएल जा सकैछ जे शिक्षक अपन कक्षामे करैत छथि। आवश्यक धन उपलब्ध करएबाक अलावा एहि प्रकारक नवाचारक हेतु वातावरण बनओनाइ बेसी आवश्यक छैक जेना पहिने

कहल गेल अछि जे नवोन्मेषी प्रक्रिया आ ओकर प्रयोगक वातावरण बनायब आवश्यक होएत।

संकुल सतर पर संसाधन केन्द्र बनएबाक मुख्य लक्ष्य छैक विद्यालयक एकाकीपन तोड़ब आ नियमित रूपसँ शिक्षक विद्यार्थीक अनुभव आ विचारकेँ साझी करब। ई महत्त्वपूर्ण अछि जे शिक्षकक अपन व्यावसायिक पहचान बननि आ पैघ शिक्षक समुदायसँ अपन जुड़ाबक अनुभव करथि। एकर माध्यमसँ सेहो हुनकामे बेसी जुड़ाव आ तत्परताक भावनाक विकास होएत।

5.5.3 तकनीकक उपयोग :

तकनीकक न्यायपूर्ण प्रयोग शिक्षा कार्यक्रमक पहुँचकेँ बढ़ा सकैत अछि। व्यवस्थाक प्रबन्धन सुधारल जा सकैत अछि आ शिक्षा संबंधी विशिष्ट आवश्यकताक पूर्ति कएल जा सकैत अछि। उदाहरणार्थ मास मीडियाक उपयोगसँ शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमकेँ मदति पहुँचाओल जा सकैत अछि। कक्षा शिक्षामे सुधार कएल जा सकैत अछि आ प्रचारक हेतु सेहो एकर उपयोग कएल जा सकैत अछि। दूरस्थ शिक्षा, स्वशिक्षा, दोहरा शिक्षाकेँ सेहो तकनीकक लाभ भेटि सकैत अछि, यदि एहि प्रक्रिया सभकेँ आइ0 सी0 टी0 क माध्यमे सम्भव बनाओल जाए। इन्टरनेटक बढ़ैत उपयोग सूचनाक प्रवाह तऽ तेज करबे कएलक अछि, वाद-विवाद आ सम्वादकेँ सेहो बढ़ाबा देलक जे पहिने उपलब्ध नहि छल। कोनो दृष्टिएँ अक्षम बच्चाक शिक्षाकेँ सेहो ध्यानमे राखि उपयुक्त तकनीकक खोज करबाक आवश्यकता छैक नेकि ओकरा बाहरसँ जोड़ल जाएबला कोनो चीज बनाकए रखबाक। एहि संदर्भमे जखनकि तकनीकी शिक्षक आ छात्रकेँ मात्र उपभोक्तामे बदलए तँ अलगसँ ऑपरेटरक प्रथाकेँ हतोत्साहित कएल जएबाक चाही। परस्पर संम्वाद आ समीपता गुणात्मक अध्ययनक कुञ्जी थिक आ कोनो पाठ्यक्रम सुधारमे एकरा सैद्धान्तिक रूपसँ नहि बदलल जाए।

5.6 नव साझीदारी :

5.6.1 गैर सरकारी संगठन, नागरिक समाज समूह आ शिक्षक संगठनक भूमिकाः

पछिला दसकक एकटा उल्लेखनीय घटना रहल अछि, शिक्षासँ गैर सरकारी संगठन आ नागरिक समाज समूहकेँ पैघ स्तर पर जुड़ाब। गैर सरकारी संगठन विद्यालयक शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्य पुस्तकक तैयारी आ पाठ्य सामग्री समुदायमे प्रचार प्रसार करएबामे पैघ भूमिका निमाहलक अछि। विद्यालयसँ ओकर औपचारिक जुड़ाव पाठ्यक्रम विकास, अकादमिक सहयोग, निरीक्षण आ शोधक हेतु आवश्यक छैक। नागरिक समूह शिक्षाक सार्वजनिक स्थान बनएबा आ बच्चाक अधिकारकेँ लएकेँ विमर्श करबामे पैघ भूमिका निमाहक अछि। पाठ्यक्रम ढाँचाक दृष्टिकोण आ विचारक प्रसार, विद्यालय आ समाजमे ओकर रचनात्मक उपयोग आ बच्चाक हेतु शिक्षाक अधिकारक वातावरण तैयार करबाक हेतु विभिन्न समाज-समूहक लगातार संलग्नताक आवश्यकताक हेतु अलग- अलग समाज समूहकेँ जोड़बाक आवश्यकता छैक। शिक्षक संगठन आ संस्था सभ विद्यालयी शिक्षाक विकासमे ओहिसँ कतोक बेसी भूमिका निमाहि सकैत अछि जतबा उम्मीद कएल जाइत रहलैक अछि। उदाहरणार्थ ओ कार्य कलापमे वृद्धिक उपाय ताकि सकैत अछि, ओ अपन सदस्य शिक्षक आ अपन प्रभावक उपयोगसँ ई सुनिश्चित कए सकैत अछि जे शिक्षा समयक संग कोनो समन्वय नहि कएल जाएत आ दायित्व बोधक संस्कृतिक विकासमे मदति कएनिहार भए सकैत अछि। पाठ्यक्रमकेँ प्रभावी ढंगसँ पढ़एबाक हेतु ओ आवश्यक सुझाबो दए सकैत अछि आ रचनात्मक दबाव समूहक रूपमे ओ विद्यालय संसाधन, शिक्षक शिक्षाक गुणवत्ता आ व्यावसायिक सुधारक गप्प कए सकैत अछि। ई संस्था सभ स्थानीय स्तरक संस्थाक संग-संग बी0 आर0 सी0 आ सी0 आर0 सी0क संग सेहो एकर अंदाज कए सकैत अछि जे कतेक अकादमिक समर्थन चाही आ तकर संबंधमे व्यवस्था करब अछि। एस0 सी0 ई0 आर0 टी0 सभक भूमिका आ कार्य मे शामिल होएबाक चाही- अकादमीक मदतिक संग- संग मनोवैज्ञानिक मदति सेहो। एस0 सी0 ई0 आर0 टी0 सभकेँ अपन निर्देशन ब्यूरो/यूनिटकेँ मजबूत बनएबाक उपाय करबाक चाही। एहि हेतु एकरा सभकेँ राज्य स्तर पर सेवाकाल शिक्षक प्रशिक्षण, मनोवैज्ञानिक यंत्रक निर्माण, रोजगार सामग्री इत्यादि केर केन्द्र बनाए देल जएबाक चाही। संगहि सूचना सेवाक उपलब्धता जिला/ब्लॉक आ विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक रूपसँ प्रशिक्षित व्यक्ति सभक पदस्थापनाक माध्यमसँ करबाक चाही।

पाठ्यक्रम ढाँचाक प्रति विश्वविद्यालय सभक आलोचनात्मक भूकिा भए सकैत अछि, विशेषतः शिक्षामे बहुलतावादकेँ प्रोत्साहित करबा संबंधी प्रयास, बच्चाक आवश्यकता आ नव पाठ लागू करबाक संदर्भमे। छात्रक विविध सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ आ भारतमे कक्षा संबंधी जटिलताकेँ देखैत तत्काल शिक्षामे ज्ञानक आधारकेँ बढ़ाओल जएबाक आवश्यकता छैक। विश्वविद्यालयक शिक्षा विभाग, समाज विज्ञान विभाग आ विज्ञान विभाग सभकेँ अपन शोधक अन्तर्गत बहु अनुशासनात्मक सम्मिलित शोध जाहिमे भिन्न-भिन्न अनुशासनक लोक होअए, पाठ्यक्रमक संरचनाकेँ व्यावहारिक रूप देबाक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण होएत। संगहि विश्वविद्यालय सभकेँ अपन केबाड़ एहन छात्रक हेतु फोलबाक आवश्यकता छैक जे किछु खास, किछु उल्लेखनीय विषय पढ़िकेँ आएल अछि। छाँटएबला नामाङ्कन प्रक्रिया अपनएबाक बदलामे विश्वविद्यालय सभकेँ एहि मामलामे समावेसी होएबाक चाही आ ओकरा सभकेँ भिन्न-भिन्न रुचि, अवसर आदिकेँ बढ़ाबा देबए बला होएबाक चाही। एहि प्रकारक उदार नामाङ्कन प्रक्रिया एहू हेतु महत्त्वपूर्ण अछि जे छात्र कोनो व्यावसायिक कोर्स बीचमे नहि छोड़बाक शर्त पर पढ़बाक विषयमे सोचैत होअए।

उच्च शिक्षा संस्थाकेँ शिक्षक- शिक्षा दिस ओकर व्यावसायिक स्तरक विकासमे पैघ भूमिका छैक, मात्र माध्यमिके स्तर पर नहि प्राथमिक स्तर पर सेहो। व्यावसायिक दक्षता बला बुद्धिमान शिक्षकक हेतु पाठ्यक्रमक वर्तमान ढाँचामे आमूलचूल परिववर्तनक आवश्यकता छैक ओतबे आवश्यक होएत पाठ्यक्रमक विकासक कार्यमे विद्वान लोकनिक लगातार सहयोग। पाठ्य पुस्तकक लेखन आ ओकर पुनरीक्षण सामूहिक रूपसँ होअए जे विविध शिक्षाबला अकादमिक आ व्यावसयिक सभकेँ एक संग जोड़ि कए होअए। उच्च शिक्षाक माध्यमसँ चिन्तन आ शैक्षिक विचार पर विवाद आ विमर्श भए सकैछ संगहि विद्यालय आ नीति निर्माताक बीच संबंध सेहो स्थापित कएल जा सकैछ। विश्वविद्यालय, एस0 सी0 इ0 आर0 टी0 आ डाइट सन संस्थानकेँ अपनामे जोड़ि कए शिक्षक शिक्षणकेँ अकादमिक कार्यक्रम, सेवाकाल प्रशिक्षा आ अपनहि अंदर शोधक क्षमता विकसित करबाक अवसर प्राप्त होएत। एहि विषयमे ई उचित होएत जे विद्यालय /शिक्षा संस्थान परिसरक विचार पर चर्चा कएल जाए जे विश्वविद्यालय, कॉलेज, विद्यालय,

एस0 सी0 इ0 आर0 टी0/ डाइटक संग गैर सरकारी संगठनकेँ एक भौगोलिक परिसरमे संभव कए अकादमिक समर्थन, निरीक्षण आ कार्यक्रम मूल्यांकनक तन्त्र विकसित कएल जा सकैछ।

पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्चा आ शिक्षक अधिगम सामग्रीक तैयारी जाहिमे पाठ्यपुस्तक सेहो शामिल अछि अधिक विकेन्द्रीकृत ढंगसँ शिक्षकक सह भागिता बढ़ाकए आ भिन्न-भिन समूहक प्रतिनिधि आ विशेषज्ञक सहभागितासँ सम्भव कएल जा सकैछ। ई विशेष रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि जे सभ विषयक सभ स्तर पर एकसँ अधिक पुस्तक तैयार कएल जाए जाहिसँ स्थानीय स्तर पर ओकर प्रासङ्गिकता बनल रहत आ शिक्षकक सम्मुख चुनावक विकल्प रहत। एहि प्रकारक टीम अन्य प्रकारक सहायक सामग्री सेहो तैयार कए सकैत अछि, यथा - रिडिंग कार्ड, सचित्र लोककथा जे छात्रक हेतु किछु अधिक रोचक होइत अछि। चुनाव आ विविधता जे पैघ विद्यालयमे देखल जाइत अछि सभ विद्यालय मे सामान्य लक्षण बनि सकैछ अछि।

नारी आ बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, युवा मामला आ खेल विभाग, विज्ञान आ तकनीक विभाग, आदिवासी, मामलाक विभाग, सामाजिक न्याय आ सशक्तीकरण विभाग, संस्कृति विभाग, पर्यटन विभाग, पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग तथा पंचायती राज संस्था सभ किछु- किछु बच्चाक विकासमे रुचि देखा कए पाठ्यक्रम निर्माणमे सहयोग दए सकैत अछि। ई सभ विभाग बच्चा आ शिक्षकक शिक्षाकेँ समृद्ध बनएबामे सक्षम अछि। उदाहरणार्थ स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षाक हेतु विभिन्न विभागक बीच सहयोग होएबाक चाही किएकतँ ई विषय कम सँ कम पाँच गोट मंत्रालयक कार्यक्षेत्रमे अबैत अछि। पाठ्यक्रमक विकासक हेतु महत्त्वपूर्ण विभागक बीच सहयोग आवश्यक अछि संगहि ईहो आवश्यक अछि जे विद्यालयी पाठ्यक्रम एहि कार्यक्रम सभक नेतृत्व करए नकि मात्र विद्यालयी पाठ्यक्रममे एकसरे कार्यक्रम चलाबए। ओकरा सभकेँ एहन उपाय तकबाक आवश्यकता छैक, जाहिसँ ओ बच्चाक शिक्षामे अपन योगदान कए सकए, ओकर सुझावकेँ शिक्षा विभागक सहायतासँ एहिसँ जोड़ल जा सकैछ। विद्यालयमे अतिरिक्त सुविधा उपलब्ध करएबाक अतिरिक्त, पाठ्य- क्रमकेँ समृद्ध करबाक उपाय, यथा- खेलकूद, क्लब, खेल उपकरण प्रशिक्षकक संग, ऐतिहासिक, प्राकृतिक आ पुरातात्विक महत्त्वक स्थानक यात्रा, संदर्भ सामग्री, फोटो आ चार्ट उपलब्ध,

कराएब, नियमित स्वास्थ्यक देखभाल, मिड डे मिलक गुणवत्ताक निरीक्षण किछु एहन उपाय अछि जकर माध्यमे ओ बच्चा सभक पाठ्यक्रमक गुणवत्तामे सुधार आनि सकैत अछि। शिक्षा विभागक संग विमर्शक बाद सार्थक मुद्दाक विषयमे सोचल जा सकैत अछि। एकर बदलामे जे कोनो एक व्यक्ति एहि विषयमे सोचे आ सुनिश्चित करए ई एहि बातक हेतु सुनिश्चित करबाले आवश्यक अछि जे जे किछु बनाओल जा रहल अछि ओ उपयोगी आ उपयोगपरक अछि। एहि तरहेँ ओ विशेष कार्यक्रमक संदर्भमे ओकर मांग पर विचार कए सकैत अछि

***

उपसंहार

पाठ्यक्रमक ई ढाँचा एहि संबंधमे एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत अछि जे हमरा लोकनिक बच्चाक शिक्षाक हेतु की बाँछनीय अछि। ई बच्चाक शिक्षासँ जुड़ल लोकक आधार एहि सीमा तक बढ़ाओल जएबाक माङ करैत अछि जतए ओ लोकनि पाठ्यक्रमक निश्चय कए सकथि। एहि हेतु बाच्चक ज्ञानसँ जुड़ल मुद्दाक बोध ज्ञानक प्रकृति आ विद्यालय संस्थानक रूपमे ज्ञानक विकासक आवश्यकता अछि। पाठ्यक्रमक अवलोकन विद्यालयक भावना आ संस्कृतिक महत्त्व दिस ध्यान दिअबैत अछि। शिक्षकक कक्षा संबंधी गतिविधि, विद्यालयक बाहर शिक्षण, ज्ञान साधनक संग संग एकर आयामेक लएकेँ एहि तरहक अछि जे ओकर प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष प्रभाव संभव भए सकए। पैध स्तर पर पाठ्यक्रम प्रश्नावलीक निर्माण पाठ्यक्रम आ पाठ्यचर्याक अपनामे संगति विकास आ अपना बच्चाकेँ नीक शिक्षाक लक्ष्यसँ एकर संबंध छैक।

शताधिक अभिभावक आ शिक्षक एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 क ओहि विज्ञापनक उत्तरमे अपन संदेश देलनि जाहिमे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचाक संबंधमे लोक सभसँ सुझाव माङल गेल छल। एहिमेसँ एक सन्देश छल मुम्बई निवासिनि माँ आ शिक्षिका नीता मोहलाक । ओ लिखने छलथि –

''आई विद्यार्थीक रूपमे हमर बच्चा ओही सभ पाठक अध्ययन कए रहल अछि जे बीस साल पूर्व हम छात्राक रूपमे पढ़ने छलहुँ। सम्पूर्ण विश्वमे अध्ययापन आ मूल्यांकनक नव/नव तरीका अजमाओल जा रहल अछि मुदा, हमर विद्यार्थी बोर्डक अभ्यासक नकल करैत अछि, ओकरा याद कए लैत अछि आ परीक्षामे उगलि दैत अछि। जे परिवर्तन होइतहु अछि ओ आओरो खराब होइत अछि। बच्चाक पहुँच आब आओर अधिक सूचनाक माध्यम धरि भए चुकल तेँ अधिक सँ अधिक विषय वस्तु बच्चाक वस्तामे भड़ल जाए रहल अछि। कम्प्यूटर नैतिक शिक्षा आदि नव लोकप्रिय विषय थिक आ सामान्य ज्ञानकेँ नव विषयक रूपमे क्विज शो- 'कौन बनेगा कारोड़पति'क कारण जोड़ल गेल।

हमर पाठ्यक्रम पैघ आ शिक्षकक अध्यापन क्षमतासँ दूर होइत जा रहल अछि तेँ शिक्षक नीरस भावसँ ओकरा पढबैत छथि। विद्यार्थी ध्यान नहि लगा पबैछ, ओ वर्गक पाठकेँ बुझि नहि पबैछ आ विद्यार्थी शून्य भावमे विचरैत रहैत अछि। भिन्न- भिन्न विषयमे नव- नव पाठ सामिल भेल जाइत अछि जखनकि पछिले पढ़ाई ढंगसँ पूरा नहि भए पबैछ।

पाठ्यक्रमक बोझ एहि तरहेँ यातऽ अभिभावक अथवा ट्यूशन कक्षाक हेतु छोड़ि देल जाइछ। बच्चाक कान्ह पर विद्यालय वा ट्यूशनक बोझ बढ़ैत जाइत अछि। ओकर बाल्यपन छुटल जाइत अछि। विद्यार्थीक एक समूह एक दोसरासँ बेसी नम्बर अनबाले दबावमे आबि तनावग्रस्त भए जाइत अछि। कतोक बच्चाकेँ एहि हेतु दबाई करएबाक आवश्यकता भए जाइत छैक। मात्र मुख्य विषयमे नीक कएनिहार बच्चा सफल मानल जाइ अछि। खेल आ वर्गक नीक करएबला बच्चाकेँ कोनो खास महत्त्व नहि भेटैछ। खेल अथवा कोनो अन्य रुचिक दिशामे आगाँ बढ़लासँ बच्चाकेँ रोकल जाइत छैक किएक तऽ मार्क्स शीटमे ओकर कोनो स्थान नहि छैक। पाठ्यक्रम आ सफलताक चक्रक ई दबाव होइत अछि जे वास्तविक संसारक अनुभवसँ अपन ध्यान हटाकए किताबमे लगाबए। एतए धरि जे छठम वर्गक बच्चाकेँ सेहो विद्यालयक अतिरिक्त अंकक प्रतिस्पर्धामे चारि घंटा अधिक पढ़य पड़ैछ।

यदि अपन विकासक प्रतिस्पर्द्धामे विद्यार्थी अधिक समय यथार्थ विश्वक अतिरिक्त पोथीक दुनियाँमे बितबैत अछि तऽ बहुत सम्भावनाा ओकर हतोत्साहित होएबाक रहैत्त छैक। शिक्षाक उद्देश्य नाकारात्मक बनि जाइत अछि। ई विद्यार्थीक दिमागकेँ दू भागमे बाँटि दैछ। ओ एक एहन किताबी दुनियाँ केँ रटबामे लागल रहैत अछि जाहि पर ओकर कोनो अधिकार नहि होइछ। तेँ ओकर मन ओहिमे नहि लगैछ। यदि एकटा चारिम वर्गक बच्चाक उदाहरण देखी- ओ बुझैत अछि जे पहाड़ पर यदि जानवरक चड़नाइ रोकल जाए तऽ माटिक भसनाइकेँ रोकल जा सकैछ। मुदा एहिमे ओ अपन पेंसिल कॉपीक मदति नहि लए सकैछ। अतः ओ एक पढ़ल लिखल वेवकूफक रूपमे पैघ होइत अछि। ओकर विकास पर ध्यान केन्द्रित कए ओकर नीक चरित्र आ व्यक्तित्वक विकास कएल जा सकैछ। ओकरा पर्याप्त रूपेँ एहन पढ़ाओल जाइत छैक जकरा ओ अपन दैनिक आ अनुभसँ जोड़ि सकैत अछि। ओ बच्चा जकरा पढ़ाईमे मन नहि लगैछ ओहि पर कतोक तरहक दुष्प्रभाव पड़बाक सम्भावना बढ़ि जाइत छैक। एहि तरहक आवश्यकता वला विद्यार्थीक हेतु कोनो साहायता तंत्र नहि अछि। आजुक अभिभावक सेहो अपन बच्चे जकाँ तनावग्रस्त रहैत छथि। बोर्डक परीक्षाके तैयारी करए वला विद्यार्थीमेसँ 75 प्रतिशत तनावग्रस्त रहैत अछि।''

- की पढ़ाओल जएबाक चाही आ की सिखल जा सकैत अछि एहि बीच संतुलन बनाओल जएबाक चाही। प्रकृतिक संरचनामे सभ एक दोसरक सामञ्जस्यमे कार्य करैत अछि। असली चुनौती पाठ्यक्रमकेँ एहि तरहेँ तैयार करबाक अछि जाहिमे

शिक्षाक व्यापक उद्देश्यक गप्प होअए जे वास्तविक उपलब्धि आ सीमाक ज्ञानसँ तैयार होअए।

- एहि संरचनाकेँ बनएबाक विपरीत जाहिमे किछुए लोकक सफलताक रास्ता होअए, हमरा लोकनिकेँ एहन ढाँचा बनएबाक चाही जाहिमे सभकेँ शिक्षणक समान अवसर भेटए। एकर आधार मजबूत आ टिकाउ अछि। एकर आधारकेँ विस्तृत बनाओल जयबाक आओर ओकरा पुनर्परिभाषित कएल जएबाक आवश्यकता छैक। गणित, विज्ञान, इतिहास, पुरान ढाँचा सहित व्यक्तित्व, शारीरिक क्षमता, रचनात्मक आ आलोचनात्मक चिन्तनक हेतु सेहो जगह बनएबाक आवश्यकता अछि।
- विषय सूचीक संबंध रोजगार आ चुनौतीसँ हो। विद्यार्थी आ शिक्षककेँ ओहि पर एकग्र करबाले प्रर्याप्त समय देल जएबाक चाही। शुद्ध ज्ञानक उद्देश्य बच्चाक अपन अभिरुचिक खोज होअए। एहिमे बैकल्पिक अध्यापन पद्धति सन प्रोजेक्ट पद्धति आ वैकल्पिक मूल्यांकन पद्धति सन फुजल पुस्तक परीक्षाक मदति लेल जाइत अछि। हमरा सभकेँ मात्र सभ विषयक बीजारोपण करबाक चाही। शिक्षासँ बच्चाकेँ एकर प्रेरणा भेटए जे ओ ओहिसँ किछु प्राप्त करए।
- हमरा सभकेँ मानवीय बनाकए मानव रुचिक विस्तृत आयामक अनुसार प्रासंगिक बनएबाक चाही विद्यार्थी प्रतिभाक वैविध्यकेँ प्रोत्साहित कएल जएबाक चाही। एहि हेतु वैकल्पिक मूल्यांकन पद्धति अपनएबाक आवश्यकता अछि। खेलकूद, कक्षा आ शिक्षामे नीक कएनिहारकेँ सेहो शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थी जकाँ मानि लेबाक चाही। उपलब्धिक सूची विस्तारसँ निश्चित रूपेँ अभिभावक आ विद्यार्थी तनाव मुक्त होएताह।

मूल्यांकनक पद्धतिकेँ ग्रेडिंग मे बदलाबसँ समाजक ध्यान पाठ्यक्रमक डार्विन अभिप्राय सँ हटत। उम्मीद करैत छी जे देश भरिमे पाठ्यक्रमक आ पाठ्यपुस्तकक निर्धारणमे एहि मायक शब्दक ध्यान राखल जएत।

❑ ❑ ❑

परिशिष्ट-1

प्रत्येक अध्यायक सारांश

अध्याय-1

- शिक्षाक राष्ट्रीय व्यवस्थाकेँ बहुलतावादी समाजमे मजबूती प्रदान करब।
- बिनु बोझक शिक्षाक सूझक आधार पर पाठ्यक्रमक बोझकेँ घटाएब।
- पाठ्यक्रम सुधारक संग व्यवस्थागत परिवर्तन।
- समाजमे उल्लिखित मूल्य यथा सामाजिक न्याय, समता एवं धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पाठ्यक्रम अभ्यास।
- सभक हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करब।
- एहन नागरिक वर्गक निर्माण जकर लोकतांत्रिक प्रक्रियामे, मूल्यमे, लैंगिक न्यायक प्रति संवेदनशीलता, अनुसूचित जाति- जनजाति आ विशेष आवश्यकतावाला बच्चाक समस्या एवं आवश्यकताक प्रति आस्था होअए तथा ओहिमे राजनीतिक तथा आर्थिक प्रक्रियामे भाग लेबाक क्षमता हो।

अध्याय-2

- अध्यापन आ अध्ययन संबंधी हमर सभक ज्ञानक पुनः अभिमुखीकरण।
- शिक्षार्थीक विकास आ शिक्षाक संबंधमे सर्वांगीण दृष्टिकोण।
- कक्षामे सभ विद्यार्थीकेँ सम्मिलित करएबला वातावरणक निर्माण ।
- ज्ञान निर्माणमे विद्यार्थीकेँ सहयोग आ रचनात्मकताकेँ बढ़ाव।
- प्रयोगात्मक माध्यमे सक्रिय शिक्षण।
- पाठ्यक्रम प्रक्रियामे बच्चाक सोच, उत्सुकता आ प्रश्नशीलताक हेतु स्थान।
- ज्ञानक अनुशासनिक सीमासँ आगाँ ज्ञानक विस्तार दैत शिक्षाक ढाँचाक व्यापक अयाम देब।
- विद्यार्थीक सहभागिताक क्षेत्र-अवलोकन, अन्वेषण, आलोचनात्मक विमर्श आदि सेहो विषयक ज्ञानहि जकाँ शिक्षाक महत्त्वपूर्ण विषय थिक।

- सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ पर आलोचनात्मक ज्ञानकेँ विकसित करए बला प्रक्रियाकेँ पाठ्यक्रममे स्थानक आवश्यकता स्थानीय ज्ञान आ बच्चाक अनुभव, पाठ्यपुस्तक आ अध्यापन तकनीकक महत्त्वपूर्ण अंग थिक।
- वातावरणसँ संबंधित प्रोजेक्ट पर कार्य करैत छात्र, अपन पीढ़ीकेँ एहन ज्ञान प्रदान कए कसैत अछि जे भारतीय वातावरणक विषयमे लोकक दृष्टिकोणकेँ बनएबामे मदति करत।
- विद्यालयक वर्ष बच्चाक क्षमता, अभिरुचि आदिमे तेजी सँ विकासक क्रम होइत छैक तेँ विषय वस्तुक चयन व्यवस्था तथा ज्ञानक निर्माणक प्रक्रियाकेँ ओकर हिसाबसँ अनुकूलित कएल जएबाक आवश्यकता अछि।

<u>अध्याय- 3</u>

- भाषिक क्षमता, लिखबा एवं बजबाक, सुनबा एवं पढ़बाक, विद्यालयक विषय आ अनुशासनक अनुरूप होअए। मौलिक शिक्षासँ लए उच्च माध्यमिक स्तर धरि बच्चाक ज्ञान निर्माणमे ओकर महत्त्वकेँ बुझल जएबाक आवश्यकता अछि।
- त्रिभाषा फार्मूलाकेँ पुनः लागू कएल जएबाक दिशामे काज कएल जएबाक चाही जाहिमे बच्चाक मातृभाषाकेँ महत्व देल जएबाक आवश्यकता अछि। एहिमे आदिवासी भाषाकेँ सेहो सामिल कएल जएबाक आवश्यकता अछि।
- आवश्यकता छैक अंग्रेजीकेँ भारतीय भाषा सभक बीच अपन स्थान बनएबाक।
- भारतीय समाजक बहुभाषागत ढाँचाकेँ विद्यालयी जीवनक समृद्धिक संसाधनक रूपमे देखल जएबाक चाहिऐक।

गणित :

- गणितक शिक्षाक मुख्य उद्देश्य होएबाक चाही- गणितीकरण अर्थात् तर्क क्षमताक प्रयोग अमूर्त्तनकेँ बनाएब तथा सोझराएब, आदिक शिक्षा पर जोर, ई नहि जे ओकर सूत्र आदिक यन्त्रिक ज्ञान पर।

- गणितक शिक्षा बच्चाक तर्क क्षमता आ सोचबाक क्षमताक विकास करए, बच्चामे समस्या सोझरएबाक क्षमताक विकास होअए। गणितक नीक शिक्षाक हक प्रत्येक बच्चाकेँ छैक।

विज्ञान :

- विज्ञानक भाषा प्रक्रिया आ विषयवस्तु विद्यार्थीक वयस आ ओकर ज्ञान क्षमताक अनुकूल होएबाक चाही।
- विज्ञान शिक्षाकेँ विद्यार्थीक ओहि तरीका आ प्रक्रियाक बोध करएबामे सक्षम होएबाक चाही जे ओकर रचनात्मकताक विकास करए आ जिज्ञासाकेँ शांत करएबला हो, विशेषतः पर्यावरणक संदर्भमे।
- विज्ञान शिक्षाकेँ बच्चाक परिवेशक अनुकूल होएबाक चाहिऐक जाहिसँ ओकरामे कार्यक संसारमे प्रवेश करबा योग्य आवश्यक ज्ञान आ कुशलता विकसित भए सकए।
- पर्यावरणक चिन्ताकेँ विद्यालयक पाठ्यक्रमसँ जोड़ल जएबाक चाही।

सामाजिक विज्ञान :

- सामाजिक विज्ञान विषयवस्तुक लक्ष्य होएबाक चाही –अवधारणात्मक ज्ञानक विकास नहि कि परीक्षाक हेतु सूचनाकेँ रटब आ एकरा बच्चामे स्वतन्त्र सोचबाक क्षमता एवं सामाजिक मुद्दा पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करबाक क्षमता प्रदान करबाक चाहिऐक।
- प्रमुख राष्ट्रीय चिन्ता यथा लैंगिक न्याय, मानव अधिकार, पछुआएल लोकक समूह तथा अल्पसंख्यकक चिन्ताकेँ विकसित कएल जएबाक अन्तर अनुशासनात्मक दृष्टिकोण अपनाओल जएबाक आवश्यकता अछि।
- नागरिक शास्त्रकेँ राजनीति शास्त्र कए देल जाए तथा इतिहासकेँ बच्चाक अतीत तथा नागरिकता पहचानक अवधारणा पर प्रभाव देअएबला विषयक रूपमे जानल जाए।

कार्य :

- पूर्व प्राथमिकसँ उत्तर माध्यमिक स्तर धरि पाठ्यक्रमक पुनर्निर्माण होएबाक चाही जाहिसँ ज्ञानार्जन, मूल्य विकास आ बहुकला विकासक स्रोतक रूपमे कार्यक शैक्षणिक क्षमताक अनुभव भए सकए।

कला :

- कला (संगीत, नृत्य, दृश्य कला, कठपुतली, रंगमंच आदिक लोक तथा शास्त्रीय रूप) आ धरोहर रूपमे चल आबि रहल कलाक पाठ्यक्रममे मान्यता।
- ओकर प्रासंगिकता कलाक संबंधमे विद्यालय प्रशासनक, अभिभावक आदिकेँ जानकार बनाओल जाए।
- कलाकेँ विद्यालयी शिक्षाक सभ स्तर पर सामिल कएल जाए।

शान्ति :

- विद्यालयी शिक्षाक मध्य उपयुक्त गतिविधिक माध्यमे सभ विषयमे शान्ति शिक्षा देल जाए।
- शान्ति शिक्षाकेँ शिक्षक प्रशिक्षणक सेहो एकटा अबयव बनाओल जएबाक चाही।

स्वास्थ आ शारीरिक शिक्षा :

- स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षा विद्यार्थीक कुल विकासक हेतु आवश्यक अछि। स्वास्थ एवं शारीरिक शिक्षाक माध्यमे विद्यालयमे उपस्थित अधिक समस्या सँ निपटल जा सकैछ।

वातावरण आ शिक्षा :

- विभिन्न अनुशासनक शिक्षामे वातावरणसँ संबंधित मुद्दा आ चिंता सभकेँ सम्मिलित कएनहि पर्यावरणक शिक्षाकेँ आगू बढ़ाओल जाए सकैछ, ई सुनिश्चित करैत जे यथार्थ क्रियाक हेतु एहिमे पर्याप्त समय हो।

अध्याय-4

- ढाँचा आ सामग्रीक न्यूनतम उपलब्धता आ दैनिक योजनाकेँ लचकदार बनाओल जएबासँ शिक्षकक प्रदर्शन सुधारल जाए सकैछ।
- एहन विद्यालयी संस्कृति जे प्रत्येक बच्चाक पहचानकेँ शिक्षार्थीक रूपमे विकसित करैत अछि, सभ बच्चाक क्षमता आ रुचिक विकास सेहो करैछ।
- एहन गतिविधि सभमे सक्षम-अक्षम सभ बच्चा भाग लए सकए, सर्व शिक्षाक आवश्यक शर्त अछि।
- लोकतान्त्रिक तरीका द्वारा बच्चामे स्वअनुशासनक विकास सर्वदा प्रासंगिक रहल अछि। ज्ञानक प्रक्रियामे समुदायक लोककेँ सामिल कएल जएबासँ विद्यालय आ समुदाय साझी रहैत अछि।

निम्नलिखित संदर्भ में शिक्षाक पुनर्निर्धारण :

- पाठ्य पुस्तकमे प्रत्ययक व्याख्या, गतिविधि, समस्या आ अभ्यास एहि तरहेँ देल गेल होअए जे ओ ओहिसँ संबंधित चिन्तन आ समूह कार्यमेँ बढ़ाबा देमएवला होअए।
- सहायक पुस्तक, कार्य पुस्तिका, शिक्षकक कार्य पुस्तिका आदि नूतन चिन्तन तथा नव धरातल पर आधारित होअए।
- शिक्षाकेँ एकल सम्वाद बनएबाक विपरीत परस्पर संवाद बनएबाले मल्टीमीडिया साधनक उपयोग।
- विद्यालयक पुस्तकालय विद्यार्थी, शिक्षक आ समुदायक लोकक हेतु ज्ञानकेँ गम्भीर आ विस्तृत संसारक संग जोड़बाक कार्य करए।
- विद्यालय सारणीक विकेन्द्रीकृत योजना तथा दैनिक सारणी आ शिक्षककेँ व्यावसायिक अभ्यासक स्वायत्तता, शिक्षाक वातावरणकेँ बनएबाले अनिवार्य अछि।

अध्याय-5

- व्यवस्थागत सुधारक एक प्रमुख अभिलक्षण गुणवत्ताक चिन्ता थिक, जकर मतलब होइछ जे संस्थान द्वारा अपन कमजोरीक पहचान कए नव क्षमताक विकास।

- देशक विभिन्न क्षेत्रमे शिक्षाक समान स्तर पर आ विभिन्न परिवेश सँ आयल बच्चाक सह शिक्षा- जाहिसँ शिक्षाक स्तर सुधरि जाइत छैक आ विद्यालयक वातावरण समृद्ध भए जाइत छैक- केर सुनिश्चित करबाक हेतु समान विद्यालयी पद्धतिक विकास आवश्यक अछि।
- संकुल आ ब्लौक स्तर पर आगामी योजनाक हेतु विद्यालयमे एक विस्तृत ढाँचा तैयार होअए जाहिसँ जिला स्तर पर विकेन्द्रीकरणक नीति बनि सकए।
- प्रधानाध्याकप आ शिक्षकक सहयोगसँ सार्थक अकादमिक योजनाक विकास, सिखएबा - सिखबाक प्रक्रियाक संदर्भमे निरीक्षणक क्रियाकेँ प्रत्येक विद्यालयक संग सतत सहक्रियाक रूपमे देखल जएबाक चाही।
- स्तर निरीक्षणकेँ सिखएबा -सिखबाक प्रक्रियाक रूपमे विद्यालयसँ संपर्क स्थापित करबाक माध्यामक रूपमे देखल जएबाक चाही।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमकेँ पुनर्गठित आ मजबूत कएल जएबाक आवश्यकता छैक जाहिसँ शिक्षक भए सकथि-

- सिखबा-सिखएबाक समयमे उत्साहवर्धक, मदति करएवला आ मानवीयता बढ़बएबला जाहिसँ छात्र अपन योग्यताकेँ बुझि सकए, अपन शारीरिक आ शैक्षणिक क्षमताकेँ चीन्हि सकए आ ओकर संवर्द्धन कए सकए तथा जिम्मेदार नागरिक बनबा सन सामाजिक आ मानवीय मूल्यकेँ उत्पन्न कए सकए आ

- एहन समूह जे पाठ्यक्रमक नवीकरणक हेतु, जहिसँ ओ सामाजिक परिप्रेक्ष्य आ सिखनिहारक व्यक्तिगत आवश्यकतानुसार प्रासंगिक रहि सकए, केर सक्रिय सदस्य

- पुनर्गठित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम जे ज्ञान निर्माणक प्रक्रिया आ सिखबाक परिप्रेक्ष्यमे छात्रक सक्रिय भागीदारी पर जोर दैत अछि आ शिक्षककेँ ज्ञानार्जनमे सहायक, शिक्षक शिक्षाक ज्ञानक बहु अनुशासनिक प्रकृति, सैद्धान्ति आ प्रायोगिक आयामकेँ जोड़ब आ समकालीन भारतीय समाजक मुद्दा आ चिंता सभक विश्लेषण पर आधारित अछि।
- शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रममे भाषिक दक्षताक केन्द्रीयता आ शिक्षक-शिक्षाक एकटा संयुक्त प्रतिकृति जाहिसँ शिक्षकक व्यवसायपरकता बढ़ि सकए केर महत्त्व देल गेल अछि।
- सेवाकाल शिक्षणकेँ विद्यालयमे बदलावक उत्प्रेरक होएबाक चाही।

- गामक स्तर पर शिक्षा संबंधी गतिविधि सभकेँ जोड़ि कए पंचायती राज संस्था सभकेँ मजबूत कएल जा सकैत अछि।

परीक्षा सुधार :

- तनावक घटब आ परीक्षामे सफलताक बढ़ब निम्नलिखित विन्दु सभ पर बल दैत अछि :

  -विषय वस्तुक परीक्षणसँ समस्या समाधान आ ज्ञान दिस बढ़ब। एहि हेतु वर्तमान प्रश्न पत्रक प्रकार निश्चित रूपेँ बदलबाक चाही।

  -छोट परीक्षाक दिस प्रस्थान।

  -एकटा एहन नोडल एजेन्सीक स्थापना जे प्रवेश परीक्षाक डिजाइन आ चालनक संचालन कए सकए।
- पूर्व प्राथमिक सँ उत्तर माध्यमिक स्तर घरि विद्यालयी पाठ्यक्रमक अभिन्न अंगक रूपमे कार्य-आधारित शिक्षाक संस्थानीकरणसँ ओ ब्यावसायिक शिक्षाक नब अवधारणा प्रदान करबामे आ ओकर पुनर्निर्माणमे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वहण करत से आशा अछि।
- व्यावसायिक शिक्षा आ प्रशिक्षण (वेट) केर नब कार्यक्रमक निर्माण कएल जाए जे मिशनक रूपमे उत्पादित आ लागू भए सकए आ जाहिमे ग्राम, संकुल, प्रखण्ड, अनुमंडल, जिला मुख्यालय आ महानगरक स्तर पर वेट केन्द्रक स्थापना राष्ट्रीय परिदृश्यमे उपलब्ध संरचनाक उपयोग करैत होएबाक चाही।
- शिक्षण अनुभव आ विविध कक्षा अभ्यास सभक एकीकरण जाहिसँ नव विचार उत्पन्न भए सकए आ नवाचार तथा प्रयोगकेँ बढ़ाबा भेटए।
- नाना प्रकारक पाठ्य पुस्तकक उपलब्धता जाहिसँ शिक्षककेँ विकल्प भेटए।
- पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तक आ शिक्षक अधिगम संसाधन सभक विकास, विश्वविद्यालय, गैर सरकारी संस्थान आ शिक्षक संगठन सभसँ सहकारिताक संग कएल जा सकैछ।

❑❑❑

परिशिष्ट-2

21.07.2004

प्रिय प्रो0 दीक्षित

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 जे 1992 में संशोधित भेल, निम्नलिखित विचार दैत अछि :

''11.5 प्रत्येक पाँच वर्ष पर नव रणनीतिकेँ लागू करबाक प्रभावक विश्लेषण करबाक चाही। रणनीतिक प्रगतिकेँ देखबाक हेतु आ समय- समय पर अबएबला नव चलनकेँ सम्मिलित करबाक हेतु समय-समय पर मूल्यांकन होइत रहत''

2. कार्य योजना (पी0 ओ0 ए0) 1992 जे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 क अनुसार बनाओल गेल, मे किछु चिंता देखाओल गेल अछि जकर निवारण पुनर्नवीकरणक द्वारा भए सकैछ। अपनेक ध्यान पी0 ओ0 ए0 केर आठम अध्याय पर देल जाए रहल अछि।
3. चूँकि वर्तमान पाठ्यक्रमक रूपरेखा चारि वर्ष पहिने तैयार कएल गेल छल तेँ एकर पुनर्नवीकरण शुरू करबाक समय आबि गेल अछि। एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पाठ्यक्रम केर विश्लेषणक योजनाक शुरुआत कए सकैत अछि।
4. पुनरावलोकनक समयमे कृपया ध्यान राखल जाए जे समयक संग उत्पन्न भेल अथवा विस्तृत भेल प्रक्रियाक उल्लंघन नहि हो। अपने पछिला नवीकरण कार्य केर अंतिम चरणमे भेल ओकर अपूर्णताक निंदासँ परिचित छी।
5. एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 केर पाठ्यपुस्तक पछिला किछु वर्षमे अकादमिक आलोचनाक पात्र भेल अछि। इतिहासक पाठ्य पुस्तकक संदर्भमे विरोधाभाषक सामना अपने एखनहु कए रहल छी। वर्तमान पुनरावलोकनक समयमे अपने ई ध्यान मे राखि सकैत छी जे कोना नब पाठ्यक्रमक रूपरेखा पर आधारित पुस्तककेँ विकृतिसँ दूर राखल जाए।
6. हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे पुनर्नवीकरणक समयमे अपने 'बिनु बोझक शिक्षा' पर आधारित यश पाल समितिक रिपोर्ट आ पी0 ओ0 ए0 केर अध्याय 8 केर ध्यान राखब ।

7. एन0 सी0 एफ0 एस0 ई0 कें संविधानक अनुसार भारतक अबधारणा केर आलोकमे होएबाक चाही। पुनर्नवीकरण कार्यसँ संबद्ध सभ व्यक्तिकें संविधानक प्रस्तावना मे देल गेल निम्नलिखित मूल विचारक ध्यान कराएब आवश्यक होएत :

   ''हम सभ, भारतक जनता एकमतसँ भारतकें एकटा संप्रभुता सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, प्रजातान्त्रिक गणराज्यमे बदलबाक आ एकर सभ नागरिककें

   न्याय, सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक

   स्वतंत्रता, विचारक अभिव्यक्तिक, विश्वासक, आस्थाक आ उपासनाक

   समानता, स्तरक आ अवसरक

   आ सभक बीचमे भ्रातृत्व जाहिमे सभक आत्म सम्मान आ राष्ट्रक एकता आ अखंडता निश्चित करबाक निर्णय लैत छी।''

8. हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे एन0 सी0 एफ0 एस0 ई0 केर अवधारणासँ अकादमिक समाज आ पूरा सभ्य समाजमे उत्साहक संचार होएत। अपने तदनुसार एहि हेतु अपेक्षित कार्य करी।

सधन्यवाद एवं शुभकामनाक संग

भवदीय

बी0 एस0 बसवान

प्रो0 एच0 पी0 दीक्षित

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

17-बी0, श्री अरविन्द मार्ग

नई दिल्ली- 110016

***

2 मइ,2005

डी.ओ. न. 11-17/2004-एस सी एच-4

प्रिय प्रो0 कृष्ण कुमार जी

कृपया विद्यालयी शिक्षाक हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा (एन0 सी0 एफ0 एस0 ई0) केर संदर्भमे भेल हमर सभक वार्ता कें मोन पारियौक। एहि संदर्भमे हमर सम संख्याक डी0 ओ0 पत्रांक, दिनांक 21.07.2004 जे विद्यालयी शिक्षाक हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा (एन0 सी0 एफ0 एस0 ई0) 2000 केर पुनरावलोकन आ पुनर्नवीकरणक संदर्भमे छल केर ध्यान देल जाए। एहि पत्रक छठम परिच्छेदमे हम एन0सी0 एफ0 एस0 ई0 2000 केर पुनरावलोकन करबाक समयमे 'बिनु बोझक शिक्षा' सँ संबंधित यश पाल समितिक रिपोर्ट पर ध्यान देबाक हेतु लिखने छलहुँ। आब जखन एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 केर द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यक्रमक रूपरेखा तैयार कए लेल गेल अछि, आशा अछि जे नव पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तककें तैयार करबाक समयमे 'बिनु बोझक शिक्षा' रिपोर्टक मूल सिद्धान्तकें ध्यानमे राखल जाएत।

भवदीय

सधन्यवाद एवं शुभकामनाक संग

बी0 एस0 बसवान

प्रो0 कृष्ण कुमार
निदेशक, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0
श्री अरविन्द मार्ग
नई दिल्ली- 110016

राष्ट्रीय ध्यान समूह-स्थिति पत्र

खण्ड -1

पाठ्यक्रम क्षेत्र

1.विज्ञान शिक्षण
2.गणित शिक्षण
3.भारतीय भाषा शिक्षण
4.अंग्रेजी शिक्षण
5.सामाजिक विज्ञान शिक्षण
6.वातावरण आ शिक्षा
7.कला,संगीत, नृत्य आ सिनेमा
8.पुस्तैनी कला

खण्ड- 2

व्यवस्थात्मक सुधार

1.शिक्षाक उद्देश्य
2.पाठ्यक्रमिक अन्तरणक हेतु व्यवस्थात्मक सुधार
3.अध्ययन सूची, पाठ्यक्रम आ पाठ्य पुस्तक
4.पाठ्यक्रमक नवीकरणक हेतु शिक्षक शिक्षा
5.परीक्षा सुधार
6.शिक्षा तकनीक

खण्ड- 3

राष्ट्रीय चिन्ता

1.अनुसूचित जाति आ जनजातिक बच्चा सभक समस्या
2.शिक्षामे लैंगिक मुद्दा
3.विशेष आवश्यकतावला बच्चा सभक शिक्षा
4.शांतिक हेतु शिक्षा
5.स्वास्थ्य आ शारीरिक शिक्षा
6.शुरुआती बाल्यकाल शिक्षा
7.कार्य आ शिक्षा